जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट माला---८

बापू-स्मरण

जमनालालजी बजाज की डायरियो एवं पत्र-व्यवहार में से
महात्मा गाधी-सबंधी उल्लेखो का संकलन
तथा बापू के कुछ संस्मरण

●

भूमिका
आचार्य कृपालानी

सपादक
रामकृष्ण बजाज

●

१९६३
मुख्य विक्रेता
सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

निवेदन

जमनालाल सेवा-ट्रस्ट पुस्तकमाला का यह आठवा खण्ड 'बापू-स्मरण' पाठको के सामने रखते हुए हमे बडी प्रसन्नता हो रही है। वास्तव मे यह पुस्तक सेवा-ट्रस्ट-माला के पहले खण्ड 'बापू के पत्र' का दूसरा भाग है।

प्रस्तुत पुस्तक दो हिस्सो में विभक्त है। पहले में पूज्य पिताजी (जमनालालजी) की डायरियो मे से तथा परिवार के लोगो और मित्रो को लिखे पत्रो में से बापू (महात्मा गाधी) सम्बन्धी उल्लेखो का सकलन है, तथा दूसरे में बजाज-परिवार के सदस्यो द्वारा लिखे बापूजी के सस्मरणो का सग्रह है।

आज से कोई नौ वर्ष पहले हमने 'पाचवे पुत्र को बापू का आशीर्वाद' नामक एक ग्रन्थ प्रकाशित किया था, जिसमे महात्माजी तथा पिताजी के पत्र-व्यवहार के अलावा बजाज-परिवार के लोगो के साथ हुआ बापू का पत्र-व्यवहार भी था। उसमे पिताजी की डायरियो तथा पत्रो मे से गाधीजी-सम्बन्धी चुने हुए अश देने की जब व्यवस्था की गई तो यह विचार पूज्य काकासाहब कालेलकर को, जो उस पुस्तक के सपादक थे, बहुत पसद आया था। उन्होंने इसके सम्बन्ध मे अपने निवेदन मे लिखा था—

"यह किताब करीब-करीब तैयार हो जाने के वक्त परिशिष्ट २ का तैयार मसाला पढने को मिला। इसमे अधिकाश तो जमनालालजी के जानकीदेवी के नाम लिखे हुए पत्र तथा डायरी में गाधीजी के बारे मे जो जिक्र पाये जाते है, उनका सग्रह है। सन् १९१७ के प्रारभ से लेकर श्री जमनालालजी का विकास कैसा होता गया, कौटुम्बिक जीवन को सामाजिक एव राजकीय जीवन के साथ एकरूप बनाने का उनका सतत प्रयत्न कैसा था, यह सब इस मसाले मे इतना स्पष्ट रूप से प्रकट हुआ है कि मानो हम उनकी आत्मकथा ही पढ रहे है।"

उपर्युक्त परिशिष्ट मे जो मसाला दिया गया था, वह बहुत थोडा था। लेकिन उससे प्रेरणा पाकर उसे बढाकर इसको एक अलग पुस्तक

रूप मे देने का तय किया गया, और प्रस्तुत सग्रह उसी प्रयत्न का फल है।

इसी प्रकार का एक सग्रह 'विनोवा के पत्र' नाम से इसी माला मे पहले निकल चुका है। इसके पहले और दूसरे भाग मे विनोवाजी के साथ पिताजी तथा वजाज-परिवार के सदस्यो का पत्र-व्यवहार तथा डायरी के अश दिये गए है तथा तीसरे मे वजाज-परिवार के सदस्यो के विनोवाजी-सवधी सस्मरण है।

इन सव प्रकाशनो के पीछे यही भावना है कि पिताजी ने एक साधक के रूप मे पूज्य वापूजी और विनोवाजी-जैसे महापुरुषो से जो कुछ पाया, उसे सार्वजनिक हित के हेतु प्रकाश मे लाया जाय।

जो डायरिया प्राप्त हो सकी है, उन्हीमे से उल्लेखो को सग्रह किया गया है। शेष या तो खो गई है या नष्ट हो गई है।

इस पुस्तक की तैयारी मे जिन सज्जनो ने मदद दी है, उनके हम आभारी है, विशेष रूप से श्री रतनलाल जोशी के, जिन्होने डायरीवाले अशो को देखकर अपने सुझाव दिये।

अत मे पूज्य दादा (आचार्य कृपालानी) को धन्यवाद दिये विना यह निवेदन समाप्त नही कर सकते, जिन्होने अपना अमूल्य समय देकर इसकी भूमिका लिखने की कृपा की।

—सपादक

भूमिका

स्वर्गीय सेठ जमनालाल बजाज और उनकी प्रवृत्तियो पर कई पुस्तको के प्रकाशन के लिए जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट बधाई का पात्र है। जमनालालजी से मेरी पहली मुलाकात सन् १९१८ मे कलकत्ता मे हुई थी। तब वह युवक ही थे। मै गाधीजी और उनके सहकर्मियो के साथ काग्रेस के वार्षिक अधिवेशन मे भाग लेने वहा गया था। जमनालालजी उदीयमान उद्योगपति के रूप मे आगे आ रहे थे और उन्हे ब्रिटिश सरकार से रायबहादुर का खिताब मिला था। उस समय पडित मदनमोहन मालवीय के प्रति उनकी बहुत आस्था थी। गाधीजी और उनके साथियो को एक धर्मशाला मे ठहराया गया था और उसका सारा प्रबन्ध जमनालालजी ने ही किया था। जब जमनालालजी ने गाधीजी को प्रणाम कर उनसे आशीर्वाद मागा, तो गाधीजी ने उन्हे खिताब के लिए बधाई दी और कहा कि उनकी अपेक्षा है कि उसका इस्तेमाल व्यक्तिगत प्रतिष्ठा व गौरव के लिए न कर राष्ट्र-सेवा के लिए किया जायगा। तब से गाधीजी के साथ जमनालालजी का सपर्क और आत्मीयता निरतर बढती गई और अत मे वह उनके परिवार के ही एक सदस्य हो गए।

उस समय जमनालालजी एक उद्योगपति के रूप मे उभर रहे थे। द्वितीय महायुद्ध के बाद व्यापार व उद्योग के क्षेत्र मे काफी तेजी आ रही थी। कई जॉइट स्टाक कपनिया कायम हुई। उनमे से कइयो ने जमनालालजी को सचालक-मडल मे सम्मिलित होने के लिए आमत्रित किया। यदि उन्होने अपना सारा ध्यान केवल व्यापार और उद्योग पर ही केन्द्रित रखा होता तो वह हमारे देश के प्रथम श्रेणी के गिने-चुने उद्योगपतियो मे होते। किन्तु गाधीजी के व्यक्तित्व और देशभक्ति की पुकार से प्रभावित होकर वह राष्ट्रीय स्वतत्रता-आदोलन मे शामिल होगए।

सत्याग्रह-आदोलन के कई कार्यक्रमो मे एक था खादी का उपयोग और प्रचार। उस समय कपडे की मिलो मे असाधारण लाभ हो रहा था।

फिर भी इस सिद्धान्त के अनुरूप उन्होने कपडे की मिलो मे किसी भी प्रकार का हिस्सा लेने से इकार कर दिया। कुछ समय बाद काफी मुनाफे की शर्तों पर उन्हे कपडे की एक मिल का प्रस्ताव मिला, किन्तु उन्होने इसी कारण उस प्रस्ताव को भी ठुकरा दिया।

धीरे-धीरे उनका अधिकाधिक ध्यान स्वतत्रता-सग्राम की ओर मुडता गया। उनके व्यापार की व्यवस्था उनके साझीदार करने लगे। आदोलन के शुरू मे ही उन्हे काग्रेस का कोषाध्यक्ष बनाया गया, अत इस नाते काग्रेस के लिए धन इकट्ठा करना उनका मुख्य काम रहता था। उन्हे इसका भी ध्यान रखना पडता था कि काग्रेस के पास जो थोडा-बहुत धन था, वह अवज्ञा-आदोलन के समय ब्रिटिश सरकार के हाथ मे न पड जाय। आज लोगो को यह जानकर आश्चर्य होगा कि उस समय काग्रेस के पास ३० हजार रुपये की रोकड से अधिक जमा रकम कभी नही थी। अधिकाश कार्य लोग अवैतनिक ही किया करते थे।

राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान जमनालालजी एक पूजीपति से, गाधीजी की कल्पना के अनुरूप, लोगो के ट्रस्टी बन गये। उनका जीवन सादा था और उन्होने अपने परिवार के अन्य सदस्यो को भी वैसा ही जीवन अपनाने की ट्रेनिग दी। हा, सार्वजनिक कोषो मे वह उदारतापूर्वक दान देते रहे। व्यक्तिगत सहायता मे भी वे उतनी ही उदारता बरतते थे। अतिथि-सत्कार तो उनका अद्वितीय था ही। उन दिनो काग्रेस कार्यकारिणी की बैठके अधिकतर वर्धा मे ही हुआ करती थी, क्योकि गाधीजी पास ही सेवाग्राम-आश्रम मे रहते थे। उस आश्रम की भूमि भी जमनालालजी ने ही प्रदान की थी। कार्यकारिणी समिति के प्रत्येक अधिवेशन मे छ-सात दिन तक एक साथ उन्हे सैकडों मेहमानो की व्यवस्था करनी पडती थी और उस समय तो कार्यकारिणी की बैठके भी बहुत जल्दी-जल्दी हुआ करती थी।

जमनालालजी खरे व्यक्ति थे। निष्पक्षता और न्यायप्रियता की भावना उनमे प्रबल थी। स्वभाव से वह बहुत आशावादी थे और साथ ही बहुत विनोदी भी। मानवीय सहानुभूति उनमे गहरे तक पैठ गई थी। धन और पद के अहकार से वे मुक्त थे। अपनी राय वह खुले तौर पर देते थे और उसमे किसी प्रकार का भी बधन उन्हे स्वीकार नही था। हमारे

स्वतत्रता-सग्राम के वह एक महान् सेनानी थे । जिन्हे भी उनके सपर्क मे आने का अवसर मिला, वे जमनालालजी को कभी नही भूल सकते ।

प्रस्तुत पुस्तक में जमनालालजी की डायरी व पत्रो के उद्धरण सगृहीत है । इन सब उद्धरणो का सबध गाधीजी से है । इससे पुस्तक की उपयोगिता और भी बढ जाती है ।

डायरी के उद्धरण सक्षिप्त हैं—दर-असल बहुत ही सक्षिप्त, मानो लेखक ने उन्हे महज नोध के तौर पर लिख लिया हो, ताकि भविष्य मे उन्हे पढकर याद ताजा कर ली जाय और उनका उपयोग किया जा सके । इसलिए सामान्य पाठक को शायद इन उद्धरणो का पूरा मतलब और महत्त्व स्पष्ट नही हो पायगा । किन्तु जो लोग हमारे राजनैतिक आदोलन से भली भाति परिचित है और उसमें भाग लेनेवाले महत्वपूर्ण व्यक्तियो के सपर्क में आये हैं, उन्हे इनमें मूल्यवान् सामग्री उपलब्ध होगी ।

पुस्तक के आखिरी हिस्से में जो पत्र दिये गए हैं, उनका महत्व अलग-अलग प्रकार का है । उनसे उस युग पर, तत्कालीन सार्वजनिक व्यक्तित्वो पर और उल्लिखित घटनाओ पर अच्छा प्रकाश पडता है । जमनालालजी के जीवन की झलकिया भी पाठको को इनमे मिलेगी ।

यह पुस्तक न केवल हमारे स्वतत्रता-सग्राम और समकालीन जीवन के जिज्ञासुओ के लिए ही उपयोगी सिद्ध होगी, अपितु गाधीजी की विचार-धारा के विद्यार्थियो के लिए भी ।

—जे० बी० कृपालानी

बापू-स्मरण

जमनालाल बजाज की डायरी के

बापू-संबंधी अंश

"उन्होने मेरे सभी कामो को पूरी तरह अपना लिया था"

—मो० क० गाधी

डायरी के अंश

१९२४

२६-१-२४, पूना

पू० महात्माजी के दर्शन किये। वार्तालाप हुआ।

२८-१-२४, बंबई

पूना से ७-४० की एक्सप्रेस से पू० महात्माजी के दर्शन व वार्ता करके रवाना हुआ। रास्ते मे मथुरादास त्रिकमदासजी के साथ बाते।

२-२-२४, पूना

ऐड्रूज के साथ बापूजी से मिला। ऐड्रूज के लिए खादी की धोती, कुरता व चद्दर ली।

पू० बापूजी से बाते।

५-२-२४, वर्धा

आश्रम के भविष्य के कार्य के बारे मे विनोबा से खूब बाते। जाजूजी से भी विचार-विनिमय। कार्य के सम्बन्ध मे कुछ निश्चय।

पू० महात्माजी के आज प्रात काल छूटने के तार मिले। चित्त मे विशेष आनद नही हुआ।

महात्माजी के छूटने के बारे मे आम सभा हुई। श्री रवेला ठीक बोले।

१०-२-२४, वर्धा

गाधीजी की पालखी (जुलूस) निकली।

श्री जयदयालजी गोयनका से अलग बाते। उनके प्रश्नो का स्पष्टता से जवाब देने की कोशिश। महात्माजी के व इनके सिद्धान्तो मे अत्यज-सबधी बडा फर्क है, कार्य-पद्धति का भी।

३-४-२४, नासिक

अग्रवाल महासभा मे जाना नही हो सका। उसके लिए मन मे थोड़ा विचार आया, प्रेम-अश्रु भी आये। जाने के लिए पू० महात्माजी की

आज्ञा नही मिलने से न जाना ही उचित समझा। महासभा को पत्र लिखवाया।

१८-४-२४, जुहू (बम्बई)

महात्माजी के पास जुहू आया। हाल मे यही पर रहने का निश्चय हुआ। बापू से थोडी बाते। उनके साथ घूमने गया।

२०-४-२४, जुहू (बम्बई)

बापूजी से बाते। बहुत-सी बातो का खुलासा हुआ। उसे अलग लिखकर रखा।

२१-४-२४, जुहू

बापू का मौन था।

सुबह बापू के साथ प्रार्थना। बापू से कई बातो का खुलासा।

२४-४-२४, जुहू

वर्किंग कमेटी की बैठक हुई। महात्माजी ने अपने विचार प्रकट किये। खादी-कमेटी की भी बैठक हुई।

५-५-२४, नासिक-त्रिबक

बापू का पत्र[1] पढकर हृदय भर आया। उनका तार आने के कारण रात की गाडी से बम्बई गया।

६-५-२४, बम्बई

९ बजे शान्ति आई। कमला व कमलनयन को लेकर बापूजी के पास गया। बापूजी ने कमला से बहुत बाते की।

सुन्दरलालजी व भगवानदीनजी के साथ बापू से बाते। खुलासा हुआ।

१५-५-२४, बम्बई

प० मोतीलाल नेहरू तथा मौ० अबुलकलाम आजाद से बाते। बाद में वे पू० बापूजी से मिले। उनसे बाते करके आनन्द आया।

२४-५-२४, बम्बई

बापू का व स्वराज्य-पक्ष का बयान पढा।

पागरकर से मिले। बाते। उन्होने महात्माजी के लिए पुस्तके दी।

---

[1] देखिये 'बापू के पत्र', पृष्ठ ३२।

२६-६-२४, अहमदाबाद (आश्रम)

स्टेशन से आश्रम गये। बापू से मिलकर चि० शान्ति को वहीं छोडकर वल्लभभाई के घर आये। भोजन, राजगोपालाचारीजी से बाते। फिर आश्रम गये—वर्किंग कमेटी के लिए। वर्किंग कमेटी का काम २ बजे से ६-३० बजे तक होता रहा। महात्माजी ने अपने चार प्रस्ताव[1] समझाकर बतलाये। खुलासेवार खूब चर्चा हुई। वे चारो प्रस्ताव वर्किंग कमेटी ने थोड फर्क से स्वीकार किये।

---

[1]ये प्रस्ताव २२-६-२४ के हिन्दी 'नवजीवन' मे निम्न प्रकार प्रकाशित हैं—

१. इस बात पर ध्यान रखते हुए कि स्वराज्य की स्थापना के लिए चरखा और हाथकती-खादी के आवश्यक माने जाने पर भी और महासभा के द्वारा सविनय भग के लिए पेश-बदी के तौर पर उनकी स्वीकृति होते हुए भी देश की तमाम महासभा-संस्थाओ के सदस्यो ने चरखा कातने पर अब तक ध्यान नहीं दिया है, यह महासमिति निश्चय करती है कि तमाम प्रतिनिधिक महासभा-संस्थाओ के सदस्यो को चाहिए कि वे, बीमारी अथवा लगातार सफर की हालत को छोड़कर, रोज कम-से-कम आध घण्टा चरखा काते और कम-से-कम १० नंबर का १० तोला एक-सा और पक्का सूत अखिल भारतीय खादी-मण्डल के मंत्री के पास भेज दे, जोकि हर महीने की १५ ता० तक उन्हे मिल जाय। पहली किश्त १५ अगस्त, १९२४ तक उनके पास पहुच जाय और उसके बाद हर महीने बराबर भेजते रहे। जो सदस्य नियत तारीख तक नियत तादाद मे सूत न भेजेगा, उसका पद खाली समझा जायगा और मामूल के मुआफिक उसकी जगह पर दूसरे सदस्य की तजवीज की जायगी तथा पद-च्युत शख्स अगले साधारण चुनाव तक फिर से चुने जाने का पात्र न समझा जायगा।

२. चूंकि इस बात की शिकायते पहुची है कि प्रान्तीय मत्री तथा महासभा के दूसरे पदाधिकारी उन हुक्मो की तामील नहीं करते है, जोकि महासभा के बाकायदा अफसरो की तरफ से उनके नाम समय-समय पर भेजे जाते है, इसलिए महासमिति निश्चय करती है कि जो पदाधिकारी अपने

२७-६-२४, अहमदाबाद

महात्माजी के प्रस्तावो पर राजगोपालाचारीजी से चर्चा ।

श्री पुरुषोत्तमदासजी टंडन से बाते ।

'ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी' की बैठक ३ बजे के बदले ६ बजे हुई । आपस मे चर्चा होती रही। मीटिंग १० बजे तक चलती रही। महात्माजी का प्रस्ताव आर्डर मे है या नही, इसपर विचार हुआ ।

बाकायदा मुकर्रर अफसरो के हुक्मो की तामील करने में गफलत करेगा, वह अपनी जगह से खारिज समझा जायगा और उसकी जगह पर मामूल के मुआफिक दूसरा शख्स तजवीज किया जायगा; और वह पद-च्युत व्यक्ति अगले साधारण चुनाव तक फिर से चुने जाने का पात्र न समझा जायगा ।

३ महासमिति की राय में यह बात वांछनीय है कि महासभा के निर्वाचक लोग सिर्फ उन्हीं लोगो को पदाधिकारी चुनें, जो महासभा के ध्येय के अनुसार तथा महासभा के विविध असहयोग-प्रस्तावो के अनुसार, जिनमें पचविध बहिष्कार—अर्थात् मिल-कते कपडो, सरकारी अदालतो, स्कूलो, खिताबो और धारा-सभाओ के बहिष्कार—शामिल है, खुद चलते हो, और महासमिति यह निश्चय करती है कि जो सभ्य इन पाचो बहिष्कारो को न मानते हो और उनके मुताबिक न चलते हो वे अपनी जगहो से इस्तीफा दे दें, और उन जगहो के लिए नया चुनाव किया जाय—इस्तीफा देनेवाले सज्जन चाहे तो चुनाव के लिए फिर से उम्मीदवार हो सकते है ।

४ महासमिति स्वर्गीय गोपीनाथ साहा के द्वारा किये गए श्री डे के खून पर अपना अफसोस जाहिर करती है और मृतात्मा के परिवार के प्रति अपना शोक प्रकट करती है और ऐसे खून जिस देश-प्रेम के कारण होते है—फिर वह भ्रान्त ही क्यो न हो—उसका गहरा खयाल रखते हुए भी यह समिति ऐसे तमाम राजनैतिक खूनो की सख्त निन्दा करती है और जोर के साथ अपनी राय जाहिर करती है कि ऐसे तमाम काम महासभा के ध्येय और उसके शान्तिमय असहयोग के प्रस्तावो के खिलाफ है और उस सविनय भग की तैयारी में बाधा डालते है जो कि महासमिति की राय में शुद्ध से

२८-६-२४, अहमदाबाद

आश्रम में पूज्य बा ने खाना खिलाया। बापू से बाते। मोटर मे उनके साथ मीटिंग के लिए टाउन-हाल आया। रास्ते मे बाते होती रही।

२९-६-२४, अहमदाबाद (ऐतिहासिक दिन)

'ऑल इडिया काग्रेस कमेटी' की कारंवाई दो बजे तक चलती रही। पू० बापू का भाषण बहुत ही सुन्दर हुआ। मोतीलालजी का भी भाषण

शुद्ध बलिदान को उत्साहित करता है और जो पूर्ण शान्तिमय वायु-मण्डल में ही किया जा सकता है।

उपर्युक्त प्रस्तावो पर महात्माजी ने 'यंग इंडिया' में निम्न वक्तव्य दिया था—

"इस मौके पर तो मैं ठीक वही काम करता हुआ दिखाई देता हूं, जिससे मैं बचने की इच्छा रखने का दावा करता हू—अर्थात् महासभा में फूट पैदा करना और देश में चर्चा और विवाद का तूफान खड़ा कर देना। फिर भी पाठको को यकीन दिलाता हूं कि कम-से-कम, जहातक मुझसे ताल्लुक है, यह हालत ज्यादा दिनो तक न रहेगी। मेरी एकमात्र चिन्ता और उत्सुकता यह है कि यह अनिश्चितता का वायु-मण्डल स्वच्छ हो जाय। मैं समझता हूं कि हर शख्स इसमें मेरा साथ देगा। अगर हमें यह जानना हो कि हम कहां हैं, तो कुछ चर्चा करना लाजिमी है। मेरे संबंध में लोग खयाल करते है कि मैं कुछ चमत्कार करके बता दूंगा और देश को उसके मंजिले-मक्सूद पर पहुंचा दूंगा। खुशकिस्मती से मेरे दिल में ऐसा कोई भ्रम नहीं है। हां, मै एक क्षुद्र सैनिक होने का दावा जरूर करता हू। और अगर पाठक मेरी बात पर हँसें नहीं तो मै उनसे यह भी कह देना बुरा नहीं समझता कि मै एक कुशल जनरल भी हो सकता हू—महज उन्हीं शर्तों पर, जो मामूली हुआ करती है। मेरे पास ऐसे सैनिक होने चाहिए, जो आज्ञा-पालन करते हो, जो अपने तईं और अपने जनरल के तईं विश्वास रखते हो और जो खुशी-खुशी कामो को करते हो। मेरी कार्य-विधि हमेशा खुली और निश्चित होती है। कुछ निश्चित शर्तें रहती है। उनकी पूर्ति पर सफलता का निश्चय ही समझिये। पर ऐसी हालत मे बेचारा जनरल क्या कर सकता है जब उसके सैनिक उसकी शर्तों

हुआ। उनके स्टेटमेंट का अच्छा असर नही हुआ। वह बैठक में से उठकर चले गए।

'ऑल इडिया काग्रेस कमेटी' का काम सुबह से १ बजे तक होता रहा। भोजन के बाद अनसूया बहन के यहा वर्किंग कमेटी ३ बजे से ६ बजे तक होती रही। 'ऑल इडिया काग्रेस कमेटी' शाम को ७ बजे से फिर शुरू हुई।

को मानते तो हो, पर उन्हे खुद पालते न हो और शायद उनका विश्वास भी उनपर न हो। इन प्रस्तावो की तजवीज इसलिए की गई है कि जिससे सैनिको की योग्यता की जाच हो जाय। बल्कि इसे दूसरी तरह से कहूं तो ठीक होगा। सैनिको की हालत तो बडी अच्छी है। क्योकि वे अपना जनरल खुद चुनते हैं। उनके भावी जनरल के लिए उसकी सेवा की शर्तें जान लेना जरूरी है। मेरी हालत वही है, जो १९२० में थी। पर जितने दिन बीते हैं उतना ही मेरा विश्वास बढ गया है। अगर मेरी सेवा चाहनेवालो का भी यह हाल है तो वे मेरा तन और मन—सर्वस्व अपना ही समझें। दूसरी किसी तजवीज मे मेरा विश्वास नहीं है। इसलिए दूसरी किसी शर्त पर मैं सेवा करने योग्य नहीं हू। इसलिए नहीं कि मुझे सेवा की इच्छा नहीं है, बल्कि इसलिए कि मैं उसके लिए अ-पात्र हूं। जहा किसी २५ वर्ष के पछत्ते हट्टे-कट्टे नौजवान की जरूरत हो वहा अगर कोई सफेद बालोवाला ५५ बरस का बूढा, जिसके दांत टूट गए हो, तन्दुरुस्ती अच्छी न हो, दरख्वास्त लेकर हाजिर हो तो कैसे काम चल सकता है ?

"इसलिए इन चार प्रस्तावो को जनरल की जगह के लिए मेरी दरख्वास्त ही समझिये। इसमें मेरी योग्यता और मर्यादा दोनो आ जाती हैं। इसमें न तो किसी प्रकार की मनमानी की जाती है और न कोई असंभव बात चाही गई है। अगर सदस्य लोग समझें कि मैं गलती पर हू और अगर वे अपनेको तथा अपने मुल्क को धोखा न देना चाहते हो, तो उन्हे मेरा ज़रा मुलाहिज़ा न रखना चाहिए। मैं मानता हूं कि कोई शख्स ऐसा नहीं है जिसके बिना देश का काम रुकता हो। हर शख्स अपनी जन्म-भूमि का, उसके द्वारा मानव-जाति का, ऋणी है। और जिस घडी वह अपना ऋण चुकाने से मुंह मोडे, उसी घडी उसे खारिज कर देना चाहिए। इसलिए मौजूदा सेवा-कार्यों

बापू वर्किंग कमेटी के मेम्बर हुए। गोपीनाथ साहा के प्रस्ताव पर भाषण। काम खतम होने पर बापू का दुःख से भरा हुआ भाषण हुआ। उनकी व सभी की आखो मे पानी भर आया।

का भार सौंपते समय किसीकी पिछली सेवाओ पर ध्यान देने की जरूरत नहीं है—फिर वे कितनी ही उज्ज्वल हो। एक शख्स के लिए—नहीं सौ आदमियो के लिए भी, देश-हित का त्याग न होना चाहिए। बल्कि देश-हित पर उसीको या उन्हींको कुरबान कर देना चाहिए—"त्यजेदेक कुलस्यार्थे"। मै महासमिति के सदस्यो से निवेदन करता हू कि वे एक दृढ़ उद्देश्य को लेकर, बिना पक्षपात और मिथ्या भावुकता एव भावनाओ के अधीन न होते हुए इस काम को हाथ में लें। मै आपको जताकर और चेताकर कहता हू कि मुझ पर अंध श्रद्धा न रखियेगा। किसी बात को इसलिए ठीक न मानियेगा कि मै उसे ठीक कहता हू। आपको खुद ही निर्णय करना चाहिए। आपको खुद अपने दिल का और क्षमता का अन्दाज मालूम कर लेना चाहिए। इतने दिनो के समागम से आपको यह तो मालूम हो ही गया होगा कि मै एक बेढब साथी हू और एक कड़ा काम लेनेवाला हूं। पर अब वे मुझे और भी ज्यादा सख्त पावेंगे।

"मैंने यह दलील पढी है कि खादी से स्वराज नहीं मिल सकता। यह पुरानी है। अगर हिन्दुस्तान को यूरोप के नफीस कपड़ो की—फिर वे चाहे मैंचेस्टर के बने हो चाहे बबई की मिलो के—चाह हो तो उसे करोड़ो भाई-बहनो के लिए स्वराज की बात का खयाल ही छोड़ देना चाहिए। अगर हमारा विश्वास चरखे के पैगाम पर हो तो हमें खुद चरखा कातना चाहिए; और मै दावे के साथ कहता हूं कि वे इसे बड़ा उत्साहजनक काम पावेंगे। अगर हम शान्तिमय उपायो से, और इसलिए शान्तिमय ढग के द्वारा, स्वराज लेना चाहते है तो हमें शान्तिमय वायु-मण्डल तैयार किये बिना चारा नहीं। अगर हम हजारो की भीड़ में मनमाने व्याख्यान झाड़ने के बदले उनके अन्दर चरखा कातकर उन्हे दिखावें, तो अभीष्ट शान्तिमय वायु-मण्डल तैयार हो जायगा। अगर मुझसे हो सके तो मै तो महासभा-संस्थाओ के हरेक सदस्य का मुह बन्द कर दूं—हां, मेरा और शायद शौकतअली

३०-६-२४, अहमदावाद (आश्रम)

अनसूया बहन के यहा १२ वजे तक वर्किग कमेटी की वैठक हुई। वही पर भोजन व आराम। तीन वजे से फिर वर्किग कमेटी शुरू हुई।

१-७-२४, सावरमती-आश्रम

खद्दर-वोर्ड की मीटिंग।

वर्किग कमेटी का काम शुरू हुआ। वापू ने अपने चारो प्रस्ताव पेश किये। अत मे चौथा स्वीकार हुआ।

मौलाना मुहम्मद अली से वोलचाल हो गई।

२-७-२४, साबरमती-आश्रम

खद्दर-वोर्ड की मीटिंग। आज के प्रस्ताव पर चर्चा। वाद मे स्टोर, तथा सेल्समैन का कार्य शुरु करने आदि के सवध मे विचार। प्रार्थना। किशोरलाल भाई के यहा भोजन।

बापू के पत्रो का विवरण

		सन् १९१९	१९२२	१९२४	आज
१	यग इडिया	१२००	२४०००	२६००	८०००
२	गुजराती नवजीवन	६०००	३००००	६२००	९५००
३	हिंदी नवजीवन	—	११५००	१२००	३०००

का नही—जबतक कि स्वराज न मिल जाय, और उसे चरखे में लगा दू या किसी कताई के क्षेत्र का काम सौप दू। अगर चुपचाप अपना काम करने वाला चरखा हमारे अन्दर श्रद्धा, साहस और आशा पैदा नही कर सकता, तो सदस्यो को चाहिए कि वे ऐसा साफ-साफ कह दें।

"दूसरे और तीसरे प्रस्ताव को पहले प्रस्ताव का पूरक समझिये।

"चौथे प्रस्ताव के द्वारा हमारी अहिसात्मक नीति की जाच होगी। मै गोपीनाथ साहा-सबधी प्रस्ताव पर देशबन्धु दास का वक्तव्य पढ चुका हू। पर उससे पिछले सप्ताह में कही मेरी वात पर कुछ असर नही होता। जब तक महासभा अपने वर्तमान ध्येय पर कायम है और उसे मानती है, तबतक मेरे तजवीज किये इस प्रस्ताव में समझौते की कोई सूरत नहीं है।"

मोहनदास करमचद गाधी

३-७-२४, सावरमती-आश्रम

प्रार्थना मे वापू ने चौथे नवर के प्रस्ताव का विवेचन किया। उनके साथ घूमने गया। घूमते समय वाते। वाद मे पू० वापूजी से 'गाधी-सेवा-सघ' के वारे मे वहुत देर तक विचार-विनिमय होता रहा। श्री राजगोपालाचारी व राजेन्द्रवावू मौजूद थे। सघ के प्रस्ताव, उद्देश्य-नियम आदि तैयार किये गए। श्री राजगोपालाचारी व महात्माजी को दिखाकर उनकी नकल की गई।

४-७-२४, सावरमती-आश्रम

प्रार्थना के वाद वापू से वाते। वापू ने जो कहा था कि १८ महीनो के वाद उनका शरीर नही रहेगा, उसका खुलासा किया। अपनी मानसिक स्थिति के वारे मे विचार। वापू से आश्रम के वजट पर चर्चा। खादी-मडल-सवधी वाते। चरखा काता।

५-७-२४, आश्रम

प्रार्थना के वाद वापू से ट्रस्ट के वारे मे चर्चा। उनके साथ घूमना तथा विचार-विनिमय। कार्य करने का निश्चय।

३१-७-२४, वम्वई

रामनारायणजी के वगले पर गये। रामनिवास की माताजी ने दस हजार रुपये के वार-त्राड 'हिन्दी-प्रचार' या महात्माजी की इच्छा के मुताविक किसी कार्य मे लगाने का स्वीकार किया।

१-८-२४, सावरमती-आश्रम

गुजरात-मेल से अहमदावाद पहुचे। वेलगाववाला साथ मे थे।

शकरलालभाई वैकर के साथ आश्रम तथा खादी-वोर्ड की चर्चा।

वापू से वाते। राष्ट्रीय शिक्षण-परिषद मे वापू के साथ गये। वापू का भाषण मनन करने योग्य हुआ।

खादी-वोर्ड की वैठक मे गया। वापू के साथ आश्रम-सवधी वातचीत का खुलासा हुआ। प्रार्थना की।

२-८-२४, सावरमती-आश्रम

सुवह प्रार्थना मे। वापू का प्रवचन।

छगनलालभाई के साथ मकान की जगह देखने गये। विद्यालय की प्रार्थना मे।

खादी-बोर्ड की बैठक। गुजरात खादी-भडार बम्बई का, अच्छी स्थिति मे जो माल हो, वह खरीद-कीमत पर रेल-खर्च चढाकर २० टके कम से लेने का निश्चय हुआ—बापूजी व वल्लभभाई के साथ। छ महीने के अन्दर रकम देना तय हुआ।

१९-९-२४, वर्धा से दिल्ली

दिन-भर करीब-करीब रेल मे ही बीता। रात मे ८-३० बजे दिल्ली पहुचे। सीधे बापूजी के दर्शन करने के लिए मौ० मुहम्मद अली के मकान पर गये।

२३-९-२४, दिल्ली

नेताओ की एकता-कान्फ्रेस आज के लिए नियत की गई थी। परन्तु कुछ लोगो का आज पहुचना असम्भव था, इसलिए २६ तारीख के वास्ते कान्फ्रेस बढा दी गई।

२२-११-२४, बम्बई

खादी-बोर्ड की बैठक हुई। ऑल इडिया काग्रेस कमेटी की भी बैठक हुई। बी अम्मा के लिए चोपाटी पर जाहिरा सभा हुई। बापूजी बोले। मै भी बोला।

५-१२-२४, अमृतसर-लाहौर

पू० महात्माजी के साथ अमृतसर गया। अकाली-दमन की जाच का कार्यक्रम निश्चय हुआ। कमेटी मे डॉ० किचलू, सी० आर० रेड्डी, ख्वाजा गाजी अब्दुल रहमान और मेरा नाम था।

डायरी के अंश

१९२५

१०-२-२५, साबरमती-आश्रम

सुबह ४ बजे प्रार्थना में। बापू ने कोहाट के बारे में मुसलमानों के द्वेष आदि की चर्चा की और विशेष प्रेम व नम्रता से इनकी सेवा करने का अपना इरादा बतलाया। अंग्रेज-जाति का उदाहरण दिया।

राजकोट के ठाकुरसाहेब का बापू के स्वागत का कार्यक्रम देखने योग्य था। बापूजी के साथ खुलासा बातें हुईं।

१ वर्धा में मारवाड़ी राष्ट्रीय विद्यालय खोलने का विचार उन्होंने पसन्द किया।

२ श्री पुणतांबेकर को ही अधिष्ठाता बनाने की सलाह। वेतन दो सौ रुपये तक, विशेष परिस्थिति समझकर, देना चाहिए, ऐसा उनका मत था।

३ श्री अप्पासाहब को रत्नागिरि में ही प्रयत्न करना चाहिए, ऐसी इच्छा बताई।

४ श्री पुरुषोत्तम सिन्धवाले के बारे में व श्री कृष्णदास के बारे में अपनी पसंदगी बतलाई।

नही गया। चुगी-चौकी तक पैदल गया, वापू के साथ वाते। नीचे लिखी वातो की जाच करने का कहा—

१ भरुचा के पत्रो का उत्तर। लालजी व शान्ता को पत्र।

२ वालचन्द कोठारी को पुन पत्र।

३ वम्वई अत्यज-पत्र की तलाश करके रखना।

४ ठीक हो तो १०००) रु० की मदद करना।

५ जामिया यूनिवर्सिटी, अलीगढ को सहायता।

६ मौ० अवुलकलाम आजाद के खर्चे के वारे मे।

७ श्री पुरुषोत्तम सिन्धवालो से वाते व सहायता। पगार ७५), कर्ज की व्यवस्था, काम करे तो।

१२-२-२५, आश्रम

श्री देवदास गाधी से वापू-परिवार के वारे मे वाते।

१४-२-२५, आश्रम

पूज्य वापू के साथ वाते। श्री पुणतावेकर और वापू के साथ खुलासेवार वाते। पुणतावेकर ने वर्धा मारवाडी महाविद्यालय मे २०० रु० मासिक पर रहना स्वीकार कर लिया।

२४-२-२५, पालीताना

श्री ठाकुरसाहव नामदार वहादुरसिहजी (पालीताणा) से मिले। वहुत ही सज्जन पुरुष मालूम हुए। उन्होने खादी और महात्माजी पर पूरी श्रद्धा दिखाई।

२५-२-२५, आश्रम

वल्लभभाई के पुत्र डाह्याभाई का विवाह यशोदादेवी के साथ हुआ। पू० वापू ने कन्या की प्रतिज्ञा गुजराती मे, कन्या के द्वारा, शास्त्र-विधि के अनुसार, कराई। विवाह के कारण प्रार्थना जल्दी हुई। बापूजी ने आश्रम मे विवाह करने का कारण समझाया।

४-३-२५, आश्रम

पू० बापू गुजरात-मेल से आये। नवजीवन-कार्यालय मे प्रेस तथा पत्रो के सवध मे विचार। वापूजी ने स्वामी आनद के कहने से हिन्दी 'नवजीवन' चालू रखने को कहा। १॥। वजे आश्रम आया।

आज श्री ग्रेग और दो अमेरिकन महिलाए घर पर भोजन करने आई। उनके साथ पाच-सात आदमी और भी थे ।

२१-४-२५, आश्रम

सुबह प्रार्थना । पूज्य बापूजी से बाते ।

शकरलालभाई से खादी-कार्य के सबध मे बाते । आध्र, राजपूताना, उडीसा आदि प्रान्तो के काम के बारे मे समझाया ।

पूज्य बापू से खादी-कार्य के सम्बन्ध मे सलाह । शाम को प्रार्थना ।

२२-४-२५, साबरमती

सुबह प्रार्थना । पू० बापूजी से बाते ।

बा को माता का नाम लेकर दु ख पहुचाने की जिस व्यक्ति ने कोशिश की, उसके बारे मे बापू ने हृदय के भाव बताये। रोमाच हुआ। श्रद्धा बढी।

खादी-बोर्ड की सभा मे ।

बापू आज तीथल गये, बलसाड होकर ।

२८-४-२५, बम्बई

पू० महात्माजी से गो-रक्षण-कार्य के सबध मे मिले। रात को माधोबाग मे गो-रक्षण के सबध मे आम सभा हुई। पूज्य बापू का भाषण अच्छा था।

२९-४-२५, बम्बई

श्री मथुरादास त्रिकमजी की माता गुजर गईं। पू० महात्माजी के साथ मातमपुरसी के लिए गया ।

बापूजी नागपुर-मेल से कलकत्ता गये।

३-६-२५, आबू

आज दो हजार गज सूत कातने का विचार किया था, परन्तु पत्र-व्यवहार मे लग जाने से और बापू को भी पत्र लिखवाने मे मदद देने से १८०० गज के लगभग कात सका। और कातने का विचार था, पर मित्रो ने आराम लेने का आग्रह किया। कल सुबह जल्दी उठकर २०० गज पूरा करने का तय किया ।

१५-७-२५, कलकत्ता

दानीजी के यहा पू० बापूजी से मिला ।

श्रीमती वसन्तीदेवी, मोतीलालजी नेहरू, जवाहरलालजी आदि से बात-चीत ।

१९-७-२५, कलकत्ता

महात्माजी बगाल-प्रातीय अग्रवाल सभा मे २॥ बजे आये । उपस्थिति ठीक थी । सामाजिक सुधार पर महात्माजी का जोरदार तथा विचारणीय व्याख्यान हुआ ।

२०-७-२५, कलकत्ता

महात्माजी के पास रहा ।

डॉ० पी० सी० राय के यहा जवाहरलाल नेहरू के साथ गया । उनके हस्ताक्षर कराये । अखिल भारतीय देशबधु दास मेमोरियल के सबध मे बाते । उनके प्रेमल अनुभव हुए ।

जवाहरलालजी अहमदाबाद गये । प० मोतीलालजी से खानगी तथा सार्वजनिक बाते ।

२१-७-२५, कलकत्ता (अतराई)

महात्माजी के पास रहा ।

हरीलाल गाधी से थोडी बाते ।

५-८-२५, शातिनिकेतन

श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर के यहा प्रार्थना, भजन ।

श्री द्विजेन्द्रनाथ टैगोर (बडो दादा) से बाते । पू० बापूजी के प्रति बहुत ही श्रद्धा व भक्ति प्रकट की । उनकी पद्धति से अवश्य सफलता प्राप्त होगी, ऐसा भी कहा ।

डायरी के अंश

१९२८

२७-१-२८, साबरमती-आश्रम

निर्मला के साथ रामदास गाधी का विवाह हुआ ।

३-२-२८, आश्रम

अहमदाबाद मे साइमन-कमीशन के बहिष्कार को लेकर हडताल ठीक रही ।

५-२-२८, आश्रम

पूज्य बापूजी को आश्रम-विद्यालय के उत्सव मे करीब ६। बजे एकाएक मूर्च्छा आ गई ।

८-२-२८, आश्रम

बापूजी से उनके स्वास्थ्य के सम्बन्ध मे सतोपकारक निर्णय कराया ।

१२-२-२८, आश्रम

पूज्य बापूजी की डॉक्टरो ने जाच की । वजन ९७ पौण्ड । स्वास्थ्य ठीक मालूम हुआ ।

२४-४-२८, कलकत्ता

मगनलालभाई (गाधी) का पटना मे कल २३ तारीख को स्वर्गवास हो गया । समाचार जानकर दु ख और चिन्ता हुई ।

गुजरातियो की तरफ से मगनलालभाई के निमित्त आचार्य राय की प्रमुखता मे शोक-सभा हुई ।

२५-४-२८, पटना

चि० कृष्णदास के साथ पटना पहुचा । चि० राधा बहुत व्याकुल हो रही थी । उसे समझाया ।

पू० मगनलालभाई के दाह-स्थल पर गया । स्नान, तिलाजलि, प्रदक्षिणा आदि की ।

दोपहर की गाडी से चि० राधा व कृष्णदास को आश्रम रवाना किया।

२२-५-२८, साबरमती-आश्रम

पू० बापूजी को अपनी मनोदशा, खासकर ब्रह्मचर्य-सबधी, शुरु से लगाकर आज तक की, जो लिख रखी थी, पढकर सविस्तर सुनाई। उसपर पूज्य बापूजी का कहना था कि जिस प्रकार आश्रम के साथ तुम्हारा सबध है, उसी प्रकार रखने मे तो कोई हर्ज ही नही है।

८-६-२८, बबई-लोनावला

पूज्य मालवीयजी से बारडोली के सबध मे बातचीत।

२०-६-२८, आश्रम

पूज्य बापूजी, वल्लभभाई, पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास, लालजी-नारायणजी के साथ बारडोली-सम्बन्धी चर्चा मे भाग लिया।

१९-७-२८, वर्धा

आज श्री लक्ष्मीनारायण मदिर अस्पृश्य लोगो के लिए खोल दिया गया। सुबह से लगाकर रात १० बजे तक मदिर मे जनता का व्यवहार बहुत ही सतोषप्रद व उत्साहजनक रहा।

मदिर को खोलते समय का पू० विनोबा का भाषण भावपूर्ण और बोध-प्रद था। श्री पराजपेजी का हरि-कीर्तन भी ठीक रहा। परमात्मा की शक्ति मे श्रद्धा और विश्वास विशेष बढा।

११-८-२८, बनारस

पूज्य मालवीयजी के हाथ से हिन्दू-विश्वविद्यालय मे खादी-भडार खोला गया।

२२-८-२८, पूना

हिन्दू-सभा की ओर से डॉ० भोपटकर की अध्यक्षता मे अस्पृश्यो के लिए श्री लक्ष्मीनारायण-मदिर खोला गया।

९-११-२८, साबरमती-आश्रम

चर्खा-सघ के विधान मे सुधार करने का मसविदा पू० बापूजी को देखने को दिया।

१७-११-२८, वर्धा

वर्धा-स्टेशन पर पू० लालाजी (लाजपतराय) के स्वर्गवास के समाचार मिले। चिंता हुई।

२९-११-२८, वर्धा

पू० गाधीजी ने लालाजी की तेरहवी के निमित्त आश्रम मे विद्यार्थियो के बीच व गाव की जाहिर सभा मे भाषण किया। श्री घनश्यामदासजी भी अच्छा वोले।

३१-१२-२८, कलकत्ता

आज रात १ बजे काग्रेस के खुले अधिवेशन मे पू० महात्माजी का एक वर्ष की मोहलतवाला प्रस्ताव पास हुआ।

डायरी के अंश

१९२९

२७-३-२९, दिल्ली

मथुरा से दिल्ली तक पू० महात्माजी के साथ आये। बापू से श्री छगनलालभाई गांधी के बारे मे बाते कर ली। सतोप हुआ। बापू से और भी बाते हुई।

दिल्ली मे वर्किंग कमेटी का कार्य हुआ।

२८-३-२९, दिल्ली

सवेरे वर्किंग कमेटी का काम पडित मोतीलालजी के यहा हुआ। १०-३० बजे तक।

३-४-२९, साबरमती-आश्रम

२-३० से ५ बजे तक चरखा-सघ की मीटिंग पू० बापूजी के सामने होती रही।

४-४-२९, आश्रम

पू० बापूजी से बाते। पू० मगनलालभाई की लडकी चि० रुक्मिणी का सबध चि० बनारसीलाल बजाज के साथ करने के बारे मे खूब विचार-विनिमय। खुलासे के बाद पू० बापूजी ने व घरवालो ने निश्चय किया।

श्री वल्लभभाई के यहा 'गाधी-सेवा-सघ' की बैठक, वही पर भोजन। राजेन्द्रबाबू, राजगोपालाचारीजी, गगाधरराव आदि के साथ बाते।

६-४-२९, आश्रम

आज आश्रम मे राष्ट्रीय दिवस मनाया गया। राजगोपालाचारीजी का अग्रेजी मे सुन्दर भाषण हुआ। अग्रेजी का हिन्दी मे अनुवाद मैने किया।

७-४-२९, आश्रम

आज शाम की प्रार्थना मे 'नवजीवन' मे से बापू का लेख 'मेरा दु ख, मेरी शर्म' पढकर सुनाया गया। सुनकर हृदय मे खूब दु ख हुआ।

आज 'बायकाट-दिन' होने के कारण शहर मे नदी-किनारे सभा हुई। मुझे सभापति बनना पडा ।

आश्रम मे होली मनाई ।

२३-५-२९, बम्बई

चरखा-सघ की मीटिग सुबह ८ वजे पू० बापूजी के यहा हुई । भोजन के बाद शाम को फिर बापूजी की उपस्थिति मे चरखा-सघ की मीटिग का कार्य हुआ ।

२४-५-२९, बम्बई

शाम को ४-३० बजे काग्रेस-हाउस मे ऑल इडिया काग्रेस कमेटी की बैठक हुई। बापूजी नही आये थे। दिन मे ११-३० बजे से काग्रेस वर्किग कमेटी की बैठक पू० बापूजी के स्थान पर हुई ।

११-८-२९, बम्बई

पू० महात्माजी आज यहा थे। उनके पास ही ज्यादा रहना हुआ। उनके स्वास्थ्य के सबध मे उनसे थोडा लडना पडा। वह गुजरात-मेल से अहमदाबाद गये ।

१७-८-२९, पूना

वम्वई से टेलीफोन आया कि सावरमती से तार द्वारा पू० वापूजी के स्वास्थ्य के नरम होने की खवर मिली है। चिन्ता हुई। रात की गाडी से जाने का निश्चय किया ।

१८-८-२९, बम्बई

पूना से सवेरे बम्बई पहुचा। पू० वापूजी का स्वास्थ्य सुधर रहा है, यह जानकर चिन्ता कम हुई। डॉ० जीवराज मेहता से पू० वापूजी के स्वास्थ्य के सबध मे वाते ।

२०-८-२९, सावरमती-आश्रम

पू० वापूजी की तवीयत देखी। थोडी देर बाते भी की। वल्लभभाई आये। उनकी पू० वापूजी से बाते। डॉ० देसाई से पू० वापूजी के स्वास्थ्य के सबध मे चर्चा।

२१-८-२९, आश्रम

जैसा मेरी समझ मे आया, वैसा पजाब का इतिहास पू० वापूजी को वतलाया ।

चरखा-सघ की बैठक मे महत्व का काम खतम हुआ।

२३-८-२९, पूना

स्वामी आनन्द ने आज के 'टाइम्स' की खबर पर से मेरा इटरव्यू लिया। मसविदा बापूजी को देखने के लिए भेजा।

२८-८-२९, साबरमती-आश्रम

पू० बापूजी से स्वास्थ्य, भ्रमण-सबधी आदि बाते। भोजन के बाद बापूजी से फिर बाते। उन्होने कहा कि डॉक्टर की सलाह स्वीकार है।

२९-८-२९, आश्रम

भोजन-बाद पू० बापूजी ने दिनभर प्राय मिल-मालिक व मजदूरो के झगडे के निपटारे मे अपनी शक्ति लगाई।

पू० बापूजी से चि० बनारसी के सबध आदि की बाते। रात मे जवाहरलालजी आदि आये।

३०-८-२९, आश्रम

जवाहरलालजी से करीब एक घटा पू० बापूजी के भ्रमण-सबधी बाते। फोटो देखे। जवाहरलालजी व बापूजी की बाते। बापूजी से चर्चा।

२-९-२९, राजकोट

सर प्रभाशकर पट्टणी से मिलने गया। देशी राज्य प्रजा-परिषद के बारे मे दो घटे से भी ज्यादा बाते।

कठियावाड युवक-कान्फ्रेस मे बोलना पडा। वहा की कार्रवाई से थोडा असतोष हुआ।

३-९-२९, साबरमती-आश्रम

पू० बापूजी से सर प्रभाशकर पट्टणी, शुक्ल, सरलादेवी, अम्बालाल तथा कान्फ्रेस-सबधी बाते।

४-९-२९, आश्रम

पू० बापूजी ने कहा कि जवाहरलाल से काग्रेस-सभापति के सबध मे खुलकर चर्चा करना। इसके मुताबिक जवाहरलालजी से खूब बाते हुई, बाद मे पू० बापूजी के साथ भी बाते हुई।

५-९-२९, साबरमती

पू० बापूजी से जयसुखलालभाई की लडकी उमिया की सगाई के सबध मे बाते। बापूजी ने जल्दी करने को कहा।

देशी रियासतो मे रचनात्मक कार्य के साथ-साथ बापूजी की रीति-नीति के अनुसार थोडा राजनैतिक कार्य करने के सबध मे चर्चा ।

६-९-२९, आश्रम

पू० महात्माजी ने देशी राज्य प्रजा-परिपद का विधान बनाकर दिया । उसपर चर्चा । विधान ठीक मालूम हुआ । आज सुबह रुई धुनकर और पूनी वनाकर श्री मीराबहन को दी । पू० बापूजी के लिए यात्रा की व्यवस्था ।

७-९-२९, बम्बई

दादर मे उतरकर, माटुगा मे स्नान करके विले-पारले गये । वहा 'भगिनी-समाज' के मकान के शिलारोपण का मुहूर्त था । पू० बापूजी पाच मिनट बोले, पर बडा सुन्दर बोले ।

लाहौर-ऐक्सप्रेस से पू० बापूजी के साथ भोपाल रवाना ।

८-९-२९, भोपाल

भोपाल मे डॉ० अन्सारी स्टेशन पर आय । भोपाल के बडे अफसर भी थे । भीड अच्छी थी । महल मे ठहरे । यहा सार्वजनिक सभा आदि करने के बारे मे जो कई प्रकार की कठिनाइया थी, वे दूर हुई ।

९-९-२९, भोपाल, (बापू का मौन-दिन)

पू० बापूजी के साथ सुबह पैदल घूमने गया । डॉ० अन्सारी की तथा और सब बाते रास्ते मे उन्हे बताई । नवाबसाहब से कोई दो घटे से ज्यादा मुलाकात हुई । बहुत साफ और दिल खोलकर बाते हुई । यहा खादी-कार्य का भविष्य ठीक मालूम होता है । पू० बापूजी को थैली अर्पण करने की व्यवस्था ।

शाम को प्रार्थना की व्यवस्था बाहर की, जिसमे सब शामिल हो सके ।

नवाबसाहब से पू० बापूजी की बहुत देर तक बातचीत होती रही । बाद मे जामिया की चर्चा हुई ।

१०-९-२९, भोपाल

सुबह पू० बापूजी के साथ साची व बुद्ध-स्तभ देखने गए । स्टेट की ओर से व्यवस्था की गई थी । श्री घोपाल ने अच्छी तरह दिखलाया । वही पर भोजन किया । बडा आनन्द आया ।

भोपाल मे सार्वजनिक सभा। श्री राजा अवधनारायण (फायनेंस मेम्बर) सभापति थे। सभा वहुत वडी हुई। भोपाल मे यह पहली आम सभा थी। पू० वापूजी अच्छा वोले।

प्रार्थना के वाद वापूजी से तीसरी वार नवावसाहव मिले। मोढ जाति के लोगो से मिलकर स्टेशन आये। आगरा के लिए रवाना।

११-९-२९, आगरा

पू० वापूजी व वा के साथ मोटर मे जमुना के तट पर गये। वहा के मकान मे ठहरे। व्यवस्था अच्छी थी।,श्री पालीवालजी तथा अन्य कार्यकर्ताओ से वाते।

श्री राजनाथजी कुजरू के साथ रावास्वामी-सप्रदाय का दयालवाग देखा। वहुत उन्नत सस्था व आदर्श आश्रम मालूम हुआ। डेरी, वोर्डिग आदि देखे। श्री साहेवजी महाराजजी से वाते।

रात को वडी भारी सार्वजनिक सभा हुई।

२-१०-२९, सीकर

शाम को पू० वापूजी की जयन्ती मनाई गई। श्री शकरलालभाई वैंकर सभापति थे। सभा ठीक हुई। वाद मे श्री शकरलालभाई से वहुत देर तक वातचीत होती रही।

१७-११-२९, प्रयाग

म्युनिसिपैलिटी व डिस्ट्रिक्ट कौसिल मे पू० वापूजी को मानपत्र दिया गया।

शाम को आम सभा मे महात्माजी को कोई तीस हजार की थैली भेट की गई।

काग्रेस वर्किग कमेटी की १ से ३ व ६॥ से ९ वजे तक वैठक हुई।

१८-११-२९, प्रयाग

पूज्य वापूजी के साथ घूमने गये। आज उनका मौन दिन था। मुझे जो कुछ कहना था, कहा।

वर्किग कमेटी शाम को देर तक चलती रही। लीडर्स सभा। रात को फिर वर्किग कमेटी चली। वाद मे लीडर्स सभा। रात मे दो वजे तक काम चलता रहा।

१९-११-२९, प्रयाग

पूज्य बापूजी से स्टेशन पर मिले ।

४-१२-२९, साबरमती-आश्रम

पू० महात्माजी से बाते ।

चि० शकरलाल व उमिया का विवाह ठीक तौर से हो गया ।

१३-१२-२९, वर्धा

पूज्य बापूजी से बाते ।

श्री तिजारे, पटवर्धन, धर्माधिकारी आदि आये । नागपुर-विद्यालय के सबध मे बापू से चर्चा व विचार-विनिमय । उनका निर्णय रहा कि अप्रैल से दो वर्ष तक कुछ शर्तो के साथ दो सौ रुपया सहायता दी जाय ।

१५-१२-२९, वर्धा

पूज्य बापूजी से बाते ।

१६-१२-२९, वर्धा

आज पूज्य बापू के साथ सभी मित्रो ने दोनो समय अपने यहा घर पर भोजन किया ।

मीराबहन व रेजीनॉल्ड रेनाल्ड्स नागपुर से रात को आये ।

२०-१२-२९, वर्धा

पूज्य बापूजी के साथ घूमते हुए आश्रम आया । बापूजी से बाते होती रही । बाद मे फिर स्वामी आनन्द के साथ पूज्य बापूजी के पास गया । पूज्य बापूजी ने जोर देकर कहा कि इन्हे अस्पृश्यता-कमेटी का मत्री बनाया जाय । स्वामी आनद से बहुत देर तक बाते हुई ।

२१-१२-२९, वर्धा

सुबह पू० बापूजी तथा उनके साथियो के साथ ग्राड ट्रक से दिल्ली रवाना । रास्ते मे बापूजी से बाते ।

बापूजी मदिर व खादी-भडार देखकर गये थे ।

२४-१२-२९, दिल्ली-लाहौर

दिल्ली-स्टेशन पर सरोजनी नायडू से बाते । पू० बापूजी ने वायसराय के साथ जिद करके भूल की, ऐसा उनका मत था ।

२९-१२-२९, लाहौर

विषय-समिति का काम चार वजे दोपहर तक होता रहा। सारी कार्रवाई देखकर विशेष उत्साह व आनन्द नही हुआ।

काग्रेस का अधिवेशन ५। बजे से ७।। तक हुआ। जवाहरलाल का भाषण साधारण ठीक था। डा० किचलू का भी ठीक था।

३०-१२-२९, लाहौर

विषय-समिति व ऑल इडिया काग्रेस कमेटी की बैठक रात मे बहुत देर तक होती रही। विषय-समिति का व्यवहार सतोषकारक नही मालूम हुआ।

३१-१२-२९, लाहौर

सर शादीलालजी के लडके व लडकी खादी पहनकर आये। उन्हे पू० बापूजी, मीराबहन, जवाहरलाल आदि से मिलाने के बाद प्रदर्शनी दिखलाई।

काग्रेस का काम दोपहर १ बजे से रात के १२। बजे तक होता रहा। रात को १२ बजे महात्माजी का पूर्ण स्वतत्रता का प्रस्ताव पास हुआ। १ बजे के अदाज निवास पर पहुचे।

डायरी के अंश

१९३०

३-१-३०, लाहौर

पं० जवाहरलालजी से बाते। उन्होने बताया कि पजाब-सरकार को बापूजी, मोतीलालजी व उनको (जवाहरलालजी को) गिरफ्तार करने की केन्द्रीय सरकार ने इजाजत नही दी।

१२-६-३०, नासिक रोड सैंट्रल जेल

बापूजी की गुजराती पुस्तक 'यरवडाना अनुभव' पढना शुरू किया।

१७-६-३०, सैंट्रल जेल

चरखा काता। पू० बापूजी की 'यरवडा-जेल के अनुभव' नाम की पुस्तक आज पूरी की।

८-७-३०, सैंट्रल जेल,

बापू का लिखा 'सर्वोदय' पढना शुरू किया।

१४-७-३०, सैंट्रल जेल

गाधी-माला मे से पू० बापूजी के आफ्रिका-जेल के अनुभव पढे। बाद मे रिचर्ड ग्रेग की लिखी Economics of Khaddar (खादी का अर्थशास्त्र) पढना शुरू किया।

१५-७-३०, सैंट्रल जेल

'गाधी-शिक्षण' का तेरहवा भाग पढा।

१०-८-३०, सैंट्रल जेल

आज पत्र लिखे। सी-वर्ग मे गया। बापूजी की टुकडी के लोग मगल को जानेवाले है। उन्हे डिसिप्लिन आदि के बारे मे तथा अखबारो मे खबर न छापने का महत्व समझाया। उन लोगो ने बडा विनोदी कार्यक्रम रखा था।

१२-८-३०, सैंट्रल जेल

आज सुबह सी-वर्ग मे से बापूजी के टुकडी के ४० सत्याग्रही छूटे। उनका दर्शन किया और उन्हे बिदा किया। उनके स्वागत के लिए गाव मे से बाजा वगैरा आया था।

१३-८-३०, सैंट्रल जेल

आज 'टाइम्स' मे गाधी कैंप व राष्ट्रीय झडे के बारे मे सपादकीय लेख अच्छा था।

१६-८-३०, सैंट्रल जेल

आश्रम का विद्यार्थी तनसुख आज छूटा। इसके हाथ पू० बापूजी के लिए तकली व जगरामजी अग्रवाल की बनाई सूत की माला भेजी।

पू० बापूजी का गोमतीबहन के नाम का पत्र पढा।

१७-८-३०, नासिक रोड सैंट्रल जेल

आज व्रत रखा। बापूजी की अनुवाद की हुई 'अनासक्तियोग' मे से गीता के १८ वे अध्याय का पाठ किया।

१९-९-३०, धुलिया-जेल

देशी तिथि के अनुसार आज बापूजी का जन्मदिन 'चरखा बारस' है। पू० बापूजी को ६१ वर्ष पूरे हुए और ६२वा वर्ष लगा। प्रार्थना की। 'वैष्णव जन' भजन गाया। आज का प्रोग्राम सुबह तीन बजे से शुरू हुआ। साढे दस घटो मे २५६० तार, याने ३४१३ गज सूत रात के ११-३० बजे तक खतम किया। बीच मे सूत उतारने आदि मे जो समय लगा सो अलग। शाम को प्रार्थना के बाद भजन। जेल के साथियो ने बापूजी-सबधी लिखे लेख पढे और आनन्द मनाया।

२-१०-३०, धुलिया-जेल

अग्रेजी तिथि से आज पू० बापूजी का जन्म-दिन है। सुबह ५ बजे प्रार्थना करने के बाद गाधी-शिक्षण मे से पू० गाधीजी के 'अगत विचार' मे से कुछ अश पढा। सब साथियो ने एक घटा कताई की। रात को प्रार्थना के बाद एक घटे तक बापूजी की जीवनी मे से पढा गया।

७-१०-३०, धुलिया-जेल

पू० बापूजी का जानकीदेवी के नाम लिखा छोटा-सा स्नेह-भरा पत्र पढकर सुख हुआ।

१६-१०-३०, धुलिया-जेल

श्री नारायणदासभाई का पत्र आया। साथ मे 'सर्वधर्म-समभाव' पर ता० २३-९-३० को बापूजी ने यरवडा-जेल से जो विचार लिख भेजे, वह तथा ३०-९ को 'सर्वधर्म-समभाव' नामक लेख के सबध मे जो पत्र भेजा, वह पढा। बडा सुख मिला।

२२-१०-३०, धुलिया-जेल

पू० बापूजी की आत्मकथा का पहला खड पढना शुरू किया। रात मे एक घटा तक पढता रहा।

२७-१०-३०, धुलिया-जेल

दिन मे बापूकी आत्म-कथा पढता रहा।

३१-१०-३०, धुलिया-जेल

पू० बापूजी की 'आत्मकथा' का प्रथम खड पूरा हुआ।

२९-११-३०, धुलिया-जेल

आज बापूजी की 'आत्मकथा' का दूसरा भाग पूरा कर दिया।

१-१२-३०, धुलिया-जेल

आज गीता-जयन्ती होने के कारण पू० बापूजी का लिखा 'अनासक्ति-योग' पूरा पढ डाला।

७-१२-३०, धुलिया-जेल

अखबार पढे। महादेवभाई को ६ महीने की सख्त कैद व २५०) जुरमाना हुआ, जुरमाना न देने पर डेढ महीने की सजा और।

बबई मे ५ ता० को 'गाधी-दिवस' के निमित्त हुई सभा व जुलूस में लाठी-चार्ज व गिरफ्तारी हुई। लाठी-चार्ज मे २५० आदमी जख्मी हुए।

डायरी के अंश

१९३२

२-१-३२, बम्बई

श्री राजगोपालाचारीजी से बाते। उनकी पुत्री चि० लक्ष्मी का सम्बन्ध देवदास से आज निश्चित हुआ।

पू० बापूजी से बाते। वर्धा रहने व अस्पृश्यता-आदि के कार्य के बारे मे चर्चा।

४-१-३२, बम्बई

सुबह मणिलाल कोठारी ४ बजे के करीब आये। उन्होने बताया कि पू० बापूजी व वल्लभभाई को सुबह ३-१५ पर गिरफ्तार कर लिया गया। सन् १८२७ के बम्बई रेग्युलेशन स० ९५ के अनुसार नजरबद करके दोनो को यरवडा ले गए। मैंने अपनी भी जेल जाने की तैयारी कर ली। कार्यकर्त्ताओ व इष्ट-मित्रो से बातचीत तथा विचार-विनिमय।

१५-१-३२, बम्बई

बिडला-हाउस मे पू० मालवीयजी के पास ठहरा। पू० मालवीयजी से बाते। वर्किंग कमेटी का हाल पू० बापूजी की मन स्थिति व उनके वाइसराय से हुए तार-व्यवहार और वर्किंग कमेटी के प्रस्ताव उनको बताये। उनके विचारो मे परिवर्तन हुआ।

पू० मालवीयजी व माडरेट नेताओ की कान्फ्रेंस हुई। सर कावसजी से बोलचाल हो गई। दु ख हुआ।

१०-३-३२, धुलिया-जेल

पू० कस्तूरबा, चि० शान्ति वगैरा मुलाकात को आये। सुपरिटेंडेट ने मिलने की परवानगी नही दी, इस कारण सुबह मुलाकात नही हुई। शाम को शाति मिलने आई।

२-४-३२, धुलिया-जेल

पू० बापूजी का पत्र आज विसापुर होकर यहा आया। पढा। रात में ही पू० बापूजी को पत्र लिखकर रखा।

२८-४-३२, धुलिया-जेल

पू० बापू का दूसरा पत्र आया। उसपर विनोबा से खूब चर्चा हुई। दूध लेने के सबध मे विनोबा का सतोषजनक उत्तर।

३-५-३२, धुलिया-जेल

पू० मालवीयजी आदि छूट गए। गाधीजी के छूटने की मित्रो को आशा होने लगी। सरोजिनीदेवी के छूटने की खबर सुनी। विश्वास नही हुआ।

८-५-३२, धुलिया-जेल

बापू के प्रति मीराबहन की सगुण भक्ति है व विनोबा की निर्गुण। मैने यह विनोबा को बताया, तो उन्होने यह स्वीकार किया।

१९-५-३२, धुलिया-जेल

रात मे नीद देर से आई। टालस्टाय की कहानी व तुलसी-रामायण, काग्रेस-सगठन, पू० बापू के मत्री, फादर ऐल्विन व एड्रूज सरीखे सहायक आदि के विचार आते रहे।

१०-७-३२, धुलिया-जेल

विनोबा के छात्र व मराठी प्रकाशन-विभाग के सचालक भाउ पानसे को बापूजी ने गीता के ध्यान के बारे मे पत्र लिखा[1]। उसकी नकल की।

२४-८-३२, धुलिया-जेल

लदन मे बापूजी का जो भाषण रेकार्ड हुआ था, वह सुना। सुन्दर था।

१४-९-३२, धुलिया-जेल

भोजन के बाद आराम के समय मणिभाई कोठारी व गुलजारीलाल नदा की घबडाहटभरी आवाज सुनी। बापू के ता० २० से आमरण उपवास की खबर से गुलजारीलाल एकदम फूट-फूटकर रोने लगे। मेरे मन मे थोडा विचार आया। बाद मे सब मित्रो को समझाया।

---

[1] देखिये 'महादेवभाई की डायरी', भाग १ (नवजीवन प्रकाशन मंदिर द्वारा प्रकाशित)

बापू-होर ११ मार्च, होर-बापू १३ अप्रैल, बापू-मैकडानल्ड १८ अगस्त, मैकडानल्ड-बापू ८ सितवर और बापू-मैकडानल्ड ९ सितम्बर के तार पढे ।

१७-९-३२, धुलिया-जेल

रानडे, देव व चन्द्र राय को अस्पृश्यता-निवारण की दृष्टि से व बापू के उपवास के कारण, वर्तमान परिस्थिति मे उसका क्या धर्म है, यह समझा-कर बताया ।

२०-९-३२ धुलिया-जेल

गाधीजी के उपवास के लिए सब राजनैतिक कैदियो ने बहुत ही शान्ति, गभीरता व भावना से प्रार्थना की । श्री मणिभाई कोठारी व मुशीजी के सुन्दर प्रवचन हुए ।

२१-९-३२, धुलिया-जेल

आज बापू के उपवास का दूसरा दिन है ।

२२-९-३२, धुलिया-जेल

बापू के उपवास का आज तीसरा दिन है । बापू के समाचार मालूम हुए । जेलर ने बुलाया । अस्पृश्यो के बारे मे जो प्रश्न-उत्तर भेजा, वह बतलाया ।

प्रताप सेठ मिलने आये । महात्माजी का उपवास, मिल-मजदूर तथा स्वास्थ्य आदि के सबध मे बातें । भविष्य के बारे मे कहा ।

बापू के उपवास का चौथा दिन ।

२३-९-३२, धुलिया-जेल

हिगणघाट मे एक मदिर व वर्धा तालुके मे तीन मदिर हरिजनो के लिए खुले ।

२४-९-३२, धुलिया-जेल

बापू के उपवास का पाचवा दिन । 'गाधी-विचार-दोहन' पढा ।

पू० बापू ने यरवडा-जेल से २१ ता० को मेरे व मणिभाई के नाम जो पत्र भेजा था, वह आज मिला । पढकर अपनी योग्यता व जवाबदारी का विचार आया । परमात्मा से प्रार्थना । बापू का प्रेम । अस्पृश्यता-सबधी समझौता जल्दी होने की आशा है, ऐसा समाचार मिला ।

२६-९-३२, धुलिया-जेल

'गाधी-विचार-दोहन' पढा ।

बापू की प्रतिज्ञा पूरी हुई । शाम को ५। बजे उपवास पूर्ण हुआ ।

वर्धा का राममदिर हरिजनो के लिए खुलने का तार आया ।

प्रधान मत्री ने पूना-समझौता स्वीकार कर लिया ।

बम्बई का १ बजे का तार यहा १-३५ को मिल गया । उपवास-समाप्ति का राजाजी का नीचे लिखे आशय का तार मिला—

'सोमवार सवा पाच बजे बापू ने उपवास समाप्त किया । टैगोर ने प्रार्थना कराई । बा ने फलो का रस दिया ।

रूपरानी व कमला नेहरू, आश्रम के बच्चे तथा दूसरे उपस्थित थे ।'

२७-९-३२, धुलिया-जेल

बापू की तबीयत के बारे मे चिन्ता । कलेक्टर से मैने कहा कि अस्पृश्यता-निवारण की दृष्टि से हरिजनो के लिए मदिर वगैरा यहा भी खुलने चाहिए । उन्होने इस सम्बन्ध मे उद्योग करने का स्वीकार किया ।

बापू का जन्मदिन, देशी तिथि से चरखा-द्वादशी । आज बापू को ६३ वर्ष पूरे हुए और ६४वा वर्ष लगा । चार चरखे व तकलिया अखड चली । मेरे जिम्मे चार घटे चरखा कातना आया ।

पू० बापू को सुबह जो पत्र लिखा था, वह आज शाम को भेज दिया । बापू का स्वास्थ्य सुधर रहा है, यह जानकर सुख मिला ।

२९-९-३२, धुलिया-जेल

मणिभाई कोठारी वगैरा ने कहा कि बापू तीन तारीख से पहले छूट जायगे । स्थिति आशाजनक लगती है ।

४। से ५ तक बापू-सप्ताह निमित्त चरखा चलाया ।

३०-९-३२, धुलिया-जेल

रामेश्वरदास मिला । जानकी के नाम लिखे बापू के पत्र की नकल बताई । बडा सुन्दर पत्र है ।

बापू-सप्ताह निमित्त चरखा काता ।

२-१०-३२, धुलिया-जेल

अग्रेजी तारीख के हिसाब से आज बापू का जन्मदिन है ।

३-१०-३२, धुलिया-जेल

बापू ने जानकी को जो पत्र लिखा, उसका उर्दू मे अनुवाद किया।

४-१०-३२, धुलिया-जेल

बालको ने आज गाधी-सप्ताह पूरा किया। भजन, प्रार्थना आदि मे शामिल हुआ। प्रसाद बाटा। सीताराम शास्त्री ने बापू के आगामी जन्म-दिन तक १२ मदिर खुलवाने का सकल्प किया।

२-११-३२, धुलिया-जेल

यरवदा-मदिर से मेरे स्वास्थ्य के बारे मे पू० बापू का तार आया। उसका जवाब तैयार किया।

३-११-३२, धुलिया-जेल

मेरे स्वास्थ्य के बारे मे कल पू० बापू का जो तार आया था, उसपर सुपरिंटेडेट से विस्तृत विचार-विनिमय के बाद उसका जवाब तार से भेज दिया। तार भेजने के बाद डॉ० मोदी की जो राय आई, वह सुपरिंटेडेट को बतलाई।

४-११-३२, धुलिया-जेल

बापूजी को विस्तार से पत्र लिखा। जेलर को पढकर सुनाया। उसी समय बापूजी का मेरे नाम का २ ता० का लिखा हुआ पत्र मिला। उस पत्र का भी विस्तृत जवाब दिया। उसकी नकल की। आज बापू के पत्र का ही काम हुआ। इसमे साढे पाच घटे लगे।

५-११-३२, धुलिया-जेल

उर्दू का अभ्यास किया। बापू को पत्र जो लिखा, उस बारे मे सुपरिंटेडेट से बाते। उसके व्यवहार से दु ख हुआ। उसका व्यवहार बहुत ही अपमान-जनक लगा।

आराम के बाद जेलर के कहने से दूसरा पत्र लिखकर और नकल करके दिया। मन मे बुरा लगता रहा।

१४-११-३२, धुलिया-जेल

ता० १० को बापू का जो पत्र आया था, उसका जवाब आज लिखकर इस्पेक्शन के टाइम पर दिया।

शाम को पू० बापू का तार आया—कान के बारे मे डॉ० मोदी के पास

से जाच कराने के लिए व खासी के बारे मे भी। आपस मे विचार करके पू० बापू व आई० जी० पी० को तार भेजने का निश्चय हुआ। वे दोनो तार जेलर के पास भेज दिये गए।

१५-११-३२, धुलिया-जेल

पू० बापू को भेजे जानेवाले पत्र जेलर को बराबर पढकर बतला दिये। पू० बापू व आई० जी० पी० के तार के मसविदे मे श्री मणिभाई व दूसरे मित्रो की सलाह से थोडा फर्क किया। तार दोनो को चले गए। मन हलका हुआ।

२१-११-३२, धुलिया-जेल

पू० बापू को तार भेजा।

शाम को यहा जेल के वातावरण से ऐसा आभास होने लगा कि मुझे शायद पूना भेजे। मन मे आनन्द व शान्ति महसूस की।

२६-११-३२, यरवदा-जेल

बारह बजे यरवदा-जेल मे पहुचा। बापू के निकट होने के कारण मन को बडा सतोष, शाति और आनन्द मिला। बापू के दर्शन की इच्छा। बापू का पत्र मिला। उत्तर भेजा[१]।

२७-११-३२, यरवदा-मंदिर

मेजर भडारी व मेहता दोनो मिले। अच्छी तरह से जाच वगैरा की। दूध-मक्खन आदि अधिक लेने का मेजर मेहता ने आग्रह किया। मेजर भडारी ने दाल खाने को भी कहा। मैंने कहा कि बापू से सलाह करके निश्चय करेगे।

मन को खूब शाति व प्रसन्नता हो रही है। यहा कुछ महीने रहने से अवश्य लाभ होगा, ऐसा लगता है।

२९-११-३२, यरवदा-मंदिर

आज बापू-दर्शन का दिन है।

सुपरिटेडेट का बुलावा आया। पू० बापूजी वहा पहले से मौजूद थे।

---

[१] एक ही जेल में होते हुए भी जमनालालजी को बापूजी के साथ म नहीं रखा गया था। जेल के अन्दर ही उनका आपस में पत्र-व्यवहार होता था।

प्रयास किया। उनसे स्वास्थ्य, खानपान आदि की चर्चा हुई। मिलने के बारे मे लिखा-पढी करनी होगी।

३-१२-३२, यरवदा-मदिर

आज सुबह मैंने आधा रतल बकरी का व एक रतल भैस का दूध लिया। सुना कि बापू ने आज दूध नही लिया।

बापूजी के फिर से उपवास करने की उडती हुई चर्चा सुनी। मन मे थोडा विचार होने लगा।

४-१२-३२, यरवदा-मदिर

बापूजी ने आज उपवास करने का विचार एक बार छोड दिया, ऐसा सुना, तथापि अभी फैसला नही हुआ। ईश्वर सब ठीक करेगा।

७-१२-३२, यरवदा-मदिर

मेजर मेहता आये। बापू की राजी-खुशी के समाचार कह गए। मुलाकात आई० जी० पी० से पूछकर देगे।

बापू का स्वास्थ्य के बारे मे व कमल को लका (सीलोन) भेजने के बारे मे पत्र मिला, मैंने उत्तर दिया और कमल को दक्षिण अफ्रीका भेजने की अपनी राय लिखी।

११-१२-३२, यरवदा-जेल

बापू का सुन्दर पत्र मिला[१]। जवाब मेजर भडारी को पूछकर भेजना है।

१२-१२-३२, यरवदा-मदिर

सुपरिटेडेट इन्सपेक्शन के लिए आये।

कर्नल डायल व लन्दन के बारे मे बापू का पत्र मिला। बापू के पत्र का जवाब आज भेजा।

१४-१२-३२, यरवदा-मदिर

बापू ने फाउटेनफेन की स्याही भेजी। बापू का वजन १०३ रतल हो गया, यह जाना।

ब्राउन ब्रेड[२] मे जो शक्कर पडती है, उसके सम्बन्ध मे बापू से चर्चा

[१-२] देखिये 'बापू के पत्र', पत्र-संख्या ९७ और ९८।

करना। दो रतल गेहू मे तीन रतल की तीन रोटी होती है, याने २६।। तोले गेहू दिन-भर मे खाया जाता है।

२०-१२-३२, यरवदा-मंदिर

मेजर मेहता ने कल 'सी'-वर्ग के लोगो के साथ मिलने-जुलने के बारे मे सकोच दिखाया, मेजर भडारी से उसका खुलासा किया।

गुरुवायूर मदिर-प्रवेश-सबधी फाइल बापू भेज देगे। अस्पृश्यता-निवारण-सबधी अन्य कागजात भी मैं देख सकता हू, यह खुलासा हुआ है।

टोस्ट अस्पताल मे बनाकर लेने का कहा। स्वदेशी शक्कर की व्यवस्था की चर्चा।

पू० बापू से मुलाकात हुई। आज मालूम हुआ कि बम्बई-सरकार ने मुझे बापू से मुलाकात करने की पूरी छूट दी है। बापू से ब्रेड व शक्कर की चर्चा हुई। गुरुवायूर मदिर-प्रवेश के बारे मे बापू ने कहा कि शायद उपवास न करना पडे। मुझे फाइल देखने को देगे। सजा के बारे मे बापू से विनोदात्मक चर्चा, कमल की पढाई के सबध मे भी।

२२-१२-३२, यरवदा-मदिर

प्रार्थना के बाद ४।। से ६ बजे तक बापू की अस्पृश्यता-निवारण-सबधी फाइल पढकर वापस भेजी।

मेजर भडारी से बापू के पास मुझे रहने देने या मुलाकात के समय उन्हे मिलने देने के सबध मे काफी चर्चा हुई।

बापू से तीसरी बार आफिस मे सुपरिटेडेट की उपस्थिति मे मुलाकात हुई। बातचीत व चर्चा मे बापू का समय थोडा ज्यादा ले लिया, उसका मन मे विचार होता रहा।

२५-१२-३२, यरवदा-मंदिर

बापू से १०।। से १२ बजे तक आज चौथी बार मिला। सतोष हुआ। अस्पृश्यता-निवारण की फाइल देखकर तीन बजे वापस की।

२७-१२-३२, यरवदा-मंदिर

आज बापू की एक नम्बर की हरिजन-फाइल देखकर वापस भेजी। आज करीब चार घंटे हरिजन-फाइल पढने मे लगे।

३०-१२-३२, यरवदा-मदिर

प्रार्थना-बाद हरिजन-फाइल न० २ पढी और बाद मे वापस भेजी।

बापू को लिखकर गुरुवायूर मत-सग्रह का परिणाम व उस सबध मे बापू का स्टेटमेट मगवाया। वह शाम को आया। उसे तीन बार पढा। मन को थोडी शान्ति हुई। पर बापू को उपवास के जरिये ही यह शरीर छोडने का विचार पैदा हुआ, इस सबध मे विचार चलता रहा।

ईश्वर-इच्छा।

३१-१२-३२, यरवदा-मदिर

रात को दो बजे बाद नीद नही आई। चार बजे से पहले ही प्रार्थना आदि करके, गुरुवायूर-मदिर-प्रवेश के सबध मे बापू ने उपवास करने का जो स्टेटमेट दिया, उसकी नकल की। इसमे साढ तीन घटे लगे। फिर बापू को पत्र लिखा।

डायरी के अंश

१९३३

२-१-३३, यरवदा-मंदिर

पू० बापू से करीब डेढ घटा मुलाकात हुई। उनका पत्र मुझे करीब ।।। बजे मिला। इसलिए पूरी तैयारी नही कर पाया।

यहा आने के बाद बापू से चार मुलाकाते पहले हो चुकी। आज यह चवी थी।

हरिजन-फाइल देखी। शाम की प्रार्थना के बाद भी करीब दो घटे ता रहा।

६-१-३३, यरवदा-मंदिर

बापू से १२ से १ बजे तक एक घटा मुलाकात हुई। सतोषजनक बात-त। मदिरो की फहरिस्त, हरिजन-फाइल, विनोबा ने नालवाडी मे आश्रम यम किया उस बारे मे, और आश्रम का कब्जा, बालकोबा की देखरेख, पाडे, दास्ताने, वर्धा के मुकद्दमे, वर्धा-जेल, कान व जनेऊ आदि के बारे बापूजी से चर्चा हुई।

७-१-३३, यरवदा-मंदिर

हरिजन-फाइल पढी। बापू के नाम विनोबा ने नालवाडी से ३०-१२-३२ जो पत्र भेजा, वह तथा छोटेलालजी का पत्र पढा। विनोबा का पत्र पढ़- बडा सुख व प्रेम मिला।

९-१-३३, यरवदा-मंदिर

पू० बापू से सातवी मुलाकात, १२ से १ वजे तक। बिडला-कमेटी के ान के बारे मे तथा अन्य बाते। अम्बालाल की मशीन पर, बिजली से, र मेहता ने बापू के हाथ का इलाज किया, वह देखा।

११-१-३३, यरवदा-मंदिर

रात मे सुन्दर स्वप्न आया, जैसे आकाशवाणी हुई और प्रत्येक मदिर

की देवमूर्तिया कहने लगी कि गाधी का कहना सही है। उसीके अनुसार करो। अस्पृश्यता का भेद निकाल डालो, आदि।

आज सुबह प्रार्थना के बाद व दोपहर को ऑल इडिया एण्टी-अटचेबिलिटी लीग, जिसका नाम अब 'सर्वेट्स ऑफ अटचेबल्स सोसायटी, दिल्ली' हो गया है, के विधान तथा कार्य-पद्धति आदि के बारे मे बापू से विचार-विनिमय। बापू के कहने पर अपने सुझाव उन्हे सविस्तर लिख भेजे।

१३-११-३३, यरवदा-मदिर

हरिजन-फाइल मे से श्री रणछोडभाई पटवारी के ८८ प्रश्न व बापू के उत्तर ध्यान से पढे व नोट किये।

बापू से आठवी मुलाकात, १२ से १ बजे तक। घनश्यामदासजी को विधान के बारे मे तथा अन्य सूचना का पत्र भेज दिया।

रणछोडभाई के प्रश्न २, ३, ९, १८, ३७, ४०, ७४, ७७ के जवाब के बारे मे मैंने मेरे अपने विचार उन्हे कहे। पोलक आज बापू से मिलनेवाले थे। रोहित मेहता के बारे मे उन्होने पूछताछ की। मेजर मेहता की परवानगी लेकर रोहित मेहता से मिला। डॉ० माखडेकर के साथ प्रथम बार बीमारो की बैरक आज देखी। रोहित को हिम्मत दी। उन्होने कहा कि पेरोल के लिए मेजर भडारी के कहने पर लिखा है।

बापू से मिलने के बाद थोडी देर सो गया। बाद मे हरिजन की नई फाइल देखना शुरू किया।

१५-१-३३, यरवदा-मदिर

आज बापू की बकरिया व उनके बच्चो के दर्शन नही हुए—सुबह व शाम को भी बापू का नाई गणपत भी नही आया।

१६-१-३३, यरवदा-मदिर

पूज्य बापू से १२। से १॥ बजे तक नवी मुलाकात। हरिजन-प्रश्न, नगीनदास मास्टर का प्रश्न तथा जेल व मारपीट पर चर्चा आदि। सुपरिटेडेट भडारी ने विश्वास दिलाया कि भविष्य मे ऐसा नही होगा।

जेल मे निम्न सुधारो की चर्चा पू० बापू से व जेल-अधिकारियो से करने का विचार—

१ मारपीट बिलकुल बद होनी चाहिए।

२ सी-वर्ग के कदियो को कोठरियो मे बन्द होने के समय म फर्क करना—देरी से बद करना ।
३. पोस्ट कार्ड की जगह पत्र ।
४. इतवार को तेल, नमक की सुविधा ।
५ जो गुड न ले, उन्हे दाल ।
६ सी-वर्गवालो के लिए लिखने के साधन ।
७ रोशनी का इतजाम ।
८. पेशाब के कुडे ढके रहने की व्यवस्था ।
९ साग तथा रोटी मे सुधार ।
१०. गेहू इस वर्ष सस्ता है । बाजरा की जगह दे सकते है ।
११ अखबार कम-से-कम साप्ताहिक तो दिया ही जाय ।

१९-१-३३, यरवदा-मंदिर

बापू से आज दसवी मुलाकात, १२-१० से १॥ तक बातचीत । खास तो सनातनियो से अपील तथा समझौते का खुलासा पढा । सतोष हुआ । ता० १४ के स्टेटमेट का खुलासा बापू ने समझाया । कमलनयन, नगीनदास मास्टर तथा नवीनचन्द्र के बारे मे चर्चा । बरेलीवाला नोटिस इन्हे पसद है । वाइसराय का जवाब नही आया । विनोबा के तथा मेरे खानपान के बारे में बापू ने दोनो मेजरो से चर्चा की । मैंने उन्हे चिन्ता न रखने को कहा ।

२१-१-३३, यरवदा-मंदिर

जेलर गोखले आये । पूछा कि डॉ० मोदी को बुलाना चाहते है क्या ? मैंने कह दिया कि जरूरत होगी तब बापू की सलाह लेकर निश्चय कर लिया जायगा । यहा बुलाने की इच्छा कम है ।

२३-१-३३, यरवदा-मंदिर

बापू से १२ से १ बजे तक ग्यारहवी मुलाकात । बापू ने 'आश्रम का इतिहास' लिखा है । वह मुझे पढने को भेजेगे, ऐसा कहा । महिलाश्रम, वर्धा के बारे मे कहा कि विचार करके कहेगे । डॉ० मोदी को दिखाने के लिए बापू की राय रही कि बम्बई जाना हो सके तो दिखाना चाहिए । वह सुपरिटेंडेंट से बात करेंगे । जेल-सुधार के बारे मे कुछ चर्चा हुई । इस सबध के

अपने विचार मैंने बापू के सामने रखे। बापू ने कहा कि इसके लिए कोशिश तो करनी चाहिए, परन्तु अपमान, गाली-गलौज, मारपीट को छोडकर अन्य बातो के बारे मे सीधा विरोध करना ठीक नही है।

बापू के पास से हरिजन-फाइल आई। पढना शुरू किया।

२४-१-३३, यरवदा-मदिर

जेलर ने बापू का आज की तारीख का स्टेटमेट[1] लाकर दिया, उसे चार-पाच बार पढा। हृदय मे भक्ति, प्रेम व चिन्ता आदि के भाव उत्पन्न हुए।

२५-१-३३, यरवदा-मदिर

वाइसराय ने डॉ० सुब्बारायन के मद्रास के बिल को मजूरी नही दी। विचार करने पर लगा कि यह एक प्रकार से बहुत ठीक ही हुआ। अब जो प्रचार-कार्य होकर मजूरी मिलेगी, वह ज्यादा असरकारक होगी। ईश्वर सब ठीक करता है।

बापू का स्टेटमेट खूब शाति से ईश्वर-प्रार्थना करके पढा। अभी सुबह ही वापस करना है।

२६-१-३३, यरवदा-मदिर

पू० बापू से १२ से १ बजे तक बारहवी मुलाकात हुई। बापू के सिर मे दर्द था, इस कारण मिट्टी की पट्टी बाधकर आये थे। खुराक कम कर दी है। २४ ता० से कातना भी शुरू कर दिया है। उन्होने हाथ के दर्द के बारे मे कहा कि इसमे फर्क नही पडा है। ता० २४ के स्टेटमेट के सबध मे कहा कि अनशन करने का अभी जल्दी ही याने करीब ६ महीने तो सभव नही दीखता।

जयकर, सप्रू, अबेडकर को बापू ने पत्र-तार आदि अस्पृश्यता-निवारण बिल के बारे मे दिये। पू० मालवीयजी का भी सुन्दर तार आया। एड्रूज के दो तार आये। उन्हे अनशन स्थगित हो जाने के कारण सतोष हुआ। मेरे कान के इलाज के लिए अभी बबई न जाने का निश्चय हुआ।

---

[1] देखिये 'महादेव भाई की डायरी', भाग ३, पृष्ठ ३९०; नवजीवन प्रकाशन मदिर, अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित।

२८-१-३३, यरवदा-मदिर

चरखा काता। बापू ने 'गोड सेवा मडल' के नियम-वगैरा भेजे थे। उन-पर बापू के लिए विचार करके नोट तैयार किया।

३०-१-३३, यरवदा-मदिर

पू० बापू से १३वी मुलाकात—१२। से १ बजे तक। स्वास्थ्य, अस्पृश्यता-निवारण, वेरियर एलविन का आश्रम, जेल-सुधार आदि के बारे मे चर्चा। सुपरिटेडेट मेजर भडारी ने उन्हे जो कहा था, वह उन्होने बताया। मैने उसका खुलासा किया। शीघ्र जो सुधार होने चाहिए, वे मैने पू० बापू व श्री कटेली को नोट करा दिये। उन्होने कहा कि तेल तो इतवार को मिला करेगा। नमक-मिर्च का अभी तय नही हुआ है। अन्य आवश्यकताओ के बारे मे भी तय होना बाकी है।

२-२-३३, यरवदा-मंदिर

बापू से १२-१० से १। बजे तक १४वी मुलाकात हुई। विविध वृत्त तथा अन्य पत्रो का खुलासा किया। मुझे किसी प्रकार का विचार व चिता न करने को कहा। वह जो कुछ भेजे, उन्हे मै बिना विचार के पढता रहू। छपी हुई पुस्तके, पेम्फ्लेट आदि नगीनदासजी या मित्रो को दिखाना चाहू तो दिखा सकता हू।

अस्पृश्यता-निवारण की दृष्टि से पूना से अग्रेजी में 'हरिजन' पत्र अगले सप्ताह से निकलना शुरू होगा। दिल्ली से यह पत्र हिन्दी मे भी निकलेगा। वियोगी हरि सपादक होगे।

राजाजी के कार्य का खुलासा। बापू के हाथ के दर्द के लिए डॉ० गिल्डर या डॉ० भरूचा को बुलाने के सबध मे उनसे चर्चा हुई। उन्होने अभी जरूरत नही समझी।

४-२-३३, यरवदा-मदिर

हरिजन-फाइल आई। पढना शुरु की। 'सत्याग्रह-आश्रम का इतिहास' जो बापू ने लिखा है, वह भी आज आया।

६-२-३३, यरवदा-मदिर

बापू से १२ से १ बजे तक १५वी मुलाकात। डॉ० अम्बेडकर के विचार, उनका व्यवहार, हिन्दू जाति से लडने की उनकी तैयारी आदि के

बारे मे चर्चा । वापू को इससे दु ख तो पहुचा ही है । मदिर-प्रवेश का हाल बताया । मेरे स्वास्थ्य-सबध मे मैंने वापू से प्रार्थना की कि आप मेरे बारे मे अधिकारियो से अधिक चर्चा न करे तो मुझे सतोष रहेगा । मै स्वय, अपनी खुराक, जो कुछ ज्यादा मालूम होती है, घटाना चाहता हू । जेल-सुधार के बारे मे बापू ने लिखकर भेजा है ।

७-२-३३, यरवदा-मदिर

सवेरे बापू की बकरियो के दर्शन करके आनन्द हुआ ।

बापू ने सवेरे मिलने बुलाया । करीब आधा घटा स्वास्थ्य के बारे मे व जेल की चिन्ता न करने के बारे मे समझाया । अपना उदाहरण देकर कहा । मैंने अपनी अडचने बताई । 'हरिजन' अग्रेजी पत्र का प्रकाशन । पत्र किन-किन को भेजा जाय, इसकी यादी जल्दी मे तैयार करके भेजी ।

८-२-३३, यरवदा-मदिर

जेल-सुधार के सबध मे १५ प्रश्न खुलासेवार बापू के लिए लिखकर तैयार करना है ।

१०-२-३३, यरवदा-मदिर

बापू से १६वी मुलाकात १२। से १-१० तक । 'हरिजन' पत्र, हरिजन दिवस, जेल-सुधार आदि के सबध मे चर्चा । बा को छ महीन की सजा और ५००) जुर्माना । जुर्माना न देने पर डेढ महीने की सजा और । 'ए' वर्ग । मीराबेन का स्वास्थ्य बबई मे खराब रहता है । इस सबध मे बापू ने सरकार को लिखा है । दास्ताने व 'बी'-वर्ग बापू को पसद नही । चेचक का टीका लगाने के बारे मे बापू अधिकारियो से बाते करेंगे ।

बापूजी ने नया प्रकाशित 'हरिजन' साप्ताहिक पत्र पढने भेजा । प्रेम-पूर्वक उसका स्वागत किया ।

१२-२-३३, यरवदा-मदिर

हरिजन-फाइल आई । २।। बजे कोठरी मे बद होने बाद उसे देखा । बाद मे 'सर्वेंट आफ अटचेबल्स सोसाइटी' का नया विधान, जो बापू ने देखने भेजा था, पढा । चरखा काता ।

१३-२-३३, यरवदा-मंदिर

बापू से १२-१० से १ बजे तक १७वी मुलाकात हुई। बापू को मैंने यह सुझाया कि 'हरिजन' मे हर हफ्ते एक कालम आमरण अनशन से लगाकर आज तक जो अनुभव उनको हुआ, इस सबध मे वह स्वय लिखा करे। यह सुझाव उन्हे पसद आया। 'अस्पृश्यता-निवारण समिति' के विधान के बारे मे भी कुछ सुझाव दिये। बापू ने कहा कि लिखकर भेज दो। अबेडकर, राजभोज, राववहादुर राजा वगैरा के बारे मे उनका मत जाना। बापू ने अपने स्वास्थ्य की रिपोर्ट बताई। जानकीदेवी ने ओम् के बारे मे बापू को जो कहा, वह उन्होने बताया। ओम् को बारूताई के पास रखने की मैंने सूचना की। बाद मे 'आश्रम' या 'शारदा-मदिर' आदि कही का भी सोचा जा सकता है।

सरोजिनी नायडू का आज जन्मदिन है। बापू ने कहा कि वह मिलने आनेवाली थी।

प्रभुदास की सगाई के बारे मे बाते हुई। गोमतीबहन की व्यवस्था सूरत मे करनेवाले है।

बापू ने कहा कि विनोवा तीन वर्ष के अन्दर ब्रह्म की प्राप्ति कर लेने वाले है।

अप्पासाहब का फैसला हो गया। अब बापू का इस बारे मे उपवास करन का अदेशा नही रहा।

'अस्पृश्यता-निवारण समिति' का विधान तीन बजे ठीक करके वापस भेजा।

१७-२-३३, यरवदा-मंदिर

बापूजी से १९वी मुलाकात १२-१० से १२-५० तक। वेरियर एलविन ने श्रीमती नाओर जिलेट से ईस्टर के बृहस्पतिवार के दिन करजिया ग्राम मे विवाह करने का निश्चय किया। १२-२-३३ का पत्र वेरियर ने बापू को मुझे दिखाने को लिखा था। बापू ने यह मुझे दिखाया। चिचवड-आश्रम-सवधी देवधर की योजना बापू ने मुझे विचार करने के लिए दी। बापू को विश्वनाथ के बारे मे अपने विचार कहे। नगीनदासजी के मार्फत उनकी मदद लेने का निश्चय। बापू का वजन १०३ रतल हुआ। डॉ० अवेडकर, मालवीयजी,

राजाजी आदि के बारे मे वाइसराय का जवाब आया। उस सबध मे व हरिजन के सबध मे बापू ने सक्षेप मे बताया। मीराबहन साबरमती गई। प्यारेलाल नासिक को।

१८-२-३३, यरवदा-मदिर

वेरियर एलविन के विवाह के सबध मे बापूजी को लिख भेजा।

१९-२-३३, यरवदा-मदिर

देवधरजी की चिचवड-आश्रम की योजना के बारे मे बापू को अपने विचार लिखकर भेजे। बापू की बकरिया आज भूलकर इस 'कब्रस्तान वार्ड' मे आ गई। आश्चर्य व आनन्द हुआ।

२०-२-३३, यरवदा-मदिर

बापू से १९वी मुलाकात १२-२० से १ तक। वेरियर एलविन के विवाह के बारे मे बापू को थोडा आश्चर्य व विचार हुआ। देवधर की चिचवड की योजना के बारे मे मेरी सूचनाओ पर विचार। स्वामी आनन्द के वजन के बारे मे, शिवप्रसाद गुप्त बनारसवालो का स्वास्थ्य व उनकी लडकी के लडके की अचानक मृत्यु आदि के बारे मे चर्चा। मेरे वजन व खुराक के बारे मे बापू ने पूछा। मराठी व बगला 'हरिजन' भी जल्दी शुरू होगा यह बापू ने बताया।

२२-२-३३, यरवदा-मदिर

कल रात १० बजे से आज सुबह तक सोने का नाम नही। परमात्मा का खूब चिन्तन व प्रार्थना। मन मे हरिजन-कार्य तथा चालू काम की योजना की स्फूर्ति पैदा हुई। चिट्ठी निकाली। बापू को मुलाकात के बारे मे ३ बजे रात्रि को पत्र लिखा।

बापू से २०वी मुलाकात १२-१० से १-२० तक। रात मे चलते रहे विचारो का हाल कहा व अपना निश्चय बापू को बताया। एक बार तो आज ही जाने का मेरा निश्चय कायम रहा। बाद मे सूक्ष्म चर्चा होने के बाद बापू ने श्री कटेली के पास से चिट्ठी उठवाई।[1] जाने के बारे मे प्रयत्न न करने की चिट्ठी आई। सतोष हुआ।

---

[1] बबई जाकर डाक्टर को कान दिखाने के बारे में।

२३-२-३३, यरवदा-मदिर

बापू ने एलविन को आज सुबह ४-३० बजे, उनके विवाह के सबध मे सुन्दर पत्र लिखकर भेजा। उसपर विचार किया।

२५-२-३३, यरवदा-मदिर

नागपुर से पूनमचद राका की पत्नी का रजिस्टर्ड पत्र मिला। पू० बापूजी को नोट लिखकर भेजा कि वह सिवनी-जेल मे पूनमचदजी को व नागपुर उनकी पत्नी को तार भेजे। बापूजी का जवाब मिला कि उन्होने तार-वगैरा भेज दिया है। श्री राघवेन्द्रराव को भी लिखा है।

२६-२-३३, यरवदा-मदिर

बापू ने रामदास गाधी को जेल की स्थिति पर सुन्दर पत्र लिखा। मैंने भी उसे भली प्रकार समझाया। बात उसके गले लगभग उतरी दीखती है।

२७-२-३३, यरवदा-मदिर

बापू से २१वी मुलाकात १२-३५ से १-३५ तक। 'हरिजन' पत्र की ग्राहक-सख्या छ हजार है। शिवप्रसादजी का स्वास्थ्य, पूनमचद राका, सिवनी-जेल की स्थिति आदि के सबध मे चर्चा। जेल मे 'हरिजन' मिलने के बारे मे बम्बई-सरकार को पत्र। 'हरिजन' विद्यार्थियो को सरकारी विद्यालय, कालेज आदि मे पढने के लिए असहयोगी भी सहायता कर सकते है? यह पूछने पर बापू ने कहा कि करना चाहिए। मेरे आहार के बारे मे पूछने पर बापू ने कहा कि काजी व प्याज लेना मेरे लिए उचित है।

जेल-सुधार की चर्चा। सुपरिटेंडेंट मेजर भडारी के बारे मे भी थोडी चर्चा हुई। मेरे कान की जाच के लिए मुझे बबई भेजने के बारे मे आई० जी० पी० को लिखा गया है। इसी सप्ताह मे शायद जाना पडे। मथुरादास से बापू मिलेगे। रामदास के बारे मे ठीक चर्चा व विचार।

२८-२-३३, यरवदा-मदिर

'प्रस्थान' (गुजराती मासिक पत्र) का अस्पृश्यता-अक आज पढा। बापू का लिखा हुआ 'आश्रम-इतिहास' आज वापस भेजा। 'हरिजन-सेवक' भी पढकर वापस भेजा।

रामदास की मानसिक स्थिति पर विचार-विनिमय। उसे बहुत-सी बातें समझाकर कहीं। उसने सतोष लगा।

२-३-३३, यरवदा-मंदिर

रामदास से बातचीत। उसने बापू को जो पत्र लिखा, वह बतलाया। रामदास के लिए बापू ने गीता मे से चालीस श्लोक चुनकर दिये। उसका नाम उन्होने 'रामगीता' रखा। वे श्लोक रामदास के पास से नोट कर लिये।

३-३-३३, यरवदा-मंदिर

बापू से बाईसवी मुलाकात, १२-१० से १२-५० बजे तक। चन्द्रशकर को डॉ० मोदी के लिए लिखा। बापू ने बम्बई-सरकार को मेरे बारे मे पत्र भेजा है। मुझे दिखा नही सके, इसका कारण बताया। 'प्रस्थान' के अको के बारे मे मैंने बापू से अपने विचार कहे। अक सुन्दर है।

रामदास के स्वास्थ्य व मुलाकात के बारे मे चर्चा।

४-३-३३, यरवदा-मंदिर

राजाजी व देवदास आज बापू को मिलने आये होगे। हरिजन-फाइल आई—'हरिजन' का चौथा अक आज मिला, पढा।

६-३-३३, यरवदा-मंदिर

पूज्य बापू से तेईसवी मुलाकात करीब ४० मिनट तक हुई। स्वास्थ्य का हाल बताया। बापू ने मेरे बारे मे बम्बई-सरकार को पत्र लिखा था, वह मुझे दिखा सकते है या नही, उसपर थोडी चर्चा। मैंने कहा कि आपकी दलीलो से मेरा पूरा समाधान नही हुआ। राजाजी एक बार तिरचेनगोड़ु जायगे। देवदास आश्रम मे लक्ष्मी व मारुति राय का विवाह कराने जायगा। शकरलाल बैंकर वापस जायगे। 'हरिजन' कैदियो को नही मिल सकेगा। सरकार का इन्कार आ गया। विनोबा की मराठी गीताई का यहा प्रचार किया जा सकता है। सुपरिंटेडेट भडारी को मेरी सब सूचनाए—जेल-सुधार की—स्वदेशी शक्कर के साथ की, कह देने का बापू ने स्वीकार किया। आगामी शुक्रवार को वह जवाब देगे। रामदास के बारे मे भी चर्चा हुई।

७-३-३३, यरवदा-मंदिर

हरिजन-फाइल आई। बगला 'हरिजन' देखा। पुस्तकाकार रूप मे निकला। बाहर पृष्ठ पर सुन्दर चित्र है। शीतलाबाबू सपादक है। सतीश-बाबू को बापू ने पत्र भेजा।

८-३-३३, यरवदा-मंदिर

आज सतारेवाले परचुरे शास्त्री छूटे। उनका साबरमती-आश्रम मे रहने का बापू ने निश्चय किया।

९-३-३३, यरवदा-मदिर

श्रीराम वाजपेयी-लिखित 'स्काउटिग और ग्राम-सेवा' नामक पुस्तक पर बापू ने मेरी राय मगाई थी, वह लिखकर भेजी। 'जन्मजात अस्पृश्यतेचा मृत्युदिन' और रत्नागिरी के बारे मे सूचनाए भेजी।

१०-३-३३, यरवदा-मदिर

बापू से चौबीसवी मुलाकात—१२-५ से १२-४५ बजे तक। स्वास्थ्य, पूनमचद राका व उनकी भूख-हडताल, राजनैतिक कैदियो का एक वर्ग रखना या उन्हे अलग रखना आदि के बारे मे चर्चा। उनकी भूख-हडताल ता० ४ या ५ से शुरू हुई है। बापू जाजूजी को आज तार भेजेगे। शिवप्रसादजी गुप्त का स्वास्थ्य, हरिजन-कार्य आदि के सबध मे चर्चा। मेजर भडारी ने जेल-सुधार-सबधी सूचनाओ का क्या उत्तर दिया, यह पूछा। मीरा, बा, राधा, कुसुम आदि के स्वास्थ्य-समाचार।

११-३-३३, यरवदा-मदिर

अग्रेजी 'हरिजन' आया। हरिजन-फाइल भी आई, देखी। वेरियर एलविन के बापू के नाम दो पत्र व बापू ने उनको आज जो जवाब भेजा, वह महत्व का था। घनश्यामदास बिडला ने मालवीयजी को ता० २१ को जो पत्र लिखा, वह तथा असेम्बली के मेबरो को दिल्ली मे जो पार्टी दी गई, उसका हाल तथा बनारस से भेजा हुआ बापू के नाम का पत्र देखा।

१३-३-३३, यरवदा-मदिर

बापू से पच्चीसवी मुलाकात। जाजूजी को, बापू ने पूनमचदजी के बारे मे तार भेजा था। वह तार आई० जी० पी० के पास भेजा गया। जेल-सुधार के बारे मे मेजर भडारी का खुलासा बापू ने कहा। वेरियर एलविन के पत्र से समाधान। कमल व रामकृष्ण के समाचार। मेरे बबई भेजने के बारे मे, सरकार की नीति, आदि पर चर्चा। बापू ने बताया कि लाला हरकिसनलाल गोबा का लडका व सतानतधर्म कालेज का एक प्रोफेसर, मुसलमान हुए।

मुसलमान नेता जमा हुए थे। वसत, पुरुषोत्तम, रघुनाथ अनसारे की चर्चा। बापू ने जानकीदेवी आदि की व डेविड-योजना की भी चर्चा की।

१४-३-३३, यरवदा-मदिर

आज बापू की बकरियो से खेल खेला। उन्हे रोटी खिलाई, गेहू उन्होने नापास किया, बाजरा पास किया। उनके खान-पान व स्नान की व्यवस्था करानी है, बाल भी बढ गए है।

१५-३-३३, यरवदा-मदिर

आज बापू को जो नोट भेजा, उसमे डेविड-योजना मे जिनकी ओर से मदद मिल सकती है, उनके नाम लिखे। श्री जानकीदेवी अगर बापू की प्रार्थना स्वीकार न करे तो बापू ने उनका 'हुक्का-पाणी' बन्द करने की विनोदी सूचना लिख भेजी।

१७-३-३३, यरवदा-मदिर

बापू से छब्बीसवी मुलाकात। बापू का वजन १०५ रतल हुआ। स्वास्थ्य, वल्लभभाई, डेविड-योजना, महाराष्ट्र चरखा-सघ, अनन्तपुर खादी-कार्य, हरिजन उच्च वर्ण के लोग कैसे बने, नैतिक व व्यावहारिक अडचने, इसमे डा० अबेडकर का विरोध सभव है, आदि मेरी शकाओ का समाधान। मेरा व डकन का परिचय। लक्ष्मी का विवाह। १०० हरिजन आये। घनश्यामदास बिडला को पत्र, डेविड-योजना—पूनमचद, शिवप्रसाद गुप्त आदि के हाल बापू ने कहे। रामदास के समाचार, हरिजन-फाइल आना आगे से बद हो जायगी। सरकार से लिखा-पढी आज ही बापू करेगे। बापू ने मुझे बबई जाने के बारे मे समझाया। राजनैतिक दिक्कतो का डर।

१८-३-३३, यरवदा-मदिर

रामदास से उसके मन की अशान्ति के सबध मे ठीक सतोषकारक चर्चा हुई। उसे भी समाधान हुआ मालूम दिया।

२०-३-३३, यरवदा-मदिर

बापू से सत्ताईसवी मुलाकात हुई। मेरा स्वास्थ्य व वजन १६७ हुआ, दो रतल बढा। खामी, सूजन आदि की चर्चा। बापू ने बम्बई-सरकार को हरिजन-फाइल मुझे देखने के लिए भेजते रहने आदि के बारे मे लिखा है।

वम्वई जाच कराने के लिए सरकार को रिमाइडर करने के वारे मे वापू लिखे या मै लिखू, इसका आज निश्चय करेंगे ।

केशव वापू से मिल गया व हकीकत कही । श्री वल्लभभाई आदि के विचार कहे । वापू ने १४-३-३३ का 'आश्रम-समाचार' देखने को दिया ।

२२-३-३३, यरवदा-मदिर

इन दिनो हरिजन-फाइल वन्द हो जाने तथा स्वास्थ्य सुस्त रहने के कारण मानसिक दुर्वलता के विचार भी वीच-वीच मे मन में आने लगे ।

२४-३-३३, यरवदा-मदिर

वापू से २८वी मुलाकात । ईशु-चरित्र, डविड-योजना, नारायणदास व प्रेमावहन को महिला-आश्रम के लिए वापू लिखेगे, आश्रम के वीमारो की हालत, गुलजारीलाल का स्वास्थ्य ठीक है, हरिजन-विल, वापू डा० मोदी को पत्र लिखेगे, आदि चर्चा । वापू ने कहा कि वम्वई मे मुझे दूध लेना चाहिए । मैने गाय की कतल आदि का कारण समझाया । वापू ने उसका समाधान किया । वापू, हो सका तो, शुक्रवार को पत्र भेजा करेंगे । वापू अनुभव करते है कि सत्याग्रह शुद्धता से याने सत्य व अहिसा मे नही चल रहा है । उनको पाच वर्ष इसी तरह निकल जाते दीखते है ।

२५-३-३३, वम्वई (आर्थर रोड जेल)

प्रार्थना के वाद पूज्य वापू, अन्ना दान्ताने, गगाधरराव देशपाडे, नगीनदासजी को, अधिकारियो के मार्फत जो सूचनाए भेजनी थी, वे लिखी ।

आज वापू से मुलाकात नही हो पाई । सुपरिटेंडेंट ने इजाजत नही दी । वुरा लगा । मेजर भडारी का व्यवहार रूखा रहा ।

१-४-३३, वम्वई (आर्थर रोड जेल)

सुपरिटेडेट आये । मेरे नाम महात्माजी का आज पत्र आया हो, तो देने को उनको कहा ।

उन्होने हिस्टरी-टिकट देखकर जवाव देने का कहा ।

६-३-३३, वम्वई

जानकीदेवी व सुभद्रावहन रुइया ने वापूजी को 'डेविड-योजना' के लिए पच्चीस सौ रुपये देने का निश्चय किया ।

७-४-३३, बम्बई-पूना

पूना मे गोविन्दलालजी के बगले पर सामान रखकर और निवृत्त होकर १२॥ बजे बापू से जेल मे मिला। जानकी व धन्नू दाणी साथ थे। बडा सुख मिला।

बापू ने डेविड-योजना, स्वास्थ्य, मोदी-रिपोर्ट, दड किसने भरा, भविष्य का कार्य, वर्धा जाना जरूरी है, आदि के बारे मे चर्चा की। पूनमचद राका के बारे मे बापू ने कहा कि कल उससे खडवा मिलना जरूरी है। मेरे कहने पर राघवेन्द्रराव से मिलना भी उन्होने पसन्द किया, मुझे स्टेटमेट देने की जरूरत नही। उन्होने कहा, कम-से-कम एक महीना तो मुझे किसी ठडी जगह—मसूरी, महाबलेश्वर या पचगनी वगैरा रहना जरूरी है। मेरे पहनावे[1] के सबध मे जानकीदेवी ने चर्चा की। प्रश्न-उत्तर के बाद मामूली धोती, कुरता, टोपी—अभी यही रखना तय हुआ। बापू ने केशव, राधा, सतोकबहन के हाल कहे। दु ख हुआ।

८-४-३३, पूना-बम्बई

पूज्य बापू से बाते—पूनमचद राका, राघवेन्द्र राव, हरिजन, मेजर भडारी व डलहौजी जाने के बारे मे। वसन्त, रामदास, जेल-क्लास व जानकीदेवी की चिन्ता व फिक्र की चर्चा।

२३-४-१९३३, वर्धा (अलमोडा जाते हुए रेल में)

लक्ष्मीनारायण-मदिर तक पैदल। दर्शन किये। रास्ते मे देवदास गाधी से बातचीत, खासकर फादर एलविन को नागपुर के विषय मे पत्र भेजा, उस सम्बन्ध मे।

२७-४-१९३३, शैल आश्रम (अल्मोडा)

प्रार्थना। मगनभाई की वार्षिक पुण्यतिथि। विशेष कार्यक्रम—६ बजे

---

[1] जेल से छूटकर आने के बाद जमनालालजी की इच्छा थी कि वह 'सी' वर्ग मे जैसी छोटी चड्डी और आधी बाह की कमीज पहनते थे वैसी ही, एकदम सफेद पोशाक सादगी की दृष्टि से बाहर भी पहनी जाय। चड्डी की जगह छोटी घुटनो तक की धोती पहनी जा सकती थी। जानकीदेवी ने इस प्रस्ताव का सख्त विरोध किया और बापूजी के सामने फैसला हुआ।

प्रार्थना, ८ बजे मगनभाई के जीवन सबध मे पू० बापूजी, विनोबा, काका साहब, महादेवभाई के लेख व प्रभुदास के साथ का पत्र-व्यवहार पढा ।

२-५-३३, शैल-आश्रम

चि० रामेश्वर नेवटिया का तार मिला—अस्पृश्यता-निवारण के सिलसिले मे बापू ने ८ ता० से विना शर्त के अनशन करने का निश्चय किया। बापू को पत्र लिखा ।

३-५-३३, शैल-आश्रम

तार व पत्र आये । बापूजी के उपवास का निश्चय मालूम हुआ । बापू का वक्तव्य 'हिन्दुस्तान टाइम्स' मे पढा । अच्छी तरह चितन व विचार करने के बाद वक्तव्य सबोको समझाया । यहा से शुक्रवार ता० ५ को जाने का निश्चय किया ।

४-५ -३३, शैल-आश्रम

वापूजी के पास पूना जाने का निश्चय किया व तैयारी की । पर बापूजी का तार आया । उन्होने मुझे पूना आने को रोका । विचार किया, मन मे मथन रहा । फिर सबोने मिलकर प्रार्थना की । प्रार्थना के वाद खूब श्रद्धा-पूर्वक चिट्ठिया डाली, न जाने की चिट्ठी निकली । जाने की तैयारी रद्द करके बापू को तार भेजा ।

८-५-३३, शैल-आश्रम

आज ११-३० से १२ बजे भोजन । बाद मे २४ घटे का उपवास करने का निश्चय । प्रार्थना मे बापू के उपवास का कारण समझाया और शैल-आश्रम मे रहनेवाले हरिजनो के लिए हम लोग क्या कर सकते है, उसपर विचार किया ।

१०-५-३३, शैल-आश्रम

पू० बापू के जेल से छूटने की और पू० बापू व श्री अणे ने मिलकर डेढ मास के लिए सत्याग्रह स्थगित कर दिया, इसकी खवर मिली। बापू का व सरकार का स्टेटमेट पढा । एक प्रकार से खुशी हुई। परन्तु विचार करने से चिता ही रही । रात को बराबर निद्रा नही आई । पूना जाने के विचार चलते रहे ।

११-५-३३, शैल-आश्रम

१६ ता० को पूना जाने का विचार किया, पर बाद मे श्री जानकीदेवी आदि की सलाह से यह निश्चय किया कि अगर पू० राजगोपालाचारी या देवदास बुलावे तो जाना चाहिए, नही तो ठहरना चाहिए। यह निश्चय करके देवदास को पूना व बबई तार भेजा। देवदास का तार व पू० बापूजी का पत्र मिला।

१२-५-३३, शैल-आश्रम

देवदास को तार भेजा कि श्री रामस्वामी को बापू से पद्रह मिनट तक क्यो बात करने दी ? आगे से ऐसी गफलत न करने की गारटी मागी।

१४-५-३३, शैल-आश्रम

बीकानेर महाराज, अलवर महाराज, कर्नल ओगल्वी, कञ्हेण्ट को खास-कर हरिजन-सबध मे पत्र भेजे। औरो को भी पत्र लिखे।

१५-५-३३, शैल-आश्रम

शाम को शिल्पकार व असली हरिजन (मेहतर) वर्ग मे से प्रोसेशन निकला। शिल्पकारो मे व मेहतरो मे आपस मे अनबन होने के कारण, हालाकि वहा बहुत आदमी जमा थे, सभा शिल्पकारो के यहा न करके हरिजनो मे ही करनी पडी। प्रोसेशन अच्छा था। रास्ते मे गायन व एक जगह चाय-पानी भी हुआ। श्री मुरलीमनोहरजी के मदिर मे प्रोसेशन पहुचा। रोशनी आदि की खूब सजावट थी। रानीखेतवाले श्री हरगोविदजी पत सभापति बने। वह ठीक बोले। श्री बद्रीदत्तजी, श्री गोविन्द सहायजी, श्री जानकीदेवी, व कुछ हरिजनो के भाषण हुए। मेरे हाथ से मदिर खुलाया गया। मैने भी भाषण दिया।

२८-५-३३, पूना

पूना पहुचा। लेडी ठाकरसी के बगले पर डॉ० अन्सारी, डॉ० बिधान राय, सरोजिनी देवी, राजाजी आदि से मिला। बापू के पास जानबूझकर नही गया।

२९-५-३३, पूना

१० बजे पर्णकुटी पहुचा। ठीक १२ बजे बापू को हाल मे लाया गया। खूब शान्ति थी। 'रघुपति राघव राजाराम' की धुन के बाद डॉ० अन्सारी

ने कुरान, क्रिश्चियन मित्रो ने बायबिल, पारसी मित्रो ने मजदा और काकासाहब ने उपनिषद् मे से पाठ किया। महादेवभाई ने रवीन्द्रनाथ ठाकुर का प्रिय गायन 'एकला चलो' गाया। बाद मे 'वैष्णव जन' गाने के बाद पू० बापू का सदेश पढा गया। उसके बाद बा ने बापू को सतरे का रस दिया।

३१-५-३३, पूना-बम्बई

इच्छा के विरुद्ध पू० बापू के दर्शन करने पडे। महादेवभाई, मथुरादास आदि के आग्रह के कारण। दर्शन से खूब सुख मिला।

३-६-३३, बम्बई

बापू ने मुझे पूना बुलाया। पूना से देवदासभाई मुझे लेने आये।

५-६-३३, पूना

पू० बापू ने मुझे बम्बई से बुलाया, उसका महादेवभाई ने तात्पर्य समझाया। रामदासभाई से उसके भावी जीवन के बारे मे उसके विचार सुने, उसे सलाह दी। पू० बापू की इच्छा होने के कारण अपने स्वास्थ्य के सबध मे चर्चा। प्रभुदास, अलमोडा-आश्रम, देवदास, रामदास आदि के सबध मे भी चर्चा हुई।

१०-६-३३, पूना

बापू के पास गया। महादेवभाई ने उनके विचार पढकर सुनाये। श्रीनिवास शास्त्री की बातचीत हुई।

१४-६-३३, पूना

डॉ० गिल्डर ने पू० बापू के स्वास्थ्य की ठीक जाच की। लक्ष्मी-देवीदास विवाह-सबध मे बापू से विनोद हुआ।

१६-६-३३, पूना

जल्दी निवृत्त होकर पर्णकुटी। ७। बजे से देवदास के विवाह की तैयारी। विवाह सानद सम्पन्न हुआ। बापू ने कुछ कहा। उस समय उन्हे रोमाच हो आया और गद्गद हो गए। बापू के दर्शन करनेवालो की भीड। पाव छूने की आतुरता। जबरदस्ती करके उन्हे वहा से हटाया। इसपर विचार चलता रहा।

१७-६-३३, पूना

बापू को जाचने के लिए मेडिकल बोर्ड बैठा। डॉ० देशमुख, डॉ०

गिल्डर, डॉ० पल्लेकर, डॉ० पटेल, डॉ० धारपुटे, डॉ० पाठक ने मिलकर बापू को देखा। बाद में उन्होंने प्रेस को वक्तव्य दिया—कम-से-कम एक मास आराम लेने को कहा। माधवराव अणे, राजाजी तथा मैंने मिलकर सत्याग्रह स्थगित करने के प्रश्न पर चर्चा की। अंत में बापू की स्वीकृति से छ सप्ताह के लिए सत्याग्रह और स्थगित किया गया।

१८-६-३३, पूना-बम्बई

पर्णकुटी में बापूजी के पास रहा। चि० शान्ता साथ में थी। बापूजी ने रामदास के बारे में अपने विचार कहे। मुझे अल्मोडा लौट जाने को कहा। मैंने उनसे अपने शरीर की संभाल रखने का वचन लिया। उन्होंने कहा कि कि मुझे तो अभी जीना है।

महादेवभाई देसाई से कुछ नैतिक प्रश्नो पर विस्तार से चर्चा।

२७-६-३३, वर्धा

शाम को आश्रम मे प्रार्थना। बापूजी के बारे मे कुछ कहा।

आज बापूजी के हाथ का लिखा पत्र आया।

७-७-३३, वर्धा

डॉ० प्रफुल्ल घोष और आनन्द आज मेल से पूना गये। उनके साथ मैंने अपना वक्तव्य लिखकर पूज्य बापूजी व श्री अणे के पास भेजा।

३१-७-३३, अहमदाबाद

पू० बापूजी का मौन था, फिर भी बातें उनसे ठीक हुई। उन्होंने लिखकर उत्तर दिये। आश्रम गया, वही स्नान, नाश्ता, वर्धा जानेवालो से परिचय, बातचीत। पू० बापूजी ११॥ बजे आश्रम आये। उनसे प्रश्नोत्तर व बातचीत। उनके विचार समझे।

रात के ९॥ बजे तक आश्रम मे ही रहे। वही भोजन। रणछोडभाई के बगले पर सोने को गये। बापूजी के नजदीक ही सोया। बापू से कुछ बाते और हुई। रात मे नीद नही आई। कई बार उठना पडा। रात मे १-२० पर पुलिस की चार मोटरे आई। बापू, बा और महादेवभाई को वहा गिरफ्तार किया। बाकी के लोगो को आश्रम मे गिरफ्तार किया।

१-८-३३, माटुंगा-पूना

गुजरात-मेल से रवाना। बापूजी को भी गुजरात-मेल से ले गए।

शान्ताक्रुज मे बापूजी और महादेवभाई को उतार लिया। फिर मोटर से पूना ले गए।

दादर से मै ८ बजे की गाडी से पूना रवाना हुआ। रास्ते मे खूब वर्षा हुई। लेडी ठाकरसी व श्री नृसिह चितामणि को लेकर पूना आय। रास्त में महात्माजी की गिरफ्तारी तथा अन्य सामाजिक व राजनैतिक विचार-विनिमय। बापूजी १२ बजे यरवदा-जेल पहुचे।

४-८-३३, पूना

पू० बापूजी और महादेवभाई को एक-एक वर्ष की सादी सजा आज हुई।

१२-८-३३, वर्घा

स्वास्थ्य के कारण कम-से-कम १२ नवबर तक तो सत्याग्रह मे भाग न लेने का मेरा निश्चय हुआ। यह बापूजी, काकासाहब, गगाधरराव देशपाडे, राजाजी आदि के आग्रह से व विनोबा की राय से करना पडा। भविष्य में भी स्वास्थ्य की हालत देखकर इसपर विचार करना होगा।

१७-८-३३, वर्घा

जेल मे हरिजन-कार्य करने की छूट न मिले तो बापू जेल मे आमरण उपवास करेगे, यह खबर आज अखबारो मे पढी।

२०-८-३३, वर्घा

सुबह पू० विनोबा से पू० बापू के उपवास के सबध मे विचार-विनिमय।

२३-८-३३, वर्घा

वाइसराय को व अखबारो को तार। रात को सार्वजनिक सभा। बापू के अनशन के सबध मे प्रस्ताव।

बापूजी के बिना शर्त छोडे जाने की सतोषजनक खबरे मिली। आश्रम मे प्रार्थना। 'निर्बल के बल राम' व 'वैष्णव जन' भजन गाया।

२८-८-३३, वर्घा

पूज्य बापूजी के पत्र आये। वह वर्घा आ सकते हो तो आज निमत्रण भेजा।

१७-९-३३, चिकल्दा

आज देशी तिथि के अनुसार बापू का जन्मदिन मनाया। हरिजनो के यहां

सात घर है, उनके वहा गये। शाम को सभा की व्यवस्था की। हरिजन व अन्य वालको को व आये हुए मेहमानो को जलेवी व मूगफली वाटी।

२१-९-३३, वर्धा

श्री एण्ड्रूज का आज टॉउन-हाल मे मेरे सभापतित्व मे भाषण हुआ। खूब भीड थी। महात्माजी का व उनका परिचय कैसे हुआ, आदि वताया। बाद मे उनका सुन्दर भाषण हुआ। शाम की प्रार्थना मे उन्होने भजन गाया।

२३-९-३३, वर्धा

आज मेल से पू० वापू, वा, मीरावहन, नागिनी देवी, प्रभावती, चन्द्र-शेखर, आनन्दी, नैयर और दो लडकी, चि० गोपी, चम्पावहन, कमला, सुशील वगैरा आये। वापू को आश्रम मे ठहराया। प्रोग्राम निश्चित किया। व्यवस्था की।

२४-९-३३, वर्धा

वापू से सावरमती-आश्रम की जमीन के वारे मे वाते हुई। यह आश्रम केन्द्रीय हरिजन-सेवक सघ को या स्थानिक हरिजन कमेटी को देने के सबध मे विचार। मैने आखिर मे हरिजन-वोर्ड को देना पसद किया। घनश्यामदास विडला को पत्र लिखा।

२५-९-३३, वर्धा

वापू से वाते। डॉ० खरे व डॉ० सोनक नागपुर से आये। वापू का व्लड-प्रेशर लिया। छाती व नाडी जाची। उन्होने ४-६ सप्ताह तक पूरा आराम लेने को कहा।

श्री मैथ्यू से वातचीत। उसकी हालत का सार वापू ने कहा। डकन व मेरी की योजना वताई।

२६-९-३३, वर्धा

आश्रम पहुचा। वापू स्त्रियो की प्रार्थना मे वैठे थे और समझा रहे थे। प्रार्थना के बाद वापू से चि० गोपी विडला के वारे मे बाते हुई। उनकी और मेरी एक ही राय हुई।

१-१०-३३, वर्धा

आज से वापू का मौन शुरू हुआ। घनश्यामदासजी को पत्र लिखा—

आश्रम तथा हरिजन-कार्य, तथा सावरमती-आश्रम हरिजन-सेवक-सघ को देने के सम्वन्ध मे ।

२-१०-३३, वर्धा

वापू ने जेठालालभाई व रविशंकरभाई की मुलाकात कराई ।

आज दिल्ली से घनश्यामदास विडला का सत्याग्रह-आश्रम को हरिजन-सघ की ओर से लेने की स्वीकृति का तार आया ।

३-१०-३३, वर्धा

वापू को कन्या-आश्रम के वारे मे अपने विचार कहे । वापू ने १२ नववर के वजाय १२ जनवरी तक वाहर रहने का अपना कार्यक्रम वनाया । वाद मे परिस्थिति देखकर विचार किया जा सकेगा, ऐसा कहा ।

४-१०-३३, वर्धा

वापू, काकासाहव, जापानी वौद्ध साधु गुलजारीलाल नन्दा वगैरा आये । वापू से लक्ष्मीनारायण साहू, गुलजारीलाल नदा, लेले, सादिकअली, जापानी साधु आदि की मुलाकात हुई ।

५-१०-३३, वर्धा

आज प्रह्लाद की सगाई सीतारामजी सेकसरिया की लडकी चि० पन्ना के साथ, पू० वापूजी की उपस्थिति व आशीर्वाद के साथ हुई । सवोको सतोप हुआ ।

जाजूजी गुलजारीलाल नदा, प्रताप सेठ तथा अमेरिकन भाई आदि की वापू से मुलाकात ।

६-१०-३३, वर्धा

वापू से कन्या-आश्रम, महिला-आश्रम आदि की वाते । वापू से देवशर्मा-जी की मुलाकात हुई ।

१३-१०-३३, वर्धा

वापू से वाते । आज से उनकी ट्रीटमेंट शुरू हुई ।

कमलादेवी चट्टोपाध्याय, कालेश्वरराव दापीनीडू (इन्दौरवाले) से महात्माजी से मुलाकात हुई । जेल जाने के सवंध मे वापू से चर्चा ।

१४-१०-३३, वर्धा

वापू के साथ प्रार्थना ।

बापू से अपनी मन स्थिति तथा 'मुझे अगर जेल नही ही जाना हो तो काग्रेस वर्किंग कमटी से इस्तीफा देना ही उचित है', मेरे इस विचार पर चर्चा, मनोरजन ।

१६-१०-३३, वर्धा

पू० बापू ने वर्किंग कमेटी से मेरे इस्तीफे का मसविदा[1] बनाकर दिया। मैंने काकासाहब, जाजूजी, किशोरलालभाई, आदि से चर्चा की और बाद में अपनी मन स्थिति बापूजी को लिखकर दे दी।

१८-१०-३३, वर्धा

प्रार्थना करके उसके बाद जल्दी तैयार होकर आश्रम गया। आज पू० बापूजी की उपस्थिति मे चि० प्रभुदास गाधी व अम्बादेवी का विवाह मारवाडी बोर्डिंग मे हुआ। बापू का उपदेश सुन्दर था।

१९-१०-३३, वर्धा

'गाधी-सेवा-सघ' की सदस्यता से मेरे इस्तीफे का अतिम फैसला आज बापू के सामने हो गया। अभी तो मुझे ही सभापति रहना पडेगा, ऐसा निश्चय हुआ।

गगाधरराव देशपाडे व बरेलवी की बापू से बातचीत हुई। नागपुर से एक पादरी बापू से मिलने आये।

२१-१०-३३, वर्धा

बापू की हरिजन-यात्रा का प्रोग्राम बनाना शुरू किया। अभी तो उनका बरार व हिन्दी सी० पी० का भ्रमण निश्चित किया।

२४-१०-३३, वर्धा

बापू से कन्या-आश्रम के सबध मे खुलकर चर्चा हुई।

डॉ० खरे ने बापू को जाचा। उनका वजन १०७ पौड हुआ। ब्लड-प्रेशर ९५-१५५। ६० का फर्क।

२५-१०-३३, वर्धा

बापू के साथ कन्या-आश्रम तथा महिलाश्रम-सबधी चर्चा।

मृदुला, मणिबहन, हरिभाऊ, गुलजारीलाल, गोवर्धनदास, खडूभाई वगैरा से बापू की मुलाकात।

---

[1] देखिये 'पाचवें पुत्र को बापू के आशीर्वाद', पृष्ठ ३७२।

२६-१०-३३, वर्धा

पू० बापू से मृदुला, मणि, शकर, माखनलालजी आदि की मुलाकात।

२७-१०-३३, वर्धा

बापू से शकर के बारे मे बातचीत। अमेरिकन मिशनरी, जो हाल मे बशीम मे रहते है, बापू के दर्शन को आये।

२८-१०-३३, वर्धा

आश्रम मे बापू के साथ प्रार्थना। बापू से बाते—काकासाहब, शकर कालेलकर, स्वामी आनन्द, श्रीलाल से बाते।

२९-१०-३३, वर्धा

आश्रम मे प्रार्थना। बापूसे साबरमती-आश्रम के आकडे का फैसला किया।

३१-१०-३३, वर्धा

नरीमन और बापू की मुलाकात। ११॥ से १२॥ तक व ३ से ३॥ तक।

२-११-३३, वर्धा

एड्रूज़ व बापू आज नालवाडी पैदल गये और आये। बापू-एड्रूज़ की चर्चा।

बापू व विनोबा की मुलाकात ४ से ५। भाई परमानन्द की ३ से ३-३०।

काकासाहब ने ७ दिन का उपवास बापू के हाजिरी मे पूरा किया।

३-११-३३, वर्धा

बापू से विनोबा की बाते। साबरमती-आश्रम का हिसाब किया।

बापू की मुलाकात ७-२० से ८, विनोवा और सिस्टर मेरी। ११-३० से १२ तक गोपीबहन, जमनाबहन। १२ से १ जीवनदासभाई कलकत्ते-वाले। ३ से ३-३० जमनालाल। ४ से ५ शर्मा सेवादल। ५ से ६ नवजीवन, स्वामी आनद, जीवनदासभाई, मोहनलाल, रावजीभाई, गोकुलभाई, श्रीकिशोरलालभाई, काकासाहब।

७-११-३३, वर्धा

बापू को सुबह स्त्रियो की प्रार्थना के बाद ७। बजे पहले राम-मदिर और उसके वाद लक्ष्मीनारायण मदिर के दर्शन करवाकर ८ वजे सेलू पहुचे। वहा वापू ने रामदेवजी का लक्ष्मीनारायण मदिर हरिजनो के लिए खोला। वातावरण वहुत ही सुन्दर था। मन्दिर खोलने के वाद सभा हुई। व्यवस्था अच्छी थी। वापस १० बजे वर्धा पहुचे। सेलू-यात्रा सफल हुई।

शाम को वर्धा मे ६ से ६-४५ तक सभा। भीड ज्यादा थी, पर व्यवस्था ठीक थी।

८-११-३३, वर्धा

सुबह जल्दी तैयार होकर बापू की नागपुर-यात्रा की तैयारी की। नागपुर से डॉ० खरे, और जबलपुर से ब्यौहार राजेन्द्रसिह मोटर लेकर आये थे। बापू सुबह ८-१५ बजे रवाना हुए।

११-११-३३, वर्धा

स्टेशन गया। बापू नागपुर-पैसेजर से गोदिया से आये। उनकी वर्धा रिफ्रेशमेट रूम मे निवृत्त होने तथा भोजन आदि की व्यवस्था की। बाद मे वह देव वकील की गाडी से देवली गये। रास्ता खराब था। लोगो का उत्साह यहा भी अच्छा था, परन्तु कुछ सनातनी स्वयसेवको ने जरा धूमधाम मचाई और थोडी गडबडी की। सभा ठीक तौर से हो गई। दो ट्रस्टियो की प्रार्थना से आज मन्दिर बापू ने नही खोला। ११ बजे वापस वर्धा पहुचे।

१२-११-३३, वर्धा

डॉ० अन्सारी ने बापू की तबीयत सब प्रकार से देखी और अपना पूरा सन्तोष व्यक्त किया। पिछले दस वर्ष मे उन्होने बापू का ऐसा स्वास्थ्य पहले नही देखा था।

१३-११-३३, वर्धा

बापू की हिगणघाट-यात्रा की तैयारी।

हिंगणघाट के लिए बराबर दो बजे मोटर से रवाना हुए। हिगणघाट-वालो ने खूब उत्साह के साथ स्वागत किया। जनता मे खूब प्रेम था। वहा से बापू को चादा रवाना करके मै वापस वर्धा आया।

१९-११-३३, चिकल्दा

जल्दी उठकर बापू के स्वागत की तैयारी शुरू की। मीराबहन पहले आई, बापू जरा देर से आये। करीब २५ मेहमान होगए। तीन बार रसोई बनी। भोजन देर से हुआ। बापू ने ३-२० पर अपना मौन शुरू किया।

२०-११-३३, चिकल्दा

सुबह जल्दी तैयार होकर बापू के पास गया। उनके साथ करीब एक

घटा घूमा । बापू ने ३-२० पर अपना मौन छोडा । शाम को भी उनके साथ घूमने गया ।

२१-११-३३, चिकल्दा

३ बजे उठ गया । ४ बजे बापू की प्रार्थना मे शामिल हुआ । ठक्कर बापा से बाते । बापू को किले की ओर एक घटे तक घुमाने ले गए ।

बापू के चिकल्दा से रवाना होने की तैयारी । सब अतिथियो को भोजन कराया । बापू १२॥ बजे रवाना हुए । बापू को यह पहाडी स्थान पसन्द आया ।

२८-११-३३, चिकल्दा

पू० बापू का पत्र आया । श्री जवाहरलाल को तार किया, जबलपुर के बारे मे ।

४-१२-३३, इटारसी, जबलपुर

रात मे बापू से बाते । जबलपुर मे जबर्दस्त स्वागत । जवाहरलालजी वगैरा सब प्रोसेशन मे गये । भारी तैयारी । एक स्वयसेवक के पैर मे मोटर के बीच मे आजाने से चोट लगी । चिता व दु ख । बडी जाहिर सभा मे मुझे बोलना पडा ।

५-१२-३३, जबलपुर

प्रार्थना करके व जल्दी निवृत्त होकर पू० बापू के पास गया । थोडी बातचीत । परमानद का स्टेटमेट सुना । बापू को डॉ० अन्सारी ने जाचा ।

८ से ११ व १ से ५ तक इनफार्मल बातचीत होती रही । जवाहरलाल, अन्सारी, मौलाना आजाद, महमूद, नरीमान, बापू, जमनालाल थे । लडाई के प्रोग्राम के सबध मे बापू से गरमागरम चर्चा हो गई ।

१४-१२-३३, दिल्ली

डॉ० अन्सारी के यहा पडित जवाहरलाल से मिला । उनको लेकर बापू के पास गया । पडित जवाहरलाल, डॉ० अन्सारी, मौलाना आजाद, डॉ० महमूद, कृपलानी, टडनजी आदि की बापू के साथ बातचीत । साफ-साफ बाते हुई, ८ से ११ तक । डेरी व आश्रम की बैठक, बापू से डेरी के सबध मे चर्चा वगैरा हुई ।

बापूजी शाम को ग्राड ट्रक से वर्धा होते हुए आध्र गये । स्टेशन पर सनातनियो का थोडा तमाशा हो गया ।

डायरी के अंश

१९३४

११-३-३४, पटना-बनारस

सुबह 'सर्चलाइट' के कार्यालय मे गया। राजेन्द्रबाबू के साथ बापू से मुगलसराय मे भेट करने व परिस्थिति समझाने का निश्चय हुआ। मुगलसराय मे बापू से मिले। वहा से ९॥ बजे रवाना। भीड खूब थी। रास्ते मे बातें।

१३-३-३४, पटना

सुबह ६ बजे बापू से नागपुर मे विदेशी वस्त्र-बहिष्कार-सबधी गिरफ्तारियो व उनके बचाव व अपील के बारे मे देर तक विचार-विनिमय। बापू ने वर्तमान परिस्थिति मे बचाव व अपील की अपेक्षा बिहार के काम की आवश्यकता समझाई।

राजेन्द्रबाबू, ब्रजकिशोरबाबू वगैरा के साथ मे बापू से चर्चा।

१६-३-३४, पटना

पू० बापू व राजेन्द्रबाबू चपारन से आये। शाम को मैदान मे प्रार्थना हुई। बापू की बाते सुनी।

१७-३-३४, पटना

आज रहने का स्थान हरिजन-आफिस को बदलकर बापू के पास पीली कोठी मे रहने आये। पू० बापू, राजेन्द्रबाबू के साथ साधारण सभा के प्रस्ताव व मैनेजिग कमेटी के निर्वाचन के बारे मे अच्छी तरह विचार-विनिमय हुआ। करीब ७ घटे इसी काम मे गये।

पू० मालवीयजी व बापू की बाते हुईं।

१८-३-३४, पटना

बापू के पास विधान राय, कलकत्ता के मेयर सन्तोषबाबू, मौलाना आज़ाद वगैरा आये। दो बजे से राधिका इस्टीच्यूट मे बिहार सेंट्रल रिलीफ कमेटी की सर्वसाधारण सभा हुई। ६। तक चली।

आज की सभा के सभापति बापू बने। पू० मालवीयजी व मेरे आग्रह के कारण बापू को उनकी इच्छा के बिना भी उन्हे सभापति बनना पडा। सभा का काम ठीक हुआ। रात को बापू से मिला।

२०-३-३४, पटना

बापू से बातचीत।

गुरुद्वारे मे आज गुरु गोविंदसिह का जन्म-दिन मनाये जाने के कारण बापू के साथ वहा गया। सार्वजनिक सभा सफलतापूर्वक हुई। करीब ३० हज़ार लोग थे। बापू, मालवीयजी और मौ० आजाद बोले।

२१-३-३४, पटना

बापू से बाते।

बिहार मे जितनी रिलीफ सोसाइटिया सहायता-कार्य के लिए आई है, उनके प्रतिनिधियो की बापू के साथ व कमेटी के साथ बातचीत।

महाराजा दरभगा बापू से मिले।

२२-३-३४, पटना

बापू ने आश्रम-निवासियो को व्यक्तिगत सत्याग्रह का मर्म समझाया और उनको जेल मे भेजने से रोकने का कारण समझाया।

बिहार गाधी-सेवा-सघ के कार्यकर्ता बापू से मिले। बापू से विचार-विनिमय।

२३-३-३४, पटना

सुबह ८ बजे से 'बिहार रिलीफ मैनेजिग कमेटी' का काम शुरू हुआ।

बाहर से आये हुए कार्यकर्ताओ को वापस भेजने के बारे मे बापू ने सलाह दी। स्वामी आनन्द, हार्डीकर आदि से उनकी चर्चा। बापू से बिहार के काम की थोडी चर्चा।

२४-३-३४, पटना

बापू को सुबह घूमने ले गया। रास्ते मे उनसे नागपुर, बहिष्कार, सत्याग्रह आदि की चर्चा हुई। उदाहरणार्थ बापू ने नाथजी व वालजीभाई का उदाहरण दिया। मैने कहा, वे दोनो आपसे सहमत नही है। छानबीन हुई। बापू को दु ख भी हुआ।

सुबह, दोपहर व रात मे मैनेजिग कमेटी की बैठक हुई। बापू का

प्रस्ताव व बजट मजूर हुआ। बापू के लिए स्त्रियो की सभा रखी गई। शाम को बापू पूज्य मालवीयजी के साथ घूमने गये।

२५-३-३४, पटना

बापू से बाते। खादी-योजना, सत्याग्रह आदि के बारे मे बापू के विचार स्वामी आनन्द ने लिखकर दिये।

२६-३-३४, पटना

बिहार रिलीफ कमेटी की बैठक सुबह से रात तक होती रही।

बापू ने नागपुर के मामले मे स्टेटमेट बनाकर दिया। रात को मौन छूटने पर उसपर विचार-विनिमय।

२४-४-३४, पटना

मुजफ्फरपुर गया। बापू के साथ पटना लौटा। रास्ते मे बापू से इन विषयो पर बाते होती रही—जवाहरलालजी के साथ हुई चर्चा, राची की सभा, स्वराजियो का प्रोग्राम, भजन-आश्रम, रिलीफ-कार्य, डकन, चिमनलालभाई, शकरीबहन, प्रभावतीबहन आदि।

२७-४-३४, पटना

बापू के साथ आरा, बक्सर, वैद्यनाथ-धाम गया। वैद्यनाथ के सनातनियो का बर्ताव देखकर दुःख हुआ।

राची मे बापूजी का थप्पड खाकर (आशीर्वाद पाकर) सीतारामजी के पास ठहरा।

१-५-३४, राची

सुबह बापू ने ५॥ बजे आश्रम के बारे मे तथा अन्य विषयो पर अपने विचार सुनाये। चर्चा तथा विचार-विनिमय। नारायणदासभाई के बारे मे बातचीत।

बापू को जवाहरलाल की भेट का हाल सुनाया। स्वराज्य पार्टी के बारे मे बापू से चर्चा हुई। उसमे भाग लिया। खुलासा समझने का प्रयत्न किया।

२-५-३४, राची

सुबह जल्दी उठा। बापू से कमलनयन, उमा आदि की बातचीत। बापू ने उमा के स्वभाव आदि की चर्चा की। बापू को उमा के बारे मे चिन्ता। उससे बातचीत।

३-५-३४, राची

सुवह जल्दी बापू के पास गया। बापू से स्वराज्य पार्टी के वारे मे चर्चा।

बापू निवारणबाबू के पास गये। गाधी-सेवा-सघ की ओर से निवारण आश्रम का उद्घाटन। सार्वजनिक सभा ठीक हुई थी।

१७-५-३४, पटना

बापू के पास गये। राजेन्द्रबाबू के साथ बापू से फैसला।

१८-५-३४, पटना

बापू से बातें। वर्किंग कमेटी ६ वजे से १ वजे बाद मे फिर हुई।

शाम को ऑल इडिया काग्रस कमेटी की बैठक। बापू के पास गये।

१९-५-३४, पटना

सुबह हरिजन-दौरे के बारे मे बातचीत। गाधी-सेवा-सघ व बापू के विचार। वर्किंग कमेटी ३ वजे तक बीच मे थोडी छुट्टी। मालवीयजी-अन्सारी की लिस्ट मे बहुत समय गया।

ऑल इडिया काग्रेस कमेटी तीन बजे से रात के १ बजे तक हुई।

रात मे बापूजी व मालवीयजी के साथ पार्लमेंटरी पार्टी की लिस्ट बनाने मे भाग लेना पडा। रात को सिर्फ दो घटे सोने को मिला होगा।

२०-५-३४, पटना

बापू से बातें—गाधी-सेवा-सघ, आश्रम के सबध मे। बापू गये।

२७-५-३४, करंजिया

फादर एलविन के साथ करजिया-आश्रम के बजट पर विचार-विनिमय किया। बापू का पत्र पढकर सुनाया। बजट की व्यवस्था।

५-६-३४, वर्धा

बापू का तार आया। वर्धा ९ से १३ तक रहेगे। पटना जाना स्थगित किया। वर्किंग कमेटी १२ को रखने का तार किया। बापू को भी तार किया।

९-६-३४, वर्धा

बापूजी मेल से आये। आश्रम पैदल गये। रास्ते मे बातचीत होती रही। आश्रम गया। बापू के साथ जाजूजी का नोट पढा। बापू ने प्रार्थना मे थोडा कहा।

१०-६-३४, वर्धा

बापू से बातचीत। बापू नालवाडी गये। विनोबा को कन्या-आश्रम मे ले आये। बरसात मे बापू खूब भीगे।

१२-६-३४, वर्धा

बापू से ६ से ७। तक बहुत-सी बातचीत। वर्किंग कमेटी के मेम्बर आये। ९ से ११ व २ से ५।। बजे तक काम हुआ।

१३-६-३४, वर्धा

वर्किंग कमेटी ७ से ११ तक हुई। प्राय बहुत-सा काम खतम हुआ। पूज्य बापू भी हाजिर थे। बापू से थोडी बाते। बापू पैदल स्टेशन के लिए निकले। रास्ते मे मोटर मिली। नागपुर-मेल से बबई गये।

१७-६-३४, बंबई

बापू के पास मणि-भवन गया। वहा देर तक ठहरकर और बाते करके बिडला-हाउस गया। भोजन वगैरा करके। फिर बापू के पास मणि-भवन गया।

वर्किंग कमेटी का काम हुआ।

१८-६-३४, बबई

पूज्य मालवीयजी ने रात मे जो कहा, उस बारे मे सुबह जल्दी उठकर उनसे बातचीत की। वह काफी दु खी मालूम हुए। सात्वना देने का प्रयत्न किया। अपने त्याग-पत्र के बारे मे उनका सदेशा पूज्य बापू को कहा। बापू के कहने से डॉ० विधान राय, मौ० अबुलकलाम तथा मालवीयजी से देर तक बातचीत की।

वर्किंग कमेटी २।। से ५ तक चली।

रात मे बापू मालवीयजी से मिले। वर्किंग कमेटी तथा पार्लमिंटरी बोर्ड के मेम्बर १ बजे तक मालवीयजी के साथ विचार-विनिमय करते रहे। बहुत देर तक बातचीत। आखिर शुभ परिणाम निकला। मौलाना शौकत अली मिलने आये, एक बजे तक रहे।

१९-६-३४, पूना

सुबह ५ बजे उठकर तथा तैयार होकर पूज्य बापू के साथ पूना रवाना हुए। पूना मे भीड खूब थी, केलकर वगैरा से मिले।

बापू के कैम्प मे ही भोजन, प्रार्थना, बातचीत। राजगोपालाचारीजी आये।

२०-६-३४, पूना

बापूजी के कैम्प में गया। महाराष्ट्र के कार्यकर्ताओ की सभा हुई। बापूजी ने डेढ घटे तक प्रश्नो के जवाब दिये। बापूजी से देशी रियासतो का डेपुटेशन मिला। श्री केलकर वगैरा भी मिलने आये थे। बापू से बातचीत।

२६-६-३४, पटना

पूना मे बापू पर बम फेका गया, यह खबर 'सर्चलाइट' व बाद में 'इडियन नेशन' मे पढी। चिन्ता व दु ख हुआ। ईश्वर का धन्यवाद किया।

२७-६-३४, पटना

अखबारो मे बापू का वक्तव्य पढा। राजेन्द्रबाबू तथा ब्रजमोहनबाबू से बातचीत करके बापू को तार भेजा। भोपटकर को भी तार भेजा व बापू के साथ हुई पूना की दुर्घटना के बारे मे अखबारो मे वक्तव्य दिया।

३०-६-३४, पटना

हिन्दू जनता की ओर से मैदान पर सभा हुई। पूना की दुर्घटना से बच जाने पर महात्माजी को बधाई दी गई। दो शास्त्रियो के व्याख्यान अच्छे हुए।

४-७-३४, जीरादेई

सुबह निवृत्त होकर मालवीयजी को दो तार भेजे, बापू-दिवस मनाने के बारे मे।

२६-७-३४, कानपुर

खादी-कार्यकर्ताओ की सभा मे भाग लिया। प्रश्नोत्तर के बाद बापूजी को २५ मिनट बोलना पडा।

बापू के साथ भोजन।

३०-७-३४, बनारस-पटना

सुबह तीन बजे उठे। निवृत्त हुए, बापूजी से वर्धा के बारे में स्टेटमेट तैयार करवाया।

५-८-३४, वर्धा

पूज्य बापू, बा वगैरा आये। स्टेशन से आश्रम।

बापू का वजन १०० रतल हुआ ।

कान के इलाज के लिए बापू ने मुझसे बबई जाने का आग्रह किया। उन्होने कहा कि तुम नही मानोगे तो मै बबई चलूगा । अन्य प्रकार से भी दबाव की बाते हुई । जाना निश्चित किया ।

बापू ने ओम् (उमा) की सगाई की इजाजत दी । बापू से आश्रम-सबधी बाते ।

१२-८-३४, बबई

कान के इलाज-सबधी डॉक्टरो की रिपोर्ट बापू को भेजी । डॉ० जीवराज, और डॉ० रजबअली का पत्र जानकी के नाम भेजा । बापू से आपरेशन की इजाजत मागी ।

१३-८-३४, बबई

शाम को आपरेशन कराने की इजाजत का बापू का तार आया ।

१४-८-३४, बबई

सुबह ६ बजे प्रार्थना की । आज इसी समय वर्धा मे बापू का उपवास छूटनेवाला है ।

बृहस्पतिवार को सुबह ९ बजे कान का आपरेशन होगा । बापूजी को वर्धा अर्जेंट तार दिया ।

६-९-३४, बबई

आज से बापू व जानकी की इच्छा से बबई मे चावल व दाल खाना बद किया ।

२६-९-३४, बंबई

रामनिवास, पालीरामजी, केशवदेवजी के साथ एफ० ई० दिनशा के पास गया, कपडे की मिल लेने के लिए । उसे (दिनशा को) साढे सात लाख तक का सौदा करने की छूट दी । मन मे मथन चलता रहा । मिल लेने की इच्छा नही है, पर जबान देदी, इसका खयाल रहा ।

२८-९-३४, बबई

बापू व ओम् का पत्र, मिल न लेने के बारे मे आया । बापू को तार दिया कि न लेने का निश्चय पहले ही कर लिया था ।

शाम को बापू ने गाधी-सेवा-सघ के बारे मे अपने विचार कहे। सभापति व ट्रस्टी के त्यागपत्रो का फैसला। सदस्यो की हाजिरी ठीक मालूम हुई।

२८-११-३४, वर्धा

बापूजी का प्रवचन हुआ। गाधी-सेवा-सघ से मेरा ट्रस्टी व सभापति-पद का त्यागपत्र स्वीकार करने के बारे मे बापू ने सदस्यो व ट्रस्टियो को ठीक तरह से समझाया।

बापू ने सभापति के लिए नाम मागे। २२ लोगो ने नाम भेजे। विनोबा, काकासाहब व किशोरलालभाई के नाम आये। बापू ने और मैंने किशोरलाल-भाई का निश्चय किया।

गाधी-सेवा-सघ का कार्य प्राय दिन-भर होता रहा।

२९-११-३४, वर्धा

बापू ने ८ बजे गाधी-सेवा-सघ के सदस्यो की बैठक मे सभापति का नाम जाहिर किया। सबोने स्वीकार किया। इसके बाद बापू के हाथ से किशोरलालभाई को माला पहनवाई और मैंने अपनी जिम्मेदारी उनको सौप दी। उन्होने सभापति का काम शुरू किया।

३०-११-३४, वर्धा

बापू ने ग्राम-सगठन के सबध मे सुबह ठीक समझाकर कहा।

गाधी-सेवा-सघ का कार्य, विधान वगैरा तथा सदस्यो से बातचीत का काम होता रहा।

१-१२-३४, वर्धा

कुमारप्पा को लेकर बापू के पास गया। बिहार-रिलीफ के बारे मे बाते। उन्हे नोट करवाया।

बिहार-रिलीफ की मैनेजिग कमेटी से मैंने त्यागपत्र दे दिया।

२-१२-३४, वर्धा

बापू से प्रभावती, जयप्रकाश, प्यारेलाल के सबध मे बाते।

गाधी-सेवा-सघ के विधान के बारे मे बापू से चर्चा व उनके सुझाव नोट किये।

६-१२-३४, वर्धा

बापू से थोडी बाते। रामायण-पाठ मे शामिल। शाम को निजी ट्रस्ट

के संबध मे चर्चा हुई। गाधी-सेवा-सघ के विधान पर बापू के साथ विचार
विनिमय ।

८-१२-३४, वध

नागपुर मे बैरिस्टर अभयकर की हालत ठीक नही है। डॉ० सोनक
टिकेकर आये। उन्होने समाचार कहे। बापू को लेकर नागपुर गया। मोट
मे बाते। बापू के जाने से अभयकर को खुशी व हिम्मत आई।

प्रार्थना भी वही हुई।

१०-१२-३४, वध

सुबह घूमने आश्रम गया। बापू का मौन था।

शकरलाल बैंकर ने बहुत जोर देकर ग्राम-उद्योग-मडल का सभापति
बनने के लिए कहा। उन्हे अपनी कठिनाइया बतलाईं।

कुमारप्पा से बातचीत। बिहार सैंट्रल रिलीफ फड की हालत कही
ग्राम-उद्योगमडल के बारे मे उन्होने भी सभापति का भार लेने को कहा

११-१२-३४, वध

ग्राम-उद्योगमडल की सभा का कार्य बापू की हाजिरी मे शुरु हुआ
मैं देर से पहुचा। सब मित्रो की एक राय होने व बापू की इच्छा होने प
उत्साह न होते हुए भी, सभापति की जवाबदारी स्वीकार करनी पड़ी
ईश्वर-इच्छा !

१२-१२-३४, वध

सुबह ४ बजे उठे। लक्ष्मीदासभाई ने घूमते समय कल के मेरे व्यवहा
के बारे मे कहा। मुझे उनका कहना ठीक लगा। उसके मुताबिक मन
विचार चलता रहा। इस बारे मे बापू से थोडी बाते की।

ग्राम-उद्योगमडल की बैठक ८ से १० हुई। बापू के वक्तव्य पर चर्चा
मैंने अपनी स्थिति स्पष्ट की। बाद मे बापू के पास ग्राम-उद्योगमंड
के बारे मे और विचार-विनिमय हुआ।

१३-१२-३४, वध

आज सारा समय ग्राम-उद्योगमडल के बारे मे विचार, चर्चा तथ
सभापतित्व करने आदि मे गया। बापू के पास भी बहुत समय इसकी ह
चर्चा चली।

१४-१२-३४, वर्धा

बापू के साथ सुवह घूमने गया। अपनी मन स्थिति उनको वताई। ग्राम-उद्योगमडल के सभापतित्व का भार लेने मे निरुत्साह वताया। मेरी मन स्थिति का ख़याल कर वापू ने हुक्म नही दिया। उन्हे दु ख हुआ। अत मे जाजूजी सभापति हुए। मन मे थोडा विचार चलता रहा।

१५-१२-३४, वर्धा

ग्राम-सेवासघ की सभा सुवह व दोपहर को आश्रम मे वापू के पास व शाम को वगले पर हुई। वहुत समय इसीमे गया।

१७-१२-३४, वर्धा

राघवेन्द्रराव (होम मेम्वर) से मिलना हुआ। ठीक बाते। ग्राम-उद्योग मडल, खादी-सघ की रजिस्ट्री, फादर एलविन, वापूजी, वार्रालगे, भावी विचार, आदि।

१८-१२-३४, वर्धा

बापू को, राघवेन्द्रराव से जो वाते हुई, वे कही। अन्य वाते भी हुईं।

१९-१२-३४, वर्धा

बापू से उनके रहने आदि के बारे मे वातचीत।

रामायण-पाठ के वाद वापू से जाजूजी, विनोवा व कुमारप्पा के सामने बाते।

मगनलाल गाधी-स्मारक के लिए वगीचा दान मे देने का सकल्प किया। इससे मन को सतोष हुआ। वगीचा व खेत देखने गये।

२३-१२-३४, बबई

सरदार वल्लभभाई से मिलना हुआ। उन्होने बापू को जो पत्र लिखा, वह बतलाया। उससे तथा उनसे जो वातचीत हुई, उससे दु ख हुआ। साफ-साफ बाते की।

डायरी के अंश

१९३५

६-२-३५, बम्बई

बापू को जरूरी व खानगी पत्र लिखा—ग्रामोद्योग-मडल व ट्रस्टी, मेरी स्थिति व गोला-मिल का सम्बन्ध, प्यारेलाल व पडितजी, लक्ष्मीदासभाई व ट्रस्टियो का चुनाव, रामेश्वरजी व गगूबाई, रमीबहन व कामदार, इडिया बैंक नागपुर-ब्राच व मेरा सम्बन्ध आदि के बारे मे।

११-२-३५, बम्बई

बापू को पत्र लिखा। बापू का बहुत आग्रह होने के कारण ग्रामोद्योग-सघ की सदस्यता का फार्म भरकर भेजना पडा।

२०-२-३५, वर्धा

पूज्य बापूजी से बगीचे मे मिला। बापू ने प्यारेलाल व पडितजी का निश्चय बताया। डॉ० जाकिर हुसैन व जामिया का हाल बताया और कहा कि उन्हे रुपये भेज सके तो भेज दे। रामेश्वरदास व गगूबाई का हाल कहा।

२२-२-३५, वर्धा

बापूजी से—रामेश्वरजी धुलियावाले व गगूबाई का फैसला।

बापूजी से २ बजे से ४ बजे तक बातचीत—खासकर व्यापार-सम्बन्ध मे। उन्होने हार्उसिग कम्पनी का काम ठीक बतलाया। मिल का पसन्द नही किया। रामेश्वर (नेवटिया) भी साथ था। उससे भी बाते हुई।

२३-२-३५, वर्धा

बापूजी आज नागपुर गये—खादी-भण्डार के लिए।

२६-२-३५, वर्धा

बापू से देर तक ऊपर घूमते हुए ट्रस्ट, विद्यापीठ, विलेपारले, भगिनी-समाज, जामिया मिलिया, चरखा-सघ आदि के सम्बन्ध मे बाते होती रही।

२७-२-३५, वर्धा

बापू से बातें—कान के बारे में तथा चरखा, किर्लोस्कर, कामदार, डॉ० महोदय, सादुल्ला खा आदि के बारे मे ।

२८-२-३५, वर्धा

अभयकर-स्मारक की बैठक वर्धा मे घर पर हुई । व्याख्यान—देशमुख, टिकेकर, पटवर्धन, व बाबासाहब देशमुख । छगनलाल भारुका, खुशालचन्द खजाची, शिवराज चूडीवाले आदि से बातचीत व निश्चय । पूज्य बापूजी से बाते । वह अपील करेगे । तीन ट्रस्टी निश्चित हुए—खरे, टिकेकर और जमनालाल । पचास हजार रुपया जमा करना तय हुआ—अभयकर-हाल, ग्रामोद्योग की दूकान व पुस्तकालय वगैरा के लिए ।

११-३-३५, वर्धा

श्रीनिवास शास्त्री नागपुर से बापू से मिलने आये । उनसे बाते । उन्हे मदिर मे लक्ष्मीनारायण की मूर्ति बहुत पसन्द आई । आश्रम देखने गये । खादी भी देखी ।

१३-३-३५, वर्धा

सवेरे बापू से 'नवजीवन' के बारे में बाते । मोहनलाल भट्ट को उससे हट जाने की सलाह दी ।

जीवरामभाई, गोपबन्धु, व किशोरलालभाई ने बापू से उडीसा-योजना की चर्चा की और उन्होने निश्चय किया ।

बगीचे मे बापू के पास देर तक इन्दौर हिन्दी साहित्य सम्मेलन के बारे मे भी बातचीत हुई ।

१४-३-३५, वर्धा

बगीचे मे सुबह व दोपहर को ग्रामोद्योग-मण्डल की कार्रवाई । बापू या राजेन्द्रबाबू के इन्दौर जाने के बारे मे विचार-विनिमय ।

१५-३-३५, वर्धा

बापू से बगीचे की जमीन के बारे मे बाते । राजेन्द्रबाबू की घरू स्थिति उन्होने और मैंने बापू को पूरी समझाई ।

१८-३-३५, वर्धा

इन्दौर से हिन्दी साहित्य सम्मेलन के डेपुटेशन मे भाई कोतवाल व

तिवारीजी आये । बाते हुई । पूज्य बापूजी से बाते करके अत मे फैसला हुआ कि वह हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति बनेगे। मुझे भी जोर लगाना पडा ।

८ से ९ तक पूज्य बापूजी से खादी-प्रतिष्ठान वगैरा के बारे मे बातचीत हुई ।

२१-३-३५, वर्धा

सुबह बापूजी से व राजकुमारी अमृतकुवर बहन से देर तक बातचीत हुई । बापू से—कृष्णदास, सुचेता, चन्द्रकान्ता तथा अन्य विषयो पर बातचीत । मदालसा को साथ ले आने का निश्चय हुआ ।

२६-३-३५, वर्धा

सुचेता मजूमदार बनारस से आई, उससे ठीक बाते । बाद मे बापू के साथ खुलासा हुआ । बापू ने लिखकर दिया कि उन्हे सतोष हुआ ।

२६-३-३५, वर्धा

सुबह श्री छोटेलालजी वर्मा, डिप्टी कलेक्टर के साथ धर्मशाला, बगीचा, मदिर वगैरा गये । बापू से मिले । बाद मे दोपहर को बापू से फिर मिला और बाते की ।

७-५-३५, भुवाली

कमलाबहन (नेहरू) के पास गया । स्वरूपरानीजी भी वहा आई थी । स्वामी रामतीर्थ का जीवन तथा बापू व विनोबा के बारे मे ठीक विचार-विनिमय हुआ ।

१३-७-३५, वर्धा

सवेरे स्टेशन से बगीचे गये, बापू से बाते—स्वरूपरानी नेहरू, गगाबेन गिडवानी, मिसेस शास्त्री राजपुर, प० मदनमोहन मालवीय, सरदार वल्लभभाई आदि के सदेश व हाल कहे । अपने कान के हाल बताये । आगे चलकर टासिल का आपरेशन कराने की बापू की सलाह हुई ।

विनोबा तथा बापू से खादी के नये फेरफार की भी थोडी चर्चा की । आश्रम मे प्रार्थना मे शामिल ।

१६-७-३५, वर्धा

बापू से बाते, कमल के सम्बन्ध का हाल कहा । उन्होने व महादेवभाई

ने कमल को पत्र भेजा कि उन्हे सतोप हुआ । डॉ० चौधरानी के वारे मे वाते की ।

१९-७-३५, वर्धा

वापूजी के साथ कतवारियो की मजदूरी की ठीक चर्चा हुई। आठ घटे मे आठ आने के वजाय फिलहाल तीन आना देने की योजना पर सतोष-कारक विचार ।

२०-७-३५, वर्धा

नागपुर से श्री गोवर्धनदास छागाणी व अग्निहोत्री आये । उनके साथ बापूजी से नागपुर हिन्दी साहित्य सम्मेलन के बारे मे वातचीत व विचार-विनिमय ।

चरखा-सघ व सतीशबाबू के सम्बन्ध मे भी ठीक चर्चा । मैंने अपने विचार कहे ।

२१-७-३५, वर्धा

चरखा-सघ से मेरे त्यागपत्र के बारे मे वापू से चर्चा व विचार। शकर-लाल बैंकर तो पहले से विरोधी थे ही । बापू से तय हुआ कि सभापति का काम वह करेगे, मै केवल सदस्य रहूगा । वह जो काम लेना चाहेगे और मै कर सकूगा, उतना करूगा ।

२४-७-३५, वर्धा

इन्दौर की एक लाख की थैली, सीकर-आन्दोलन, डेरी वगैरा के बारे मे बापू से बाते व प्रोग्राम की चर्चा।

२५-७-३५, वर्धा

सरदार वल्लभभाई व मणिवेन मेल से आये । वे बापू के पास जाकर फिर घर आये । सरदार से वाते। वापू के पास २ से ४ तक देशी राज्यो के बारे मे चर्चा । राजेन्द्रवाबू, वल्लभभाई, कृपलानी वगैरा से वाते ।

२६-७-३५, वर्धा

वापू के पास १ से २ तक खादी तथा गाधी-आश्रम की चर्चा । २ से ४ तक राजेन्द्रवाबू, वल्लभभाई, कृपलानी, डॉ० महमूद वगैरा के साथ चर्चा ।

२७-७-३५, वर्धा

बापू के पास १।।। से ४ तक विचार-विनिमय हुआ । राजेन्द्रबाबू, सरदार वगैरा भी थे ।

३१-७-३५, वर्धा

बापू के निमत्रण पर वर्किंग कमेटी के सब मेम्बर तथा मेहमानो ने शाम को मगनवाडी मे भोजन किया ।

१-८-३५, वर्धा

पूज्य बापू के पास सरदार वल्लभभाई, राजेन्द्रबाबू, जयरामदास गये । देशी राज्यो के प्रस्ताव मे फेरफार करवाया । बापू से अन्य बाते ।

२-८-३५, वर्धा

सरोजिनी नायडू तथा अन्य लोग आये । सरोजिनी के साथ बगीचे गये । बापू से बाते । गोविन्दवल्लभ पत के साथ बापूजी से फलो की कपनी की योजना पर चर्चा हुई । जाजूजी भी सुबह ८ से ९-१५ तक थे । योजना बापू को पसन्द न होने के कारण स्थगित रखी ।

३-८-३५, वर्धा

मज़दूरी के विषय मे बापू की खादी-योजना पर ८ से १० तक विचार-विनिमय । राजेन्द्रबाबू, वल्लभभाई, गगाधरराव, पट्टाभि, जयरामदास, कृपलानी, जाजूजी, शकरलाल बैकर, किशोरलालभाई वगैरा के साथ ।

कातनेवालो की मजदूरी और खादी के कार्य की चर्चा बापू के साथ २ से ४ तक फिर चली । सुबहवाले प्राय सब ही उपस्थित थे ।

४-८-३५, वर्धा

सुबह बापू के पास चर्खा-सघ, मजदूर व काग्रेस के बारे मे विचार-विनिमय । फिर दोपहर को बापू के पास दो से चार तक रहा ।

पाचलेगावकरजी के साप के प्रयोग । बापू के गले मे साप पहनाया । बाद मे खादी-चर्चा हुई ।

६-८-३५, वर्धा

सुबह बापू के पास कई प्रश्नो पर विचार-विनिमय । खासकर इन्दौर हिन्दी साहित्य सम्मेलन, सीकर का जाट-प्रकरण, काग्रेस-सभापति, स्टेटमेट

देने का निर्णय। ओंकारलाल और महिला-विद्यालय, जितेंद्र, बद्रीनारायण, अम्तुलबहन, अनसूया वगैरा के बारे मे ठीक खुलासा।

७-८-३५, वर्धा

मगनवाडी मे बापू से बाते—खासकर अनसूया के बारे में।

१०-८-३५, इन्दौर

इन्दौर के महाराजा श्री यशवतरावजी से ११॥ से १२ तक मुलाकात। मणिभाई कोठारी साथ थे। महाराजा बहुत ही सादे व सरल-हृदय सज्जन तथा बापू के प्रति भक्तिवाले मालूम हुए।

२६-८-३५, देहली

सुबह तैयार होकर भाई देवदास गाधी व पूज्य बा से मिला। बातचीत। बापू को व राजाजी को तार भेजा।

४-९-३५, कानपुर-इलाहाबाद

जवाहरलाल के साथ इलाहाबाद ऐरोड्रोम से कानपुर तक आये। १ घटा १० मिनट लगा। उन्होंने अपने विचार बताये। बापू के नाम पत्र लिखा।

जवाहरलालजी की बातचीत के नोट्स

१ बापू के व मेरे (जवाहरलाल के) विचारो मे काफी फर्क है।

२ जहातक एक भी राजनीतिक कैदी जेल में है, वहातक बापू को काग्रेस से अलग नही होना था।

३ बापू ने सत्याग्रह बन्द किया, यह मै समझ सका।

४ फ्रीडम ऑफ स्पीच, फ्रीडम ऑफ प्रेस के बारे मे, सभव हो तो सबोको साथ लेकर, इस एक ही बात पर ज़ोरदार देशव्यापी आन्दोलन होना चाहिए।

५ आज की हालत मे कौसिल जाने के मै विरुद्ध नही हू।

६ आफिस स्वीकार करने के बारे मे जहा हमारी माग हो और हम जो शर्ते द, वे सरकार मजूर करे तो आफिस स्वीकार करना ठीक है, अन्यथा हमारी बात व शर्त सरकार कबूल नही करती है, यह कहकर देश मे फिर आन्दोलन करे।

७ भूलाभाई को मैने देखा भी नही। जहातक भाषणो का सम्बन्ध

है, माडरेटो मे व उनमे फर्क नही दीखता । बुद्धिमान हो सकते है ।

८. सोशलिस्ट अच्छे है, यह मै नही कहता, परन्तु उन्होने कुछ विचार तो देश के सामने रखे है ।

९ मुझे अग्रेज ज्यादा पहचानते है, मेरी कदर भी ज्यादा करते है ।

१०. वर्तमान वर्किंग कमेटी से मुझे बिलकुल सतोष नही ।

११. दूसरी बनाने मे भी पूरी कठिनाई है ।

१२ काग्रेस-प्रेसिडेट के बारे मे मुझे देश की हालत से वाकिफ होना जरूरी है । मै खुला रहना ज्यादा पसन्द करूगा । इतने पर भी जवाबदारी आयेगी तो ठीक है ।

१३ फरवरी से पहले याने सजा खत्म होने की तारीख के पहले मै लौट आया तो शायद उतने रोज जेल मे रहना पड़े ।

१४ मै काग्रेस-अधिवेशन के अवसर पर अवश्य आना चाहता हू ।

१५ शिक्षण-पद्धति तथा अन्य परिस्थितियो व विचारो पर भी उन्होने अपने विचार कहे ।

१६. जेल आदि के बारे मे भी खुलासा किया ।

२४-९-३५, बिन्सर (अल्मोड़ा)

आज देशी तिथि के अनुसार बापू का जन्मदिन है ।

नीचे मन्दिर मे जो साधु ब्रह्मचारी रहते है उनसे हरिजनो के मदिर-प्रवेश के बारे मे बहुत देर तक बाते हुई । मेरी बात उनके गले नही उतरी । पुराने विचारो के है। स्नान वगैरा करके १२ से १२-३० तक सब लोगो ने मौन रहकर कताई की । रात को दादा धर्माधिकारी ने बापू की जीवनी पर बहुत ही सुन्दर विचारणीय प्रवचन किया। उसके बाद प्रार्थना व भजन हुए ।

३-१०-३५, वर्धा

बापूजी से बातचीत । जवाहरलालजी की बातचीत का हाल कहा, महिलाश्रम व कन्याश्रम के बारे मे भी बाते की ।

४-१०-३५, वर्धा

सुबह बापू के पास गया । उनके साथ सिन्दी गाव पैदल गया और आया । मीराबहन की झोपडी देखी ।

वापू से कृष्णदास, केशव आदि की वाते। चरखा-सघ की सावली में हुई वैठक का परिणाम सुना।

५-१०-३५, वर्धा

मगनवाडी गया। वहा से वापू के साथ सिन्दी जाते-आते समय वाते। वापू से फिर वाते। उन्हे वैतूल की चर्चा का हाल दादा धर्माधिकारी ने सुनाया।

९-१०-३५, वर्धा

वापूजी से वाते। उन्हे वैतूल की स्थिति मैने कही थी, वह आज कवूल की। शान्ता के विचार कहे।

१०-१०-३५, वर्धा

वापूजी के पास दिल्ली-डेरी की वैठक हुई—दो घटे करीव सुवह और एक घटा शाम को। श्री लक्ष्मीनारायणजी, परमेश्वरीप्रसाद, ईश्वरदयाल हाजिर थे। पुराने कर्ज (दिसम्बर १९३५ तक) की जिम्मेवारी वापू ने तीन जनो पर, खासकर घनश्यामदास, लक्ष्मीनारायणजी और मुझपर छोडी।

१३-१०-३५, वर्धा

सुवह वल्लभभाई के साथ मगनवाडी गया। वहा से वापू के साथ सिन्दी तक पैदल।

२२-१०-३५, वर्धा

मगनवाडी से वापू व जयरामदास के साथ पैदल सिन्दी गये-आये। रास्ते मे वापू से मैने 'वम्वई क्रानिकल', राजाजी, काग्रेस-सभापति आदि के वारे मे अपने विचार कहे। उन्होने अपनी राय दी।

वापू ने आज ग्रामीण कार्यकर्ताओ के सामने १-३० से २-३० तक खाद्य पदार्थ व ग्राम-सेवा पर प्रवचन किया। आश्रम मे प्रार्थना। वापू से वाते।

२३-१०-३५, वर्धा

वापू आज नालवाडी गये। चर्मालय तथा मरे ढोरो के चमडे के वारे मे विचार-विनिमय। कतल की हुई वकरी के चमडे का उपयोग किया जा सकता है। वापू ने आश्रम के कार्यकर्ताओ के सामने अपने विचार ग्रामीण कार्यकर्ताओ के वेतन के सवध मे कहे। कम-से-कम तीन आना, ज्यादा-से-ज्यादा आठ आना रोज।

२५-१०-३५, वर्धा

पूज्य बापू, बा व मनु (हरिलाल गांधी की पुत्री) से बातें करके मनु की सगाई चि० सुरेन्द्र मश्रूवाला से करने का निश्चय । विनोद, मुद्दा ९-३० बजे हुआ ।

सर जस्टिस मडगावकर बापू से मिलने आये ।

२७-१०-३५, वर्धा

पूज्य बापूजी से ३ से ४ तक टासिल-आपरेशन, महिला-मडल ट्रस्ट, हिन्दी-प्रचार विद्यालय, मद्रास मे हिन्दी-प्रचार वगैरा के सबध मे बाते ।

२९-१०-३५, वर्धा

बापू को नये वर्ष के प्रणाम करने गया ।

२९-१०-३५, वर्धा

कल बापू से अनायास राधाकृष्ण व अनसूया की जो बाते हुई व बापू ने जो निर्णय किया, वह सब राधाकृष्ण ने मुझसे कहा । उसने कहा कि बापू ने तो दोनो से बात करके यह कहा कि वे तो आज नये वर्ष के दिन यह सम्बन्ध पक्का हुआ मानते हैं । इसपर सुबह ही जाजूजी से सविस्तर बाते हुई । वहा राधाकृष्ण व अनसूया हाजिर थे । दोनो की पूरी तैयारी से सम्बन्ध पक्का हुआ । दोनो के घरवालो को कहा गया । दोनो के पत्र पढे गए और विचार-विनिमय हुआ । बाद मे चि० राधाकृष्ण की सगाई चि० अनसूया के साथ पूज्य बापूजी, काकासाहब, जाजूजी तथा अन्य प्रतिष्ठित मित्र-समुदाय के सामने पक्की हुई । बापू ने सारगर्भित भाषण दिया । समारभ अच्छा हुआ ।

३०-१०-३५, वर्धा

बापू व जाजू से बाते ।

चि० तारा के साथ बापू के पास ३ से ४ तक । केनिया की हालत श्री पाण्डे ने कही ।

१-११-३५, वर्धा

बापू के पास चि० तारा के साथ ७ से ८॥ तक बाते होती रही । बापू ने ठीक खुलासेवार बात की ।

दोपहर को ३ से ४ तक वापू से वाते । जमीन का फैसला। वापू ने तारा के वारे मे अपनी राय कही । मुझे भी ठीक मालूम हुई ।

७-११-३५, वर्धा

नागपुर-मेल से वर्धा पहुचा । मगनवाडी मे वापू से मिला । ग्रामोद्योग-सघ की वैठक का कार्य १।। से ४ तक हुआ ।

८-११-३५, वर्धा (जन्मदिन)

स्नान आदि से निवृत्ति के वाद मा को प्रणाम। लक्ष्मीनारायण मदिर मे दर्शन व वापू को प्रणाम। वापू व अन्य मित्रो के साथ मगनवाडी मे ही आज भोजन किया ।

९-११-३५, वर्धा

विनोवा से करीब डेढ घटे तक टेनरी देखने के वाद विचार-विनिमय। विनोवा ने कहा

१ देहातो मे स्वाभाविक रूप से श्रमजीवी जीवन व्यतीत करने-वाले लोगो मे श्रमजीवन के सिद्धान्तो के वारे मे निष्ठा निर्माण करके उन्ही मे से देहातो की सेवा करनेवाले श्रद्धावान और साहसी कुशल कार्यकर्ता निर्माण हो सके, ऐसी योजना वनाना ।

२. शिक्षित वर्ग के जो कार्यकर्ता देहात की सेवा की लगन रखते है, वे स्वतत्र रूप से अपने पैरो पर खडे रह सके, ऐसी औद्योगिक शिक्षण की—सहकार्य—की और दिशा-दर्शन की योजना तैयार करना ।

३ अहिसक आदोलन के मूलभूत तत्त्वो के वारे मे विश्वास और ज्ञान की कमी विलकुल निकट के कार्यकर्ताओ मे भी दिखाई देती है। ऐसी स्थिति मे उन मूल तत्त्वो का महत्त्व जानने और उसके अनुसार जीवन-परिवर्तन करने की आवश्यकता खुद के और आसपास के लोगो के चित्त पर वनी रहे, ऐसी आचार-योजना वनाना।

वापू से विनोवा की वातचीत पर विचार-विनिमय ।

१०-११-३५, वर्धा

वापूजी ने आज प्रार्थना के वाद रायचन्द्र-जयन्ती पर सुन्दर प्रवचन किया । व्यवहार करते हुए भी मनुष्य उच्च विचार व आचार रख सकता है।

१३-११-३५, वर्धा

विनोबा से ८ से ९-३० तक बाते । विषय—कार्यकर्ताओ की कमी, मगनवाडी की व्यवस्था, बापू का मोह, डेरी, जामिया वगैरा ।

श्री जुगुलकिशोर बिडला व श्री रामेश्वरदास बिडला के पत्र अबेडकर के बारे मे आये । उन्हे तार व पत्र दिया । बापू से भी कहा ।

१४-११-३५, वर्धा

प्रार्थना, बापू से हरजीवनभाई के बारे मे व विट्ठलराव, सुमित्रा आदि के बारे मे बाते ।

२१-११-३५, वर्धा

घनश्यामदासजी से बाते । उनका मेरे कान के इलाज के लिए विदेश (वियेना) जाने पर जोर । उन्होने बापू से भी इस सबध मे बाते की ।

२२-११-३५, वर्धा

हरिजन-बोर्ड के सदस्य आना शुरू हुए । मगनवाडी मे बापू से बाते—ऊपर की इमारत, फेलोशिप वगैरा के बारे मे ।

२४-११-३५, वर्धा

बापू के पास हरिजन बोर्डिंग-विषयक थोडी बाते । बाद मे दिल्ली-डेरी के बारे मे विचार-विनिमय ।

२६-११-३५, वर्धा

बापू से मीराबहन के सेगाव मे रहने आदि के बारे मे बाते ।

२७-११-३५, वर्धा

मगनवाडी मे बापू से दिल्ली-डेरी, बिहार-रिलीफ, हिगणघाट मजदूर-हडताल के बारे मे विचार-विनिमय । जो मैने फैसला किया, वही महाबीर-प्रसाद को बापू ने कहा ।

२८-११-३५, वर्धा

सुबह जल्दी तैयार होकर श्री रामेश्वरी नेहरू व मीराबहन के साथ सेगाव गया । जाते समय आश्रम से पैदल गये । आते समय अपने बगीचे मे व बाबासाहब के यहा दही-हुड्डा का भोजन हुआ । गाव मे सभा हुई । बाबासाहब बाढोणेवाले सभापति थे । वह, श्री रामेश्वरी नेहरू, दादा धर्माधिकारी व मैं बोले । मीराबहन का परिचय दिया और वहा रहने का

कारण समझाया। मालगुजारी के बारे मे बताया और कहा कि ब्याज-सहित जितने रुपये निकलेगे, उसके बारह आने भी नगदी दे देवे तो यह हिस्सा पुराने पटेल को देने को आज भी तैयार है। दो वर्ष तक भी यह व्यवस्था करेगे तो विचार किया जायगा। मीराबहन वहा रहने लगी।

२९-११-३५, वर्धा

दिल्ली-डेरी व जुगुलकिशोरजी बिडला को मै जो पत्र भेजना चाहता था, बापू से उस सबध मे सब कहा। बापू ने कहा—इस प्रकार के पत्र भेजने की जरूरत नही। उसके कारण भी बताये।

१-१२-३५, वर्धा

सिन्दी से मगनवाडी तक बापूजी से सिन्दी की व्यवस्था व डिस्ट्रिक्ट कौंसिल की व्यवस्था पर खास विचार। उनका कहना था कि इसमे अधिक ध्यान देना जरूरी है।

३-१२-३५, वर्धा

बापू ने रामदास गाधी की छपाई के काम की योजना बिलकुल नापास की। उसके साथ पूरा समझ लेने के बाद बापू को मैने भी अपनी राय बताई।

मगनवाडी जाकर बापू व बहनो से मिला। चि० तारा को गौरीशकर भाई के पास इलाज को भेजने का बापू ने निश्चय किया।

४-१२-३५, वर्धा

मगनवाडी बगीचे से सिन्दी तक जाने की सडक बनाने का फैसला किया। पेडो के बीच से ही रास्ता बनाने का तय रहा—म्युनिसिपल कमेटी की दृष्टि से। बगीचे की कीमत के बारे मे बापू जी, जाजूजी और कुमारप्पा से देर तक विचार-विनिमय होता रहा।

बापूजी के स्वास्थ्य खराब होने की सूचना मिलने पर बगीचे गया और वहा सब व्यवस्था करके आया। सिन्दी के लोग मिलने आये। वहा की हालत समझी।

५-१२-३५, वर्धा

सुबह जल्दी मगनवाडी गया। बापू का स्वास्थ्य ठीक मालूम हुआ। वही नाश्ता किया। बाद मे सिन्दी पैदल घूमने गया।

महिला-आश्रम मे बापू के लिए मकान की सफाई करवाई।

डॉ० खरे, शेरलेकर, मगरूलकर और महोदय आदि ने मिलकर बापू की भली प्रकार से जाच की और कहा कि कोई खास शिकायत नही है। थोडा आराम लेने से ठीक हो जायगा। चिन्ता कम हुई।

७-१२-३५, वर्धा

बापू को आज फिर से ब्लडप्रेशर का दौरा हुआ व गर्दन मे दर्द हुआ। उनसे दौरे का कारण व आराम लेने के बारे मे बातचीत। उन्होने शान्ता (मिस मेरी) के बारे मे तथा मैंने विट्ठलसिह के बारे मे अपने विचार कहे।

प्रार्थना आज मगनवाडी मे ही की।

७-१२-३५, वर्धा

बापू का ब्लडप्रेशर ता० ५ को १६०-११० था। वह आज दोपहर को डॉ० साहनी (सिविल सर्जन), मगरूलकर, शेरलेकर, महोदय आदि ने देखा तो २१०-१२० निकला। चिन्ताजनक बात है। शाम को डॉ० खरे व सिविल सर्जन ने फिर लिया तो १८०-११० हुआ। फिर भी चिन्ता रही। डॉ० जीवराज को तार किया।

महादेवभाई व देवदास से बापू के आराम के बारे मे विचार-विनिमय।

८-१२-३५, वर्धा

बम्बई से डॉ० जीवराज मेहता बापू को देखने आये। बहुत देर तक जाच की ओर बुलेटिन निकाला।

१०-१२-३५, वर्धा

मगनवाडी गया। बापू का स्वास्थ्य ठीक नही लग रहा है। उन्हे स्थान-परिवर्तन की बात समझाई। उन्होने स्वीकार नही की। ब्लडप्रेशर ठीक नही है, यह चिन्ता का विषय है।

११-१२-३५, वर्धा

मगनवाडी गया। बापू को देखा। डॉ० साहनी ने बापू का ब्लडप्रेशर लिया।

बापू को स्थान-परिवर्तन का समझाने की कोशिश कर देखी। सफलता नही मिली। आन्ध्र के ४०० स्त्री-पुरुष पूज्य बापूजी के दर्शनो के लिए स्पेशल ट्रेन लेकर दो रोज के लिए आये। उनके नेता लोग भोजन को आये। शाम की प्रार्थना मे मगनवाडी मे शामिल हुए। उनकी स्पेशल ट्रेन देखी।

१२-१२-३५, वर्धा

बापू से मगनवाडी मे मिला। यद्यपि वह मगनवाडी छोडना नही चाहते थे, फिर भी उनको महिला-आश्रम या अपने वहा वगले पर स्थान-परिवर्तन करने को राजी किया। सिविल सर्जन से मिला। उन्होने आश्रम का स्थान पसन्द किया—घर पर मच्छर वगैरा तथा अन्य अडचनो के कारण।

कल सुबह ९ वजे आश्रम जाने का तय किया। पूज्य वा की इच्छा मगनवाडी मे ही रहने की है।

आन्ध्र स्पेशल ट्रेन के यात्रियो को जो वापू के दर्शनो को आये थे, दूकान पर भोजन कराया। मैने भी उनके साथ दुवारा भोजन किया। मदिर मे भजन। शाम को महादेवभाई ने वताया कि वापू महिलाश्रम नही जायगे।

१३-१२-३६, वर्धा

मगनवाडी गया। वापू से मिला। उनकी इच्छानुसार अत मे मगनवाडी मे ही रहने का निश्चय किया। पूज्य राजेन्द्रवावू आये। वापू से वाते हुईं। वही प्रार्थना।

१५-१२-३५, वर्धा

सरदार वल्लभभाई, मणि, डॉ० जीवराज मेहता, डॉ० गिल्डर आदि ववई से आये। वापू को दोनो डॉक्टरो ने भली प्रकार देखा। डॉ० गिल्डर ने छाती की जाच की। फोटो लिया। डॉ० जीवराज ने कहा कि चिंता की वात नही है, पर वापू को अभी आराम लेने की जरूरत है।

वापू की तवीयत के वारे मे उनके प्रोग्राम-सवधी चर्चा।

१७-१२-३५, वर्धा

वल्लभभाई, महादेवभाई, मणि, उमा के साथ घूमते हुए मगनवाडी गया। वापू से मिलकर वापस पैदल वगले आया।

१८-१२-३५, वर्धा

सरदार वल्लभभाई के साथ बापू से मिलकर आया।

गाधी-सेवा सघ का कार्य तीन घटे, ४ से ५-३० व ७ से ८-३० तक किया।

१९-१२-३५, वर्धा

वेरियर एलविन सरदार के साथ वापू से मिलकर आये। एलविन से वाते।

२०-१२-३५, वर्धा

मगनवाडी गया। बापू से विनोद, तथा ४-३० से ५-१५ तक बाते। सरदार भी साथ थे।

गाधी-सेवा सघ की बैठक सुबह ८ से १०-१५ व शाम ८ से १० तक हुई। कान्फ्रेस २९ फरवरी से ६ मार्च तक सावली मे रखने का निश्चय हुआ।

२४-१२-३५, वर्धा

मगनवाडी गया। बापू से उनके साथ जानेवालो के बारे मे तथा जो यहा रहेगे, उनकी व्यवस्था करने के बारे मे विचार-विनिमय। उनकी इच्छा जानी। मैने अपना अभिप्राय बताया।

२५-१२-३५, वर्धा

डॉ० जीवराज मेहता बम्बई से आये। बापू से देर तक बातचीत। स्वास्थ्य की जाच, ब्लड-प्रेशर, नाडी। प्रगति धीमी बताई।

डॉ० जीवराज से बापू के बारे मे बाते। डॉ० खरे नागपुर से आये। उन्होने भी बापू को देखा।

२६-१२-३५, वर्धा

बापू से बाते। उनको जो कहना था वह सुना। नागपुर जा नही सकते, मैने कहा।

२७-१२-३५, वर्धा

बापू से बाते। उन्होने रामकृष्ण व उमा के शिक्षण के बारे मे कहा। अन्य बाते।

३१-१२-३५, वर्धा

४-३० उठा। मगनवाडी गया। बापू से मामूली बातचीत।

बापू से इटरनेशनल फेडरेशन ऑफ फेलोशिपवाले मिले। थोड़ी देर बात हुई। बापू से मेरी भी मामूली बातचीत हुई।

डायरी के अंश

१९३६

२-१-३६, बबई

वर्किंग कमेटी की बैठक। पू० मालवीयजी से देर तक बाते।

३-१-३६, वर्धा

मगनवाडी गया। बापू को मालवीयजी का सन्देश कहा। बापू का ब्लड-प्रेशर फिर २०६-११२ हो गया। बढ जाने से चिंता। डॉ० महोदय से बापू के स्वास्थ्य के बारे मे बातचीत।

शाम को फिर बापू के पास मगनवाडी गया। ४ से ७-३० तक डाक्टरो ने बापू को देखा। ब्लडप्रेशर २००-११५ हुआ। इतना आराम लेने पर भी ब्लडप्रेशर कम नही हो रहा है, यह जानकर चिन्ता होती है। बापू का आज बबई जाना स्थगित रहा। डॉ० जीवराज ने भी टेलीफोन पर कहा कि १८५ से कम हो तो ही बापू को बम्बई भेजना चाहिए।

४-१-३६, वर्धा

सुबह ५ बजे उठा, दादा धर्माधिकारी के साथ मगनवाडी गया।

बापू को रात मे नीद ठीक आई। आज ब्लडप्रेशर १८६-११० रहा। डॉक्टरो ने अत मे बापू को सेकड या फर्स्ट क्लास मे भी यात्रा न करने देने व बबई न जाने देने का निर्णय दिया। डॉक्टरो ने व बापू ने जनवरी-आखिर तक आश्रम मे ही रहने का निश्चय किया।

आश्रम जाकर बापू के रहने आदि की व्यवस्था की।

शाम को करीब ५॥ बजे बापू को मनगवाडी से महिला-आश्रम के पुराने भवन मे ऊपर ले गए, डॉ० साहनी ने जाचा। ब्लडप्रेशर १९६-११०। शाम की प्रार्थना आश्रम मे की। आज से जाजूजीवाले पुराने मकान मे सोने का रखा। बाहर खुले मे सोया।

५-१-३६, वर्धा

४ बजे उठकर प्रार्थना मे गया। रात मे बापू को नीद आ गई।

घूमने के बाद बापू के पास गया। डॉक्टरो ने बापू की जाच की। ब्लडप्रशर १९२-११० हुआ। कम नही हुआ।

डॉ० जीवराज मेहता बम्बई से ऐक्सप्रेस से आये और मेल से वापस गये। बापू को भली प्रकार देखा। विनोद व बातचीत। कुछ समय बाद आवश्यकता हुई तो बम्बई व बाद मे माथेरान बापू को रखने का विचार हुआ। डॉ० जीवराज के साथ भोजन। शाम की प्रार्थना आश्रम मे। बापू ने ७॥ बजे मौन लिया।

६-१-३६, वर्धा

४ बजे उठा। प्रार्थना, बापू का मौन। बापू को नीद ठीक आई। उनका ब्लडप्रेशर २२०-१२० करीब हुआ। डॉ० महोदय ने सिविल सर्जन डॉ० साहनी को बुला लाने को कहा। वह आये। उन्होने ब्लडप्रेशर देखा तो १७५-१२० निकला। दोनो मे फर्क रहा। शाम को डॉ० शेरलेकर व डॉ० मगरूलकर दोनो ने ब्लडप्रेशर लिया तो २१०-१२० निकला। इससे चिन्ता हुई। डॉक्टरो ने कहा कि बापू कमरे के अन्दर ही रहे व पूरा आराम ले।

७-१-३६, वर्धा

बापू को नीद ठीक आई। मिस लीस्टर आज बापू के मिलने आई। अपने यही मेहमान है। उनके साथ मे भोजन किया।

बापू का ब्लडप्रेशर १९४-११० था। स्वास्थ्य साधारण ठीक रहा।

८-१-३६, वर्धा

४ बजे प्रात बापू से मिलकर बगले पर आया। पत्र लिखवाये। घूमने गया। बापू का स्वास्थ्य आज ठीक लगा। ब्लडप्रेशर १९०-१०६ था।

आज से बापू को रामायण सुनाने का निश्चय हुआ। शाम को आश्रम मे भोजन किया। बाद मे प्रार्थना।

९-१-३६, वर्धा

४ बजे प्रात बापू से मिलकर बगले आया।

बापू का रामायण-वर्ग हुआ।

बापू के दो दात डा० साहनी ने निकाले। ब्लडप्रेशर शाम को १८०-११०।

१०-१-३६, वर्धा

४ वजे प्रार्थना। वापू को देखकर वगले आया। वहापर कुछ लिखना-पढना किया। मिस लीस्टर वगैरा सेगाव गये।

श्री राजेन्द्रवावू मेल से आये। वापू के पास ८-२० से ९ तक रहे। रामायण-वर्ग मे वैठे रहे। वात ज्यादा नही की। वापू को आज रात मे नीद कम आई। ब्लडप्रेशर शाम को १८६-१०६ था।

भोजन के वाद जल्दी ही वापस वापू के पास गया।

११-१-३६, वर्धा

वापू का ब्लडप्रेशर सुवह १७६-१०६, शाम को १७२-१०४। स्वास्थ्य ठीक है। रामायण-वर्ग।

सरदार वल्लभभाई व राजेन्द्रवावू के प्रोग्राम तथा वगाल-सवधी विचार-विनिमय।

मनगवाडी गया, उसके वाद वापू के पास गया।

१२-१-३६, वर्धा

४ वजे प्रार्थना। वापू को रात नीद आई थी।

डॉ० जीवराज, डॉ० गिल्डर वम्वई से १२-१५ वजे करीव आये। डॉ० वरेटो दात निकालने नागपुर से आये। १ वजे सव मिलकर सात डॉक्टर होगए। डॉ० जीवराज व गिल्डर तो वापू को वम्वई ले जाने को आये थे, किन्तु वापू ने आज जाने से इन्कार किया। दो दात निकलवाये।

मेरी राय थी कि ववई जाना हो तो आज जाना चाहिए। वाद मे सरदार, डॉ० जीवराज व डॉ० गिल्डर ने मिलकर गुरुवार को वम्वई जाने का विचार किया। कई कारणो से मुझे दु ख हुआ, रात मे नीद भी वरावर नही आई।

१३-१-३६, वर्धा

३ वजे उठा, ४ वजे प्रार्थना। रात मे वापू को नीद आई थी। मनोज्ञा भूल से सुवह प्रार्थना के समय अदर वापू के पास आई। उसे समझा दिया। उसके प्रश्न ठीक मालूम हुए। सरदार के साथ वापस पैदल वापू के पास। वापू का आज मौन था। दिन मे ठीक आराम किया। वापू को स्टेशन ले जाने के वारे मे स्टेशन-मास्टर के साथ विचार-विनिमय।

प्रार्थना के बाद बापू के समक्ष महादेवभाई ने लीलावती को बापू के दर्शन कराने के बारे मे जो दुराग्रह व जिद की, तथा उस समय मेरा भी जो व्यवहार रहा, उसके लिए मन मे दु ख अनुभव होता रहा। बापू के सामने यह घटना नही होनी चाहिए थी। उन्हे भी विचार रहा होगा।

सरदार और राजेन्द्रबाबू मीराबहन के पास सेगाव जाकर आये।

१४-१-३६, वर्धा

४ बजे प्रार्थना। रात मे महादेवभाई के साथ घटी कल की घटना का विचार चलता रहा। कई बाते मन मे आई।

बापूजी को रात मे नीद कम आई और १ बजे दो दस्त हुए, यह सुनकर चिता हुई। महादेवभाई को दु ख से भरा हुआ पत्र लिखा। उनका भी पत्र आया। इस सबध मे सरदार का व्यवहार न्याय से थोडा अलग मालूम हुआ। आज मन मे काफी असतोष व दु ख रहा, आखे भी गीली हुई।

इन्दौरवाले हीरालालजी व मनोज्ञा, अम्बा आदि से बाते। उन्हे कृष्णदास का सबध पूर्णतया पसन्द है। बापू को भी कहा। इन सब लोगो को शाम को बापू के दर्शन करा दिये। बापू ने हीलारालजी के बारे मे पूछा।

बापू ने अपने मन की दो बाते कही। एक मगनवाडी को सफल बनाना व दूसरी जो आखरी की लडाई लडनी है उस बारे मे। केन्द्र वर्धा ही रखना जरूरी बतलाया।

१६-१-३६, वर्धा

४ बजे प्रार्थना। बापू से मिलकर बगले आये, सरदार व मणि के साथ घूमते हुए फिर आश्रम। डॉ० जीवराज मेहता बम्बई से आये। बापू से मिलकर स्टेशन गया। बापू को ले जाने की व्यवस्था देखी। वहा से मनगवाडी जाकर व अस्पताल मे डॉ० साहनी से मिलकर ११-३० बजे भोजन। बापू की इच्छा के मुताबिक ४-३० से ५-३० तक खास-खास लोगो को उनसे मिलाया। कुमारप्पा, तारा, शान्ता, लीलावती, हरिलाल गाधी, महादेवभाई वगैरा। बापू को आज आश्रम की बहनो ने भजन सुनाये। कम पसन्द आये।

वापूजी रात को एक्सप्रेस से बम्बई रवाना हुए। व्यवस्था से पूरा सतोष नही रहा।

३-२-३६, वर्धा

घूमने मगनवाडी गया। मीराबहन से बहुत देर तक बातचीत। उन्हे कई तरह से समझाया कि बापू के पास जाने से उन्हे अच्छा नही लगेगा। मीराबहन ने मेरे आग्रह पर कबूल तो किया, पर कहा कि अगर नही गई तो सिर फट जायगा, ऐसा लगता है आदि।

महादेवभाई का पत्र आया। आखिर मे मीराबहन ने जाने का ही निश्चय किया। उसकी हालत देख क्रोध व प्रेम दोनो पैदा होते है।

बापू का ब्लडप्रेशर १४५-९०।

७-२-३६, वर्धा-भुसावल

हरिभाऊजी के साथ पैदल स्टेशन। महादेवभाई, दुर्गाबहन कलकत्ते गये। उन्होने बापू के स्वास्थ्य का व मन का हाल थोडे मे बताया। मीराबहन और प्यारेलाल का भी। बडनेरा तक प्यारेलाल की राम-कहानी, महादेव-भाई के पत्र वगैरा देखे।

९-२-३६, अहमदाबाद

वल्लभभाई व जीवराज मेहता आये। मुझे भी साथ ले गए। बापू का प्रोग्राम जो निश्चित हुआ था, बतलाया। बापू बारडोली ठहरते हुए ता० २३ को वर्धा पहुचेंगे, यह कहा।

गुजरात-विद्यापीठ मे प्रार्थना। बापू से बात नही हुई।

२१-२-३६, वर्धा

मीराबहन से बाते। मैने अपने विचार कहे। किशोरलालभाई से गाधी-सेवा-सघ के बारे मे बातचीत। छगनलालभाई से कृष्णदास के विवाह के बारे मे बाते। प्यारेलाल से बाते। उसे समझाया। तीन रोज बाद, आखिर उसने बहुत समझाने पर, खाना खाया।

२३-२-३६, वर्धा

पू० बापूजी, सरदार, मणि दोपहर को ऐक्सप्रेस से वर्धा पहुचे।

२५-२-३६, वर्धा

सरदार से बडौदा कन्या-विद्यालय की बाते। मैने अपनी राय बताई। उन्होने बापू से बात करके निश्चय करने का विचार किया।

जवाहरलालजी का पत्र, विचार-विनिमय।

बापू को ब्लड-प्रेशर ज्यादा हुआ, यह सुना। मीराबहन वगैरा ने बाते ज्यादा की ।

२६-२-३६, वर्धा

निवृत्त होकर प्यारेलाल व सुशीला के साथ पैदल आश्रम गया।

पू० बापू के पास रामायण ८-३० से ९ तक हुई। बाद मे ९ से १०-१५ तक बापू से सेगाव, सावली, देवली, मीराबहन, प्यारेलाल, बडौदा का मामला, तारा, वल्लभभाई आदि की चर्चा व विचार।

२७-२-३६, वर्धा

पू० बापू सेगाव गये। मन पर बहुत विचार रहा। जाते समय रबर-टायरवाली बैलगाडी मे गये और आते समय बाबासाहब की मोटर मे आये।

बापू का ब्लडप्रेशर ता० २५ को १८८-११०, ता० २७ को सुबह ७-३० बजे २१९-१२०। सेगाव से वापस आने पर ११ बजे १८८-११०, दोपहर को २-४५ बजे १८८-११० रहा। सरदार ऐक्सप्रेस से आये। बडौदा-प्रकरण के बारे मे ठीक बाते हुईं। सरदार से बापू व बडौदा के प्रोग्राम के बारे मे चर्चा।

२८-२-३६, वर्धा-सावली

बापू व कमला से मिले। सुशीला दिल्ली गई, हम लोग सावली रवाना हुए। रात को १०-३० बजे के करीब बापू व राजेन्द्रबाबू वगैरा आये।

२९-२-३६, वर्धा-सावली

बापू, सरदार, राजेन्द्रबाबू से मिलना व बातचीत। बापू ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। अपने विचार कहे। प्रदर्शनी मे आसपास का सामान ही रहना चाहिए था। दूध व साग पर प्रवचन। कृष्णदास (गाधी) के विवाह का तार भेजा, बापू ने लिखवाया।

गाधी-सेवा-सघ की कार्यकारिणी की सभा। मौन-कताई १२॥ से १ तक। साधारण सभा, परिचय, रिपोर्ट आदि।

१-३-२६, सावली

बापू का कन्या-गुरुकुल बडौदा न जाने का, सरदार का ता० ९ को वहा पहुचने का व बापू का ता० ८ को दिल्ली पहुचने का निश्चय। सभा का कार्य। सदस्यो का परिचय। बापू के साथ ४ से ५ तक प्रश्नोत्तर।

३-३-३६, सावली

गाधी-सेवा-सघ की कार्यकारिणी का कार्य सुवह ७-३० से ९-३० तक। कान्फ्रेंस मे प्रश्नोत्तर। वापू ४ से ५ तक रहे। प्रचार-कार्य का खुलासा करना पडा। जो थोडी गलतफहमी थी, वह दूर हुई।

४-३-३६, सावली

सुवह गाधी-सेवा-सघ की कान्फ्रेंस हुई। विनोवा का स्पष्टीकरण सुन्दर व महत्त्वपूर्ण हुआ। वापू ने कान्फ्रेंस की कार्य-पद्धति पर टीका की। उस समय वहुत ज्यादा क्रोध आया। इतने क्रोध का इन वर्षो मे अनुभव नही हुआ था। बापू से भी ज्यादा पू० वल्लभभाई पर क्रोध आया। मन मे खूब दु ख व विचार आता रहा। विनोवा व किशोरलालभाई से वातचीत। अखीर मे वापू और वल्लभभाई से खुलासा होने पर थोडी शान्ति हुई।

५-३-३६, सावली

कृष्णदास (गाधी) का विवाह मनोज्ञा के साथ हुआ।

६-३-३६, सावली-चादा-वर्धा

आज गाधी-सेवा-सघ की सभा मे पू० विनोवा का तकली व चरखे के बारे मे सुन्दर व प्रभावशाली भाषण हुआ। राजेन्द्रबाबू, बापूजी का, किशोरलालभाई व मेरा भाषण भी ठीक हुआ।

१-१२ को वापू व राजेन्द्रवावू के साथ मोटर से चादा रवाना। २-३० के करीब चादा पहुचे। वहा से पैसेजर से वर्धा। रास्ते मे वापू व कुमारप्पा से वाते। गर्मी वहुत थी। भोजन रास्ते मे ही हुआ।

वर्धा करीब ८-१० बजे। बापू को आश्रम मे छोडा। आज करीब सत्तर मेहमान बगले पर ठहरे।

७-३-३६, वर्धा.

सुवह जल्दी वापू के पास गया। उन्हे मगनवाडी ले गए। ग्राड ट्रक से बापूजी व वा दिल्ली गये।

१७-३-३६, दिल्ली

हरिजन-सेवक-सघ की कॉलोनी मे ठहरे। स्नान व नाश्ते के बाद वापू से मिले। जवाहरलालजी आये। वापू से सुवह ९ से १०॥ व शाम को ४ से ५। मिले। उनके साथ थोडी चर्चा हुई।

१८-३-३६, दिल्ली

हिन्दी-प्रचार के लिए इन्दौर से जो पद्रह हजार की सहायता मिली, बापू से उस बारे मे तथा अन्य बाते ।

१९-३-३६, दिल्ली

सुबह पू० बापू से थोडी बाते। डॉ० अन्सारी ने बापू को देखा। स्वास्थ्य ठीक बताया। ब्लड-प्रेशर १५५-९२।

दक्षिण भारत हिन्दी-प्रचार सभा को पद्रह हजार भेजने का कल बापू ने निश्चय किया। बापू से उनके स्टेटमेट, जवाहरलालजी के प्रोग्राम तथा डेरी-सम्बन्धी बाते ।

जवाहरलालजी से सुबह व शाम बातचीत हुई। बहुत-सी बाते साफ हुईं। खासकर देशी रियासतो के प्रश्न पर अच्छी चर्चा हुई ।

पू० मालवीयजी से मिला ।

२२-३-३६, दिल्ली

बापू से बातचीत। बाद मे शकरलाल बैंकर को लखनऊ टेलीफोन किया।

वर्किंग कमेटी सुबह ८ से ११, शाम को १॥ से ५ तक हुई। तेरह मेबर हाजिर थे। भूलाभाई व पतजी की दलीले ठीक थी ।

सरदार बीमार पड गए। बापू का ब्लड-प्रेशर डॉ० अन्सारी ने लिया, १५४-१०२ हुआ । नाडी ७२।

२३-३-३६, दिल्ली

बापू से मिला।

वर्किंग कमेटी सुबह ७॥ से १० तक और दोपहर १२ से ५ तक।

पू० मालवीयजी से मिला। जवाहरलालजी, राजेन्द्रबाबू, जयरामदास और कृपलानी से करीब एक घटा बाते ।

२४-३-३६, दिल्ली

बापू के साथ टी० बी० अस्पताल डॉ० कृष्णा के साथ देखी। आख की अस्पताल भी देखी। बापू से बाते। बापू के रामायण-वर्ग मे।

बापू, राजेन्द्रबाबू, जवाहरलालजी के साथ ९ से ११ तक विचार-विनिमय ।

सरदार वल्लभभाई का स्वास्थ्य खराब हो गया। उन्हे बुखार आ गया। डॉ० अन्सारी ने देखा। उनकी राय से उन्हे बिडला-हाउस ले गए ।

वर्किंग कमेटी दोपहर १ से ६ तक और रात को ९ से १०॥ तक होती रही

२५-३-३६, दिल्ली

सुबह बापू से बातचीत ।

सरदार वल्लभभाई का स्वास्थ्य ठीक नही है, उनके पास देर तक बैठा ।

पू० मालवीयजी महाराज से देर तक बातचीत। हिन्दी साहित्य सम्मेलन, काग्रेस व पद-ग्रहण, आपस का समझौता आदि की चर्चा। कृपलानी आदि के बारे मे उन्होने अपने विचार कहे। उन्हे समझाया और उनका भ्रम दूर किया।

२६-३-३६, दिल्ली

सुबह बापू, राजेन्द्रबाबू व प्यारेलाल से बातचीत। बापू से ठीक बाते हुईं। प्यारेलाल का चार्ज बापू ने लिया।

सुबह ९-१५ से १० व शाम को बिडला-हाउस मे ४ से ५ तक बापू के साथ डेरी-संबधी चर्चा। डेरी की भावी व्यवस्था बापू की इच्छा के अनुसार हुई। एक चिंता कम हुई।

बापू ने डॉ० टैगौर की ठीक सहायता करवाई।

२७-३-३६, लखनऊ

बापू के ठहरने के योग्य स्थान देखा। घूम-फिरकर अत मे यूनिवर्सिटी रोडवाला मकान पसन्द हुआ। वहा व्यवस्था की। शाम को बापू के लिए जो मकान किराये से लिया, वहा रहने आया।

२८-३-३६, लखनऊ

सुबह ६-३० बजे लखनऊ से करीब तीस मील दूर के स्टेशन पर बापू को उतारकर मोटर से लाये। ६० मील आना-जाना हुआ। यूनिवर्सिटी रोड-वाले किराये के बगले मे बापू को ठहराया। व्यवस्था की देखभाल की।

जवाहरलालजी दोपहर की गाडी से आये। उन्हे लेने गया। बापू ५। के बाद प्रदर्शनी मे गये, साथ मे जवाहरलालजी व राजकुमारी थे। प्रदर्शनी

देखने के बाद बापू का भाषण हुआ। भीड बहुत ज्यादा नही थी। बापू के जेलर बनने का चार्ज लेना पडा ।

३०-३-३६, लखनऊ

प्रदर्शनी मे तीन बजे से ६-४५ तक रहा, वहा की स्थिति समझी। पू० बापू से प्रदर्शनी की व थोडी अन्य बाते ।

३१-३-३६, लखनऊ

बापू के साथ प्रदर्शनी मे गया। ७। से १०॥ तक खूब घूमकर ठीक तौर से प्रदर्शनी देखी ।

शाम को प्रार्थना के बाद बापू से शकरलाल का डर, उसके विचार तथा मेरा डर कहा ।

१-४-३६, लखनऊ

सुबह घूमते समय बापू से बातचीत । रामायण-पाठ। बाद मे मुलाकाते। प्रार्थना के बाद सुरेन्द्र ने बापू से काश्मीर के बारे मे बाते की। बापू से गिरधारी व प्रदर्शनी-सबधी तथा अन्य निजी बाते की। चरखा काता। बाद मे प्यारेलाल से देर तक बातचीत ।

२-४-३६, लखनऊ

४ बजे सुबह प्रार्थना। बाद मे पू० बापू से प्यारेलाल के बारे मे बात-चीत। बापू के साथ प्रदर्शनी मे गया। कैलाश ने स्टालो का वर्णन ठीक समझाया ।

३-४-३६, लखनऊ

रात को लखनऊ से बापू के साथ इलाहाबाद के लिए रवाना।

४-४-३६, इलाहाबाद

सुबह करीब ५ बजे प्रयाग पहुचे। बापू की पार्टी के साथ जवाहरलालजी, रणजीत (पडित), सरूप (विजयालक्ष्मी पडित) आदि आये थे। स्टेशन से आनन्द-भवन तक पैदल चलकर आये ।

बापू का प्रोग्राम—मुलाकात आदि की व्यवस्था की। रामायण-वर्ग। बापू की जवाहरलालजी से बाते। शाम को घूमते समय भी बापू से बाते।

५-४-३६, इलाहाबाद

सुबह बापू के साथ घूमे। जवाहरलालजी और मै दोनो थे। बहुत-सी

बाते होती रही। बापू व जवाहरलाल के साथ एक घटा कमला-मेमोरियल सबधी बाते। कठिनाई आदि पर चर्चा।

शाम को ५ से ६॥। तक हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सग्रहालय का उद्घाटन बापूजी ने किया, उपस्थिति ठीक थी। बापू का भाषण अच्छा हुआ। प्रार्थना के बाद बापू थोडा घूमे।

६-४-३६, इलाहाबाद

बापू मौन होते हुए भी सुबह अकेले घूमने निकल गये। कुछ देर तक खूब विचार व चिन्ता होती रही। थोडी दौड-धूप करनी पडी। मोटर लेकर खोजने निकले, पर रास्ते मे ही मिल गए। सरोजनी नायडू साथ थी।

वर्किंग कमेटी १-३० से रात के ९ तक होती रही। काफी चर्चा और विचार-विनिमय हुआ।

८-४-३६, लखनऊ

सुबह करीब ५ बजे रास्ते मे ही बापू के साथ उतर गए। १२ मील के पत्थर के पास एक घटा पैदल घूमे। बाद मे मोटर से लखनऊ पहुचे।

९-४-३६, लखनऊ

बापू के साथ पैदल एक घटा घूमे।

सुबह वर्किंग कमेटी की बैठक हुई। शाम को ऑल इडिया काग्रेस कमेटी की बैठक हुई। बाद मे सब्जेक्ट कमेटी रात मे देर तक चली।

१३-४-३६, लखनऊ

सुबह जल्दी बापू के साथ घूमा। राजेन्द्रबाबू भी शामिल हो गए। काग्रेस की बाते। बाद मे सरदार व राजेन्द्रबाबू बापू से मिलने आये। स्थिति समझाई। वर्किंग कमेटी ८ से ११-३० तक। शाम को ५-३० से काग्रेस का खुला अधिवेशन शुरू हुआ। रात मे १॥ बजे तक चला। २ बजे सोये।

१४-४-३६, लखनऊ

बापू घूमकर आये। उसके बाद उनके साथ बाते।

बापू से प्रभावती के बारे मे गरमागरम बाते हुई। दुःख के साथ मेरा कष्ट भी मालूम हुआ।

जवाहरलालजी बापू से मिलने आये।

कांग्रेस का खुला अधिवेशन आज समाप्त हुआ। रात मे १॥ बजे तक उसमे रहना पडा।

१५-४-३६, लखनऊ

सुबह बापू से थोडी बाते।

जवाहरलालजी, राजेन्द्रबाबू, मौलाना, सरदार ये चारो बापू के पास देर तक बैठे—विचार-विनिमय। स्थिति नाजुक, विचारणीय व चिन्ताजनक। आज ऑल इडिया कांग्रेस कमेटी की बैठक व बापू के व्याख्यान मे जाना नही हो सका। शाम को भी जवाहरलालजी व मौलाना बापू से मिलने आये। समझौता होता हुआ मालूम हुआ। जवाहरलालजी से देर तक बातचीत।

१६-४-३६, लखनऊ

बापू के साथ घूमने गया। राजेन्द्रबाबू भी साथ हो गए। जवाहरलालजी, सरदार तथा मेरी अपनी स्थिति कही। मेरा नाम आखिर रखा गया। उससे मन मे थोडी अशान्ति हुई।

जवाहरलालजी आये। साथ मे मौलाना आजाद भी थे। बापू से देर तक बातचीत। मुझे थोडा क्रोध आ गया। जो कहना था सो कहा।

लखनऊ से ९॥ बजे रवाना। थर्ड क्लास मे बापू के डिब्बे मे आराम रहा। बाद मे उनसे थोडी बातचीत।

२१-४-३६, वर्धा

बापू से नागपुर मे होनेवाले हिन्दी साहित्य सम्मेलन की व्यवस्था पर विचार-विनिमय व सेगाव के बारे मे चर्चा। मैने अपने विचार बताये। सरदार ने भी अपने कहे। बापू का निश्चय।

२३-४-३६, वर्धा,

बापू से मिलकर राजेन्द्रबाबू नागपुर गये। कन्हैयालाल मुशी आये। शाम को बापू व सरदार को लेकर नागपुर गये। रास्ते मे बापू से बातचीत होती रही।

२४-४-३६, नागपुर

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का कार्य हुआ। काकासाहब व बापूजी के भाषण हुए। हाल मे आवाज गूजने के कारण भाषण बराबर सुनाई नही

दिये। रात मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन का खुला अधिवेशन हुआ, बापूजी आये थे।

२५-४-३६, नागपुर

सुबह जल्दी उठा।

बापू से विचार-विनिमय। हिन्दी साहित्य सम्मेलन व भारतीय सम्मेलन का कार्य हुआ। बाद मे सम्मेलन की कार्यकारिणी की बैठक।

२६-४-३६, नागपुर

टिकेकर के यहा बापूजी के पास रहा। हिन्दी साहित्य सम्मेलन की नियमावली पर विचार होता रहा।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की सब्जेक्ट कमेटी २ से ६-४५ तक हुई। प्रचार-विभाग का निर्णय हुआ। बापू वर्धा गये।

२८-४-३६, वर्धा

वर्किंग कमेटी सुबह ७॥ से १०॥ व दोपहर को २ से ६॥ तक। शाम को वर्किंग कमेटी मे पूज्य बापूजी आये। देर तक विचार-विनिमय।

२९-४-३६, वर्धा

जल्दी उठा। वर्किंग कमेटी का कार्य सुबह ७॥ से ११॥ तक हुआ।

गाधी-सेवा-सघ की बैठक ३ से ४॥ तक हुई।

जवाहरलालजी ने बापू से ४ से ५॥ तक बाते की।

३०-४-३६, वर्धा

बापू आज से सेगाव रहने गये। वहा जाकर उनकी व्यवस्था देख आया।

१-५-३६, वर्धा

डा० अबेडकर व बालचद हीराचद बम्बई से आये। उन्हे मोटर से बापूजी के पास सेगाव ले गया। वहा ७-४५ से ९-३० तक बातचीत हुई। उन्होने अपने विचार कहे। शाम को भी सेगाव गये। साथ मे भोजन। डॉ० अम्बेडकर व बालचन्दभाई से बातचीत।

३-५-३६, वर्धा

मगनवाडी मे प्रदर्शनी का उद्घाटन। पू० बापू का व जाजूजी का भाषण हुआ। बापू से थोडी देर बातचीत।

४-५-३६, वर्धा

सुबह ४ बजे मगनवाडी मे प्रार्थना । बापू का मौन था । उनके साथ पोस्ट आफिस तक आया । वह सेगाव गये ।

६-५-३६, पवनार

खादी-यात्रा का कार्य । विनोबा का सुन्दर व प्रभावशाली प्रवचन। बाद मे पू० बापू का प्रवचन ।

७-५-३६, वर्धा

खामगाव-निवासी चि० पुरुषोत्तम झुनझुनवाला के साथ चि० सीता की सगाई हुई । पूरी बातचीत हो जाने पर बापू के सामने निश्चित करके जाहिर की गई ।

बापू ने ग्रामोद्योग सघ के सदस्यो के सामने भाषण दिया ।

८-५-३६, वर्धा

दातवाले डॉ० पाठक नागपुर से बापू के दात के इलाज के लिए आये । बापू आज ग्राड ट्रक से बेंगलौर (नन्दी हिल) गये । मगनवाडी मे आधी बहुत आई ।

१४-६-३६, वर्धा

बापू आज ग्राड ट्रक से मद्रास से आये ।

किशोरलालभाई व बापूजी से कमल की सगाई के बारे मे विचार-विनिमय ।

मगनवाडी मे प्रार्थना । बापू से थोडी चर्चा ।

१६-६-३६, वर्धा

सुबह बापू बारिश मे भी सेगाव गये । साथ मे चि० कमलनयन, वालुजकर व चिरजीलाल भी गये ।

२०-६-३६, वर्धा

सुबह ६ बजे पैदल सेगाव गया । मिस लीस्टर भी साथ थी । वापस आते समय जोर का पानी बरसने लगा । खूब भीगे । ११॥ बजे घर पहुचे ।

२७-६-३६, वर्धा

बापू आज सेगाव से मगनवाडी रहने गये । मिलने गया । बापू से घूमते

समय भावी प्रोग्राम की चर्चा। मेरे अदर निरुत्साह का कारण बतलाया। मगनवाडी मे प्रार्थना।

२९-६-६, वर्धा

दोपहर को वर्किंग कमेटी का काम २॥ से ६ बजे तक हुआ। पू० बापूजी से थोडी देर लिखकर बाते हुई।

३०-६-३६, वर्धा

वर्किंग कमेटी ८-३० से १२ बजे तक हुई। दुख व चिन्ताजनक स्थिति। मित्रो सहित बापू से मिला। शाम को वर्किंग कमेटी नही हो सकी। रात मे गैस्ट-हाउस मे मित्रो के साथ देर तक बातचीत। अत मे रास्ता निकला। स्थिति सुधरी।

१-७-३६, वर्धा

जवाहरलालजी को घुमाने ले गया। पवनार, महिला-आश्रम वगैरा दिखाया। वापस लौटते समय उन्होने अपने मन का गुबार निकाला। उनको समझाया। वर्किंग कमेटी मे साफ-साफ बातचीत, थोडी गरमा-गरमी हुई। बाद मे वातावरण सतोषकारक व समझौते का हुआ। सुबह से ११। व दोपहर को १। से ४॥ तक वर्किंग कमेटी का काम होता रहा। बाद मे पार्लमेंटरी कमेटी का काम हुआ।

३-७-३६, वर्धा

सरदार के साथ बापू के पास गया। गाधी-सेवा-सघ तथा अन्य बाते। गाधी-सेवा-सघ की बैठक ९॥ से १०॥। तक हुई। रात मे ८ से ९ तक।

४-७-३६, वर्धा

भारतीय साहित्य सम्मेलन व हिन्दी-प्रचार के कार्य की सभा १ से ५ तक बापू के पास हुई। पहले व बाद मे बगले पर काम हुआ।

५-७-३६, वर्धा

श्री लक्ष्मणप्रसादजी पोद्दार व रामकुमार केजडीवाल से चि० कमल व सावित्री की सगाई के बारे मे खूब खुलासेवार विचार-विनिमय। उन्होने कहा कि चि० सावित्री ने स्वय व सब घरवालो ने भी कमल के साथ सम्बन्ध न करने का पूर्ण निश्चय कर लिया है। उनका आग्रह रहा कि

चार वर्ष तक विवाह न करने की शर्त भारी है, दिसम्बर १९३७ तक विवाह हो जाना चाहिए ।

पू० बापू, सरदार व राजेन्द्रबाबू से सब स्थिति कही । बापू ने कहा कि सावित्री व उसकी माता को मेरे पास भेज दो । मैं उनसे बात कर सगाई पक्की कर दूगा ।

हिन्दी-प्रचार-कार्य की बैठक में । बापू के साथ महिला-आश्रम गया ।

१४-७-३६, वर्धा

सुवह जल्दी तैयार होकर सेगाव पैदल । चि० शाता साथ मे । मर्यादा, कर्तव्य आदि पर उससे चर्चा ।

पू० बापूजी से महिला-मडल वगैरा के बारे में बातचीत । पू० बा व बापू के लिए अलग झोपडी की चर्चा ।

मीराबहन की झोपडी देखी । वहा आराम किया । बाद मे फलाहार । सुन्दर दृश्य देखा ।

२३-७-३६, वर्धा

सुवह सेगाव पैदल । राजकुमारी बहन, महादेवभाई, श्रीमन्, मोहन भी पैदल साथ मे थे । जानकी गाडी में थी ।

चि० कमल की सगाई चि० सावित्री पोद्दार से होने के सबव के वापूजी के नाम के लक्ष्मणप्रसादजी व सावित्री के पत्र उन्हे दिये । बापू ने सम्बन्ध पक्का करके कलकत्ता व चि० कमल को तार दिया । मैंने भी स्वीकृति-पत्र लिख भेजे ।

२८-७-३६, वर्धा

सेगाव वापूजी से मिलकर आये । गाडी में रामकृष्ण डालमिया साथ थे । उनकी पत्नी भी थी । उन्होने विहार के चुनाव मे जो मदद करना कवूल किया था, उस वारे मे तथा गाधी-सेवा-सघ की सहायता के सबध में वापूजी से खुलासा वातचीत ।

४-८-३६, वर्धा

धर्मानन्द कौसाम्बी वम्बई से वापू से मिलने आये ।

साढे ग्यारह की गाडी से खान अब्दुल गफ्फार खा अलमोडा-जेल

से छूटकर मथुरा होते हुए आये । उन्हे लेने स्टेशन गया । खानसाहब के साथ सेगाव गया । वह पू० बापू से मिले । बातचीत ।

तुकडोजी बुआ के भजन । राजकुमारी अमृतकौर व मीराबहन ने राखी बाधी ।

७-८-३६, वर्धा

खानसाहब का बहुत आग्रह होने के कारण उनको लेकर दोपहर में सेगाव जाना पडा । पू० बापू से विनोद । पैदल घूमते हुए मीराबहन के वहा गये । तुकडोजी बुआ से थोडा विनोद । मीराबहन का स्वास्थ्य ठीक था । बापू से सलाह करके वर्धा-आश्रम से किसीको भेजने का निश्चय करना पडा ।

९-८-३६, वर्धा-पवनार

अब्दुल गफ्फार खा को देखने डॉ० साहनी आये । खानसाहब आज सेगाव रहने गये ।

१२-८-३६, वर्धा

वरोरा होकर पैदल सेगाव गया । मीराबहन की झोपडी मे आध घटा ठहरकर सेगाव पहुचा । भोजन वर्धा से तैयार होकर गया था, बापू के साथ बैठकर सभीने खाया । खानसाहब व तुकडोजी से बातचीत । आराम । तुकडोजी के भजन २॥ बजे शुरु हुए । तीन बजे तक वहा रहे ।

१६-८-३६, वर्धा

श्री राजाजी मद्रास से आये । राजेन्द्रबाबू, राजाजी, महादेवभाई, चन्द्रशेखर के साथ सेगाव गया । रास्ते मे मोटर बिगड गई । दो मील पैदल चले । बापू के साथ भोजन किया । अढाई बजे वापस आये ।

शाम को ग्राड ट्रक से जवाहरलालजी आये । स्टेशन पर राजाजी और राजेन्द्रबाबू ने बाते की । भोजन के बाद जवाहरलालजी, राजाजी, राजेन्द्र-बाबू के साथ देर तक बातचीत । राजाजी के रिटायर होने-सबधी व अन्य बाते भी हुई ।

१७-८-३६, वर्धा

जवाहरलालजी को मारवाडी विद्यालय, हिन्दी शाखा व महिला-आश्रम दिखाया । वहा वह थोडा बोले भी । बाद मे सेगाव गये ।

राजेन्द्रबाबू व राजाजी से बाते। उन्हीके साथ भोजन व आराम। दोनो मोटर से सेगाव गये।

राजाजी से देर तक बातचीत—काग्रेस, मानसिक स्थिति आदि के बारे मे।

२६-८-३६, वर्धा

सरदार व खानसाहब सेगाव गये। सेगाव जाते समय मथुराबाबू व आश्रम से पद्मावती साथ हुई। पू० बापू से मोती के बारे में विशेष बाते। मोती से भी थोडी बातचीत।

२७-८-३६, वर्धा

बापू सेगाव से आये। उनके साथ सरदार व मृदुला। बापू के सभापतित्व मे चरखा-सघ की महत्त्व की बैठक हूई।

२८-८-३६, वर्धा

चरखा-सघ की बैठक का कार्य ७ से १० तक पू० बापू की उपस्थिति मे हुआ। काम पूरा हुआ।

गाधी-सेवा-सघ बैठक का कार्य २ से ४ तक व रात मे ७।। से १० तक हुआ। तीन से पाच तक बापू हाजिर थे। कौसिल-प्रवेश इत्यादि पर विचार-विनिमय हुआ।

३१-८-३६, वर्धा

बापू को १०५ डिग्री बुखार। चिता।

१-९-३६, वर्धा

बापू के स्वास्थ्य की चिन्ता। सरदार, सिविल सर्जन डॉ० साहनी व डॉ० महोदय मोटर से देखने गये। मोटर रास्ते से नही जा सकी। ये लोग पैदल गये। गाडिया भेजी। सरदार व महादेवभाई के प्रति क्रोध आया। वे बापू को हैरान करते है, ऐसी मेरी समझ हुई। पर कोई उपाय नही। आज बापू को ज्वर नही हुआ। मगनवाडी महादेवभाई के पास गया, सरदार साथ मे।

२-९-३६, वर्धा

सुबह सेगाव बापू को देखने सरदार वगैरा गये। तीन गाडी गई-आई। एक अग्रेज भी गये। पेरीबहन व नरगिस सेगाव गई।

खानसाहब सेगाव से आये। बापू के स्वास्थ्य के बारे मे उन्होने बताया। उन्हीके साथ डाक्टर की रिपोर्ट भेजी। मीराबहन भी बीमार। अस्पताल मे दाखिल हुई।

३-९-३६, वर्धा

चि० राधाकृष्ण बापू को लाने सेगाव गया। डॉ० महोदय, महादेव-भाई, कनु सेगाव से आये। आज रात-भर विचार आते रहे। सिविल सर्जन से बाते। अस्पताल में बापू के लिए कमरा ठीक किया। मीराबहन से बाते। बापू अस्पताल मे १२॥ बजे भरती हुए। वहा जाकर व्यवस्था देखी।

४-९-३६, वर्धा

बापू को अस्पताल मे देखने गया। उन्हे पूरा आराम मिले, इस बारे में झगडा हो गया। आवश्यक व्यवस्था आदि की। वहा मि० सजाना व डी० एस० पी० भी आये थे।

५-९-३६, वर्धा

सुबह अस्पताल मे बापू से बाते। उन्होने अपने सपने की थोडी बातें कही। मनोरजक थी। पर उनको ज्यादा बोलने से मना किया।

६-९-३६, वर्धा

पू० बापू ने हरेक को पच्चीस रु० मासिक की सहायता उनके मार्फत फड मे से १ सितबर से भेजने को कहा। बाद मे सेगाव से मलेरिया दूर करने के बारे मे और टेकडी पर रहने का मकान बनाने की योजना के बारे मे बाते की। बापू को उनकी वर्तमान स्थिति में अधिक बातचीत न करने को कहा।

७-९-३६, वर्धा

सुबह घूमते हुए महिला-आश्रम व अस्पताल बापू के पास गये। बरसात की झडी लगी थी।

सेगाव के गरीब किसानो व मजदूरो को कर्ज मे अनाज देने की योजना चिरजीलाल ने रखी। वह मजूर की।

१२-९-३६, वर्धा

जल्दी उठे। बापू के साथ घूमे। आज बापू अस्पताल से वापस सेगाव गये।

१६-९-३६, वर्धा

सेगाव गया। खुर्शीदबेन व जयप्रकाश भी आये। बापू से जयप्रकाश की बाते हो गई। वही पर सभीने भोजन किया।

बापू से बाते। खानसाहब के लडके गनी के विषय में उन्होने अपनी राय कही। खानसाहब के दौरे के बारे मे फैसला हुआ कि अभी उसे स्थगित रखे। सरदार का व मेरा पत्र बापू को दिखलाया। उसपर विचार। बापू ने अपने विचार कहे। मेरा राजस्थान का दौरा, स्वास्थ्य, टेकडी पर झोपडी आदि के बारे मे चर्चा।

जे० जे० वकील का बबई से टेलीफोन आया। बापू को ता० १८ सितबर को १० बजे कष्ट है, ऐसा भविष्य बताया। चिंता।

१८-८-३६, वर्धा

बापू को करीब ९-४५ बजे उनके सबध की भविष्यवाणी की बात अकेले मे बताई। विनोद व हँसी। उन्होने अपने विचार कहे कि जून १९३७ तक मैं निकाल सका तो फिर पाच-सात वर्ष निकल जाना स्वाभाविक है। बापू से भोजन के बाद गनी के सबध मे तथा अन्य बाते।

२०-९-२६, वर्धा-सेगाव

सुबह सरदार व घनश्यामदास बिडला सेगाव गये और बापू से मिलकर आये। दोपहर को घनश्यामदास व सरदार के साथ सेगाव बापू के पास जाकर आया। सरदार व घनश्यामदास ने खूब आग्रह किया। मुझे व्यापार आदि करना चाहिए। बापू ने भी मदद करने को कहा। मन मे विचार आते रहे। सरदार, घनश्यामदास से बाते होने के बाद राजेन्द्रबाबू के साथ एक बाजी शतरज खेली।

२४-९-३६, वर्धा

आज वर्षा खूब ज्यादा आई। खानसाहब व लाली सेगाव से आये। राजेन्द्रबाबू को चक्कर आये। शाम को सेगाव गया। बापू से साधारण बातचीत।

२५-१०-३६, बनारस

बापू ने 'भारत-माता मन्दिर' का उद्‌घाटन किया।

सुबह ४ बजे प्रार्थना मे बापूजी के साथ।

भारतमाता के मन्दिर में दो वजे से पाच वजे तक रहे। भीड अच्छी थी। प्रवन्ध साधारण था। समारभ ठीक हुआ। वहीपर कई लोग मिल गए।

सेवा-उपवन में वापू तथा अन्य मित्रो से वातचीत।

३०-१०-३६, नदियाड

विठ्ठल कन्या-आश्रम में मनसुखभाई हिन्दू-छात्रालय की इमारत का मेरे हाथ से उद्घाटन हुआ। पू० वापूजी, खासाहव, सरदार, वा वगैरा थे। थोडे मे मुझे जो कहना था, सो कहा। वापूजी मोटर से अहमदावाद गये, खानसाहव भी।

९-११-३६, वर्धा

श्री एण्ड्रूज व कालिदास नाग आज आये। दोनो सेगाव जाकर आये।

१७-११-३६, वर्धा

जवाहरलालजी शाम को मेल से आये। स्नान-भोजन के वाद सेगाव। जवाहरलालजी महादेवभाई के साथ वापू से रात को मिलकर आये।

१७-११-३६, वर्धा

सेगाव दो वार जाना हुआ। सरदार, राजेन्द्रवावू, व जवाहरलालजी साथ थे। खानसाहव व वापू वहा थे ही। जवाहरलालजी से साफ-साफ वातें हुईं।

२५-११-३६, वर्धा

राजेन्द्रवावू से जवाहरलालजी के स्टेटमेट के वारे मे तथा सरदार व वम्वई के मित्रो का डर आदि के वारे में वातें। मथुरादास व वापू से भी वाते। १-३० वजे राजेन्द्रवावू, जीवनलाल, मरियम और विजया के साथ सेगाव वापू से मिलने गया। वापू व जवाहरलालजी का स्टेटमेट तथा वापू के विचार जाने। हम लोगो के स्टेटमेट (मसविदा) पर विचार।

२७-११-३६, वर्धा

मगनवाडी के ट्रस्ट व दान-पत्र आज रजिस्टर्ड किये। श्री वैकुठ मेहता साथ थे। वहा देर लगी।

२-१२-३६, वर्धा-नागपुर

भोजन-वाद रजिस्ट्रार-कोर्ट गये, गाधी-सेवा-सघ का मार्टगेज रद्द करने पर ही अहमदावाद का डेपूटेशन मेल से आया। श्री कस्तूरभाई साखरभाई,

नारायणदास व शकरलाल, गुलजारीलाल, खाडूभाई वगैरा आये । बापु ने भी थाना के कागजात पर कोर्ट मे जाकर सही की । मोटर ले जाकर बापू को चौकी से कोर्ट तक लाये । दिल्ली-डेरी का खुलासा ।

५-१२-३६, वर्धा

श्री कस्तूरभाई स्टेशन पर मिले । बातचीत की, पर कोई परिणाम नही आया । श्री मुशी वंबई से आये व बापू से सेगाव मिलकर आये । ट्रस्ट, मीराबहन, मोटर-ऐक्सीडेट आदि के बारे मे देर तक बातचीत ।

अगाथा हैरिसन ग्राड ट्रक से आई । सी० एफ० ऐण्ड्रूज रात को ग्राड ट्रक से आये ।

६-१२-३६, वर्धा

सेगाव । बापू से बाते—बम्बई हिन्दी-प्रचार, इन्दौर के रुपये, हिन्दी-प्रचार-कार्य व स्थान, जयदयाल का पत्र, अडे, जापान-यात्रा, बापू को जाना पसन्द, खानसाहब आदि ।

बापू ता० २० को सुबह फैजपुर पहुचेगे ।

२३-१२-३६, फैजपुर

बापू से बाते, मेरा काग्रेस का खजाची न रहने के बारे मे । जवाहरलालजी को मैंने वर्किग कमेटी मे अपने न रहने का कारण समझा-कर कहा । एम० एन० राय व बापू की बातचीत समाधानकारक हुई । सुख मिला ।

बापू से सुव्रतादेवी व मदन रूइया के बारे मे वार्ता ।

वर्किग कमेटी ३ से ५।। तक । जवाहरलालजी को मेरे वर्किग कमेटी में न रहने का कारण समझाकर बताया ।

२४-१२-३६, फैजपुर

एम० एन० राय की बापू से बगाल-रेलवे के सबंध में बाते । बापू ने अपने विचार कहे । आज की चर्चा से एम० एन० राय के विचारो में ज्यादा गहराई नही मालूम हुई ।

वर्किग कमेटी की बैठक ८ से ११ व २ से ६ तक हुई ।

२५-१२-३६, फैजपुर

खादी-प्रदर्शनी का उद्घाटन । बापू का भाषण । बापू से गो-सेवा-सघ-

सबधी बाते। काग्रेस कमेटी की बैठक ९-३० से ११-३०। सब्जेक्ट कमेटी २ से ६ तक हुई।

२६-१२-३६, फैजपुर

बापूजी से व राजकुमारीजी से बाते।

वर्किंग कमेटी की बैठक ८ से ११ तक तथा सब्जेक्ट कमेटी ३ से ८॥ तक हुई। कोरोनेशन-बहिष्कार के प्रस्ताव पर ४९-७९ मत आये।

२९-१२-३५, फैजपुर

सरदार व राजेन्द्रबाब जबरदस्ती से कैम्प मे ले गए। वर्किंग कमेटी की चर्चा। बिना इच्छा के उसमें भाग लेना पडा व जवाहरलालजी, सरदार व राजेन्द्रबाबू आदि के आग्रह के कारण एक बार वर्किंग कमेटी मे नाम घोषित करने की इजाजत देनी पडी।

बापू की पार्टी व जानकीदेवी वर्धा गये। उनकी व्यवस्था देखी।

डायरी के अंश

१९३७

५-१-३७, वर्धा

डॉ० जाकिर हुसैन व खानसाहव के साथ सेगाव हो आया। वापू का विचार पूना व त्रावनकोर जाने का मालूम हुआ।

६-१-३७, वर्धा

ग्राड ट्रक से वर्धा। वापूजी को मगनवाडी पहुचाया। वह आज पूना तथा त्रावनकोर की तरफ गये।

१९-१-३७, पूना-ववंई

प्रेमावहन कटक आई। उससे वातचीत। उन्होंने वापू से जो वातचीत हुई, वह सविस्तर कही। वापू के विचार जाने। प्रेमावहन ने अपनी स्थिति समझाई। ग्राम-सेवा-कार्य की जानकारी दी।

२६-१-३७, वर्धा

सेगाव जाते हुए रास्ते मे काका कालेलकर के साथ वातचीत। वापू से स्वतत्रता-दिवस के वारे मे वाते। खानसाहव ने पेशावर के मीठे नीवू दिये।

५-२-३७, वर्धा

सेगाव गया। वापूजी से वाते। जवाहरलालजी का पत्र, मालवीयजी के सवध मे। विचार-विनिमय। दिल्ली-डेरी के वारे मे स्वीकृति। वही वालकोवा से मिला। प्रार्थना मे शामिल हुआ।

१७-२-३७, वर्धा

सेगाव से नालवाडी तक मोटर में आते हुए वापू से कार्यकर्ता-योजना के सवध मे वातचीत। जाजूजी तथा सम्मेलन के सभापतित्व आदि के विपय मे भी चर्चा।

१८-२-३७, वर्धा

सेगाव गया। पू० वापूजी से सम्मेलन-सभापति, काग्रेस-सभापति,

जाजूजी, ग्राम-उद्योग-कार्य, मेरी मानसिक स्थिति व कमजोरी आदि के वारे मे वाते । फिर मिलकर विस्तार से वाते करना है ।

१९-२-३७, वर्धा

राजेन्द्रवावू के साथ सेगाव गया । वापू व राजकुमारीजी से वाते ।

२१-२-३७, वर्धा

सुवह जल्दी उठकर प्रार्थना व गीता-पाठ के वाद वापू के पास सेगाव गया । ग्राम-उद्योग-सघ के विद्यार्थियो का प्रवचन सुना । वाद में वापू के साथ घूमते समय मन स्थिति, मन की कमजोरी, ब्रह्मचर्य आदि के सवध मे साफ वाते उदाहरण देकर कही । वापू ने स्थिति समझी व उपाय भी वतलाया । इस वारे मे फिर और वाते होगी । हिन्दी साहित्य सम्मेलन और काग्रेस, दोनो के सभापति पद से अलग हट जाने के वारे में वाते हुईं । वापू ने पोलक को जो खत दिया, वह समझाया । ठीक से समझ में नही आया ।

२६-२-३७, वर्धा

जवाहरलालजी वापू से मिलने सेगाव गये ।

२७-२-३७, वर्धा

वर्किंग कमेटी सुवह ९ से ११ तक, दोपहर १॥ से ५ तक व रात्रि में ८ से १० तक हुई । पू० वापूजी सुवह ९ से शाम को ५ तक रहे ।

२८-२-३७, वर्धा

पू० वापूजी सुवह ८-३० से शाम के ५-१५ तक वर्किंग कमेटी मे रहे । उन्होने आफिस लेने के वारे मे अपनी राय व शर्ते आदि वताई । काफी विचार-विनिमय हुआ ।

१-३-३७, वर्धा

जवाहरलालजी की गिरफ्तारी के वारे मे पूछताछ करने के लिए रायटर का टेलीफोन आया । मन मे चिंता हुई । वापूजी, मौलाना आजाद जवाहरलाल, सरदार व मैं मिलकर करीव शाम को ६ बजे से ८ तक वातचीत करते रहे । विचारो की सफाई व खुलासा हुआ । गाधी-सेवा-सघ की वैठक २ से ४-१५ तक हुई ।

२-३-३७, वर्धा

नालवाडी टेनरी का समारभ। वालुजकर की रिपोर्ट मननीय थी। गो-रक्षा व हरिजन-सेवा का टेनरी से जो सवध है, उस वारे मे भी वापूजी ने समझाया। वापू के साथ सेगाव गया। वही भोजन, भ्रमण, प्रार्थना व रामायण-पाठ मे शामिल हुआ।

१४-३-३७, वर्धा

ग्राड ट्रक से बापूजी व राजाजी के साथ देहली रवाना। रास्ते मे ही सम्मेलन के वारे मे विचार-विनिमय। भाषण के वारे मे वापूजी व राजाजी से परामर्श। वापू ने १२-१५ बजे मौन लिया।

१६-३-३७, दिल्ली

प्रार्थना, गीताई का पाठ। वापू से वाते। जवाहरलाल को वापू का दु ख कहा। वर्किंग कमेटी ९ से १२ व शाम को २ से ६ तक हुई। आखिर में पदग्रहणवाला मुख्य प्रस्ताव ठीक तौर से मजूर हुआ।

१७-३-३७, दिल्ली

सावित्री व लक्ष्मणप्रसादजी के साथ हरिजन-कॉलोनी पहुचे। उन्हे वापू व अन्यो से मिलाया।

प्रार्थना मे सुचेता ने भजन गाया—"अन्तर मम विकसित करो, अन्तरतर हे।" सुन्दर था।

१८-३-३७, दिल्ली

वर्किंग कमेटी ९ से १२ तक हुई। गभीर चर्चा। जवाहरलाल की मानसिक स्थिति के कारण समाधान हुआ।

ऑल इडिया काग्रेस कमेटी की बैठक २ से रात के ९॥ वजे तक हुई। पद-ग्रहणवाला मुख्य प्रस्ताव स्वीकार हुआ। श्री जयप्रकाश के सशोधन को, जिसके पक्ष मे पू० मालवीयजी, टडनजी, व विजयालक्ष्मी पडित थे, ७-८ वोट मिले। मूल प्रस्ताव के पक्ष मे १२७ व विपक्ष मे ७० आये। ५७ के बहुमत से मुख्य प्रस्ताव पास हुआ। प्रस्ताव के पक्ष में सरदार का भाषण बहुत सुन्दर हुआ। भाषा की दृष्टि से थोडे सुधार की आवश्यकता थी।

१९-३-३७, दिल्ली

जलियावाला वाग-स्मारक की बैठक हरिजन-कॉलोनी मे वापूजी के

सभापतित्व मे हुई। दो घटे से ज्यादा बैठक का काम चला। नया जीवन पैदा करने के बारे मे विचार-विनिमय। ट्रस्टी-मण्डल में फसना पडा।

कन्वेशन मे जवाहरलाल का भाषण पौने दो घटे से ज्यादा हुआ। उसमे जहर तथा क्रोध था। भाषण अच्छा नही हुआ। बापू से पौने दो घटे तक विचार-विनिमय।

२०-३-३७, दिल्ली

वर्किंग कमेटी ११ से १ व रात मे ८ से ११॥ बजे तक हुई। प० जवाहरलाल ने अपना खुलासा पेश किया व अन्त करण से भूल स्वीकार की। माफी भी मागी। उसका मन पर अच्छा असर हुआ। उनके प्रति आदर व भक्ति बढी।

जवाहरलाल से वर्किंग कमेटी के पहले व रात मे ११॥ से १२ तक दिल खोलकर बाते हुई। क्रोध प्रेम मे परिवर्तित हुआ। आदर बढा।

२३-३-३७, वर्धा

शाम की गाडी से पू० बापूजी, सरदार, भूलाभाई आदि आये। बापूजी की अध्यक्षता मे चरखा-सघ की बैठक का कार्य हुआ।

२६-३-३७, मद्रास

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्वागत-सभा मे।

बापू के साथ अपने भाषण के बारे मे थोडी चर्चा[1]। अग्रेजी मे थोडा सुधार किया।

द० भा० हिंदी प्रचार सभा का कन्वोकेशन-समारभ। बापू का भाषण उत्तम हुआ। टडनजी का भाषण भी मननीय था। थोडा लबा हो गया था।

२७-३-३७, मद्रास

भारतीय-हिन्दी-परिषद मे बापूजी व काकासाहब के भाषण हुए।

२८-३-३७, मद्रास

दोपहर को हिन्दी साहित्य सम्मेलन का कार्य प्रारभ हुआ। बापू का राजाजी आदि दक्षिण प्रान्त के मित्रो से खूब विचार-विनिमय। राजाजी ने काग्रेस-सबधी प्रस्ताव रखा। टी० प्रकाशम्, साबमूर्ति, कालेश्वरराव, याकूब हुसेन ने प्रस्ताव पर अपने विचार प्रकट किये। अच्छा वातावरण बना।

---

[1] मद्रास में हुए हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति जमनलालजी थे।

भारतीय परिषद् । बापूजी ने प्रस्ताव का परिचय दिया । हिन्दी-हिन्दुस्तानी के भेद पर खुलासा किया । बाद मे मुझे सभापति के नाते काम करना पडा ।

३०-३-३७, मद्रास

टडनजी व पू० बापूजी से बातें । वे आज ग्राड ट्रक से वर्धा के लिए रवाना ।

२-४-३७, वर्धा

बापूजी से सेगाव मिलने गया । खानसाहब को वहा छोड़ा और नन्दलाल बोस को वहा से साथ लाया । नन्दलाल बोस को पवनार का स्थान व समाधि की जगह दिखाई । बापू ने समाधि के स्थान के बारे मे अपनी इच्छा बताई ।

१५-४-३७, पूना

मेल से हुबली के लिए थर्ड में रवाना । गाडी मे भीड थी । पूना में १०॥ बजे तक बापू के साथ बाते ।

१६-४-३७, हुबली

रात मे गाडी मे भीड भी थी व रास्ते में जगह-जगह बापूजी का जय-जयकार होता रहा । स्टेशन से सवा-डेढ मील दूर हुबली गाव के पास कैम्प मे पैदल आये । बापू से बाते ।

१२-३० से १ तक चरखा-यज्ञ । बापू भी कातने आये थे ।

१। से ३ बजे तक गाधी-सेवा-सघ की कार्यकारिणी की बैठक । ४ बजे से गाधी-सेवा-सघ की कान्फ्रेस शुरू हुई ।

१७-४-३७, हुबली

हिन्दी-प्रचार सभा की बैठक बापूजी के डेरे पर हुई ।

हुबली शहर मे सवेरे ६-३० से ९ तक मजदूरी का काम किया । सुख व आनन्द मिला ।

१८-४-३७, हुबली

शाम को गाधी-सेवा-सघ का कार्य । बापू का खुलासा तथा विचार-विनिमय । सभापति के नाते किशोरलालभाई की कठिनाई । कौसिल-प्रवेश आदि की चर्चा । आर्यनायकम् के बारे में बाते ।

१९-४-३७, हुबली

किशोरलालभाई के मन में सभापति की हैसियत से गो-सेवा-सघ का काम करने मे कठिनाई । विचार-विनिमय ।

२०-४-३७, हुबली

गाधी-सेवा-सघ कान्फ्रेंस ७ से ११ तक रही । उसके पहले बापू के पास थोडी देर किशोरलालभाई व बापू की बातचीत सुनी । नाथजी भी वहा थे । आखिर में बापू ने किशोरलालभाई को सभापित बने रहने की आज्ञा दी । बापूजी ने आज सभापति का काम किया। बडी देर तक समझाते रहे । गो-सेवा का महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव पास हुआ ।

२२-४-३७, पूना-जुहू

रेल मे बापू से प्रयाग के प्रोग्राम की चर्चा ।

२६-४-३७, प्रयाग

सुबह ९ बजे इलाहाबाद पहुचे । बापू, चि० इन्दिरा तथा रणजीत पडित के साथ आनन्द-भवन गये । जवाहरलालजी, मम्मा, स्वरूप आदि से मिलना हुआ । वर्किंग कमेटी २-३० से ५-३० तक, बाद मे प्रार्थना तक । रात मे भी ९-३० तक बैठक होती रही । बापू को कई पत्र दिखाये । बापू ने भी एण्ड्रूज, सर पी० सी० राय, घनश्यामदास बिडला तथा दिल्ली-डेरी के बारे के पत्र आदि दिखाये ।

२७-४-३७, इलाहाबाद

वर्किंग कमेटी सुबह ८ से ११॥ तक, दोपहर मे २ से ५ तथा शाम को ५-४५ से ७-१५ और रात मे ८ से ९-१५ तक होती रही। कौसिल डेडलाक, मि० बटलर तथा लार्ड लोदियन आदि के वक्तव्यो पर विचार-विनिमय। प्रान्तो के नेताओ के विचार—खासकर राजाजी, पतजी । बापू के मसविदे पर विचार-विनिमय । जवाहरलालजी व सरदार से आगामी काग्रेस के बारे मे विचार-विनिमय । जवाहरलालजी से रात मे देर तक बाते ।

२८-४-३७, इलाहाबाद

बापू के साथ घूमने गया । जवाहरलालजी से जो बाते हुई, वे उन्हे बताई। अध्यक्ष-पद के लिए सुभाषबाबू की इच्छा बहुत ज्यादा होने के कारण उन्हे ही अध्यक्ष बनाने का विचार ठहरा । वर्किंग कमेटी के पहले

हिन्दी-प्रचार के बारे में बापूजी व टंडनजी से बातचीत, खासकर भ्रमण के बारे में।

१-५-३७, वर्धा

बापूजी व राजाजी प्रयाग से आये। बापूजी ने मेहताबबाबू, डॉ० काटजू, सुभाषबाबू, काग्रेस-प्रेसिडेण्ट आदि के बारे मे बाते की।

९-५-३७, वर्धा

सेगाव मे बापू से देर तक बाते। जेटलैंड का भाषण, किशोरलालभाई का पत्र, काग्रेस के खजांची-पद से मेरा इस्तीफा आदि के बारे मे बापू से बाते। बापू ने अपने विचार बताये।

बापू सेगाव से आये। बगले पर ही प्रार्थना हुई। भजन व रामायण-पाठ हुआ। बापूजी ऐक्सप्रेस से तीथल के लिए रवाना हुए।

११-६-३७, वर्धा

पू० बापूजी श्री कैलनबेक के साथ ४॥। बजे की पैसेंजर से आये। बगले पर गरम पानी, नीबू वगैरा लेकर पैदल उनके साथ बालकोबा को देखते हुए सेगाव गये।

१२-६-३७, वर्धा

मीराबेन व महादेवभाई के साथ सेगाव गया। बापू के साथ सेगाव गाव मे गया। वहा सभा हुई। उसमे बापू बोले। उसका मराठी-भाषातर किया गया।

१६-६-३७, वर्धा

श्री केदार व वडकश के साथ सेगाव। बापू से बाते। 'सावधान'-केस का हाल कहा। 'म्युचुअल बेनिफिट सोसायटी', बारलिगे का व्यवहार, विधवा-सवाल आदि विषयो पर चर्चा।

२०-६-३७, वर्धा

डॉ० खरे ने बापूजी से मिलकर जो स्थिति थी, उन्हे साफ-साफ कही। मन मे जो था, वह समझाकर कहा।

२२-६-३७, वर्धा

जाजूजी, किशोरलालभाई व गोमतीबहन के साथ सेगाव गया। बापू से वर्धा मे छापाखाना खोलने के बारे मे बाते। पूना-दिल्ली से भाव मागना।

मदालसा के सबध के बारे में बापूजी ने, जाजूजी ने व किशोरलालभाई ने भी श्रीमन् को ही सब तरह से ठीक समझा। गावी-सेवा-सघ की रकम रोकने व व्याज उपजाने के बारे मे भी विचार-विनिमय हुआ।

असोसियेटेड प्रेसवाले श्री भारतन् वाइसराय का भाषण लेकर आये। पढकर सुनाया। लम्बा था व नरम भी था।

६-७-३७, वर्धा

वर्किंग कमेटी सुबह ८ से ११॥ बजे व शाम को १-३० से ७ तक तथा रात मे ८॥ से १० तक हुई। पद-ग्रहण करने, न करने के बारे में चर्चा व विचार-विनिमय। बापू के मसविदे पर विचार हुआ। जवाहरलालजी भी दूसरा मसविदा बनावेंगे।

७-७-३७, वर्धा

सुबह हिन्दी-प्रचार सभा की ओर से पू० बापूजी के हाथ से प्रचार-विद्यालय खोला गया। बापू, राजेन्द्रबाबू व काकासाहब बोले। श्री पदमपत सिंहानिया व मेरी सहायता की बापू ने घोषणा की।

वर्किंग कमेटी ८ से १२ तथा २ से ९ तक हुई। जवाहरलालजी ने अपनी स्थिति कही। आखिर मे बापू व जवाहरलालजी दोनो का मिला हुआ प्रस्ताव मजूर हुआ। नरीमान व वल्लभभाई-प्रकरण तथा खरे के व्यवहार के बारे मे भी उन्हीके सामने थोडे में सब स्थिति बताई। पूनमचन्द-प्रकरण तथा सोनक आदि के बारे में वर्किंग कमेटी के सामने बात आई। मैं त्यागपत्र क्यो देना चाहता हू, यह भी कहा। देर तक विचार-विनिमय होता रहा।

९-७-३७, वर्धा

सेगाव गया। हिन्दी-प्रचार सभा का कार्य पू० बापूजी की उपस्थिति में पूरा हुआ। टंडनजी हाजिर थे। टंडनजी रात को प्रयाग गये।

११-७-३७, वर्धा

मदालसा के विवाह की तैयारी—६-१५ बजे दूकान पर (गाधी-चौक) पहुचे। सात बजे से विधि शुरू हुई। पू० बापूजी व विनोबाजी की उपस्थिति में विवाह सपन्न हुआ। ठीक समुदाय उपस्थित था।

२१-७-३७, वर्धा

मौलाना व मै बैलगाडी से सेगाव गये। बरसात खूब जोर की हो रही थी। रास्ते मे गाडी का चाक निकल गया। पहुचने मे देर हुई। वहा बापू से मौलाना की व मेरी बातचीत। बापू कुछ थके हुए मालूम हुए। बापू से किशोरलालभाई व पडितजी के पत्रो पर विचार।

वर्धा मे मौलाना से अच्छी तरह बाते हुई।

३-८-३७, बनारस

प्रयाग मे जवाहरलालजी मिले। उन्होने बापू के नाम पत्र व सन्देश दिया। कृपलानी दिल्ली तक साथ रहे। खाना साथ हुआ व अन्य राजनैतिक बाते भी।

४-८-३७, दिल्ली

दिल्ली पहुचे। हरिजन-कॉलोनी जाकर बापू से बाते। बापू ११॥ से १ बजे तक वाइसराय से मिले। शाम ५-३५ की ग्राड ट्रक से बापूजी के साथ थर्ड क्लास मे वर्धा रवाना। बापू ने वाइसराय से जो बाते हुई व उनपर जो असर हुआ, वह बताया। सरदार-नरीमन-प्रकरण पर भी ठीक चर्चा। मैने दूसरा पक्ष लेकर जो कहना था, सो कहा।

५-८-३७, नागपुर-वर्धा

बापूजी से सुबह व शाम खुलासेवार ठीक बातचीत हुई। विषय—मदालसा, उमा की सगाई, डॉ० बतरा व उनकी पत्नी के लिए सेगाव मे दो छोटे घर बनाना, विनोबा, सीकर या सेगाव, हरिहर शर्मा, पारनेरकर, सावित्री व विदेशी वस्त्र-प्रयोग, कार्यकर्ताओ का अभाव, आश्रम के नियमो का परिणाम, मनुष्य की कमजोरी, बापू का भावी प्रोग्राम आदि।

शाम को वर्धा पहुचे। बरसात हो रही थी। बापू बगले पर थोडी देर ठहरे, बाद मे सेगाव गये।

७-८-३७, वर्धा

बापूजी व विनोबा के पारनेरकर तथा रामेश्वरदास के बारे मे पत्र। बाद मे बापू के नाम पत्र लिखकर सेगाव भेजे।

१०-८-३७, वर्धा

नागपुर से शिक्षा-मत्री श्री रविशकर शुक्ल बापूजी से मिलने आये। शिक्षण-सबधी बातचीत

डॉ० खरे व पटवर्धन नागपुर से खासतौर से मुझसे मिलने आये। डॉ० खरे ने कहा कि मैंने जो पत्र लिखा है, उसे मै वापस ले लू। उन्होने अपना दु ख प्रकट किया। क्षमा आदि की बाते की और कहा कि प्रान्त की जिम्मेदारी मुझे ले लेनी चाहिए आदि। बहुत देर तक अपने विचार का उन्होने खुलासा किया। मैंने भी अपना दु ख व दर्द कहा।

१४-८-३७, वर्धा

वर्किंग कमेटी ९ से ११॥ व शाम को १॥ से ६॥ तक हुई। बापू भी हाजिर थे।

१७-८-३७, वर्धा

बापू साढे सात बजे आये। सिन्ध-योजना के सबध मे डॉ० चौइथराम से बाते, खानसाहब से भी बाते।

वर्किंग कमेटी का काम सुबह ८ से ११॥ तक व २ से ६॥ तक हुआ। बापू ५ बजे तक हाजिर थे।

१८-८-३७, वर्धा

बापू आये। उनसे शकरराव देव की सरदार-नरीमन-प्रकरण के बारे मे मेरे सामने बाते हुईं। बाद मे बापू ने सरदार से व मुझसे नरीमन-प्रकरण के सबध मे बाते की। सरदार को बहुत चोट पहुची। दु ख हुआ। रात को दो-ढाई घटे उनके पास देव के साथ बातचीत।

१९-८-३७, वर्धा

गगाधरराव देशपाडे व स्वामी आनन्द का लिखा पत्र तथा उनको लिखा पत्र दोनो बापूजी को देने के लिए सरदार वल्लभभाई को दिये।

सेगाव मे बापू से बाते। सरदार बम्बई गये।

२१-८-३७, वर्धा

डॉ० गिल्डर व गुलजारीलाल नदा बम्बई से आये। बापू का ब्लडप्रेशर ज्यादा हो गया, २०० के करीब। चिन्ता हुई। डाक्टर व बापू से विचार-विनिमय। डॉ० गिल्डर ने एक छोटा-सा वक्तव्य दिया।

२७-८-३७, वर्धा

बापूजी से हँसी-विनोद की बाते। उन्होने अगूर खाना स्वीकार कर लिया। पूना व बबई जाने का प्रोग्राम बताया।

५-९-३७, वर्धा

पैदल सेगाव गया। बरसात शुरू हो गई। मदालसा, श्रीमन्, काकासाहब व नाना आठवले साथ थे। बापू खूब थके हुए मालूम हुए। ब्लडप्रेशर तो १६५-१०५ था, नाडी भी ठीक थी; फिर भी थकावट खूब थी।

८-९-३७, वर्धा

महादेवभाई ने सेगाव की चिन्ता दूर की। उन्होने अच्छी रिपोर्ट दी है।

९-९-३७, वर्धा

जवाहरलालजी व इदिरा के साथ नाश्ता किया। सुबह ७॥ बजे मोटर से सेगाव गये। २-४५ बजे तक वही रहे। बापू कमजोर मालूम दिये। वहा का वातावरण ठीक करने के प्रयत्न।

प्यारेलाल का आज सातवा उपवास था। उससे देर तक बाते करके उपवास छुडवाया। नानावटी को मैनेजर मुकर्रर किया। बापू से व अन्य लोगो से भी बातचीत।

जवाहरलालजी व इन्दु वापस आते समय थोडी दूर बैलगाडी मे आये। घर पर चाट-पार्टी की। कुछ और मित्र भी आये थे। बिहार का फैसला उन्हे दिखाया। दोनो को ठीक नही मालूम हुआ। जवाहरलालजी व इन्दु को मगनवाडी दिखाते हुए स्टेशन पहुचे। वहा से वे दोनो मेल से बम्बई गये, थर्ड क्लास मे।

१५-९-३७, पूना

सर मडगावकर मिलने आये। उनका बापूजी से मिलने का प्रोग्राम बनाया।

राधाकृष्ण व रीता का सबध टूटा। इस सबध मे उन्हे खूब समझाया, हिम्मत व उत्साह दिलाया। उन्हे बापू के पत्र पढाये।

१६-९-३७, वर्धा

वर्धा पहुचा। महादेवभाई ने स्टेशन पर बापू के स्वास्थ्य की अच्छी खबर सुनाई। शकरलाल बैंकर बापू के पास सेगाव जाकर आये।

१७-९-३७, वर्धा

चरखा-सघ की बैठक ८ से ११। तक व दोपहर मे १ से २ तक। ३ से ५ तक चरखा-सघ व ग्रामोद्योग-संघ दोनो की सम्मिलित सभा। बापू सेगाव

से आये। जिन प्रान्तो मे काग्रेस मत्रि-मडल है, वहा किस प्रकार रचनात्मक कार्य किया जाय, इस बारे मे अपने विचार बताये। जवाबदारी भी बतलाई। वह ३-१५ बजे वापस सेगाव गये।

१९-९-३७, वर्धा

लक्ष्मीदास आसर के साथ बापूजी के पास सेगाव गया। गाधी-सेवा-सघ, शिक्षण-सभा व चरखा-सघ के बारे मे थोडी बाते।

२२-९-३७, वर्धा

मुझे नागपुर प्रातिक काग्रेस कमेटी का सभापति सर्वानुमति से चुना गया, यह सूचना मिली।

बापू से बाते। मुझे नागपुर प्रान्तिक काग्रेस कमेटी का सभापति बनाया गया, यह बापू को बताया। बापू ने सरकार के साथ सघर्ष की तैयारी रखने को कहा, शिक्षण समग्र दृष्टि से हो, क्रातिकारी लोगो की व्यवस्था, हमीदा का प्रश्न—आदि विषयो की चर्चा हुई।

२३-९-३७, वर्धा

सेगाव गया। बापू से देर तक विचार-विनियम। शकरलाल बैकर साथ मे थे।

२-१०-३७, वर्धा

तारीख के हिसाब से आज बापू-जन्मदिन। बापूजी को ६७ वर्ष पूरे हुए और ६८ वा चालू हुआ। सेगाव गया। बापूजी, लीलावती आसर को लेकर सेगाव से अस्पताल आये। लीलावती का टासिल का आपरेशन हुआ। बापूजी साढे चार बजे तक अस्पताल मे रहे। बाद मे उन्हे सेगाव छोडकर आया। आते व जाते समय मोटर मे बातचीत। नवभारत विद्यालय मे बापू के जन्मदिन-निमित्त विनोबा का भाषण हुआ।

१९-१०-३७, वर्धा

सेगाव गया। बापू थके हुए लगे। उनका मौन था। उनके प्रोग्राम आदि के सबध मे उनसे बाते की।

२४-१०-३७, वर्धा

नार्मल-स्कूल की प्रदर्शनी देखी। बापूजी भी आये थे। शिक्षण-समिति की पहली बैठक बापूजी की उपस्थिति मे हुई। बापूजी ने कार्य-पद्धति समझाई।

२५-१०-३७, वर्धा

नागपुर-मेल से थर्ड मे कलकत्ता रवाना हुए। बापूजी तथा सरदार वगैरा भी इसी गाडी से चले। रास्ते मे खूब भीड रही, स्टेशनो पर भी। आराम कम मिला। सिर मे चोट आ गई। बिलासपुर मे दर्वाजा नही खोलने देने के कारण क्रोध भी आया।

२६-१०-३७, कलकत्ता

खडगपुर मे उठे, निवृत्त हुए। प्रार्थना आदि। उमा की सगाई के बारे मे बापू से चर्चा। वल्लभभाई के साथ का मतभेद, सुशीला, प्यारेलाल, बापू के स्वास्थ्य व आराम तथा भावी प्रोग्राम की चर्चा। बापूजी को स्टेशन से सुभाष व शरद बोस अपने घर ले गए।

वर्किंग कमेटी १-३० बजे शरद बोस के घर पर हुई।

२७-१०-३७, कलकत्ता

वर्किंग कमेटी ८-३० से ११-३० और २ से ७-३०। श्री खेर व जवाहरलाल के विवाद से दु ख हुआ। खेर की थोडी गलती थी, इस कारण जवाहरलाल को रोक नही सका, परन्तु जवाहरलाल का व्यवहार भी ठीक नही था।

२८-१०-३७, कलकत्ता

वर्किंग कमेटी ८-३० से ११-३० और २ से ५ तक हुई। आज मौलाना आजाद व जवाहरलाल पर क्रोध आया। जो कहना था, सो साफ तौर से कहा। जवाहरलाल का व्यवहार मिनिस्टरो के साथ असभ्यता का था व उनकी हिदायते वर्किंग कमेटी के बहुमत की नही थी।

३१-१०-३७, कलकत्ता

वर्किंग कमेटी मे ५ से ८ तक। रात मे बापू से कहकर वर्किंग कमेटी से अपने त्यागपत्र का मसविदा बनाया। मित्रो को दिखाया। ऑल इडिया काग्रेस कमेटी मे भी एक घटा गया—२ से ३ तक।

१-११-३७, कलकत्ता

वर्किंग कमेटी ८-३० से ११-३० और १२-३० से ५ वजे तक हुई। गरमागरम चर्चा, विचार-विनिमय। मैने वर्किंग कमेटी मे नही रहने का

निश्चय रखा। नागपुर-मेल से वर्धा रवाना। बापू का ब्लडप्रेशर खूब बढ गया, स्वास्थ्य चिंताजनक। बापू रवाना नही हो सके।

१७-११-३७, वर्धा

शाम को सेगाव गया। वहा बापू के रहने आदि की व्यवस्था देखी। भोजन वही किया और रात को वही सोया।

१८-११-३७, वर्धा

बापू कलकत्ता से मेल से आये। डाक्टर ने देखा। बापू के साथ सेगाव गया। बापू वहा थोडा बोले। उनकी व्यवस्था की।

'गाधी-सेवा-सघ' की बैठक का कार्य हुआ। महत्त्वपूर्ण बैठक थी। ठीक विचार-विनिमय हुआ। सरदार, गगाधरराव, जयरामदास, कृपलानी, शकरराव देव, प्रफुल्लबाबू आदि हाजिर थे।

१९-११-३७, वर्धा

सुबह उठकर बापू के साथ पैदल डेढ मील तक घूमना हुआ। बापू को देखने डाक्टर लोग आये।

महादेवभाई से बगाल की हालत समझी। विचार-विनिमय।

बापू के पास जल्दी गया। गाधी-सेवा-सघ की बैठक मे विचार-विनिमय। रात सेगाव मे रहा। प्रार्थना।

२०-११-३७, वर्धा

सुबह ४ बजे प्रार्थना। बापू का ब्लडप्रेशर १९४-११४ हो गया। इससे थोडी चिन्ता हो गई। सेगाव गया। बापू का स्वास्थ्य तथा उनकी व्यवस्था आदि देखी।

२१-११-३७, सेगांव-वर्धा

प्रात ४ बजे उठा। बाद मे पैदल वर्धा के लिए रवाना। रास्ते मे खेत वगैरा देखे।

बबई से डॉ० गिल्डर व डॉ० जीवराज मेहता बापू को देखने आये। स्टेशन पर बातचीत।

२२-११-३७ नागपुर-वर्धा

बापू का ब्लड-प्रेशर २१८-११८ हो गया। बापू को देखने डॉ० जीवराज व महादेवभाई के साथ सेगाव गया। ब्लड प्रेशर बहुत ज्यादा था। उससे चिन्ता बढ गई।

डॉ० जीवराज से बापू के स्वास्थ्य के बारे मे देर तक बातचीत। प्रार्थना के बाद बापू ने सेगाव से और कही न जाने के बारे मे अपने विचार कहे।

२३-११-३७, सेगांव-वर्धा

पू० बापू से बाते व विनोद। थोडा घूमना। ब्लड-प्रेशर १९४ व ११२ हो गया। चेहरा भी ठीक मालूम हुआ।

२४-११-३७, वर्धा

पाच बजे के करीब उठा। बापू का ब्लड-प्रेशर १९४-११२। बापू के साथ घनश्यामदास बिडला और महादेवभाई की कलकत्ते के बारे मे बाते। नजरबदो के विचार सुने। शरदबाबू को पत्र दिया। दिन-भर सेगाव रहा। गाव देखने गया।

२६-११-३७, वर्धा

४ बजे प्रार्थना। बापू का ब्लड-प्रेशर १९४-११२, शाम को १८०-११०। मगनवाडी-म्यूजियम के बारे मे विचार-विनिमय।

भोजन करके सेगाव गया। प्रार्थना के बाद कार्यकर्ताओ से बाते।

२७-११-३७, वर्धा

४ बजे प्रार्थना। बापू का ब्लड-प्रशर ८ बजे १८०-११० रहा।

२८-११-३७, वर्धा

सुबह बापू को घनश्यामदासजी के साथ देखकर आया। स्वास्थ्य साधारण।

सेगाव मे हिम्मतसिहका की बरात को हुड्डा-पार्टी। बापू के साथ प्रार्थना का आनन्द।

१-१२-३७, सेगांव

प्रात बापू से मिला। घूमने गया। बालकोबा को देखा।

नागपुर-यूनिवर्सिटी बापूजी को डॉक्टरेट की पदवी देना चाहती थी। बापू ने कहा कि मै उसके योग्य नही हू। विनोद होता रहा।

३-१२-३७, सेगांव

प्रार्थना के बाद बापू से विनोद। थोडी देर पढना-लिखना।

बापू ने बातचीत के लिए बुलाया। हिंसामय वातावरण को रोकने के लिए हम लोगो ने जोरो से प्रयत्न करने का कहा।

४-१२-३७, सेगाव-वर्धा

डॉ० नर्बदाप्रसाद महादेवभाई के साथ मोटर से सेगाव जाकर आये। बापू का स्वास्थ्य वैसा ही है। सुबह २००-११४ के करीब व दोपहर को १६०-१०८ ब्लडप्रेशर रहा। दोपहर का ठीक था।

५-१२-३७, सेगाव-वर्धा

सेगाव पैदल गया। डॉ० जीवराज मेहता व नर्बदाप्रसाद आये। डॉ० मेहता से बातचीत। डॉ० जीवराज के आग्रह से कल मेल से बापू ने बम्बई (जुहू) जाने का निश्चय किया। बम्बई तार-टलीफोन वगैरा किये।

सेगाव-आश्रम की व्यवस्था की। बापू ने ६ बजे के करीब मौन लिया।

६-१२-३७, सेगाव-वर्धा

मेल से बापू को लेकर बम्बई रवाना हुए। रास्ते मे बापू को थोडा शारीरिक आराम मिला। विचार चलते रहे।

प्रार्थना। बापू का मौन रहा।

७-१२-३७, दादर

कल्याण मे तैयार होकर बापू के डिब्बे मे गया। दादर उतरकर वहा से बापू को जुहू ले आये। अपनी छोटी कुटिया मे बापू ठहरे। वही भोजन किया। उन्हे कुटिया पसन्द आई।

डॉ० जीवराज, गिल्डर व रजबअली वगैरा देखने आये। बापू की जाच की।

८-१२-३७, जुहू (बबई)

बापू को रात मे नीद ठीक आई। बापू के साथ घूमना हुआ। डॉ० जीवराज वगैरा ने बापू के पेशाब व खून वगैरा की जाच कराई। मिलने-जुलनेवालो से बापू को शान्ति मिले, इसकी व्यवस्था की। बापू का कुटब-परिवार मिलने आया।

९-१२-३७, जुहू

बापू के साथ घूमना हुआ। दिनशा मेहता ने कहा कि बापू का शायद ऐक्स-रे फोटो लेना पडे।

बापू को रात मे नीद ठीक आई। शान्ति भी मिली। डॉ० गिल्डर व डॉ० जीवराज ने आज जाचा। ब्लडप्रेशर १८८-११२ रहा।

बापू की प्रार्थना में। अपनी कुटी के सामने—देशपाडे ने भजन गाये।

१०-१२-३७, जहू

बापू के साथ घूमा।

हरिहर शर्मा (अण्णा) से बातचीत की। बापू की इच्छा के कारण उनसे मिलाया, परन्तु बापू को दु ख पहुचा। यहा आने की जरूरत नही थी।

बापू का ब्लड-प्रेशर १८४-११२। वजन ११२ पौड रहा।

११-१२-३७, जुहू

बापू के साथ घूमना तथा विनोद। ब्लड-प्रेशर १८२-११०। सरदार व जयरामदास आये। सरदार व पुरुषोत्तमदास बापू से मिले।

१३-१२-३७, जुहू

बापू का ब्लड-प्रेशर आज कल से कम, यानी १७५-१०० था। बापू के साथ शाम को भी घूमना हुआ।

१४-१२-३७, जुहू

बापू के साथ घूमना हुआ। हिज हाईनेस आगाखा व उनका लडका प्रिंस अलीखा बापू को देखने आये। कुछ विनोद करके चले गए। शाम को कमजोरी मालूम हुई तो भी बापू के साथ घूमना हुआ।

१५-१२-३७, जुहू

बापू के साथ घूमना हुआ। उन्हे अपना दूसरा प्लाट दिखाया। शाम को भी बापू के साथ घूमना व प्रार्थना। जल्दी सोया।

१६-१२-३७, जुहू

बापू के साथ घूमना हुआ।

बापू को आज डॉ० गिल्डर व डॉ० जीवराज ने देखा। शाम को ब्लड-प्रेशर फिर ज्यादा मालूम हुआ। चिता हुई।

२१-१२-३७, जुहू

पीठ मे दर्द ज्यादा हुआ। बापू ने सेक करने को कहा। बापू के साथ थोडा घूमा। महाराजा रीवा बापू के दर्शन को आये। उनसे बातचीत।

२२-१२-३७, जुहू (बम्बई)

यादवजी वैद्य व रामेश्वरदासजी बिडला आये। बापू के तथा मेरे स्वास्थ्य के बारे मे बातचीत। बापू से मिलकर वर्धा जाने की तैयारी।

२४-१२-३७, वर्धा

सेगाव गया। वहा सबको बापू के समाचार बताये।

३१-१२-३७, जुहू (बम्बई)

दादर उतरकर जुहू २-३० बजे करीब पहुचा। स्नान वगैरा करके बापू से मिला।

डायरी के अंश

१९३८

१-१-३८, जुहू (बम्बई)

सवेरे बापू के साथ घूमना हुआ।

सरदार वल्लभभाई, राजेन्द्रबाबू, भूलाभाई, जयरामदास दौलतराम, शंकरराव देव व शंकरलाल बैंकर जुहू आये। वर्किंग कमेटी के संबंध में देर तक विचार-विनिमय होते रहे।

२-१-३८, जुहू

सुबह जल्दी तैयार हुआ और बापू से मिलकर पंडित जवाहरलाल से मिलने बम्बई गया। बाद में बिड़ला-हाउस में राजेन्द्रबाबू, सरदार, जयरामदास, भूलाभाई, कृपलानी आदि से अपनी नीति के बारे में विचार-विनिमय।

३-१-३८, जुहू

सुबह जल्दी तैयार होकर व बापू से मिलकर बम्बई। वर्किंग कमेटी ८-३० से ११-१५ व १-३० से ३-१५ तक हुई। बाद में पं० जवाहरलाल, मौलाना आजाद, सरदार, राजेन्द्रबाबू और राजाजी बापू से मिलने आये। जानकी-कुटीर में नाश्ता, चाय वगैरा व चर्चा।

४-१-३८, जुहू

जल्दी तैयार होकर बम्बई जाते समय बापू से मिलकर कल का हाल कहा।

वर्किंग कमेटी सुबह ८-३० से ११-३० व १२-३० से ८ तक हुई। मैसूर की चर्चा व दो महत्व के प्रस्ताव पास हुए। [illegible] कांग्रेस की नीति मिनिस्टरों के मामले में व हिंसा आदि के बारे में साफ की। बिहार किसान-सभा के बारे में भी ठीक चर्चा व विचार-विनिमय हुआ।

५-१-३८, जुहू

बापू से मिलकर बम्बई । कल शाम को बापू की लकडी एक पागल मुसलमान ने पकड ली, इस घटना का हाल पू० बापूजी ने बताया ।

कृपलानी और जयरामदास मिलने आये । बापू को कल के दोनो ठहराव ठीक मालूम हुए ।

राजेन्द्रबाबू सरदार, राजाजी, भूलाभाई, जयरामदास, खेर आदि से बातचीत । मिनिस्टरो के व्यवहार के बारे मे विचार-विनिमय ।

८-१-३८, वर्धा

जल्दी निवृत्त हुआ । पू० बापूजी बबई से आये । स्टेशन पर पैदल गया । गाडी १ घटा १० मिनिट लेट थी । बापू बगले आये । ब्लड-प्रेशर देखा ।

९-१-३८, वर्धा

पैदल सेगाव । बापू से महादेवभाई के साथ बातचीत । उन्हे हरिपुरा-काग्रेस तक पूरा आराम लेने को कहा, परन्तु कोई फल नही निकला । बापू की इच्छा के मुताबिक महादेवभाई मुलाकात, प्रोग्राम आदि की व्यवस्था करेगे ।

१०-१-३८, वर्धा

मोटर से सेगाव जाना व आना । सीतारामजी, जानकीदेवी साथ मे । वही प्रार्थना ।

बापूजी ने आज लिखने का काम ज्यादा किया । ब्लडप्रेशर भी ठीक था । जवाहरलालजी की माता के देहान्त होने की खबर बापूजी ने दी ।

११-१-३८, वर्धा

सुबह जल्दी उठा—४ बजे स्नान आदि से निवृत्त । पैदल सेगाव । प्यारेलाल से करीब डेढ घटे बातचीत । उसका मानस समझा ।

बापू यहा से अगले महीने की ता० ७ को जानेवाले है । वहातक तो चिन्ता का कारण नही ।

१२-१-३८, वर्धा

डॉ० खर के साथ सेगाव गया । डॉ० खरे न बापू को देखा । स्वास्थ्य ठीक बताया ।

१३-१-३८, वर्धा

पैदल सेगाव—बापू से हकीमजी की बातचीत। बापूजी को देखने नागपुर से हुकूमतराय व सिविल सर्जन आये।

प्यारेलाल से बातचीत।

१५-१-३८, वर्धा

पैदल सेगाव, रास्ते मे महादेवभाई मिले। उन्होने बापू की हालत बताई। ब्लड-प्रेशर बढा हुआ है—२०० के ऊपर। बापू से थोडी बाते। हकीमजी को भेजने का विचार। वापस आते समय किशोरलालभाई, गोमतीबहन व शाता साथ मे। हकीमजी, सरस्वती (गाडोदिया) जानकी वापस सेगाव गये।

१७-१-३८, वर्धा

चि० शान्ता के साथ सेगाव। पू० बापूजी को देखकर हकीमजी व सरस्वतीबाई को लेकर जल्दी वापस।

घनश्यामदास बिडला आज मेल से कलकत्ता से आये। मेरे आने के पहले वह सेगाव पहुच गए। महादेवभाई से लार्ड लोथियन के प्रोग्राम के बारे मे विचार-विनिमय।

१८-१-३८, वर्धा

सुबह जल्दी तैयार होकर लार्ड लोथियन के लिए स्टेशन गया। गाडी १० मिनट पहले आ गई। काकासाहब व शान्ता को मिलाया। बाद मे महादेवभाई व दोनो कुमारप्पा को मिलाया। डॉ० नर्वदाप्रसाद की गाडी मे सेगाव रवाना। रास्ते मे आर्यनायकम् आदि से भी मिलाया। सेगाव पहुचकर लार्ड लोथियन बापू से मिले। बाद मे मीराबहन को मिलाया। उन्हे अपने कच्चे मकान मे ठहराया।

बापू के साथ घूमना। फिर वापस वर्धा।

वियेना के एक प्रोफेसर व डाक्टर व उनके एक साथी बापू को देखने आये। उनकी व्यवस्था की। वापस सेगाव आकर बापू से मिला।

१९-१-३८, वर्धा

लार्ड लोथियन नवभारत विद्यालय, महिलाश्रम, मगनवाडी, खादी-भडार, लक्ष्मीनारायण मदिर देखने आये। उनके भोजन की व्यवस्था महिलाश्रम मे की। वह थोडा बोले, पर सुन्दर बोले।

दोपहर को व शाम को लार्ड लोथियन के साथ सेगाव गया। उनको घूमकर सब दिखाया।

बापू के पास प्रार्थना तक रहा। घनश्यामदास बिडला भी आये। शाम को सेगाव मे ही भोजन किया।

२०-१-३८, वर्धा

आज सुबह लार्ड लोथियन ने हरिजन बोर्डिंग, राष्ट्रभाषा प्रचार विद्यालय, नालवाडी टेनरी, कार्यालय आदि को देखा। उन्होने कोई २०-२५ मिनट विनोबा के साथ आध्यात्मिक विचार-विनिमय किया। उसके बाद लार्ड लोथियन घर पर आये। कार्यकर्त्ताओ व मित्रो से परिचय व बात-चीत। भोजन। सारा समारभ ठीक रहा।

लार्ड लोथियन व घनश्यामदासजी सेगाव गये। बापू से बाते। प्रार्थना। आज बापू का ब्लड-प्रेशर ज्यादा था।

२१-१-३८, वर्धा

सवेरे लार्ड लोथियन को ग्राड ट्रक ऐक्सप्रेस पर पहुचाया। वह दिल्ली गये।

सेगाव गया। बापू से पचास हजार रुपये (घनश्यामदासजी बिडला के इस वर्ष के एक लाख मे से) गाधी-सेवा-सघ के जनरल फड मे दिलाने का निश्चय। ईयरमार्क-फड मे से ढाई हजार बापू के जिम्मे नालवाडी मे विद्यार्थियो के लिए मकान बनाने के लिए। विट्ठलभाई-फड के सबध मे विचार। उत्तमचन्द शा (पैरिसवालो) ने पाच हजार का चेक दिया।

२२-१-३८, वर्धा

तुकडोजी महाराज के भजन। सेगाव पैदल गया। बापूजी से मुलाकात। फ्रटियर जाने तथा हकीमजी के जाने के बारे मे चर्चा। सेगाव मे नाश्ता।

२३-१-३८, वर्धा

सेगाव तक पैदल। बापू के साथ काग्रेस व शिक्षण बोर्ड-विषयक चर्चा। विद्यापीठ के स्नातक, सरस्वतीबाई गाडोदिया, हकीमजी वगैरा बापू से मिले। प्यारेलाल से बाते। बापू ने काग्रेस जाने के बारे मे पूरी तैयारी रखने को कहा।

२५-१-३८, वर्धा

सेगाव जाकर बापू व अन्य लोगो से मिला। वापस घर आकर भोजन। बाद मे दो बजे फिर महादेवभाई के साथ सेगाव गया। बापू से २ से ३ तक बातचीत—गाधी-सेवा-सघ, विट्ठलभाई पटेल, वर्किंग कमेटी, फेडरेशन, मलकानी, आर्यनायकम्, डॉ० बतरा, प्यारेलाल आदि के बारे मे।

२६-१-३८, वर्धा

सेगाव जाकर बापू से सेगाव का हिस्सा व अन्य इमारते आदि ग्राम-सेवा-मडल को देने पर विचार-विनिमय। बापू ने अपना भावी कार्यक्रम व इच्छा बतलाई। उन्हे अब सेगाव छोडना नही है। हिन्दू-मुस्लिम-एकता के लिए फ्रटियर रहना पडे तो विचारणीय है।

काग्रेस वर्किंग कमेटी व स्वतत्रता के प्लेज (प्रतिज्ञा) पर विचार।

२९-१-३८, वर्धा

सेगाव गया। बापू से सेगाव दान देने के बारे मे बातचीत। मालगुजारी का हिस्सा दान मे देने मे व्यवहार की अडचन। बगीचा व जमीन वसत-पचमी से दान देने का निश्चय।

३१-१-३८, वर्धा

सेगाव गया। बापू का स्वास्थ्य ठीक था। सुशीला ने बताया कि नार्मल हालत समझी जा सकती है। बापू को नागपुर-काग्रेस के चुनाव व डॉ० खरे, पूनमचद राका आदि की स्थिति का हाल थोडे मे कहा। बापू का मौन था।

२-२-३८, वर्धा

सुबह स्टेशन गया। वल्लभभाई, जयरामदास आदि बापू से मिलने आये। नागपुर से मोटर द्वारा जवाहरलालजी व कृपलानी आये। मेल से सुभाषबाबू आये। पहले जवाहरलालजी को लेकर सेगाव गया। बाद मे सुभाषबाबू को लेकर गया।

३-२-३८, वर्धा

पैदल सेगाव गया। बापू से मिला। सुभाषबाबू को लेकर वर्धा आया।

४-[illegible] [illegible]र्धा

प्रार्थना। पैदल सेगाव। बापू को वर्किंग कमेटी का थोड़ा [illegible]।

वर्किंग कमेटी ८।। से ११।। व २ से रात्रि ९।। तक होती रही। फडरेशन-वाला ठहराव हुआ।

५-२-३८, वर्धा

वर्किंग कमेटी ८।। से १।। व २ से ८।। तक होती रही। बीच मे कुछ लोग सेगाव बापू के पास हो आये।

वर्किंग कमेटी मे आज भूख-हडताल, मिनिस्टरी, देशी रियासते आदि पर खासतौर से विचार-विनिमय हुआ।

६-२-३८, वर्धा-नागपुर

वर्किंग कमेटी की बैठक हुई। देशी रियासत का ठहराव बहुत वाद-विवाद व विचार-विनिमय के बाद जवाहरलालजी ने जैसा पेश किया, वही सबोने मजूर किया।

सेगाव जाकर बापू से मिले। जवाहरलालजी की बापू से बातचीत। आते समय महिला-आश्रम के उत्सव मे ठहरे।

१३-२-३८, हरिपुरा (विट्ठलनगर)

दादर-स्टेशन से बैठकर मढी-स्टेशन पर उतरे। रास्ते मे सुभाषबाबू व डा० पट्टाभि से देशी रियासतो के सबध मे बातचीत। सुभाषबाबू के साथ भोजन। बाद मे उन्हे इन तीन वर्षो की स्थिति व वर्किंग कमेटी के अन्दर के काम से ठीक तौर से वाकिफ कराया। बाद मे सुभाष से जितनी बाते हुई, वे सब घूमते हुए बापू को सुनाई। उन्हे पसद आई। सुभाषबाबू बापू से मिल लिये।

१५-२-३८, हरिपुरा

वर्किंग कमेटी ८।। से ९।। व २ से ६ तक हुई। जवाहरलालजी की रिपोर्ट पर आज गरमागरमी रही।

बापू से वर्किंग कमेटी का हाल कहा। शाम की प्रार्थना मे गये।

बापू के साथ जवाहरलालजी, सुभाषबाबू, मौलाना, सरदार और मैंने मिनिस्ट्री के बारे मे, खासकर बिहार व यू० पी० के बारे मे बातचीत की। उन्होने अपने विचार कहे।

१६-२-३८, हरिपुरा (विट्ठलनगर)

बापू के साथ बातचीत। मैंने बताया कि मै वर्किंग कमेटी मे नही

रहूगा। मुझे इसम से निकाल। उन्होने कबूल तो किया। और भी हालत कही।

खादी-प्रदर्शनी के स्थान पर प्रार्थना। बाद मे बापू का खादी के महत्त्व पर मार्मिक भाषण हुआ।

१७-२-३८, हरिपुरा

श्री खेर से बम्बई के गवर्नर के बारे मे जो बातचीत हुई, उसका हाल बापू से कहा।

शाम की वर्किंग कमेटी की बैठक मे मुख्यमत्री श्री गोविन्दवल्लभ पत व श्री कृष्णसिह के निवेदन व वहा की स्थिति का वर्णन सुनने पर दु ख व चिन्ता।

१९-२-३८, हरिपुरा

बापू से बाते व अपन सबध मे—वर्किंग कमेटी के बारे मे।

२१-२-३८, हरिपुरा

वर्किंग कमेटी मे चर्चा। वर्किंग कमेटी मे न रहने के बारे में अपने विचार मैंने साफ कहे।

जवाहरलालजी, सुभाषबाबू वगैरा शाम को बापू से मिले।

काग्रेस का खुला अधिवेशन। आज की कार्रवाई आखिर तक की ठीक रही।

बापू से हुई बात का सार मौलाना ने कहा। मुझे वर्किंग कमेटी में रहना चाहिए, इसका आग्रह किया। अपनी कठिनाइया मैंने कही।

२२-२-३८, हरिपुरा

प्रात काल बापू के जाने की तैयारी। उनसे मिला। बापू ने मित्रो का व सुभाषबाबू का यह आग्रह, कि मै वर्किंग कमेटी मे रहू, बताया। मैंने इन्कार किया।

ऑल इडिया काग्रेस कमेटी की बैठक मे सुभाषबाबू ने मेरा नाम भी जाहिर कर दिया। सरदार ने जो खुलासा किया, वह पूरा नही किया, अधूरा किया। मै पूरा कराना चाहता था, पर सुभाषबाबू ने कहा, यहा ठीक नही मालूम होगा।

२५-२-३८, बम्बई

डॉ० रजबअली के यहा वर्किंग कमेटी के मेम्बरो की इनफार्मल बैठक हुई। आठ मेम्बर हाजिर थे। मिनिस्टरो की स्थिति टेलीफोन से समझी व उन्हे स्वीकृति दी।

बापूजी के स्टेटमेट के आधार पर बयान देने को कहा।

२-३-३८, वर्धा

सेगाव गया। हीरालालजी शास्त्री व रतनबहन के साथ बापू से जयपुर-प्रजा-मडल की स्थिति, वार्षिक उत्सव, उस अवसर पर मेरे वहा जाने आदि के बारे मे विचार-विनिमय।

रमीबाई कामदार, मौलाना, सुभाषबाबू, हरिपुरा-काग्रेस व खर्च वगैरा के बारे मे थोडी बाते।

३-३-३८, वर्धा

सेगाव गया। बापू के पास—विनोबा व महादेवभाई साथ थे। नागपुर प्रांतिक काग्रेस कमेटी से त्यागपत्र देने के बारे मे देर तक विचार-विनिमय। बापू ने अपनी नीति कही। सब जिम्मेदार कार्यकर्ताओ को काग्रेस मे सम्मिलित होना चाहिए। विनोबा व शिक्षण-बोर्ड आदि की चर्चा।

४-३-३८, वर्धा-पुलगांव-देवली

मेल से शातिकुमार, मास्टर व गगनविहारी आये। दोपहर मे बापू के पास सेगाव गये। विदेशी व्यापारी भारत मे किस नीति से व्यापार करें, इसपर विचार-विनिमय। महादेवभाई भी मौजूद थे।

६-३-३८, वर्धा

सुभाषबाबू ने दो बार कलकत्ते टलीफोन पर बात की। शरदबाबू से बापू के प्रोग्राम के बारे मे व डिटेन्यू के लिए प्रचार आदि सम्बन्ध मे बाते। सुभाषबाबू ने मदिर, खादी-भडार, मगनवाडी देखी।

सुभाषबाबू व मौलाना के साथ सेगाव गया। बापू के साथ बाते। मिस्टर जिन्ना का पत्र-व्यवहार। शहीदगज का मामला। सिक्खो का खून, बगाल का प्रोग्राम, वर्किंग कमेटी की जगह पूरी करना, वर्किंग कमेटी की बैठक उडीसा मे रखना तथा शिक्षण-बोर्ड आदि के बारे मे बात हुई। उस *मय* पडित रविशकर शुक्ल भी मौजूद थे।

७-३-३८, वर्धा

मौलाना से कलकत्ते का हाल व सुभाषबाबू के विचारो के बारे मे बातचीत । सेगाव गया । बापू का मौन था । मौलाना से जो बात हुई, वह बापू को सुनाई । प्रार्थना के बाद वापस ।

२६-३-८, बेरबोई-डेलाग

प्रार्थना । डेलाग उतरकर पैदल बेरबोई गाधी-सेवा-सघ कान्फ्रेन्स मे पहुचे । साथ मे लक्ष्मणप्रसादजी पोद्दार, महाबीरप्रसादजी पोद्दार, रामकुमारजी केजडीवाल, हीरालालजी सराफ आदि थे ।

बापूजी के साथ घूमना । थोडी बाते । सिर मे दर्द हो गया । मेथल वगैरा लगाया ।

गाधी-सेवा-सघ की कार्यकारिणी सुबह ८ से १० तक । कान्फ्रेस ३ से ५ तक । रात्रि मे कार्यकारिणी ७॥ से ९॥ तक रही ।

२८-३-३८, डेलांग

प्रार्थना के बाद बापू ने हिन्दू-मुस्लिम-दगे के बारे मे जो प्रस्ताव रखा था, उसके बारे मे मेरी शकाओ का समाधान करने की दृष्टि से भाषण किया —करीब एक घटा ।

गाधी-सेवा-सघ की कार्यकारिणी कमेटी ८ से १० तक हुई । दोपहर को १॥ से ३॥ तक । कान्फ्रेस ३ से ५ तक ।

३०-३-३८, बेरबोई-डेलांग

बापू व जयप्रकाश से थोडी बाते ।

१॥ से ५ तक गाधी-सेवा-सघ कान्फ्रेस का काम हुआ । कृपलानी, सरदार, राजेन्द्रबाबू, किशोरलालभाई के भाषण ठीक हुए ।

३-४-३८, कलकत्ता

वर्किंग कमेटी ८ से ११॥ व २ से ७ तक हुई । दो से पाच तक बापूजी के साथ नागपुर का शरीफ-प्रकरण चला । सुबह सुभाषबाबू के घर डॉ० खरे ने जो परिस्थिति कही, उससे स्थिति एकदम बदली हुई मालूम हुई । उस बारे मे विचार-विनिमय । बापूजी के सामने मैंने मि० शरीफ को यहा बुलाने के खिलाफ जो विचार रक्खे, वे सरदार को बिलकुल पसन्द नही आये, लेकिन कई मित्रो को बहुत पसन्द आये ।

४-४-३८, कलकत्ता

वर्किंग कमेटी मे ८॥ से ११॥ व दोपहर को २ से ४॥। बजे तक मैं रहा। बाद मे पू० बापूजी से मिला। चि० सावित्री वगैरा को बापू से मिलाया। सीतारामजी से मिलकर हावडा-स्टेशन। श्री सुभाषबाबू व मौलाना का आग्रह था कि मैं न जाऊ, परन्तु जाना तो था ही। नागपुर के मामले मे सरदार का रुख देखकर भी जाना ही उचित समझा।

५-४-३८, वर्धा

मैंने ता० ३ को कलकत्ते मे शरीफ-प्रकरण के बारे में बापू के सामने वर्किंग कमेटी मे जो यह राय दी थी कि डॉ० खरे का खुलासा सुनने के बाद अब हम इस स्थिति मे विशेष कुछ कर नही सकते, क्योकि पार्टी-मीटिंग में सर्वानुमति से उन्हे माफी दे दी गई व सब मिनिस्टरो की भी यही राय है, तब फिर उन्हे बुलाने से क्या लाभ है, आदि। इससे सरदार वल्लभभाई नाराज हो गए, ऐसा मामूली मालूम हुआ था। परन्तु आज ज्यादा हाल मालूम हुए। रायपुर से बापू व सुभाष बोस को ऐक्सप्रेस तार दिया कि मेरी राय का विचार न किया जाय।

६-४-३८, वर्धा

बबई जाने की तैयारी। जाजूजी व किशोरलालभाई से देर तक वर्किंग कमेटी से मेरा त्यागपत्र, सरदार से मतभेद तथा मानसिक दुर्बलता आदि का हाल कहा। दोनो ने त्यागपत्र अभी नही देने की राय दी। विचार करना है।

१६-४-३८, वर्धा

स्टेशन गया। ग्राड ट्रक से बापूजी दिल्ली से वर्धा आये। उन्हे सेगाव के आधे रास्ते तक पहुचाकर वापस आया।

१८-४-३८, वर्धा

सेगाव गया। प्रार्थना के बाद बापू का मौन खुलने पर थोडी देर बातचीत। डॉ० सौन्दरम् साथ थी।

१९-४-३८, वर्धा

यादवजी वैद्य व बम्बईवाले श्री दवे वैद्य नागपुर से आये। उनसे बातचीत। उन्हे लेकर सेगाव गया।

बापू से करीब एक घटा बातचीत। जयपुर प्रजा-मडल का व खादी-

प्रदर्शनी, वर्किंग कमेटी, महिला-सेवा-मडल व परीक्षा-विभाग, स्वास्थ्य, मानसिक अशान्ति व महर्षि रमण इत्यादि प्रश्नो पर विचार-विनिमय ।

२१-४-३८, वर्धा

बापूजी सेगाव से आये । नार्मल-स्कूल मे उनका भाषण । उन्होने आज विद्या-मदिर योजना के मकान की नीव रखी व ट्रेनिग स्कूल का उद्घाटन किया । वह थके हुए मालूम हुए ।

२२-४-३८, वर्धा

बापू से सेगाव मे दिल खोलकर स्पष्ट तौर से मन की स्थिति व कमजोरी का वर्णन किया । बापू ने जवाब दिया व अपनी स्थिति का वर्णन किया । किशोरलालभाई, राजकुमारी, प्यारेलाल, मीराबहन वगैरा मौजूद थे । मन थोडा हलका भी हुआ व दु ख भी हुआ ।

२३-४-३८, वर्धा

बापू ने जो नोट तैयार किये, वे राजकुमारी अमृतकौर ने पढकर सुनाये । प्यारेलाल ने बापू का स्टेटमेट, जो उन्होने जिन्ना की मुलाकात के बारे मे दिया था, सुनाया ।

२८-४-३८, जुहू

पू० बापूजी को लेने दादर-स्टेशन गया । गाडी करीब डेढ घटा लेट थी । दादर से बापू को लेकर जुहू आया । बापू अपने यहा ठहरे । घूमने गये, स्नान वगैरा किया ।

बापू जिन्ना से मिलकर आये, उसका हाल कहा ।

शाम की प्रार्थना मे लोग ज्यादा थे ।

२९-४-३८, जुहू

बापू से उदयपुर व सीकर के मामले की बात । उन्होने भी मेरा वहा जाना पसन्द किया । बापू ने उडीसा व मैसूर पर स्टेटमेट लिखवाये । खेर से बातचीत ।

फ्रटियर-मेल से बापू के साथ रवाना । साथ मे जानकीदेवी, उमा, रामकृष्ण, दामोदर व विट्ठल थे ।

३०-४-३८, सवाई माधोपुर-जयपुर

रतलाम मे बापूजी के डिब्बे मे गया । जयपुर प्रजा-मडल के लिए सदेश

लिया । जिन्ना से समझौते की जो बात चल रही है, उस बारे मे बापू ने अपने विचार कहे । मिनिस्टरी के बारे मे विचार-विनिमय । फ्रटियर के बारे मे महादेवभाई का नोट पढा । थोडा दु ख हुआ ।

बापू के पास ही नाश्ता किया । बापू अपनी निराशा की बाते करते थे, मै अपनी ।

सवाई माधोपुर मे हीरालालजी शास्त्री, जयपुर से आये । बापू से थोडी बाते ।

७-५-३८, जयपुर

पू० बा, देवदासभाई, काति, सरस्वती, दिल्ली से आये । जयपुर प्रजा-मडल की तरफ से प्रोसेशन बहुत सुदर ढग से उत्साहपूर्वक व धूमधाम के साथ निकला । शाम को प्रदर्शनी का उद्घाटन पू० कस्तूरबा ने किया । देवदास ने भी भाषण दिया ।

मि० यग भी आये थे । उनसे वही पर देर तक बातचीत । कल फिर मिलने का निश्चय ।

८-५-३८, जयपुर

यग के साथ बहुत देर तक राजनैतिक, खासकर सीकर के सबध मे, विचार-विनिमय होता रहा। वहा से आकर पू० बापूजी को व जयरामदास को तार करना पडा—जयरामदासजी के जयपुर आने से रुकने के बारे मे ।

११-५-३८, सीकर

पू० बा, जानकीदेवी और पार्वतीदेवी दोपहर की गाडी से जयपुर से सीकर पहुचे । जनता ने उनका स्वागत किया ।

१२-५-३८, सीकर

पू० बा, जानकीदेवी, पार्वतीदेवी, गुलाबबाई वगैरा राणी साहेब से मिलकर आये । उन्हे अपना दृष्टिकोण साफ-साफ समझाकर बताया ।

पू० बा, पार्वतीदेवी वगैरा कासी-का-बास जाकर आये ।

१५-५-३८, जुहू (बबई)

बापू के पास वर्किंग कमेटी के सदस्य जमा हुए थे । विचार-विनिमय मे मै भी शामिल हुआ । दोपहर को बबई मे भूलाभाई के घर वर्किंग कमेटी की बैठक हुई ।

बापू के साथ घूमना, प्रार्थना व मिलना-जुलना। सीकर की हालत बापू से कही।

१६-५-३८, बंबई

वर्किंग कमेटी ८ से ११। तक व शाम को २ से ५।। तक भूलाभाई के यहा हुई। शाम को बापू के साथ जुहू मे घूमना व प्रार्थना।

१७-५-३८, जुहू

प्रार्थना। पू० बापूजी के पास वर्किंग कमेटी के काम की चर्चा व विचार-विनिमय ११।। बजे तक होता रहा।

वर्किंग कमेटी भूलाभाई के घर २ बजे से ५।। तक हुई। सी० पी० के मामले से चिन्ता।

जुहू मे बापू के साथ घूमना व प्रार्थना।

१८-५-३८, जुहू

प्रार्थना, घूमना। सुबह बापू के साथ पास वर्किंग कमेटी के लोग आये। उनसे बातचीत। जुहू मे प्रार्थना बापू के साथ।

१९-५-३८, जुहू

बापू के पास वर्किंग कमेटी के खास-खास लोग देर तक चर्चा, विचार-विनिमय करते रहे—फ्रटियर, मैसूर, सीकर, जयपुर आदि प्रश्नो पर।

२०-५-३८, जुहू

पू० बापू के पास सुभाषबाबू, सरदार, मौलाना, जयरामदास, कृपलानी आदि आये। देर तक विचार-विनिमय। मैसूर, फ्रटियर, सी० पी०, कम्यूनिस्ट आदि प्रश्नो पर चर्चा।

सरदार व किशोरलालभाई के साथ बातचीत। सरदार, राजाजी, मौलाना आदि मित्रो का सी० पी० की जवाबदारी लेने का मुझसे आग्रह। मैंने अपनी कमी व स्थिति साफ बताई।

आज वर्किंग कमेटी दो बजे से थी, मेरी समझ ४ बजे की रह गई। उसका दु ख हुआ और आश्चर्य भी हुआ। बापू के पत्र दे दिये।

बापू से प्रार्थना, जवाहरलालजी पचगनी से आये। डा० पट्टाभि वगैरा के साथ भोजन।

२१-५-३८, जुहू

बापूजी, सुभाषबाबू, मौलाना आजाद, सरदार व खानसाहब देर तक,

११ बजे तक, विचार-विनिमय करते रहे। सीकर-जयपुर के बारे में सुभापवाबू स्टेटमेंट देंगे।

सी० पी० मिनिस्ट्री की चर्चा मे मैंने अपनी कठिनाई साफ तौर से बतलाई।

बापूजी जिन्ना व राजेन्द्रबाबू से मिलकर वर्धा जाने के लिए सीधे स्टेशन गये।

२३-५-३८, वर्धा-नागपुर

सेगाव मे बापू से मिलकर आया। बापूजी व राधाकृष्ण साथ मे थे। बापू ने कहा कि पचमढी जाना जरूरी है। बम्बई के पारसी मित्र ने जो पत्र दिया था, वह उन्हे दे दिया।

जाजूजी से नागपुर की स्थिति पर विचार-विनिमय।

२५-५-३८, नागपुर-वर्धा

काफी चर्चा के बाद छहो मिनिस्टरो ने आपस मे बैठकर फैसला किया। एक बार तो टूटने का मौका आ गया था। बाद मे दुर्गाशंकर मेहता व खरे ने मिलकर एक नया फार्मूला दिया। मैंने उसमे दुरुस्ती की। वह सबोने स्वीकार की। पार्टी मे एक बार तो मामला सुलझ गया। सभीने अच्छा स्वागत किया, पर भविष्य ठीक नही दीखता था।

२७-५-३८, पचमढी

सरदार के साथ बापूजी के पास सेगाव गया। सरदार ने पचमढी की चर्चा व सारी स्थिति का वर्णन बापूजी से किया व स्टेटमेंट की बात की। डॉ० खरे व शुक्ला तो तार भेजा। मुझे जहा दुरुस्ती करनी थी, की।

२८-५-३८, वर्धा

सरदार वल्लभभाई व महादेवभाई जल्दी भोजन कर पू० बापूजी के पास सेगाव गये। बापूजी ने स्टेटमेंट बनाया। प० रविशंकर शुक्ल व मिश्र ने उसे देखा व कुछ शब्दो मे हेर-फेर किया। सरदार बम्बई गये।

सेगाव गया। बापूजी ने पेरीनबहन व सुभाषबाबू का पत्र पढाया। मुझे जो कुछ कहना था, वह कहा।

३१-५-३८- वर्धा

सेगाव गया। चि० राधाकृष्ण की नालवाडी के काम बढाने की योजना

पर बापूजी से विचार-विनिमय। बापूजी ने उसकी जिम्मेदारी लेना उचित समझा। मैंने कहा कि चालीस हजार के लगभग की जरूरत होगी। विनोबा व जाजूजी की लिखित स्वीकृति होना जरूरी है। बापूजी मुझसे भी सलाह व मदद की आशा रखते है।

बापूजी से श्री सरदार आग्रे, टाटा, प्रो० बारी, जगतनारायण व सरदार आदि के सबध मे बाते हुई।

९-६-३८, जुहू

महादेवभाई का पत्र पढा। पू० बापू के मन की स्थिति के हाल पढकर आश्चर्य व दु ख हुआ। मन मे विचार चलने लगा।

१८-६-३८, वर्धा

भूलाभाई व राजेन्द्रबाबू के साथ सेगाव। १ से ४॥ तक भूलाभाई ने यूरोप के राजनीतिज्ञो से जो बातचीत हुई, वह बापू से कही।

बापू से, डॉ० खरे व शरीफ मिल गए, इसका थोडा हाल कहा। विट्ठलभाई पटेल के बिल के बारे मे विचार-विनिमय।

२३-६-३८, वर्धा

जानकीदेवी व मा के साथ सेवाग्राम गया। वहा बा, बापूजी से मिलना।

श्री धनुस्कर ने एक नवयुवक को वहा सत्याग्रह के लिए बैठा दिया था। उसे समझाया।

बालकोबा के पास थोडी देर बातचीत करने से मन को थोडी शान्ति मालूम हुई। बा के पास प्रसाद लिया। जानकी से कहा कि बापू से बातचीत करके मन हलका करले, परन्तु वैसा नही हो सका।

२४-६-३८, वर्धा

सुभाषबाबू, मौलाना, सरदार, कृपलानी, राजेन्द्रबाबू के साथ विचार-विनिमय। जिन्ना-प्रकरण, नागपुर-मिनिस्टरी-प्रकरण, विट्ठलभाई-बिल आदि के बारे मे। बाद मे मौलाना व मेरे साथ सुभाषबाबू की बातचीत।

सेगाव मे सुभाषबाबू, मौलाना, सरदार, राजेन्द्रबाबू, कृपलानी और मैं बापू से मिले। जिन्ना (मुसलिम लीग) के बारे मे तथा बगाल के कैदियो के बारे मे चर्चा।

२८-६-३८, वर्धा

सेगाव मे बापू से मिलकर आया। जवाहरमल हैदराबादवाले के बारे मे पूछा। उन्होने कहा कि एक वर्ष के लिए रख लिया जाय। महिला-आश्रम ५०, उमा-रामकृष्ण ५०, ऐसे कुल मिलाकर सौ रुपये मासिक दिये जाय। बापू की चिन्ता का कारण सुना। सरस्वती (काति गाधी की पत्नी) का बगलोर का आग्रह। प्यारेलाल वगैरा से बाते।

२९-६-३८, वर्धा

डॉ० खरे नागपुर से आये। उनसे बातचीत।

डॉ० खरे सेगाव बापू से मिलकर वापस आये और बाद मे देर तक मुझे कुछ फाइल व पत्र-व्यवहार दिखाते रहे। मैने उन्हे मेरे विचार भली प्रकार समझाने की कोशिश की व पत्र न भेजने को कहा। आपस मे सफाई करना ठीक रहेगा, यह जोर देकर कहा। आखिर उनके साथ नागपुर गया।

५-७-३८, वर्धा

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की साधारण समिति की बैठक का कार्य सुबह ८॥ से ११॥ व दोपहर २॥ से ६ बजे तक। बाद मे ८ से १०॥ तक, हिन्दी-प्रचार का काम भी हुआ। श्री टडनजी से व मत्री बाबूराम से गरमागरम बहस। थोडा दु ख पहुचा। मेरी भी थोडी गलती थी।

पू० बापूजी साहित्य सम्मेलन की बैठक के लिए वर्धा आये। ३ से ५ तक बैठे।

शिमला-अधिवेशन, प्रचार-समिति के अधिकार आदि पर विचार-विनिमय। नियमावली वगैरा के सबध मे।

८-७-३८, वर्धा

जयपुर से हीरालालजी शास्त्री का तार, वहा जल्दी आने के बारे मे, आया। सेगाव गया। बापूजी की सलाह हुई कि वहा जाना जरूरी है।

२५-७-३८, वर्धा

जयपुर से लौटकर घर पहुचते ही मुझे सेगाव जाना पडा। बापू ने डॉ० खरे को भली प्रकार समझाने का प्रयत्न किया। एक बार तो उन्होने बापू से कह दिया कि जैसा आप कहे वैसा करूगा, पर बाद मे बदल गए।

२६-७-३८, वर्धा

वर्किंग कमेटी का कार्य सुबह ८।। से ११ व तीसरे पहर २ से ८ बजे तक चला। पूज्य बापूजी २।। से ८ बजे तक बैठे। सी० पी० मिनिस्ट्री का प्रस्ताव-सर्वानुमति से खूब सोच-समझकर विचार-विनिमय के बाद पास हुआ। मन मे बुरा तो लगता था, परन्तु दूसरा कोई उपाय, काग्रेस की प्रतिष्ठा की दृष्टि से, दिखलाई नही दिया।

वर्किंग कमेटी के प्राय सभी सदस्यो की राय हुई कि अगर श्री जाजूजी स्वीकार करले तो उनका नाम लीडर के लिए सुझाया जाय। मै श्री जाजूजी से किशोरीलालभाई के साथ मिला। हम दोनो ने खूब समझाया। बाद मे उन्हे शरदबाबू, मौलाना, सरदार आदि से मिलाया। फिर सुभाषबाबू से भी मिलाया। सुभाषबाबू ने बडी ही अच्छी तरह प्रेमपूर्वक व जोर देकर समझाने का प्रयत्न किया। आखिर सुबह बापू के पास जाकर शकाओ का समाधान होने पर विचार करने का निश्चय हुआ।

२७-७-३८, वर्धा

सुबह ४ बजे उठकर श्री जाजूजी को लेकर बापूजी के पास सेगाव गया। किशोरलालभाई साथ थे। बापूजी ने उनकी शकाओ का भली प्रकार समाधानकारक उत्तर दिया। एक बार तो मालूम हुआ कि वह मुख्यमत्री-पद के लिए तैयार हो जायगे। मैने भी काफी जोर लगाया। बाद मे वर्धा वापस आये तो उन्होने यह जवाबदारी लेने से इनकार कर दिया। मैने सुभाषबाबू को सब हालत बता दी। मुझे भी निराशा हुई।

३१-७-३८, वर्धा

राजेन्द्रबाबू के साथ सेगाव गया। बापूजी को नागपुर प्रातीय काग्रेस कमेटी मे जो खास ठहराव पास हुए वे बतलाये। डॉ० खरे के बारे मे राय ली। हिगनघाट-मिल की पिकेटिग व कानपुर की स्थिति पर विचार-विनिमय। बापू ने कहा कि हिगनघाट की पिकेटिग इस प्रकार बिलकुल नही हो सकती। वह जल्दी बन्द होनी चाहिए। मेरा कर्त्तव्य वतलाया। श्री महर्षि रमण के पास जाने को कहा।

१-८-३८, वर्धा

श्री काकासाहव, नाना आठवले, काकासाहव कालेलकर के चार विद्यार्थी-

कार्यकर्ता पाडुरग, दावके, सवनीस व श्रीपाद ने परसो सेगाव से आयी हुई नीरा पी थी। उससे उनको हैजा हो गया। सवकी हालत चिन्ताजनक हो गई है व वातावरण एकदम गभीर है। सेगाव वापू से मिलकर आया। उन्हे काकासाहव आदि की स्थिति कही। वीमारो की व्यवस्था आदि मे रात के साढे ग्यारह बज गए। कई वार जाकर उन्हे देखा।

१५-८-३८, पाडिचेरी

सुवह जल्दी निवृत्त होकर अरविन्द-आश्रम मे नाश्ता। वाद मे करीव सवा आठ बजे जानकीदेवी व चि० शान्ता रानीवाले के साथ श्री अरविंद व श्री मा के अच्छी तरह से दर्शन किये। श्री अरविंद फोटो की अपेक्षा प्रत्यक्ष देखने मे विशेष प्रभावशाली व तेजस्वी दिखे। श्री टैगोर से मिलते-जुलते थे। दर्शन के वाद वहा नीचे सवा घटे बैठा।

सर हैदरी से परिचय। दोपहर को अरविंद-आश्रम मे भोजन। १० आने रोज के देना पडता है। मैंने जो मालाए ली थी, वे उत्साह व पवित्रता प्राप्त करानेवाली प्रतीत हुई।

१८-८-३८, तिरुवण्णामलै (मद्रास)

आज अरुणाचलम् पहाड के चारो तरफ घूमा। कई स्थान, जहा रमण महर्षि ने तपश्चर्या की, देखे। बहुत सुन्दर व रमणीक पहाड है। 'स्कन्द-आश्रम' मे स्नान, भोजन व आराम। स्थान बहुत ही सुन्दर है। यहा रहने की इच्छा होती है।

१९-८-३८, तिरुवण्णामलै

रमण भगवान के पास ३ बजे से ४॥। बजे तक रहा। उनका साग काटना, रसोई का काम करना वगैरा देखा। देखकर सतोष हुआ। थोडी वाते भी की। वाद मे कुछ देर आराम किया। उनके वाद शाम को ५ वजे से ६ बजे तक फिर रमण महाराज के पास बैठा।

२२-८-३८, वर्धा

सेगाव गया। वापू के पास जाकर उन्हे रमण महर्षि, श्री अरविन्द व श्री मा के दर्शन का व उनके आश्रम का इतिहास कहा। वापू का मौन था। प्यारेलाल ठीक था।

२५-८-३८, वर्धा

सेगाव गया। काकासाहब को बापू के पास ले गया। बीमारी के बाद पहली बार बापू से उनकी बातचीत हुई। प्यारेलाल ठीक था।

२९-८-३८, वर्धा

सेगाव गया। रात को सुभाषबाबू का फोन आया। बापूजी से उसका हाल कहा। बापू ने कहा कि वर्धा मे ता० २० अक्तूबर के बाद वर्किंग कमेटी व ऑल इडिया काग्रेस कमेटी की बैठक रखी जा सकती है। वह उस समय तक फ्रटियर से आ जायगे। पहले रखना हो तो दिल्ली रखी जाय।

५-९-३८, वर्धा

सेगाव गया। बापू से जाहिर सभा के बारे मे तथा ऑल इडिया काग्रेस कमेटी मे रखने के प्रस्ताव के बारे मे विचार-विनिमय।

१०-९-३८, वर्धा

सेगाव गया। बापूजी से काग्रेस-प्रेसिडेटशिप के बारे मे उनके विचार जाने। जयपुर व सीकर की परिस्थिति, हैदराबाद व सर हैदरी का स्टेटमेट, शिमला हिन्दी साहित्य सम्मेलन, हरिजन-सत्याग्रह वगैरा के सम्बन्ध मे भी बापू से चर्चा। काकासाहब, गोपालराव, कमल व दामोदर भी थे।

२१-९-३८, दिल्ली

बापू के पास ३ बजे से ५ बजे तक वर्किंग कमेटी के मित्रो के साथ विचार-विनिमय।

२२-९-३८, दिल्ली

बिडला-हाउस मे वर्किंग कमेटी की बैठक हुई। बापू के साथ वर्किंग कमेटी के लोग ३ से ५ बजे तक बैठे।

२७-९-३८, दिल्ली

चरखा-सघ की बैठक बापू के पास सुबह ९ से ११ तक हुई।

वर्किंग कमेटी की बैठक दोपहर को बापू के पास २ से ५॥ तक हुई।

२८-९-३८, दिल्ली

वर्किंग कमेटी सुबह बापूजी के पास ८॥ से ११ तक। शाम को बिडला-हाउस मे ४॥ से ६॥ तक।

चरखा-सघ की बैठक दोपहर को बापू के पास हुई।

३०-९-३८, दिल्ली

हरिजन-कॉलोनी मे बापूजी के पास वर्किंग कमेटी की बैठक हुई। ८॥ से ११ तक आसाम की परिस्थिति पर खास चर्चा हुई।

स० वल्लभभाई व घनश्यामदासजी बिडला आये। मुझे बिडला-हाउस ले गए। आसाम के बारे मे सुबह वर्किंग कमेटी मे मैंने जो कुछ कहा, उस सबध मे बातचीत। सरदार को मेरे व्यवहार से दु ख व नाराजी थी। मुझे भी उनके व्यवहार से पूरा असतोष था। कल बापू के पास बैठकर आखिरी फैसला करने का निश्चय हुआ। रात मे राजेन्द्रबाबू से थोडी बाते हुई, पर मन हलका नही हुआ।

१-१०-३८, दिल्ली

बापू के पास वर्किंग कमेटी ८॥ से ११। तक हुई।

बापू के पास सरदार व घनश्यामदासजी ३ बजे से ४॥ बजे तक रहे। सरदार वल्लभभाई पटेल का व मेरा जो मतभेद था, उसका आखिर मे खुलासा हुआ। मतभेद काफी तीव्र व दु खदायक था। दूसरे और कारण तो थे ही, किन्तु यह भी एक महत्त्व का कारण था, जिससे वर्किंग कमेटी से मुझे निकलना आवश्यक मालूम हुआ। पू० बापू ने स्वीकृति दी। मेरे त्यागपत्र के मसौदे मे बापू ने थोडी दुरुस्ती की।

२-१०-३८, दिल्ली

वर्किंग कमेटी की बैठक बापूजी के यहा ८॥ से ११॥। तक होती रही। अगर वर्किंग कमेटी चाहे तो डॉ० खरे को और समय दे सकती है।

मैंने आज ही वर्किंग कमेटी की सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया। बापूजी ने मेरी अच्छी तरह से व साफ तौर से वकालत की। मैंने भी जो कहना था, थोडे मे कहा। मेम्बर लोग इस्तीफा स्वीकार नही करना चाहते थे, पर बापू ने विश्वास दिलाया कि वह सब ठीक कर लेगे।

पू० बापूजी से जावरा जाने की इजाजत ली। राजेन्द्रबाबू से देर तक बातचीत। मानसिक स्थिति व सरदार की बातचीत का साराश कहा। उन्हे मेरे वर्किंग कमेटी से निकल जाने का रज था।

१७-१०-३८, वर्धा

सुभाषबाबू से देर तक बातचीत। उनका आग्रहपूर्वक कहना था कि

वर्किंग कमेटी का मेरा त्यागपत्र स्वीकार करने से वहुत ज्यादा गलतफहमी फैलेगी। कई उदाहरण भी दिये। कमल से जो वातचीत हुई थी, वह कही। वर्किंग कमेटी के सभी मेम्वरो की इच्छा है कि मुझे त्यागपत्र नही देना चाहिए। मैंने अपनी मानसिक स्थिति समझाकर कही। उन्होने आराम देने व छुट्टी लेने को कहा। उन्होने कहा कि वे पू० वापू को भी पत्र लिखेगे।

१९-१०-३८, वर्धा

सेगाव मे श्री भसाली व वालकोवा को देखा। भसाली अच्छे हो जायगे। वालकोवा की हालत ठीक नही दिखी।

२६-१०-३८, वर्धा

सेगाव मे वहुत-से लोग वीमार पड गए है। सिविल सर्जन डॉ० नर्वदा-प्रसाद को वहा भिजवाया। उन्होने आकर रिपोर्ट दी। थोडी चिन्ता हुई। पारनेरकर को वर्धा-अस्पताल मे लाये।

२९-१०-३८, वर्धा

घोत्रे व किशोरलालभाई से वातचीत। वापू का पत्र। गाधी-सेवा-सघ से त्यागपत्र देने के वारे मे किशोरलालभाई के पत्र से थोडी गैरसमझ हुई। महिला-आश्रम के काम मे घोत्रे मदद करे, यह निश्चय हुआ। सुभाषवावू को पू० वापूजी के नाम लिखे पत्र की नकल भेजी।

४-११-३८, वर्धा (जन्मदिन)

पू० वापू, सरदार, जानकीदेवी व कमलनयन को, हृदय मे जो दुख व मथन चल रहा है, उसके सवध मे पत्र लिखे। कुछ महत्त्व के पत्र विनोवा ने देखे। राधाकृष्ण ने नकले की।

२१-११-३८, वर्धा

जवाहरलालजी, इन्दिरा वगैरा आये।

इन्दिरा व अगाथा हैरिसन के साथ वापू के पास सेगांव गया। थोडा विनोद रहा। हैदरावाद के वारे मे हाल वताये।

२७-११-३८, वर्धा

वापू से वात करने के लिए नोट तैयार किये। सेगाव गया। वापू से

करीब सवा घटे वातचीत। मेरे जन्मदिन पर लिखा मेरा पत्र[1] उन्हे (वापू) नही मिला था। आश्चर्य हुआ।

प्यारेलाल से वातचीत। उसे भी पत्र नही मिला। मेरे त्यागपत्रो के बारे मे वापू से खुलासा। मैंने पूछा—वर्किंग कमेटी यहा हो, उस समय मे बाहर रह सकता हू। उन्होने कहा—"हा। जयपुर की जिम्मेवारी नही छोडी जा सकती। नागपुर की भी नही। परन्तु नागपुर की तो शायद छोडी-सी भी जा सकती है, अगर वहा के लोग मेरा कहना मान ले तो। राजकोट का उदाहरण जयपुर, उदयपुर व हैदराबाद को नही लागू करना चाहिए।" बापू ने साफ तौर से कहा।

सेगाव मे नये कुए पर हुड्डा-पार्टी।

४-१२-३८, वर्धा (सेगांव)

बापू से मिलकर सरदार किबे के बारे मे विचार-विनिमय। अगर वह नागपुर रहना चाहते हो तो रह सकते है। बापू ने मेरे प्रश्नो के उत्तर दिये—

१ हैदराबाद स्टेट के बारे मे सरोजिनी नायडू का पत्र पढकर जवाब भेजने को कहा।

२ जयपुर प्रजा-मडल के वारे मे यग का तार बताया। बोले कि अभी गिरफ्तारी की सभावना कम मालूम होती है।

३ राजकोट वगैरा के सबध मे हरिजन के अगले अक मे वे लिखने-वाले है। इस अक मे भी स्टेटो के बारे मे लिखा है। उन्होने मेरे सबध के खुलासे का मसविदा दिया है।

४ नागपुर म्युनिसिपल कमेटी की स्थिति के बारे मे उन्होने कहा, कि ढवले व पटवर्धन को त्यागपत्र देना ही चाहिए। सालवे-ग्रुप को खुलासा करना चाहिए व भूल कबूल करनी चाहिए।

५ नागपुर प्रातीय काग्रेस कमेटी के बारे मे कहा कि वे लोग जब तुम्हारी बात न माने तो जिम्मेवारी छोड देना ठीक होगा। ज्यादा दिन तक एक्सप्लाइट (अनुचित लाभ) नही होने देना चाहिए।

६. बम्बई जा सकता हू। वहा से जयपुर या और कही आराम के

---

[1] देखिये 'बापू के पत्र', पृष्ठ-संख्या १५७ और २०४।

लिए जा सकता हू । वर्धा मे न्यू रेस्ट हाउस वनाने के वारे मे मेरा पत्र नही मिला ।

वापू जनवरी मे वारडोली होगे ।

नागपुर म्युनिसिपल-प्रकरण पर विचार-विनिमय ।

७-१२-३८, वर्धा-नागपुर

स्टेशन मेल पर गया । औंध के राजासाहव, वालासाहेव, चिरजीव अप्पासाहव व दीवान वगैरा की पार्टी आई । जापान की पार्लमेट के एक सदस्य भी आये । सुरेश वनर्जी भी आये ।

सेगाव जाकर पू० वापूजी के पास से इन सवो का समय निश्चित किया ।

९-१२-३८, वर्धा

वापू से मिलकर सर हैदरी के पत्र का जवाव तैयार किया । वम्वई जाने का विचार ।

२५-१२-३८, वर्धा

सेगाव गया । वापू से वातचीत—सुभाषवावू के आने के वारे मे, वापू का प्रोग्राम व स्वास्थ्य ।

२६-१२-३८, वर्धा

पू० वापू को जन्म-दिन के रोज लिखे हुए पत्रो की नकले व असली पत्र पढाये । वापू, सरदार व जानकीदेवी के नाम के पत्र व उसका व राधाकृष्ण का जवाव आदि । वापू कल पत्र लिखकर भेजेगे ।

२७-१२-३८, वर्धा

मेल से आज सुभाषवावू आ गए । देर तक वातचीत । जयपुर की स्थिति पर विचार-विनिमय । उन्होने वापू की राय ठीक वताई । राजकोट का फैसला होने के समाचार सुभाषवावू ने कहे । खुशी हुई ।

वापू का (सेगाव से) खानगी पत्र मिला । उमा ने उसकी नकल की । उन्हे जवाव भेजा ।

सुभाषवावू वापू से मिलकर आये । वुखार आजाने के कारण उनका आज का मद्रास जाने का प्रोग्राम स्थगित रहा ।

प्रो० रगा भी आये ।

२८-१२-३८, ववई

सरदार वल्लभभाई से सुवह फोन से व वाद में मिलकर राजकोट के वारे मे मुद्दे की वात समझ ली। वाद मे जयपुर की स्थिति पर देर तक विचार-विनिमय हुआ। वापू ने जो सलाह दी, वह कही।

३०-१२-३८, नई दिल्ली

हीरालालजी शास्त्री, हरिभाऊजी उपाध्याय वगैरा आये। निषेधाज्ञा व जयपुर प्रजामडल की स्थिति पर वहुत देर तक विचार-विनिमय होता रहा। वारडोली मे ता० ४ को वापू से मिलकर फैंसला करने का निश्चय। प्रेस स्टेटमेट आदि। शास्त्रीजी की वातचीत से दु ख पहुचा। मेरी भी गलती थी।

डायरी के अंश

१९३९

४-१-३९, सूरत-बारडोली

बापू से भोजन के समय बातचीत हुई। उसमे मि० यग से सवाई माधोपुर मे जो बाते हुई थी, उसका जिक्र किया तथा घनश्यामदासजी की सर ग्लेन्सी के साथ की मुलाकात का हाल बताया। उन्होने वाइसराय को पत्र लिखा है। मिस अगाथा हैरिसन भी सर ग्लेन्सी तथा वाइसराय को लिखनेवाली हैं। इन सारी बातो से बापू को परिचित कराया।

शाम की प्रार्थना के बाद बापू का करीब १। घटा जयपुर के मामले मे, जयपुर के मित्रो के साथ विचार-विनिमय। बापू ने स्थिति समझी। मित्रो को थोडा निरुत्साह हुआ, परन्तु उसकी जरूरत थी।

सरदार से मिलकर उन्हे स्थिति समझाई। लडने के सिवाय और दूसरा उपाय नही रहता, यह जोर देकर कहा। बापू से स्वीकृति व आशीर्वाद प्राप्त करने की दृष्टि से भी सरदार को सारी स्थिति से परिचित कराना आवश्यक है।

५-१-३९, बारडोली

पाटीदार जीन प्रेस मे आज जयपुर के मित्रो के साथ हुड्डा खाया, व आपस मे जयपुर की स्थिति पर विचार-विनिमय किया। मैंने मेरी स्थिति उन्हे बहुत ही साफ तौर पर बतलाई। इन सबोका आग्रह थाकि सब प्रकार की जोखिम उठाकर भी लडाई लडनी ही चाहिए। हम सब पूरी तरह से तैयार है। आपकी आज्ञा का पूरा पालन करेगे। आप हमारे सत्याग्रह के नेता रहेगे, वगैरा।

६-१-३९, बारडोली

सुबह ३-३० बजे के करीब नीद खुल गई। जयपुर-लडाई के बारे में विचार व योजना चलती रही। बापू के साथ सवेरे घूमा। भोजन के समय

बापू से बाते। बाद मे २ बजे से करीब ३॥ तक बापू के पास जयपुर के मित्रो के साथ स्टेटमेट के मसविदे वगैरा तैयार किये। प्रेसिडेण्ट कौसिल ऑव स्टेट के नाम पत्र तैयार किया गया। परतु देर होने से रजिस्ट्री द्वारा नही भेजा जा सका। कल भेजने का निश्चय। वर्तमान परिस्थिति मे सीकर के बारे मे मैं क्या कर रहा हू, इस सबध मे भी पब्लिक स्टेटमेट तैयार करना है।

सरदार बबई गये। उनसे बाते। चिरजीलाल मिश्र भी बबई गये। हसराज, भालचद, हरलालसिग, शार्मसिंग शाम की गाडी से गये।

शाम को बापू के साथ घूमा। प्रार्थना। बाद मे थोडी देर तक विचार-विनिमय।

७-१-३९, बारडोली

बापू के साथ प्रार्थना। बापूजी का ब्लडप्रेशर आज २२० तक हो गया। बापू से २ बजे थोडी देर मुलाकात। लीलावती से बातचीत। बापू की स्थिति के बारे मे विचार-विनिमय। मैंने बापू को थोडा-सा इशारा किया—सरदार, जयपुर-निषेधाज्ञा, घनश्यामदास और जयपुर के बारे मे।

राजकुमारीजी ने जयपुर-सीकर की फाइल पढी व प्रेसिडेण्ट, कौसिल ऑफ स्टेट के नाम का मसविदा तैयार किया। बापू ने उसे सुधार कर ठीक कर दिया। यह ता० ९ सोमवार को बारडोली से भेजने का निश्चय हुआ। प्रेसिडेण्ट, कौसिल ऑफ स्टेट के नाम जयपुर-निषेधाज्ञा के बारे मे बापूजी ने जो पत्र कल तैयार किया, वह आज छोटूभाई के मार्फत रजिस्ट्री द्वारा भेजा गया। जयपुर-लडाई की रचना के सबध मे शास्त्रीजी, हरिभाऊजी, शकरलाल वर्मा आदि के साथ बापू से २ बजे मिला। प्रेस को पब्लिक स्टेटमेट भेजा।

शाम को बबई के लिए रवाना।

१२-१-३९, बारडोली

वर्किंग कमेटी की बैठक मे रहा।

बापू ने मेरे गुण-दोषो के व मानसिक स्थिति के बारे मे पूछा। उन्होने जो पूछा, उसका सच्चा व साफ जवाब दिया। देवदासभाई से बहुत देर तक बातचीत व विचार-विनिमय।

१३-१-३९, बारडोली

वापू से बाते। मानसिक हालत, कमजोरी की स्थिति, दोष आदि के बारे म चर्चा। देवदासभाई, प्यारेलाल व सरदार वल्लभभाई से भी मानसिक हालत का परिचय दिया।

वर्किंग कमेटी ने जयपुर के बारे मे प्रस्ताव[1] पास किया।

१४-१-३९, बारडोली

बापू से व सरदार से जयपुर के बारे में बातचीत।

हैदराबाद स्टेटवालो को बापू से मिलाया व उनकी बातचीत कराई।

राजकोट के बारे में श्री ढेबर, नानाभाई, जयतीलाल, जीवन पुजारी आदि की वापू से व सरदार से जो बातचीत हुई, वह सुनी। चर्चा मे थोड़ा भाग भी लिया। बापू से बाते।

जवाहरलालजी से जयपुर की स्थिति पर विचार-विनिमय।

१५-१-३९, बारडोली

सुबह पू० बापू से जयपुर व अपनी मन स्थिति के सबध मे थोडी चर्चा। बाद में सरदार से बापू की बातचीत। उन्हे बैरिस्टर चुडगर का पत्र ठीक मालूम हुआ। सीकर के रावराजा का केस कमजोर है। अपनी लडाई में उसे न मिलाने का निश्चय।

चुडगर नवसारी से मोटर द्वारा आ गए। उनसे बातचीत। उनकी सीकर के रावराजा, कुवर हरदयालसिह व जयपुर मे सर बीचम सेट जॉन से जो बातचीत हुई, वह सब समझी। उन्होने मेरे नाम एक पत्र लिखकर दिया है। वह पत्र बापू को दे दिया।

---

[1] प्रस्ताव निम्न प्रकार है—

"The Working Committee deplores the ban placed on the entry into the Jaipur State of Seth Jamnalalji by the Jaipur authorities whilst he was on his way to Jaipur, his native place for famine relief work and to attend the meeting of the Jaipur Rajya Praja Mandal of which he is the President The Working Committee hope that wiser counsels will prevail and the authorities will withdraw the ban and prevent an agitation both in the Jaipur State and outside"

१६-१-३९, जुहू (ववई)

वादरा उतरकर जुहू गया। घूमते समय जानकीदेवी से वारडोली मे वापू से व अन्य मित्रो से जो वातचीत हुई, वह थोडे मे कही।

२०-१-३९, वर्धा-पवनार

वारडोली मे पू० वापूजी, महादेवभाई व देवदास से जो वाते हुई, उन पर जानकीदेवी के साथ विचार-विनिमय। भविष्य मे भी पहले-जैसे संयम व निश्चय करने मे ही शाति व उत्साह वना रह सकता है, इत्यादि।

२६-१-३९, वर्धा

सुवह प्रार्थना। गाधी-चौक मे झडा-वदन, सेगाव मे भी झडा-वदन हुआ, भाषण देना पडा। स्वतत्रता-दिन मनाया गया।

जयपुर के लिए विदायगी का समारभ उत्साहजनक व भावपूर्वक हुआ। मदिर मे उत्सव

रात मे ऐक्सप्रेस से शुभ मुहूर्त मे रवाना। मन मे उत्साह।

२७-१-३९, वारडोली

स्टेशन पर सरदार आये।

वापू को व सरदार को सुभाष व मौलाना की वातचीत का साराश कहा।

२८-१-३९, वारडोली-बंबई

वापू से सुवह घूमते समय जयपुर, मन स्थिति, दीपक आदि के वारे मे वाते। वापू ने थोडे मे मन स्थिति के बारे मे समझाया। मैने भी कहा कि उत्साह व विश्वास तो होता है। वापू न शुद्ध सत्याग्रही के उदाहरण आदि दिये।

वापू ने स्टेटमेट वनाकर दिया। सवको पसद आया।

जयपुर मे मुसलमानो व जयपुर-सरकार के बीच लडाई हुई, उसमे गोली लगने से ७ आदमी मरे, कई घायल हुए। वापू को रात मे टेलीफोन द्वारा यह सारा हाल कहा। इस हालत मे भी १ फरवरी का मेरा जयपुर जाना निश्चित।

जयपुर-सत्याग्रह, कौसिल की रचना। अन्य विचार-विनिमय।

३-२-३९, आगरा

रात के १२ बजे तक कई जगह टेलीफोन करते रहना पडा । जयपुर सूचना कर दी थी कि (जयपुर-सरकार की निषेधाज्ञा को तोडते हुए) कल रात को सीकर के लिए फुलेरा होकर जाने का प्रयत्न करूगा । लेकिन घनश्यामदास व महादेवभाई ने कहा कि अभी और कुछ रोज नही जाना चाहिए । जयपुर कौसिल को पत्र देना चाहिए, इत्यादि उनकी राय थी । मुझे यह पसद नही आया । बापू का तार आ गया कि मुझे जाना चाहिए । उससे सतोष हुआ । बापू को लगा होगा कि मैंने देर क्यो की, परतु हाल उन्हे मालूम होने पर सतोष मिलेगा ।

४-२-३९, आगरा

महादेवभाई का पत्र लेकर आदमी आया । पढकर चोट लगी । आखिर में मेरा मन हो, उस मुताबिक करने की बापू की इजाजत आ गई । उससे सुख मिला ।

जवाहरलाल नेहरू, गोविन्दवल्लभ पत, काटजू, घनश्यामदास व महादेवभाई को व वर्धा दो बार फोन किया ।

९-२-३९, आगरा

महिला-आश्रम, वर्धावाली श्री उर्मिला वर्धा गई । उसके हाथ बापूजी के नाम पत्र भेजा ।

वर्धा से फोन पर बापूजी का सदेश आया । बापू ने कहलाया कि जानकीदेवी अभी स्वास्थ्य के कारण जयपुर नही जा सकेगी ।

१०-२-३९, आगरा

आज रीगस का प्रोग्राम बदलने के कारण सिर थोडा भारी मालूम देने लगा ।

बापू के नोट मे यग के बारे मे जो गलत खबर छपी, उसके बारे मे तार व पत्र भेजे ।

१८-२-३९, मोरासागर (जयपुर-जल)

'सर्वोदय', अक ३, पृष्ठ ३२ पर बापू का बा के नाम लिखा एक पत्र छपा है, वह पढा । बापूजी १९०८ की दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह की लडाई

मे जेल गये थे। वहा उन्हे खबर मिली कि वा वहुत वीमार है। उस समय वापू की उम्र करीव ४० की थी। वापू ने वा के नाम पत्र मे लिखा था—

"तेरी वीमारी का तार वेस्ट ने दिया। मेरा हृदय व्यथित है। मै रोता हू, परन्तु तेरी सेवा के लिए वहा आ नही सकता। सत्याग्रह की लडाई में मैने अपना सवकुछ अर्पण कर दिया है। कुछ भी वचा नही रखा है। मै निश्चयपूर्वक कहता हू कि अगर तुझे इस दुनिया से कही चल वसना पडे तो मै तेरे पीछे दूसरी पत्नी नही करूगा। ईश्वर पर दृढ विश्वास रखकर प्राण-विसर्जन करना !"

१९-२-३९, मोरांसागर

बापू के पत्र मे से 'सर्वोदय', पृष्ठ ३७, अक ३ मे पढा—

१ अपने प्रति करुणा करके सव जीवो को समान मानकर उनपर करुणा करे और अपने किसी भी प्रकार के सुख के लिए जीव-हानि करते हुए काप उठे।

२ देह की उपेक्षा न करते हुए मृत्यु का जरा भी भय न माने।

३ देह अत्यन्त धोखेवाज है, ऐसा मानकर इसी क्षण से मोक्ष की तैयारी करे।

२६-२-३९, मोरासागर

केलनवेक की बीमारी के वारे मे बापूजी को वर्धा तार भेजा।

२८-२-३९, मोरासागर

हाल की ववईवाली घटना पर विचार करने से साफ मालूम देता था कि इन्साफ नही हो सका। महादेवभाई के व अन्य मित्रो के व्यवहार से चोट तो जरूर पहुची, परतु भविष्य मे मेरे लिए परिणाम ठीक निकलेगा, इसी एक आशा पर सहन करना व कडवा घूट पीना उचित समझा।

बापू के अनुयायियो मे उदारता, सेवा एव प्रेम की वृत्ति तो दिखाई देती है, परतु न्याय (Justice) का माद्दा कम रहता है—ऐसे विचार आये। मेरे भीतर इतना नीचपन व हल्की वृत्ति इन वर्षों मे क्यो हुई ? विचार करने पर कई बाते दिखाई दी, परतु साफ कारण समझ मे नही आया।

मुझे विनोबा के ससर्ग मे अधिक रहना चाहिए, उसीसे मेरा मार्ग साफ और निष्कलक हो सकेगा व जीवन मे असली उत्साह प्राप्त हो सकेगा।

बापू के प्रेम व उदारता का खयाल करता हू तो अपनेको बहुत नीचा, नालायक समझने लगता हू। बापू को समय बहुत कम मिलता है, इसलिए उनसे भी कई बार न्याय के मामले मे गलतिया होती दिखाई देती है। परतु उनके मन मे द्वेष, ईर्ष्या व किसीका बिगाड हो, ऐसी वृत्ति न होने से उसका परिणाम ज्यादातर ठीक ही आता है।

१-३-३९, मोरासागर

पू० बापूजी राजकोट पहुच गए। अब आशा होती है कि वहा का मामला सुलझ जायगा।

२-३-३९, मोरांसागर

बापूजी का राजकोट-प्रकरण का वर्णन व स्टेटमेट देखा। राजकोट का फैसला जितना जरूरी है, उतना ही बापूजी का त्रिपुरी जाना भी जरूरी है।

३-३-३९, मोरासागर

ता० २५-२ का 'हरिजन' पूरा पढा। A Good Samarıtan Dr Chesterman नामक लेख मे पढा—प्रतिवर्ष २ लाख स्त्रियो की मृत्यु प्रसव से, १ लाख की चेचक से और ३६ लाख की सब प्रकार के बुखारो से। देश मे १० लाख कोढी है, ६ लाख अधे है।

त्रावणकोर की स्थिति पूरी पढी। लीमडी की खबर पढकर तो आश्चर्य व दु ख हुआ। जयपुर पर बापू का छोटा नोट था।

८-३-३९, मोरासागर

कई दिनो के अखबार आज एक साथ मिले। बापू के उपवास करने व छोडने की तथा राजकोट का मामला सुलझने की खबरे पढकर सुख मिला। दो-तीन रोज से जो निरुत्साह था, वह चला गया।

१२-३-३९, मोरासागर

पू० बापू को दिल्ली भेजने के लिए पत्र तैयार किया।

जयपुर से यगसाहब का पत्र ता० ९-३ का नोटिफिकेशन व अखबार लेकर सवार डेरे पर आया। रात को ३ बजे तक पढता रहा। बाद मे आराम।

श्री यग को पत्र लिखा। बापू के पत्र के साथ नोटिफिकेशन भेजा।

१८-३-३९, मोरासागर

रात को ९ वजे रामप्रसाद अर्दली श्री यग का पत्र, पू० वापूजी का सीलवद पत्र, चिरजीव राधाकृष्ण का पत्र व अन्य पत्र और अखवार लेकर आया। पहले सव पत्र पढे, वाद मे देर तक अखवार पढता रहा।

राजकोट वापूजी को ठीक हैरान कर रहा है। शायद उन्हे वापस फिर राजकोट जाना पडे।

वापूजी के स्वास्थ्य का विचार आया। परमात्मा सव ठीक करेगा।

वापू की सूचनाओ पर सोते समय देर तक विचार व चितन। शाति मिली।

२२-३-३९, मोरासागर

शाम को ता० २१ के 'हिदुस्तान टाइम्स' व 'स्टेट्समैन' अखवार आये। जयपुर-सत्याग्रह कौसिल ने पू० महात्माजी की आज्ञा से सत्याग्रह स्थगित किया। देखे, अव ऊट किस करवट वैठता है।

२३-३-३९, मोरासागर

चि० राधाकृष्ण, दामोदर, गुलाववाई, हरगोविद, रामप्रसाद पुलिस-क्लर्क के साथ श्री यग का पत्र लेकर आये। सवोसे मिलकर प्रसन्नता हुई। देर तक वातचीत। सारी स्थिति पूरी तरह से समझी। पू० वापू ने जिस उद्देश्य से सत्याग्रह स्थगित किया, वाइसराय से जो वाते हुईं, भविष्य मे अगर सत्याग्रह चालू करना पडा तो उस सवध मे वापू के विचार, उसमे आनेवाली कठिनाइया वगैरा समझी।

आज की मुलाकात खानगी थी।

२४-३-३९, मोरासागर

वापूजी ने सत्याग्रहियो के वारे मे जो नई प्रतिज्ञा वनाई है, उस सवध मे मेरे विचार राधाकृष्ण के मार्फत उन्हे कहला भेजे। इस प्रतिज्ञा का पालन तो मेरे लिए भी सभव नही है। मेरी समझ से तो वापू के सिवाय शायद ही कोई इनका पालन कर सके।

२६-३-३९, मोरासागर

अखबार देखा। जयपुर की स्त्री-कैदियो को छोड दिया गया। और सत्याग्रहियो को छोडने के समाचार भी पढे। वापूजी प्रयाग गये।

१-४-३९, मोरासागर

आज चार रोज बाद अखबार आये ।

बापू का ब्लडप्रेशर फिर बढ गया । जानकर चिन्ता हुई । बापू दिल्ली मे ही है । राजकोट का फैसला ठीक हो गया, ऐसा मालूम होता है । बापू का ब्लडप्रेशर ता० २७ मार्च को २२०-११२ था । राजकोट के उपवास के बाद १६०-९० हो गया था, जो ठीक समझा जाता था । काग्रेस व देशी रियासतो की चिन्ता के कारण ऐसा हुआ दीखता है ।

३-४-३९, मोरासागर

बापू ने जयपुर, रचनात्मक कार्य तथा सत्याग्रह की शर्तो पर 'हरिजन' मे लिखा है ।

१०-४-३९, मोरासागर

राजकोट का फैसला पढकर सुख व समाधान मिला । बापूजी फिर वाइसराय से मिले व राजकोट गये ।

११-४-३९, मोरासागर

ता० ११ का अखबार आया । उसमे बापू का लेख पढा । उसमे वाइसराय से मुलाकात, राजकोट के बारे मे उपवास त्रिपुरी न जाना, फेडरल कोर्ट के चीफ जज से फैसला करवाना, दिल्ली इतने रोज बैठे रहना, इत्यादि का बापू ने खुलासा किया था । उपवास के बारे मे बापू की नकल दूसरे कोई न करे तो अच्छा है ।

१३-४-३९, मोरासागर

राजकोट का ठाकुर फिर गडबडी कर रहा है, यह देखकर आश्चर्य व चिन्ता हुई । विश्वास होता है कि आखिर मे सब ठीक हो जायगा । बा का स्वास्थ्य ठीक होने के समाचार मिले ।

१४-४-३९, मोरासागर

रामदुर्ग स्टेट (कर्नाटक) मे जनता की ओर से भयकर हिंसा के समाचार पढकर दुख व चिन्ता हुई । इस घटना पर विचार करने से तो लगता है कि स्टेटो का सत्याग्रह स्थगित किया गया वह ठीक ही हुआ, अन्यथा रोष, द्वेष व उत्तेजना ज्यादा फैल जाती, जिसे बाद मे सभालना कठिन हो जाता ।

१५-४-३९, मोरासागर

भवरसिंह के हाथ पत्र भेजे—पू० वापूजी को राजकोट व महादेवभाई को दिल्ली। रास्ते मे घूमते हुए वापू को जो पत्र लिखा, उसका चिन्तन चलता रहा। हृदय भर आया। श्री भरतजी की चोपाई याद आई—

हृदय हेरि हारेउ सब ओरा। एकहि भाति भलहि भल मोरा।
गुरु गुसाइँ साहिब सिय रामू। लागति मोहि नीक परिणामू।

१६-४-३९, मोरासागर

'सर्वोदय', अक ९, पृष्ठ ३३ पर गाधीजी का वचन पढा,

"जिसने वधुत्व की भावना को हृदयस्थ कर लिया है, वह यह नही कहने देगा कि उसका कोई शत्रु है।"

१८-४-३९, मोरासागर

राजकोट मे—ग्रामिये (भयात) लोगो ने प्रार्थना के समय १६-४ को जो भद्दा प्रदर्शन किया, वह पढकर दु ख व आश्चर्य हुआ। मुझे तो अव विश्वास हो रहा है कि राजकोट के ठाकुर का व वीरवाला का विनाश-काल नजदीक आ रहा है। वहा के मुसलमानो को लीग (जिन्ना) ने भडकाया मालूम देता है। राजकोट का मामला काफी पेचीदा वन गया है। इसका वुरा असर सारी स्टेटो मे पहुचेगा।

१९-४-३९, मोरासागर

राजकोट की हालत खराव होती जा रही है। अखवारवालो ने वापू को कोसना शुरू कर दिया है। प्रजा मे दरारे डाली जा रही है। मुझे तो इसमे वहा के पोलिटिकल एजट व वाइसराय की नीति पर सदेह होने लगा है—जयपुर के कारण भी।

२३-४-३९, मोरासागर

ता० २१-४ का 'हिंदुस्तान' देखा। वापूजी को राजकोट मे वुखार आ रहा है। राजकोट तो वापूजी की पूरी ताकत ले रहा है। मि० जिन्ना व डॉ० अम्वेडकर भी जान लेने वहा पहुच गए है। उधर राजाजी ने भी मद्रास से चिल्लाना शुरू कर दिया है। वापूजी ता० २६ को कलकत्ता पहुचने-वाले है।

२६-४-३९, मोरांसागर

ता० २५ के अखबार आये । राजकोट का फैसला नही हुआ। बापू कलकत्ते रवाना हो गए।

२८-४-३९, मोरांसागर

राजकोट के मामले पर बापू ने दुखी हृदय से जो स्टेटमेंट दिया, वह पढा। एक बार तो बुरा लगा और दु ख भी पहुचा, पर यह विश्वास होता है कि परमात्मा ने किया तो जल्दी ही कोई समाधानकारक रास्ता निकलेगा। बापू को व सरदार को खूब कष्ट व दु:ख पहुचना स्वाभाविक है। उधर सुभाष-बाबू के कारण कलकत्ते का वातावरण खूब गदा हो रहा है। सरदार ऑल इडिया काग्रेस कमेटी की बैठक मे नही जायगे। बापू का स्टेटमेंट देखा। एक तरह से यह ठीक है। वर्तमान मे काग्रेस की, देशी रियासतो की, भारत की व दुनिया की जो हालत हो रही है, उसे देखते हुए मेरे लिए तो कैद मे रहने मे ही मेरा सब प्रकार का लाभ दिखाई देता है—स्वास्थ्य की दृष्टि से भी।

३-५-३९, मोरासागर

बापू का जयपुर के कैदियो के बारे मे 'हरिजन' मे लिखा लेख देखा। उसमें मेरा भी उल्लेख किया है।

इन दिनो मेरा स्थान बदलने या मेरे लिए साथी देने के सबध मे विचार चल रहा है। मेरी तो इस सबध मे यही इच्छा रही है कि कोई कोशिश न हो तो ठीक। किंतु लगता है कि मुझे यहा से जल्दी ही दूसरे स्थान पर ले जायगे।

७-५-३९, मोरांसागर

जयपुर से अखबार व डाक आई। जयपुर मे सत्याग्रहियो को छोडना शुरू कर दिया है।

राजकोट का कोई रास्ता नही बैठ रहा है।

वृन्दावन (चम्पारन) का बापू का भाषण पढा।

११-५-३९, करनावतो का बाग (जयपुर-जेल)

अखबारो मे बापू के स्टेटमेंट, राजेन्द्रबाबू व सुभाष के भाषण वगैरा

पढे। ता० १०-५ के 'हिंदुस्तान' में सरदार का भापण है। उसमें जयपुर की भी चर्चा है।

१९-५-३९, करनावतो का वाग

पत्रो के जवाव मदनलाल के पास लिखवाये। वापूजी व खानसाहव को भी पत्र लिखे।

२०-५-३९, करनावतो का वाग

ता० १९-२० के अखवार मे वापू के व राजकोट-ठाकुर के स्टेटमेट देखे।

पू० वापू ने वृन्दावन (चम्पारन-विहार) में गाधी-सेवा-सघ के सम्मेलन के समय जो भापण दिया, वह ता० १३ मई के 'हरिजन' में पढा। उसमें वापू ने कहा—

"सत्याग्रही की ईश्वर मे जीवित श्रद्धा होनी चाहिए। यह इसलिए कि ईश्वर मे अपनी अटल श्रद्धा के सिवाय उसके पास कोई दूसरा वल नही होता। वगैर उस श्रद्धा के सत्याग्रह का अस्त्र वह किस प्रकार हाथ मे ले सकता है! आप लोगो मे से जो ईश्वर मे ऐसी जीवित श्रद्धा न रखते हो, उनसे तो मै यही कहूगा कि वे गाधी-सेवा-सघ को छोड दें और सत्याग्रह को भूल जाय।"

२२-५-३९, करनावतो का वाग

राजकोट-प्रकरण का आखिर ता० २०-५ को अन्त हुआ। वापूजी भी दरवार मे शामिल हुए। जुलूस मे भी ठाकुरसाहव के साथ रहे। राजकोट के लिए सुधार कमेटी वनी। वीरवाला उसके प्रेसीडेण्ट हुए।

२५-५-३९, करनावतो का वाग

ता० २५-५ के 'हिंदुस्तान' में राजकोट की आम सभा मे दिया वापू का भाषण छपा है। उसमे निम्न अश वडे महत्त्व का है—"There is not a single person in the whole world who does not deserve our love To achieve unity of soul, is the greatest purushartha I am after"

२८-५-३९, करनावतो का वाग

ता० २७ व २८ के अखवार पढे। कृपलानीजी का भाषण पढा।

प० जवाहरलाल के लेख, जो उन्होने 'नेशनल हैरल्ड' मे लिखे थे, देखे। इस पर से उनकी मन की स्थिति का साफ पता लगता है। राजकोट की स्थिति के बारे मे समझना तो सभीके लिए कठिन है। सरदार को भी बहुत कडवा घूट पीना पड रहा है, आखिर में परिणाम ठीक आ गया। अब तो सब बाते भूलकर व परिणाम की तरफ देखकर बापू के प्रति श्रद्धा और बढनी चाहिए, अन्यथा देशी रियासतो का मामला पहले तो पेचीदा था ही, अब और ज्यादा हो जायगा।

२-६-३९, करनावतो का बाग

महादेवभाई का राजकोट का भाषण पढा। वीरवाला राजकोट सुधार कमेटी के प्रेसिडेंट होगे, यह पढकर आश्चर्य हुआ।

बापू से राधाकिसन, दामोदर, गुलाबचद, कासलीवाल आदि मिले। राधाकिसन बापू के साथ बबई गया।

दामोदर, मीरा, मृदुला, मदन कोठारी मिलने आये। मीरा ने राजकोट की पढाई पूरी करली। मृदु को देख खुशी हुई। राधाकिसन से बापूजी के स्वास्थ्य तथा प्रोग्राम के बारे मे तथा वृन्दावन-सम्मेलन वगैरा का वर्णन सुना। प्रार्थना व भजन के बाद लोग वापस गये। मौन रखा।

६-६-३९, करनावतो का बाग

देशी रियासतो के बारे मे बापूजी का स्टेटमेण्ट पढा। जयपुर के अधिकारी इसका एक बार तो गलत मतलब लगायेंगे, लेकिन बापूजी जब जयपुर के बारे में खुलासा करेंगे, तब साफ हो जायगा।

८-६-३९, करनावतों का बाग

पू० बापूजी आज सेगाव (वर्धा) पहुच गए होग।

१५-६-३९, करनावतो का बाग

राधाकिसन आज मिला। उसने बापूजी व अन्य मित्रो के समाचार कहे। जयपुर के बारे में बापूजी का स्टेटमेण्ट पढा। चरखा काता।

२२-६-३९, करनावतो का बाग

रामेश्वरदासजी के पत्र मे पू० बापूजी को छोटा-सा नोट भेजा। उसमे लिखा—

"राधाकिसन मिला । मेरी चिन्ता का कारण नही । मुझे जितना ज्यादा यहा रहने को मिलेगा, उतना ही मेरा तो लाभ है। साथ ही रचनात्मक कार्य को भी लाभ पहुचेगा ।"

२५-६-३९, करनावतो का बाग

जून के 'सर्वोदय' मे बापू के भाषण से—

१ "अपने प्रतिपक्षी से जल्दी समझौता करो ।"

२ "अगर किसीके बारे मे तुम्हारे दिल मे गुस्सा है तो उसपर सूर्य को न डूबने दो । सूर्यास्त के पहले ही उसके पास चले जाओ और उससे बातचीत कर लो ।"

मेरे लिए यह वाक्य वेद-वाक्य से कम कीमती नही हैं । यही अहिंसा की जड है । अहिंसा को हिंसा के मुह में चले जाना है ।

ता० २५-६ के अखबार देखे । राजेन्द्रबाबू का भाषण, फारवर्ड ब्लाक के प्रस्ताव, बापू का स्टेट के बारे मे खुलासा, अ० भा० कांग्रेस कमेटी के प्रस्ताव वगैरा पढे । जानकीदेवी के दौरे का वर्णन भी पढा ।

५-७-३९, करनावतो का बाग

किशोरलालभाई का पत्र भिजवा दिया । दामोदर मिल गया । बापू के लिए सदेश दिया। डॉ० विलियम्सन का जवाब तथा दिल्ली वगैरा के बारे मे बाते हुई ।

२-८-३९, करनावतो का बाग

आज दोपहर को स्वप्न आया कि महादेवभाई व पू० बापू मुझे देखने आये । स्वास्थ्य व जयपुर की स्थिति पर बातचीत। बाद में वह ए० जी० जी० (राजपूताना रेजीडेण्ट) से मिलने जाने की तैयारी करने लगे । इतने मे आख खुल गई ।

९-८-३९, करनावतो का बाग

बापू का तार आया । उन्होने डॉ० भरूचा को[१] महादेवभाई के साथ

---

[१] जमनालालजी ९-८-३९ को ही नजरबदी से छूट गए थे, पर १२ ता० तक करनावतो के बाग में ही रहे थे ।

भेजने को लिखा। इजाजत मागकर रखने का लिखा है। मैंने तार भिजवा दिया कि अभी न भेजे।

१२-८-३९, करनावतो का बाग

करीब १॥ बजे कपूरचदजी पाटनी व देशपाडेजी आये। वर्धा से बापू का फोन आया है। उन्होने मुझे वहा जल्दी बुलाया है। बापू मुझे डॉ० विधान को दिखलाना चाहते है। सरदार, राजेन्द्रबाबू भी वही है।

१३-८-३९, वर्धा

वर्धा-स्टेशन पर राजेन्द्रबाबू (राष्ट्रपति), सरदार, कृपलानी, पट्टाभि, देव, शकरलाल, पू० बा, महादेवभाई तथा काग्रेस, म्युनिसिपल कमेटी, महिला विद्यालय आदि के मित्र लोग प्रेम से आये। मन मे भावना जागृत हुई। किशोरलालभाई व जाजूजी आदि भी थे। प्रोसेशन की तैयारी की थी। मैंने इन्कार कर दिया।

सरदार, महादेवभाई व बा के साथ सेगाव गया। प्रार्थना मे शामिल हुआ। बाद मे पू० बापू को स्वास्थ्य तथा जयपुर की स्थिति आदि का थोडे में वर्णन सुनाया। रास्ते मे सरदार तथा महादेवभाई को भी सुनाया। वापस घर आया।

आज यहा बहुत दिनो के बाद बरसात होने से सबको खुशी हुई, बापू को भी। वर्किंग कमेटी ने सुभाषबाबू बोस के बारे मे प्रस्ताव किया। लडाई के समय काग्रेस की नीति क्या होगी, उस बारे मे भी। जवाहरलाल का पूरा सहयोग था। जवाहरलाल सुभाष बोस के लिए एक वर्ष चाहते थे। लडाई के प्रस्ताव का मसविदा जवाहरलाल का था, सुभाष बोस के सबध का बापू का। देर तक बात होती रही। मेरा त्यागपत्र स्वीकार नही हुआ।

१४-८-३९, वर्धा

जवाहरलाल को कमल के बारे में पत्र भेजा। जयपुर-प्रोग्राम आदि का पत्र भेजा। बापू ने कमल को चीन जाने की सलाह नही दी।

१८-८-३९, बंबई

होमियोपैथीवाले डॉ० दास से देर तक बातचीत। उन्होने कहा कि

मे उनकी दवा ले सकू तो मुझे लाभ पहुच सकता है। वापू से सलाह करके एक महीना लेकर देखने का विचार है।

१९-८-३९, वर्धा

वापूजी के पास सेगाव गया। वापूजी ने डॉ० भरूचा, डॉ० जीवराज व डॉ० मेहता की रिपोर्ट ध्यानपूर्वक सुनी। विचार-विनिमय के वाद पूना रहकर डॉ० मेहता की देखरेख मे इलाज कराने की सलाह वापू ने दी। जयपुर जाना जरूरी है। इसलिए एक महीने तक इच्छा हो तो डॉ० दास का होमियोपैथी के इलाज करके देख लू। वापू ने कहा कि अनाज खाना एक बार वद कर दो। फल, साग और दूध लेने की सलाह दी।

आज से यह शुरू किया है।

२०-८-३९, वर्धा

वापू के पास जाकर आया। १॥ वजे २ वजे तक जयपुर व स्वास्थ्य के सबध मे बातचीत।

जयपुर के वारे मे (प्रजामडल के) नाम मे थोडा परिवर्तन करना जरूरी मालूम दे तो कर लिया जाय। जयपुर राज्य प्रजा-मडल के पदाधिकारी दूसरी राजनैतिक सस्था के मेबर न हो, यह वात बिल्कुल स्वीकार न की जाय। अगर अधिकारी लोग लडना ही चाहे तो अपन लडेगे। थोडे चुने हुए साथियो को लेकर मुझे (जमनालाल को) स्वास्थ्य व सचालन के लिए बाहर रहना जरूरी होगा। त्रावणकोर मे सत्याग्रह करने की वापू इजाजत देनेवाले है। वाहर के लोगो की सलाह सहायता देने के विरोध मे है, यह मैने बापू से कहा। दीपक-राधा आदि व मेरे त्यागपत्र, काग्रेस-सभापति, गाधी-सेवा-सघ-सभापति आदि विषयो पर भी विचार-विनिमय।

२२-८-३९, वर्धा

सेगाव गया। रानी विद्यादेवी व उनकी लडकी तारादेवी से उर्मिला ने परिचय करवाया। बापू से जयपुर, उमा की सगाई, नागपुर बैंक, महाराजा बीकानेर, वालकोवा वगैरा के बारे मे व कलकत्ता होकर जयपुर जाने के बारे मे बातचीत।

२५-८-३९, वर्धा

आगरावाले श्री राजनारायण विनोबा के पास कमल के साथ गये। बाद मे बापू से उन्हे व उमा को मिलाकर लाया। बापू ने राजनारायण को उमा के लिए उपयुक्त समझा। वहा पू० बा, राजकुमारी, मीराबेन व आशाबहन ने भी देख लिया। जानकी साथ मे थी। सुबह किशोरलाल भाई व जाजूजी ने देखा था।

आज दूध-फल पर सातवा रोज है। तीन रोज से प्राय भूख बद-सी हो गई है। बापू ने दो रतल मौसम्बी का रस, एक रतल अगूर का रस, कम-से-कम दो रतल दूध, खजूर बीस व साग-फल लेने को कहा। सोडा दूध मे भी ले सकते है।

बापू से हैदरावाद की वर्तमान स्थिति कही। श्री काशिनाथ राव के वारे मे भी कहा कि अब वही वहा के नेता रहेगे।

श्री राजनारायण व उमा की आज ठीक से बातचीत हो गई। उमा ने कहा, मुझे पूरा सतोष हो गया है। बाद मे पू० विनोबा व बापूजी की राय जानी। उन्हे भी पसद आ गया।

विनोबा व बापूजी के समक्ष सबध निश्चित हो गया। उन्होन आशीर्वाद दिया। बाद मे रात को कुटुब के लोगो ने देख लिया। गुड वगैरा बाट दिया।

२९-८-३९, कलकत्ता

शरत बोस से करीब एक घटे तक दिल खोलकर बातचीत। सुभापबाबू किस प्रकार गलत रास्ते जा रहे है, यह उनसे कहा। उन्होने भी मेरे विचार व योजना पसद की कि वे बापू से दिल खोलकर बात कर ले व उनकी आज्ञा के अनुसार व्यवहार रखे। उन्हे खुद फारवर्ड ब्लाक पर विश्वास नही है। सर सुल्तान, डॉ० विधान राय वगैरा के बारे मे कहा।

२-१०-३९, जयपुर

गाधी-जयती के निमित्त आजाद-चौक मे आम सभा। २००० रु० की थैली प्रजा-मडल के लिए मिली। बापू के जीवन से हम क्या ले सकते है, इस सबध मे भाषण।

३-१०-३९, दिल्ली

सरदार वल्लभभाई व राजेन्द्रबाबू से देर तक बातचीत करता रहा। प० जवाहरलाल ओर मोलाना से मिलना व विनोद।

बापू से जयपुर के प्राइम मिनिस्टर व वहा की हालत के बारे में बातचीत।

राजेन्द्रबाबू व जवाहरलालजी वाइसराय लार्ड लिनलिथगो से करीब सवा दो घटे मिलकर आये। उन्होने उसका हाल सुनाया।

सुभाष बोस ने बैरिस्टर जिन्ना से बात करते समय बापू के चरित्र पर जो दोष लगाया, वह जिन्ना ने अन्य मित्रो से कहा। बापू से यह जानकर दु ख हुआ व चोट पहुची।

४-१०-३९, दिल्ली

बापू से बातचीत—जयपुर के प्रोग्राम के बारे मे मार्च महीने मे जाने का निश्चय। जयपुर के दीवान के बारे मे सर जगदीश से जो बाते हुई, वे बताई। सर जगदीश तो देशी रियासत मे जाना पसद नही करते। सर भोर भोपाल मे है। वह नही जायगे, यह कहा। व्यक्ति अच्छे व योग्य है। इसके अलावा ई० राघवेन्द्रराव, गोपालस्वामी आयगर—ये नाम भी उन्होने पसद किये। वह सर बर्नर्ड ग्लेन्सी से बात करेगे।

लडाई के बारे मे सर जगदीश को बापू की नीति पसद थी।

मौलाना ने वाइसराय से मिलने के बारे मे बापू से इनकार कर दिया। बापू को बुरा लगा। बापू ने मौलाना को समझाया। मुझे तो मौलाना के कहने मे सार मालूम हुआ।

बापू से शाम की प्रार्थना के बाद खानगी मे अपनी कमजोरी का पूरा चित्र खोलकर कहा। उन्होने हिम्मत व उत्साह दिया।

५-१०-३९, दिल्ली से वर्धा जाते हुए

बापू से बातचीत। जुगलकिशोरजी व घनश्यामदासजी से बाते। घनश्यामदासजी का आग्रह रहा कि मुझे रहने का मुख्य स्थान जयपुर बना लेना चाहिए। बापू की भी राय तो यही रही, परतु पहले तो स्वास्थ्य का प्रश्न है।

बापूजी वाइसराय से मिलकर आये। बापूजी, सरदार, जवाहरलाल राजेन्द्रबाबू, मौलाना, कृपलानी के साथ वर्धा रवाना।

६-१०-३९, रेल में

भेलसा मे उठा। भोपाल मे शुएब कुरेशी व उनकी पत्नी बापू से मिलने आये।

बापू व जवाहरलालजी से इलाज के बारे मे बातचीत। बापू ने तो मलबारी (मालिश) के बारे मे मना किया। बडौदा के माणिकरावजी वाले तथा अन्य मसाज के लिए भी मना किया। डाक्टरो के, याने ऐलोपैथिक, इलाज के लिए भी इनकार किया।

उनकी राय, डाक्टर मेहता का या दिल्लीवाले महादेवभाई के परिचित वैद्य आनन्दस्वामी का इलाज करके देखने की है। जवाहरलालजी ने अपने भाई से, जो अभी यूरोप से आये है और आजकल शायद पीलीभीत मे है, पूछने को कहा।

बापू की वाइसराय से जो बात हुई, उससे कोई सतोपकारक परिणाम निकलने की आशा नही मालूम हुई। शाम को वर्धा पहुचे।

७-१०-३९, वर्धा

वर्किंग कमेटी की मीटिंग सुबह ९ से ११ तक। दोपहर को २ से ७॥ तक हुई। कई मेम्बरो से जयपुर-जेल के बाद पहली बार मिलना हुआ। प्रेमानुभूति। दोपहर की बैठक मे बापू से युद्ध तथा वर्किंग कमेटी की नीति के बारे मे चर्चा व खुलासा। बापू के जाने के बाद की चर्चा से मालूम हुआ कि बापू का समर्थन करनेवाले जयरामदास दौलतराम, शकरराव देव व प्रफुल्ल घोष ही रहे होगे। राजेन्द्रबाबू भी थोडे थे। सरदार, भूलाभाई वगैरा तो प्रस्ताव के पक्ष मे थे, याने बापू सरकार को पूरी मदद करे। बापू ने वाइसराय से जो कुछ कहा, सरदार तो उसपर से दुखी भी मालूम हुए।

८-१०-३९, वर्धा

वर्किंग कमेटी ८॥ से ११ व १२ से २ तक हुई। दोपहर की वर्किंग कमेटी मे बापू का खुलासा ठीक रहा। लडाई के समय अगर ब्रिटिश सरकार ने वर्किंग कमेटी की माग मजूर कर ली तो बापू का व्यवहार क्या रहेगा, इस

वात का खुलासा ठीक हुआ। वापू को चोट तो खूव पहुच रही है, परतु उपाय क्या !

देशी राज्य प्रजा-परिषद् की कार्यकारिणी जवाहरलालजी के सभापतित्व मे हुई। वहा दस वजे रात तक वैठना पडा। जवाहरलाल का स्टेटमेट ठीक हुआ। मेरे वारे मे भी उन्होने जिक्र किया कि वर्किंग कमेटी यह कार्य मुझे सौपना चाहती है। वापू ने मुझे जव यह कहा था तो मैंने कहा कि मेरी अभी तैयारी नही है।

११-१०-३९, वर्धा

बापू के पास वल्लभभाई के साथ सेगाव गया। वल्लभभाई से जयपुर वगैरा की वाते।

वापू से स्टेट के मामलो पर वर्किंग कमेटी की थोडी चर्चा। वापू स्टेट पीपुल्स की स्टैडिग कमेटी के साथ एक घटा वैठे।

१३-१०-३९, वर्धा-नागपुर

हीरालालजी शास्त्री, सीतारामजी सेक्सरिया, सीतारामजी पोद्दार व मदालसा के साथ सेगाव जाकर बापू से मिला। वापू ने मेरे लिए कहा कि डॉक्टर लक्ष्मीपति की राय लेना बहुत जरूरी है। उन्हे भी दिखाया।

१४-१०-३९, वर्धा

बापू से मिला। भारती व जयरामदास भी साथ थे। डाक्टर लक्ष्मीपति की रिपोर्ट पढी। डॉक्टर मेहता का ही इलाज कराने की बापू की राय रही।

१५-१०-३९, वर्धा

राजाजी दिल्ली से आये। उनके साथ बापूजी के पास सेगाव गया। जयरामदासजी भी साथ थे। राजाजी दिल्ली मे वाइसराय से दो बार मिले। उसका हाल उन्होने सुनाया। उन्हे काग्रेस से झझट न हो, इस वारे मे २५ टका उम्मीद है। आगे चलकर तो उन्हे सघर्ष आता दिखाई देता है। असेम्बली के प्रस्ताव मे थोडी दुरुस्ती वाइसराय ने बतलाई। वह स्वीकार हुई। उसके अनुसार सरदार वल्लभभाई को व श्रीकृष्णसिह, मुख्यमत्री बिहार, को टेलीफोन कर दिये गए।

४-११-३९, पूना

रेडियो व अखबार की खबरे सुनी। बापू व जिन्ना आज वाइसराय से फिर मिले। बापू वर्धा रवाना हुए। थोडी उम्मीद दिखाई देती है।

६-११-३९, पूना

आज १२ बजे वर्धा से दामोदर का तार आया। आशादेवी आर्यनायकम् का लडका बब्नी कल शाम को एकाएक चल बसा। तार पढकर दु ख हुआ। चोट पहुची। सरलाबहन यही थी। शाम को उसे भी समझाया। बापू का तार भी मिला। आशाबहन को तार दिये। पत्र भी लिखा। बापू को भी पत्र लिखा। मन मे थोडा विचार चलता रहा।

२७-१२-३९, पूना

राजकुमारीजी का लिखा हुआ बापू का पत्र आया—जयपुर की स्थिति के बारे मे। तार भेजा।

पत्र का मसविदा तैयार हुआ।

३०-१२-३९, पूना

वर्धा से कमलनयन व हीरालालजी शास्त्री आये। बापू से जयपुर के बारे मे उनकी जो बातचीत हुई, वह सुनी।

डायरी के अंश

१९४०

२४-१-४०, वर्धा

राजकुमारी अमृतकौर से बातचीत। बापू का मौन।

बापू के पास गया। उन्हे स्वास्थ्य आदि के समाचार कहे। किशोरलाल-भाई, जयरामदास, कृष्णदास, परचुरे शास्त्री, आशानायकम् वगैरा मित्रो से मिला और बातचीत की।

२६-१-४०, वर्धा (स्वतन्त्रता-दिन)

स्वतन्त्रता-दिन के निमित्त ध्वज-वन्दन। गाधी-चौक मे महादेवभाई का व्याख्यान ठीक हुआ।

बापू से मिला। उन्हे जयपुर का तार बताया। वह वाइसराय से बात करेगे। गाधी-सेवा-सघ के बारे मे व सेगाव की जमीन, ग्रामोद्योग-सघ, आदि पर विचार-विनिमय।

किशोरलालभाई से गाधी-सेवा-सघ आदि के बारे मे विचार-विनिमय। जयरामदास दोलतराम, आशानायकम् आदि से मिलना व बाते।

२७-१-४०, पूना

सरलाबहन का इलाज व क्लीनिक का खर्च, फीस वगैरा के बारे मे बापूजी जो फैसला करेगे, वह ठीक रहेगा।

२९-१-४०, पूना

जयपुर के बारे मे बापूजी को पत्र भेजा।

३१-१-४०, पूना

हीरालालजी के नाम का जयपुर का पत्र पढा। राजा ज्ञाननाथ का व्यवहार व वकीलो का भीतियुक्त जवाब पढकर दुःख व चिन्ता। जयपुर जाकर बैठना ही कर्तव्य दिखाई देता है। बापू को तार भेजा। डॉक्टर से बातचीत।

१-२-४०, पूना

बापू का तार आया। उन्होने अभी जयपुर जाने को मना किया है। चिन्ता छोडकर इलाज करने को लिखा। फिर भी जयपुर जाने का विचार मन से निकाल नही सका। कल हीरालालजी आयगे। बापू का पत्र भी आयगा। तभी अधिक सोचा जा सकेगा।

२-२-४०, पूना

हीरालालजी शास्त्री आये। उनके साथ जयपुर की स्थिति के बारे मे देर तक विचार-विनिमय। पू० बापू का पत्र पढा। जयपुर अभी न जाने के बारे मे उनकी आज्ञा का पालन करना पडेगा, परन्तु उससे मन मे सतोष नही हुआ।

६-२-४०, पूना

बापूजी की व वाइसराय की मुलाकात सतोषकारक नही हुई। हीरालालजी शास्त्री का तार आया कि मेरा पत्र व स्टेटमेट बापू ने पसन्द किया।

२३-२-४०, पूना

जयपुर के प्राइम मिनिस्टर को तार भेजा। बापूजी व घनश्यामदासजी को भी तार भेजे। जयपुर-प्रजामडल को भी।

२६-२-४०, वर्धा

सेगाव गया। राजकुमारी अमृतकौर व सुशीला से मिलकर वहा की स्थिति समझी। इनकी तो राय थी कि बापू यहा न आकर उधर ही आराम करते तो ठीक था।

२८-२-४०, कलकत्ता

पू० बा, किशोरलालभाई, गोमतीबहन, सुरेन्द्रजी व प्यारेलाल से लोयलका-हाउस में मिलकर आया। बा को आज ज्वर नही है। किशोरलाल-भाई को टी० बी० का सशय सुना। उससे चिन्ता हुई। उनसे गाधी-सेवा-सघ की तथा अन्य बाते की।

२९-२-४०, पटना

पहुचते ही बापू से मिलकर जयपुर की स्थिति पर बातचीत की। उनकी राय मे भी मेरा जयपुर शीघ्र चला जाना ही ठीक रहेगा। कहा कि वहा की

स्थिति देखकर, वहा रहना जरूरी मालूम दे तो वहा रहू। रामगढ न आऊ तो भी हर्ज नही। अपनेको आगे होकर तो लडाई शुरू नही करनी है। स्टेटवाले लडना ही चाहते हो तो कोई उपाय नही, इत्यादि।

वर्किंग कमेटी ८।। से ११।। व २ से ६ व ७ से ८।। तक होती रही। सवो से मिलना हुआ। वापूजी व जवाहरलालजी के प्रस्ताव पर ठीक तौर से विचार-विनिमय हुआ। कल व आज की चर्चा के वाद जवाहरलालजी दूसरा प्रस्ताव वनाकर लाये।

१-३-४०, पटना

वापूजी से मिलकर थोडी वाते की।

वर्किंग कमेटी की वैठक ८।। से ११ तक हुई। मुख्य प्रस्ताव एकमत से स्वीकार हुआ। पू० वापू को भी पूरा सतोप रहा। शाम को भी थोडी देर वर्किंग कमेटी की वैठक हुई।

वापूजी, सीतारामजी, हीरालालजी कलकत्ता गये।

१४-३-४०, रामगढ-कांग्रेस

सुवह निवृत्त होकर वापू के पास उनके थर्ड क्लास के डिव्वे मे गया। वापू से वाते—

(१) अभयकर-स्मारक, नागपुर की इमारत के वारे मे पूनमचदजी राका यह समझे थे कि आपने अभी न वनाने की राय दी है। मैंने उन्हे सव स्थिति समझाई, तो उन्होने वनाने की इजाजत दे दी।

(२) जयपुर रहना हो सके तो वहा रहना ठीक रहेगा। वापू ने मेरे प्रश्न का खुलासा किया व देशी रियासतो के वारे मे अपनी कल्पना कही। वाइसराय लार्ड लिनलिथगो से जयपुर के दीवान के लिए योग्य व्यक्ति की नियुक्ति के वारे मे जो वाते हुई, वे उन्होने कही। मै जयपुर रहना निश्चित करू तो उन्हे पसन्द है।

(३) कॉमर्स कालेज के प्रिंसिपल के लिए वापू मलकानी को लिखेंगे। वापू को शकर (सतीश) कालेलकर ज्यादा पसन्द है। वापू समझते है कि वह ठीक काम कर सकेगा।

(४) महिला-आश्रम के लिए राजकुमारीजी को समझाने का वापू ने कहा।

(५) अपनी मन स्थिति के बारे मे मैंने कहा कि उसमे विशेष सुधार नही। खुलासेवार बाते बाद मे करने का तय हुआ।

१५-३-४०, रामगढ़-कांग्रेस

बापू के साथ घूमते हुए देर तक बातचीत। सरदार व भूलाभाई भी साथ थे। भूलाभाई ने दिल्ली का अनुभव व वहा का वातावरण बतलाया।

१६-३-४०, रामगढ-कांग्रेस

पू० बापू से सुबह घूमते समय एक घटे बातचीत। उनके विचार जाने।

१७-३-४०, रामगढ

बापू के साथ घूमते हुए एक घटा बातचीत। विचार-विनिमय।

१८-३-४०, रामगढ़

कल वर्किंग कमेटी की चर्चा का मुझ पर जो असर हुआ, वह बापू से घूमते समय कह दिया।

दोपहर को बापू की उपस्थिति मे वर्किंग कमेटी की बैठक हुई। बापू को जवाबदारी से मुक्त करने के प्रस्ताव का मौलाना, सरदार, जवाहरलाल वगैरा ने विरोध किया। मैं मुक्त करने के पक्ष मे था। प्रफुल्लबाबू, देव, पट्टाभि, राजाजी की राय भी मेरे साथ थी।

सब्जेक्ट कमेटी की बैठक हुई। मुख्य प्रस्ताव, अच्छी तरह वाद-विवाद व चर्चा होने के बाद भारी बहुमत से पास हुआ। सब्जेक्ट कमेटी मे बापू का भाषण हुआ।

१९-३-४०, रामगढ़

बापू के यहा २ से ३ बजे तक हिन्दी-प्रचार की कार्यकारिणी की बैठक हुई।

हैदराबाद-डेपुटेशन बापू से मिला। खेर व रामनाथ पोद्दार बापू से मिले। उन्होने 'आनन्दीलाल पोद्दार आयुर्वेद विद्यालय' खोलने की इजाजत बापू से ले ली।

बापू के कहने से रात की ८ बजे की गाड़ी से वर्धा रवाना हुए। वर्षा जोरो की थी।

२२-३-४०, वर्धा

बापू रामगढ से आये। उनके साथ बगले तक पैदल आया। घुटने में थोडा दर्द तो था ही। बापू ने मा के कान पकडे, मा ने बापू के कान पकडे। खूब हँसी-विनोद रहा।

२४-३-४०, वर्धा

सेवाग्राम मे बापू से मिलना व बातचीत। फातिमा इस्माइल ने कुरान की आयते पढकर सुनाईं। रेहानाबहन ने भजन गाये।

२८-३-४०, वर्धा

बापू से सेवाग्राम जाकर मिल आया। जयपुर व बम्बई की चर्चा। दोपहर को घनश्यामदासजी व राजाजी बापू के पास गये।

३०-३-४०, वर्धा

सेगाव जाकर बापू से जयपुर के बारे मे खुलासेवार बातचीत व विचार-विनिमय। व्यक्तिगत सत्याग्रह की जरूरत हो तो करने की इजाजत।

तारा मश्रूवाला-सबधी चर्चा। किशोरलालभाई, गोमतीबहन भी मौजूद थी। मैंने अपने मन की बात कही। बापू के साथ घूमने में और लोग भी साथ हो गए थे, इसलिए साफ बाते न हो सकी। मन मे विचार रहा।

प्रार्थना के बाद बापू का भाषण खादी-यात्रा मे हुआ।

२४-४-४०, जयपुर

महाराजसाहब जयपुर से ११ बजे मिलना हुआ। पत्रो के सेसर, पुलिस के व्यवहार के बारे मे बाते हुई। ज्ञाननाथजी ने गजट बराबर नही निकाला। जकात-रिपोर्ट, मातादीन वगैरा पर मुकदमे, खादी, जोधपुर, महात्माजी को जलसे मे बुलाना आदि के विषयो पर अपने मन के भाव स्पष्ट तौर से कहे। महाराजसाहब ने नोट करा लिये। ता० १ को २ बजे फिर मिलने पर इनके बारे मे जवाब देने को कहा। राजा ज्ञाननाथजी के साथ पटरी नही बैठती दिखाई देती, यह भी मैंने कह दिया।

२-५-४०, जयपुर

१२॥ से १॥। तक महाराजसाहब से मिलना हुआ। मैंने नोट्स लिख-

कर दे दिये। उन्होने पढ लिये। उसपर ठीक से खुलासा किया गया। नीचे लिखे प्रश्नो पर चर्चा हुई—

१. पत्र अभीतक सेसर होते है। आज से नही होगे, ऐसा रेसिडेट कहते है—ऐसा प्राइम मिनिस्टर ने कहा। उनसे वे बात कर लेगे।

२. प्राइम मिनिस्टर से जो वाद-विवाद चल रहा है—उसे आप निपट लेगे।

३. मातादीन वगैरा पर जो झूठे मुकदमे चल रहे है, उनकी वे जाच करेगे। प्राइम मिनिस्टर ने कहा कि कानूनी कार्रवाई होनी चाहिए।

४ प्राइम मिनिस्टर की दमन-नीति कई उदाहरण लेकर बताई। महाराजासाहब ने नोट कर लिया। उनसे बात करेगे।

५ जकात-रिपोर्ट मजूर होना जरूरी है। इसे नोट कर लिया। इस सबध मे सहानुभूति दिखाई।

६ खादी-खरीद मे सहायता देना। प्राइम मिनिस्टर से बात हो गई है। सब डिपार्टमेटो मे सूचना भेजी जायगी—जयपुर की बनी हुई खादी महगी होगी तो भी।

७ जोधपुर-समझौते के सबध मे अभी जवाब नही आया।

८ महात्माजी को बुलाने के सबध मे और उनको स्टेट का गेस्ट बनाने मे पोलिटिकल डिपार्टमेट को आपत्ति है।

९ रावराजाजी को सीकर भेजने के बारे मे नोट कर लिया। रेसिडेट से बात करके जवाब देगे।

११-५-४०, वर्धा

सेवाग्राम मे भोजन करते समय बापू को जयपुर की सारी स्थिति समझाई। आखिर मे घनश्यामदासजी की सलाह से डॉ० कैलासनाथ काटजू व रामेश्वरी नेहरू को बापू ने तार भेजा। महादेवभाई को भेजने की भी बातचीत हुई। शाम को वापस वर्धा आया। दिन-भर वही रहा। आराम किया।

१२-५-४०, वर्धा

बापू से सेवाग्राम जाकर मिल आया। जयपुर के लिए सन्देश लाया

डॉ० काटजू का जयपुर-प्रदर्शिनी खोलने का तार आया। जाजूजी, राधाकिसन आदि से खादी-कार्य, खासकर राजपूताना की स्थिति समझी।

१५-५-४०, जुहू-बम्बई

घूमते समय वालचन्द हीराचन्द व सर होमी मोदी से बातचीत हुई। मोदी से गाधीजी का व मेरा सम्बन्ध कैसे बढा, उस बारे में भी बाते हुई।

बबई खादी-भडार मे सरदार से मिलना हुआ।

२०-५-४०, जुहू

डॉ० लेमली ने दोनो कान साफ किये। तीन बार के २०) रुपये फीस ली। मैंने उन्हे कहा कि हिन्दुस्तान के रचनात्मक कार्य में आप लोगो को महात्माजी की सहायता करनी चाहिए।

५-६-४०, जुहू

दामोदर के साथ किशोरलालभाई से मिला। बापू के उपवास की बात उन्होने कही। राधाबहन का पत्र किसीने फाडकर फेक दिया। गाधी-सेवा-सघ की चर्चा। आश्रम का तनसुख भट्ट मिला।

१५-६-४०, वर्धा

वर्धा के कॉमर्स कालेज के बारे मे आज का प्राय बहुत-सा समय विचार-विनिमय मे गया। टडनजी, बापूजी, जाजूजी आदि से अलग भी विचार-विनिमय हुआ।

सेवाग्राम गया। बापू को सर पुरुषोत्तमदास की स्कीम दी। थोडी बाते हुई। जाजूजी साथ मे थे। वहा से जल्दी ही लौट आया।

१७-६-४०, वर्धा

जवाहरलालजी, स्वरूप (विजयालक्ष्मी पडित), राजेन्द्रबाबू आदि १८ लोग आये। बापूजी २ बजे आये।

वर्किंग कमेटी ३॥ से ८ तक हुई। बापू आदि के साथ पैदल दो मील घूमना हुआ। बापू कांग्रेस से उसके सलाहकार के रूप मे अलग होना चाहते है।

१८-६-४०, वर्धा

वर्किंग कमेटी ७॥ से १०॥ और २। से ७ तक होती रही। बापूजी २। से ७ बजे तक रहे। सुबह कृपलानी से बिना कारण बोलचाल हो गई। शाम को बापू ने अपने विचार कहे।

बापू के साथ १॥ मील पैदल घूमना हुआ। रूई-सिंडिकेट के बारे मे बातचीत। उन्होने कहा कि इसमे नैतिक दोष नही है। स्वरूप पडित भी साथ थीं।

१९-६-४०, वर्धा

वर्किंग कमेटी सुबह ८ से शुरू हुई। शाम को २। बजे से। पू० बापूजी की इच्छा के अनुसार उन्हे मुक्त करने का निश्चय।

२०-६-४०, वर्धा

वर्किंग कमेटी सुबह ८ से १०॥ व दोपहर को २। से ७ बजे तक होती रही। मुख्य प्रस्ताव पर महत्त्व की चर्चा व विचार-विनिमय। काफी गभीर स्थिति पैदा हुई। आज चरखा नही काता।

२१-६-४०, वर्धा

बापूजी का गाधी-सेवा-सघ व चरखा-सघ की बैठक मे ७ से ९ बजे तक व्याख्यान हुआ।

वर्किंग कमेटी ९ से १०॥। तक हुई। मैंने कहा कि इस समय हम लोगो का अलग होना ठीक नही। बापू की योजना जब अमल मे आयगी तब जिसकी जितनी तैयारी हो, वह उसमे शामिल हो जाय। मैंने प्रस्ताव मे कोई भाग नही लिया। शाम को बापूजी बैठक मे आये। मुख्य प्रस्ताव पास हुआ। हिन्दू-मुस्लिम-एकता की चर्चा। मौलाना से जो बातचीत हुई, वह कही।

२२-६-४०, वर्धा

बापू ने चरखा-सघ व गाधी-सेवा-सघ की बैठक मे दो घटे से ज्यादा देर तक अपने विचार रखे। बाद मे चर्चा होती रही। मैंने भी वर्किंग कमेटी की ओर से थोडा खुलासा किया। मेरी समझ से वह महत्त्व का था।

राष्ट्रभाषा हिन्दी-प्रचार-सभा की बैठक हुई। बापूजी, राजेन्द्रबाबू, काकासाहब आदि उपस्थित थे। मैंने कहा कि काकासाहब न तो अलग सस्था बनाते हैं और न ही बनी हुई यहा की सोसायटी से सम्बन्ध रखते है। इससे आगे चलकर गलतफहमी या झगडे का डर है। बापू वगैरा ने कहा कि जगह (इमारत) के बारे मे कोई झगडा नही होनेवाला है।

२६-६-४०, वर्धा

बैरिस्टर रशीद, होम-मिनिस्टर इन्दौर व डॉ० काटजू के साथ सेवा-

ग्राम मे बापू से मिलना हुआ। बातचीत। वापस आते समय मोटर कीचड मे फस गई। सबको दो मील के करीब पैदल चलना पडा।

२७-६-४०, वर्धा

पू० बापूजी, बैरिस्टर रशीद, महादेवभाई, कनु, प्यारेलाल व सुशीला दिल्ली व शिमला को रवाना हुए। बापू से बातचीत।

२-७-४०, दिल्ली

बिडला-हाउस मे ठहरे। बापू को बताया कि गोविन्दराम सेक्सरिया से कॉमर्स कालेज के लिए सवा लाख मिल गया। पचीस हजार और मिल जायगा, उन्हे खुशी हुई। घनश्यामदासजी को आश्चर्य हुआ व खुशी भी हुई।

३-७-४०, नई दिल्ली

बापू के साथ घूमना हुआ। स्टेट पीपुल्स कान्फ्रेंस मे जो नये मेम्बर लिये, वे उन्हे बताये। सेक्रेटरी के बारे मे बातचीत। बलवतराय मेहता को तो भावनगर ही रखना है। बापू ने दामोदर का नाम भी सुझाया। देर तक चर्चा होती रही। सरदार भी चर्चा मे शामिल थे। ओरियटल बीमा कपनी व खादी-सहायता, नया चुनाव आदि के बारे मे बाते हुई। भूलाभाई व खादी-सहायता के बारे मे बापू बात करेगे।

पू० मालवीयजी महाराज को बहुत समय बाद आज देखा। उनके पास आध घटा बैठा।

वर्किंग कमेटी सुबह इन्फार्मल ९ से १०॥ व दोपहर को २ से ६॥। तक होती रही। वाइसराय व बापू की मुलाकात का हाल, उसपर तथा वर्तमान स्थिति पर विचार-विनिमय।

प्रतापनारायणजी अग्रवाल (आगरावाले) मिलने आये। उमा का विवाह इसी ता० १३ को करने को तैयार। बापू से उनको मिलाया। उन्होने भी कहा कि कर दिया जाय।

५-७-४०, नई दिल्ली

वर्किंग कमेटी ८॥ से १०॥ और २ से ७ तक हुई। बापू, राजाजी व जवाहरलाल के विचारो पर विचार-विनिमय होता रहा। निश्चित फैसला नही हो सका।

६-७-४०, नई दिल्ली

सुबह बापू के साथ घूमा। वर्किंग कमेटी ८॥ से १०॥ व २ से ६॥ तक। राजाजी के प्रस्ताव पर खूब विचार-विनिमय। मेम्बर तथा निमंत्रित सज्जनों की राय ली गई।

आज वर्धा जाने के लिए इजाजत तो मिल गई, परन्तु मेरे जाने के बारे में पू० बापू की इच्छा कम थी। जवाहरलालजी व राजाजी की तो साफ राय थी कि मैं न जाऊं। सामान स्टेशन से वापस मंगवाना पड़ा।

७-७-४०, नई दिल्ली

बापू के साथ सुबह घूमना हुआ। वर्किंग कमेटी व राजाजी के प्रस्ताव के बारे में विचार-विनिमय। बाद में सरदार भी आगए थे।

वर्किंग कमेटी की मीटिंग में कल राजाजी के प्रस्ताव[1] के पक्ष में ये लोग थे—राजाजी, राजेन्द्रबाबू, डॉ० घोष, डॉ० महमूद, बैरिस्टर आसफ-अली, सरोजिनी नायडू, भूलाभाई और मैं।

विरोध में थे—सरदार वल्लभभाई, जवाहरलाल, शंकरराव देव, खानसाहब, कृपलानी।

गोविन्दवल्लभ पंत गैरहाजिर थे, किन्तु वह राजाजी के पक्ष में थे। मौलाना राजाजी के पक्ष में विचार रखते थे।

निमंत्रित लोगों में—डॉ० पट्टाभि राजाजी के पक्ष में थे और अच्युतराव व नरेन्द्रदेव विरोध में थे।

आज की मीटिंग में राजाजी के प्रस्ताव के पक्ष में—सरदार वल्लभभाई, राजाजी, भूलाभाई, आसफअली, डॉ० महमूद और मैं।

---

[1] प्रस्ताव निम्न प्रकार है—

"The Working Committee have noted the serious happenings which have called forth fresh appeals to bring about a solution of the deadlock in the Indian political situation, and in view of the desirability of clarifying the Congress position, they have earnestly examined the whole situation once again in the light of latest developments in world affairs"

विरोध मे—जवाहरलालजी, खानसाहब और मौलाना।

तटस्थ—राजेन्द्रबाबू, कृपलानी, शकरराव देव, डॉ० घोष, सरोजिनी। निमन्त्रितो मे—पट्टाभि राजाजी के पक्ष में, नरेन्द्रदेव व अच्युत पटवर्धन विरुद्ध। पू० मालवीयजी राजाजी के पक्ष में राय रखते थे।

ग्राड ट्रक से थर्ड मे बापू के डिब्बे मे वर्धा के लिए रवाना।

८-७-४०, वर्धा

वर्धा पहुचे। बापू का मौन वर्धा में खुला। स्टेशन से बगले तक बापू के साथ पैदल। बापू ने मा के कान पकडे, मा ने बापू के दोनो कान पकडे। विनोद।

१२-७-४०, वर्धा

सेवाग्राम मे रात को सियार ने भसाली, मुन्नालाल, बाबला व पुलिस सिपाहियो को बुरी तरह से काट खाया। उनको अस्पताल मे लाकर इजेक्शन दिलवाया।

"The Working Committee are more than ever convinced that the acknowledgment by Great Britain of the complete Independence of India, is the only solution of the problems facing both India and Britain and are, therefore, of opinion that such an unequivocal declaration should be immediately made and that as an immediate step in giving effect to it, a provisional National Government should be constituted at the Centre, which though formed as a transitory measure, should be such as to command the confidence of all the elected elements in the Central Legislature, and secure the closest cooperation of the Responsible Governments in the provinces

"The Working Committee are of opinion that unless the aforesaid declaration is made, and a National Government accordingly formed at the Centre without delay, all efforts at organizing the material and moral resources of the country for Defence cannot in any sense be voluntary or as from a free country, and will, therefore, be ineffective The Working Committee declare that if these measures are adopted, it will enable the Congress to throw in its full weight in the efforts for the effective organisation of the Defence of the country"

१३-७-४०, वर्धा

उमा का विवाह-कार्य ७॥ बजे शुरू हुआ। वर्षा हो रही थी तो भी उपस्थिति ठीक थी। मडप ठीक वना था। पू० बापूजी व बा ने आकर आशीर्वाद दिया। उमा व राजनारायण के लिए यह बडे भाग्य व सुख की वात थी।

१४-७-४०, वर्धा

सेवाग्राम गया। बापू से बाते—खासकर खुरशीद, पवनार, नालवाडी के बारे मे।

विनोबा से बाते। प्रार्थना।

१५-७-४०, वर्धा

खुरशीद बहन के साथ घूमने गया। उनसे काग्रेस, फ्रटियर, बापू, अहिसा व उनके खुद के सम्बन्ध मे बातचीत।

१८-७-४०, वर्धा

सेवाग्राम गया। लक्ष्मणप्रसादजी वगैरा साथ मे थे। बापू से उनको मिलाया। बापू से बातचीत। ओझा, खुरशीदबहन, आगे का प्रोग्राम, अपनी मन स्थिति, वर्किंग कमेटी का प्रस्ताव, खानपान, कान का दर्द आदि विषयो पर देर तक विचार-विनिमय। बा, आशावहन व सरलावहन से भी मिलना हुआ।

२८-७-४०, पूना

ऑल इडिया काग्रेस कमेटी ८॥ से ११। तक व २ से ८॥ तक हुई। आज काम समाप्त हुआ। दिल्लीवाले प्रस्ताव पर मत लिये गए। पक्ष में ९५, विरोध मे ४७। तटस्थ नही गिने गए। कुल मिलाकर उपस्थिति १९० के करीव होनी चाहिए। प्रस्ताव पास तो हुआ परन्तु मन मे समाधान नही मिला। जवाहरलाल का भाषण ठीक हुआ। राजाजी का भाषण व जवाब तो ठीक था, परन्तु बापू के वारे मे अव्यावहारिक आदि होने की जो समालोचना इन्होने व सरदार ने की, वह थोडी बुरी मालूम दी। क्योकि इन लोगो के मुह से इन बीस वर्षो मे पहली वार ही इस प्रकार के वाक्य सुनने को मिले। वैसे मेरी भी राय इनके साथ ही थी, परन्तु वह तो कमजोरी आदि के कारणो को लेकर थी।

६-८-४०, जुहू

बापू से मिला। काकासाहब व श्रीमन् साथ में थे। राष्ट्रभाषा हिन्दी के स्वरूप, प्रचार और व्यवस्था आदि के बारे में देर तक बातचीत व विचार-विनिमय।

७-८-४०, वर्धा

चि० मुन्नी (सुमन) का आज जन्मदिन था। मकान पर (बच्छराज-भवन मे) बालको के खेल-कूद हुए। पू० बा वगैरा आये थे। बाद में बा व दुर्गाबहन को सेवाग्राम पहुचाया।

८-८-४०, वर्धा

सेगाव गया। जानकीदेवी व शान्ताबाई साथ मे। बापू से वाइसराय के पत्र और स्टेटमेट पर विचार-विनिमय। राजेन्द्रबाबू को जयपुर ले जाने के बारे मे भी।

मीराबहन व पृथ्वीसिह के बारे मे बापू ने कहा कि यह सम्बन्ध कराना हम सबोका धर्म हो गया है। अन्य बाते।

१०-८-४०, वर्धा

सेवाग्राम गया। बापू से खादी-योजना के बारे मे, जो शातिकुमार व डायाभाई पटेल कर रहे है, बात की। वे एक अपील तैयार करेगे। उस-पर मेरी सही भी लेनेवाले है।

बापू के साथ वर्किंग कमेटी, जयपुर, मीराबहन, वासन्ती वगैरा के बारे में बातचीत।

हैदराबादवालो की बापू से जो बातचीत हुई, वह सुनी व समझी।

११-८-४०, वर्धा

मीराबहन बगले आई। पृथ्वीसिह के साथ अपना विवाह-सम्बन्ध करने का निश्चय बताया। न हुआ तो मृत्यु वगैरा की बात कही।

सेवाग्राम गया। बापूजी से बाते। वर्किंग कमेटी की बैठक होने के बाद जयपुर जाने का निश्चय। पृथ्वीसिह व मीराबहन के बारे मे उन्होने बताया।

१४-८-४०, वर्धा

पू० बापूजी सेवाग्राम से आये। दत्तू दास्ताने, किशोरलालभाई, राजेन्द्र-बाबू आदि से मिले। देर तक ठहरे।

१५-८-४०, वर्धा

बालासाहब खेर, उनकी पत्नी, बहू व पूनावाली पार्टी से मिलना हुआ। उनकी व्यवस्था। साथ मे भोजन।

पू० बापूजी सेवाग्राम से वर्धा आये। ३ बजे से ५ बजे तक पूना के मित्रो के प्रश्नो के उत्तर उन्होने दिये। प्रश्न विशेषतया अहिसा को लेकर थे।

१६-८-४०, वर्धा

सेवाग्राम गया, बापू को पृथ्वीसिह की बातचीत का साराश सुनाया। आशाबहन व सरलाबहन दीक्षित के साथ की बातो का हाल भी कहा।

१८-८-४०, वर्धा

सुबह घूमना हुआ। जानकीदेवी साथ मे थी।

पृथ्वीसिह ने उनकी व बापूजी की जो बातचीत हुई वह साराश मे कही। मैने उन्हे अभी बापू के पास रहने के बारे मे समझाया।

किशोरलालभाई से मिला। उनसे पृथ्वीसिह-सबधी आदि बाते।

सरदार, भूलाभाई, राजाजी, सरोजिनी, कृपलानी, सुचेता, देव, पट्टाभि वगैरा सुबह की गाडी से आये और जवाहरलाल व महमूद ४॥ की गाडी से। वर्किंग कमेटी २ बजे से शुरू हुई। बापूजी सेवाग्राम से आये। देर ७॥ बजे तक बातचीत व विचार-विनिमय होता रहा।

१९-८-४०, वर्धा

सुबह पैदल घूमना हुआ। पृथ्वीसिह से बातचीत।

वर्किंग कमेटी ८॥ से ११ व २ से ७ तक हुई। वाइसराय को पत्र भेज दिया गया। बापूजी के पास से उसे मैने ठीक करवा लिया था।

२०-८-४०, वर्धा

वर्किंग कमेटी ८॥ से ११ और २। से ७॥ तक हुई। दोपहर की मीटिंग मे बापूजी आये। ठीक बातचीत व खुलासा।

बापूजी के साथ सेवाग्राम रेलवे-फाटक से करीब ढाई मील तक पैदल गया। बापूजी से वर्तमान वर्किंग कमेटी व काग्रेस-स्थिति पर बातचीत, विचार-विनिमय। अहिसक दल के बारे मे मैने अपने विचार बताये। सेना-रहित राज्य के बारे मे बाते हुई।

२१-८-४०, वर्धा

वर्किंग कमेटी ८॥ से ११ व २ से ६॥ तक हुई। बापू दोपहर को २। बजे के करीब आये व ५ बजे के करीब सेवाग्राम चले गए। बापू का मसविदा पसन्द नही हुआ। मुझे लगा कि उसमे थोडा फर्क करना सभव होता, तो ज्यादा ठीक मालूम देता।

२२-८-४०, वर्धा

वर्किंग कमेटी ८॥ से ११॥ तक हुई। अत मे मुख्य प्रस्ताव मजूर हुआ। वर्तमान स्थितिवाले प्रस्ताव पर अच्छी तरह विचार-विनिमय।

शाम को २। से ६। बापू आये। आज बातचीत के सिलसिले में उन्होने सकोच व दुखी हृदय से अपनी मनोदशा, विचार व भावी प्रोग्राम (उपवास के बारे मे) कहा। उसे सुनकर सब-के-सब चकित व किंकर्त्तव्य-विमूढ बन गए। मन मे चिता व विचार शुरू हुए।

खुरशीदबहन से मिलकर सेवाग्राम मे बापू से, खासकर महादेवभाई से बापू की भयकर योजना समझी। सरदार व राजेन्द्रबाबू से बातचीत। चिन्ता मे ही सोया।

२३-८-४०, वर्धा

मौलाना, सरदार, जवाहर व मै सेवाग्राम गये। बापू से बातचीत। चित्त को थोडा समाधान मालूम हुआ।

पवनार गया। विनोबा से मिलकर उन्हे स्थिति कही। शाम को विनोबा का बगले आने का निश्चय। उनकी मदद मिलेगी।

स्टेशन पर सर बद्रीदासजी गोयनका से मिला। अम्बालालभाई नही आये। आसफअली दिल्ली गये।

नेशनल प्लानिंग की बैठक बगले पर हुई। बापू आये।

बापू ने किशोरलालभाई के घर विनोबा, किशोरलालभाई, जाजूजी, काकासाहब आदि से अपनी भावी योजना (उपवास) के बारे मे विचार-विनिमय किया। विनोबा की राय ठीक पडी। पर वर्किंग कमेटी की मजूरी से ही बापू यह विकट मार्ग स्वीकार कर सकते है, यह तय हुआ। बापू ने वर्किंग कमेटी के आगे अपने विचार रखे। वर्किंग कमेटी की सर्वानुमति से प्रेसीडेंट

मौलानासाहब ने बापू को पत्र लिखकर दिया। उसमे प्रार्थना की गई थी कि यह मार्ग स्वीकार न करे। बापू ने मजूर किया।

२४-८-४०, वर्धा

सुबह मौलाना कलकत्ते जाने की तैयारी करके बापू से बिदा लेने सेवाग्राम गये। मै भी साथ मे था। बापू से बातचीत होती रही। बातचीत मे ऐसा लगा कि बापू चाहते है कि और अधिक बातचीत होना जरूरी है, इसलिए मौलाना ने कलकत्ते जाना मुलतवी कर दिया। मेरे कहने पर बापू ने एक मसविदा बनाकर दिया।

वर्धा आकर सरदार, राजेन्द्रबाबू, भूलाभाई को वह दिखाया गया। मौलाना ने उसे जवाहरलाल को दिखाया। वह स्वीकार नही हो सका। दोपहर को मौलाना, जवाहरलाल, राजाजी, सरदार, भूलाभाई, मै, डा० महमूद वगैरा फिर बापू से मिलने सेवाग्राम गये। बातचीत के सिलसिले मे यह निश्चय हुआ कि मौलाना, जवाहरलाल और सरदार बापू से मिलकर नया मसविदा बनावे। वर्किंग कमेटी के बाकी के मेम्बर जो वर्धा मे रह सके, वे उसमे भाग ले। इसलिए विचार-विनिमय शुरू हुआ। राजाजी, भूलाभाई, कृपलानी तो आज चले गए।

२५-८-४०, वर्धा

बापू सेवाग्राम से ९। बजे करीब आये। सुबह ११ बजे तक व दोपहर को २॥ से रात के ९ बजे तक बापू के साथ रहे। मौलाना आजाद, प० जवाहरलाल, सरदार वल्लभभाई की खासतौर से व राजेन्द्रबाबू, सरोजनी नायडू, डॉ० सैयद महमूद व मेरी बातचीत बापू से हुई। आखिर मे सतोष-कारक परिणाम आया। बापू को सतोप हुआ। यह जानकर सुख मिला।

बापू व मौलाना, जो निर्णय पर आये, उस बारे मे सरदार से थोडी बातचीत हुई।

सरदार व जवाहरलाल, रात की ऐक्सप्रेस से बम्बई रवाना हुए।

२६-८-४०, वर्धा

नागपुर-मेल से नागपुर तक राजेन्द्रबाबू और मै मौलाना आजाद के साथ सैकड मे बैठे।

आगे राजेन्द्रवावू भी थर्ड में ही रहे। उनकी तवीयत ठीक रही। मौलाना आजाद ने भी राजेन्द्रवावू को एक माह तक के लिए इधर रहने की इजाजत दे दी। कल जो वापू (महात्माजी) से निर्णय हुआ, उसपर मौलाना ने सतोष प्रकट किया।

२८-९-४०, नई दिल्ली

घनश्यामदासजी ने शिमला, वम्वई, देवदास गाधी को फोन किये। मेरे वारे मे भी। रात को शिमला का हाल महादेवभाई ने कहा।

वापू का तार आया। शिमले में ठड वहुत ज्यादा है, ऐसा लिखा। दिल्ली ठहरने की इच्छा भी लिखी।

३०-९-४०, नई दिल्ली

शिमला से फोन द्वारा मालूम हुआ कि वाइसराय से फैसला नही हुआ। लडाई होगी। वापू मोटर से दिल्ली आ रहे हैं। भूलाभाई व आसफअली से वाते। आसफअली ने जयपुर जाना स्वीकार कर लिया।

१-१०-४०, नई दिल्ली

सुवह करीव ५ वजे बापूजी मोटर द्वारा शिमला से दिल्ली पहुचे। साथ मे राजकुमारी व महादेवभाई थे।

वापूजी के साथ घूमना। वापूजी ने शिमला की वातचीत का साराश कहा। वापूजी ने वाइसराय से जयपुर के वारे मे जो वाते कही, वे सुनी। वाइसराय का खुलासा भी सुना। मुझे जयपुर-स्थिति सुलझाने मे ही विशेष समय लगाने की सलाह दी। राजा ज्ञाननाथ चिढकर जेल आदि भेजे तो ठीक ही है। राजेन्द्रवावू को सीकर मे ही आराम लेने देना चाहिए। वर्किंग कमेटी की बैठक मे न आये तो कोई हर्ज नही होगा। जो खादी-रकम वम्वई मे जमा हुई, उसमे राजस्थान की रकम राजपूताना के लिए ईअरमार्क करने का मैंने कहा। उसे उन्होने सुन लिया, उसका विरोध नही किया। यह रकम अन्दाजन एक लाख तक होगी। भावी प्रोग्राम की थोडी रूपरेखा समझी। आसाम का दौरा कायम रखने का कहा। वर्धा राष्ट्रभापा-प्रचार की बैठक पर भी न आये तो हर्ज नही, ऐसा कहा।

वापू के साथ हरिजन-आश्रम गया। वहा आधा घटा चरखा-कताई हुई।

२-१०-४०, जयपुर-सीकर

घनश्यामदासजी बिडला की लिखी हुई 'बापू' पुस्तक पढी। भूमिका महादेवभाई की लिखी हुई है।

सीकर पहुच, तागा किराये पर करके कमरे पहुचा। प्रोग्राम वगैरा के सबध मे पू० राजेन्द्रबाबू से बाते।

बापू का जन्म-दिवस मनाया गया। राजेन्द्रबाबू बोले। देर तक चरखा चलाया।

११-१०-४०, वर्धा

वर्किंग कमेटी २ बजे से शुरू हुई। पू० बापू आये। तेरह मेम्बर हाजिर थे, केवल राजेन्द्रबाबू व डॉ० महमूद गैरहाजिर थे। बापू ने वाइसराय से हुई बातचीत का हाल कहा व अपनी व्यक्तिगत सत्याग्रह की योजना बताई। विनोबा को प्रथम सत्याग्रही की उनकी कल्पना है, ऐसा कहा।

बापू के साथ सेवाग्राम गया। मोटर मे बापू से जयपुर की स्थिति कही।

१२-१०-४०, वर्धा

वर्किंग कमेटी सुबह ८ से १०॥ तक व शाम के २ से ७ बजे तक हुई। दोपहर को बापू आये। व्यक्तिगत सत्याग्रह का खुलासा। चर्चा मे ही अधिक समय गया।

बापू को पहुचाने सेवाग्राम गया। रास्ते मे बातचीत। पानी बहुत जोर का आया। मोटर गीली हो गई। वापस आने पर कपडे बदलने पडे।

जवाहरलाल से देर तक खानगी व सार्वजनिक बाते बन्द कमरे मे होती रही।

१३-१०-४०, वर्धा

घूमने गया। वर्किंग कमेटी की मीटिंग सुबह ८॥ से १०॥ बजे तक व शाम को २ बजे से ५॥ बजे तक होती रही। पू० बापू ने शकाओ का समाधान किया—जितना उनके लिए सभव था उतना। मौलाना व जवाहरलाल का पूरा समाधान नही हुआ। डिसिप्लिन (अनुशासन) पालन करने का उनका निश्चय।

बापू के साथ पवनार गया। विनोबा से बातचीत। प्रथम सत्याग्रही के नाते विचार-विनिमय। विनोबा अपना बयान तैयार करेगे। बापू स्टेटमेट

वनावेगे। विनोवा वापू से ता० १५ मगलवार को दो वजे मिलेगे। वाद मे सत्याग्रह का स्थान निश्चित होगा। वहुत करके वुध, नही तो गुरुवार को पवनार से विनोवा सत्याग्रह शुरू करेगे।

१७-१०-४०, वर्धा

पू० वापू से इजाजत लेकर मोटर से पवनार गया। पवनार मे विनोवा का सत्याग्रह का प्रथम भाषण हो रहा था। वर्षा भी हो रही थी। करीव १०-१५ मिनट भाषण सुना। वाद मे विनोवा के साथ जमना-कुटीर गया। वहा देर तक वातचीत और विचार-विनिमय।

कृपलानी, सुचेता, किशोरलालभाई, गोपालराव के साथ सेगाव गया। वापू से विनोवा के प्रोग्राम वगैरा की चर्चा। विनोवा का भाषण जो महादेवभाई ने लिख लिया था, पूरा पढा।

पवनार जाकर विनोवा को वापू के साथ हुई सव वाते वताई। विचार-विनिमय होता रहा। छत के ऊपर प्रार्थना व भजन।

२०-१०-४०, वर्धा

सेवाग्राम गया। वापू से वातचीत। किशोरलालभाई व गोपालराव साथ मे थे। डॉ० हसन, डिस्ट्रिक्ट कौसिल के चुनाव, सेगाव की जमीन ग्राम-उद्योग-सघ के नाम पर चढाना, जयपुर जाना, सत्याग्रह की लडाई आदि विषयो पर चर्चा।

२१-१०-४०, वर्धा

सुवह साढ पाच के करीव गोपालराव काले आये और उन्होने कहा कि विनोवा को रात के साढे तीन वजे डिफेंस ऑफ इडिया ऐक्ट मे गिरफ्तार करके मोटर से वर्धा लाये हैं। सेवाग्राम, नागपुर वगैरा फोन किया। विनोवा वर्धा-जेल मे पहुच गए। वर्धा मे हडताल रखन की योजना व व्यवस्था की।

विनोवा से जल मे मिलने के वाद सेवाग्राम जाकर वापू को सव हाल वताये। वापू ने स्टेटमेंट का ड्राफ्ट वनाया। वापू का मौन था। अन्य वाते वापू ने लिखकर कही। दुर्गावहन के यहा भोजन। महादेवभाई व राजकुमारी अमृतकौर के साथ जेल में विनोवा से मिले। उन्होने जो स्टेटमेट तैयार किया, उसमे सुधार।

विनोबा का मुकदमा हुआ। मैजिस्ट्रेट श्री कुते ने तीन अपराधो पर तीन-तीन महीने की सादी सजा दी। तीनो सजाए साथ-साथ चलेगी।

४-११-४०, नागपुर से वर्धा

नागपुर मे ग्राड ट्रक बदलकर नागपुर-मेल मे मौलानासाहव के साथ बैठा। बापू के उपवास की वात नागपुर मे जोरो से चल रही थी।

सेवाग्राम जाकर बापू से मिला। जयपुर की स्थिति का हाल व उनके उपवास वगैरा की थोडी वाते की।

आज तारीख के अनुसार मेरा जन्मदिन था। ५१ वर्ष पूरे हो गए। वापू को प्रणाम किया।

सुवह मौलाना के साथ थोडी दूर घूमा। वह सेवाग्राम गये।

५-११-४०, वर्धा

वर्किंग कमेटी की सुवह खानगी मे आपस मे चर्चा। राजेन्द्रबाबू व कृपलानी ११ वजे आये। जाब्ते की मीटिंग २ बजे से हुई। पू० बापू भी आये। ठीक तौर से चर्चा व विचार-विनिमय हुआ। आसफअली व सरदार मे झडप हो गई। वुरा मालूम दिया। असेम्बली मे बजट का विरोध करने के लिए जाने का निश्चय हुआ। बापू ने अपना प्रोग्राम कल तय करने को कहा।

६-११-४०, वर्धा

वापू ने फिलहाल तो उपवास करने की बात छोड दी—किशोरलालभाई ने यह जानकारी दी। मौलाना व पतजी से बातचीत। वर्किग कमेटी की वैठक सुवह व शाम को हुई। वापू ने वर्किंग कमेटी के सदस्यो, ऑल इडिया कमेटी के सदस्यो व असेम्वली के मेम्वरो को, कुछ शर्तो के साथ, इजाजत देने का विचार प्रकट किया।

७-११-४०, वर्धा

सेवाग्राम—डॉ० सौन्दरम् (ब्राह्मण) का श्री जी० रामचन्द्रन् (नायर) त्रावणकोरवाले के साथ विवाह हुआ। सौन्दरम् के माता-पिता की आज्ञा नही मिली थी। उनका आशीर्वाद भी नही मिला था। पू० वापूजी व वा ने कन्यादान किया। श्री परचुरेशास्त्री ने विवाह करवाया। राज-

गोपालाचारी और मौलाना मौजूद थे। माता-पिता का आशीर्वाद न मिला, यह देखकर बुरा लगता रहा।

वर्किंग कमेटी की मीटिंग सुबह व शाम को होकर आज समाप्त हुई। वापू ने प्रेस-रिपोर्टरो को सदेश दिया। सरदार, भूलाभाई, राजेन्द्रबाबू, शकरराव वगैरा गये।

८-११-४०, वर्धा

सेवाग्राम जाकर वापू से चरखा-सघ-सवधी थोडी वाते की।

शरद पारनेरकर का विवाह उज्जैनवाले माचवे के साथ हुआ, वापूजी की उपस्थिति मे। चरखा-सघ की बैठक मे, सुबह व दोपहर मे गया। आज चरखा-सघ की बैठक मे, कोशिश करने पर ट्रस्टी का व खजाची का व राजस्थान के एजेट-पद का मेरा त्यागपत्र बहुत चर्चा के वाद वापूजी की मदद से स्वीकार हुआ। गगाधररावजी देशपाडे का भी स्वीकार हुआ। जाजूजी से मिला। गाधी-सेवासघ-सवधी वातचीत।

९-११-४०, वर्धा

चरखा-सघ की बैठक मे बापूजी आये। मै भी कुछ समय के लिए गया। बापूजी के साथ रेलवे-फाटक तक पैदल गया। उन्होने सतीशबाबू व अप्पा पटवर्धन से जो बाते की, वे समझी।

१०-११-४०, वर्धा

सेवाग्राम गया। ब्रिजलालजी बियाणी, रविशकरजी शुक्ल और गोपाल-राव काले साथ थे। वापू की शर्तों का खुलासा। सस्थाओ का खुलासा।

११-११-४०, वर्धा

आज मीरा मूदडा सत्याग्रह करनेवाली थी। बाद मे मालूम हुआ कि मीरा के तो दिन चढे हुए है। जानकर आश्चर्य हुआ। इसमे गोपालराव काले की लापरवाही मालूम दी। दामोदर की भी पूरी भूल रही। बापू को फोन किया। उन्होने कहा, "इस हालत मे तो जेल नही भेज सकते।" वापू के पास जाकर खुलासा किया। इस घटना से बापू को व मुझको दोनो को बुरा लगा, लोगो की लापरवाही के कारण।

देशी तिथि से मेरा जन्म-दिन था। वा और वापू को प्रणाम किया।

२१-११-४०, बंबई

बापू का तार मिला। बहुत जल्दी मे रात की ऐक्सप्रेस से दामोदर व विट्ठल के साथ थर्ड क्लास में ही वर्धा रवाना।

२२-११-४०, वर्धा

सेवाग्राम जाकर बापू से मिला। उन्होने कर्नाटकवाले दिवाकर से जो बाते की, वे समझी। चीन के जो बडे लोग आनेवाले है, उनकी व्यवस्था। चीन का डेपुटेशन (हिज ऐक्सेलेसी ताइ-ची-ताऊ वगैरा सात चीनी)। ग्राड ट्रक से बापू से मिलने आया। उनका स्वागत किया। इन्हे घर पर ठहराया। भोजन वगैरा साथ मे नीचे बैठाकर किया। बातचीत। चीन की स्थिति, जापान के बर्ताव पर बाते। ताई-ची-ताऊ का परिचय वगैरा।

ये लोग २३ की शाम को ग्राड ट्रक से वापस गये।

२४-११-४०, वर्धा

श्री राजगोपालाचारी मद्रास से आये। उनसे बातचीत। उन्होने बापू से बाते की। उस समय मै भी थोडी देर उपस्थित था। बापू से मुझे भी बाते करनी थी। परन्तु उनका ब्लड-प्रेशर बहुत ज्यादा बढ जाने के कारण बात नही कर सका।

२५-११-४०, वर्धा

सेवाग्राम से फोन आया कि बापू का स्वास्थ्य खराब है, सिविल सर्जन को लेकर आये। व्यवस्था करने के बाद फिर फोन आया कि अभी नही लाये। ब्लड-प्रेशर कम हुआ है।

बापू के स्वास्थ्य की चिन्ता हो गई। अनसूया के साथ सेवाग्राम गया। बापू से थोडा विनोद। उन्हे हंसाया। ब्लड-प्रेशर कम था। पूरा आराम लेने का करार किया। महादेवभाई से बातचीत।

२७-११-४०, वर्धा

डॉ० गिल्डर व डॉ० जीवराज मेहता बम्बई से पू० बापू को देखने आये। वे सेवाग्राम गये। बापू को देखकर मेल से वापस बम्बई गये।

सेवाग्राम गया। बापूजी का हृदय वगैरा की स्थिति व ब्लडप्रेशर ठीक था। कमजोरी थी। कुछ समय तक आराम से रहना जरूरी बताया। मेरे प्रोग्राम के बारे मे बापू से बातचीत। उन्होने कहा, तुम्हे प्रान्त मे घूमना व

मीटिंग करना जरूरी मालूम होता हो तो तुम खुशी से वैसा कर सकते हो। सत्याग्रह करना हो तो सेवाग्राम से, या जहा से तुम्हारी इच्छा हो, वहा से कर सकते हो।

२-१२-४०, वर्धा

पवनार व सेवाग्राम सुव्रता बहन के साथ गया। प्रार्थना में शामिल हुआ। बापू का मौन था।

३-१२-४०, वर्धा

सेवाग्राम जाकर बापू से मिला। रमा व श्रीनिवास का विवाह। १०१) रु० भेट। सुव्रताबहन-वगैरा मिले। बापू से व्याख्यान के विषय व पृथ्वीसिंह के बारे में बातचीत।

७-१२-४०, वर्धा

सेवाग्राम जाकर बापू से थोडी देर बातचीत। जमीन, आर्यनायकम्, प्रान्त का दौरा आदि।

देवदास गाधी वगैरा मिले।

८-१२-४०, वर्धा

बापू ने सेवाग्राम बुलवाया। जलियावाला बाग-ट्रस्ट के बारे मे विचार-विनिमय। मैंने ट्रस्ट मे नाम बदलने का कहा।

सेवाग्राम-जमीन की बिक्री आपकी (बापू की) इच्छा के मुताबिक करने का नायकम् को कह दिया है, यह बापू को कहा। नायकम् की भूल, आदर्श ग्राम, प्यारेलाल के सत्याग्रह आदि के बारे मे बाते। बगले पर का पत्र, मुखर्जी के लाये हुए जलियावाला बाग के कागजो पर सही की। बापू का पत्र देखा। 'महिला-आश्रम' व 'शिक्षा-मडल' के कालेज के बारे मे देर तक विचार-विनिमय।

९-१२-४०, सेवाग्राम

सेवाग्राम पैदल गया। उमा, दामोदर साथ मे। चि० आनन्दनायकम् की समाधि का स्थल टेकडी पर देखा। श्री आशाबहन व नायकम् की भावना व प्रेम देखकर थोडा आश्चर्य भी हुआ। उनसे मिला व बातचीत की। मैंने अपने मन के भाव कहे। नायकम् की भूल बताई। मेरी समझ से ठीक खुलासा हो गया। मेरा भी दिल भर आया था। मुझे भी अपने विचारो मे

परिवर्तन करना पडा । इन दोनो को वहा समाधि-स्थल पर जाने से शान्ति मिलती है ।

१५-१२-४०, वर्धा

जल्दी तैयार होकर नवभारत विद्यालय मे गया । महादेवभाई का भाषण सुना । श्रीमती सरोजिनी नायडू, महादेवभाई, काकासाहव, गोपालराव काले के साथ सेवाग्राम गया । वही भोजन । बापू को अपने दौरे का सार कहा । सेवाग्राम के चौक से ता० २१ को सुबह ९ बजे सत्याग्रह करने का निश्चय हुआ ।

श्री परचुरेशास्त्री अन्न व जल के बिना उपवास कर रहे है । उनसे मिला ।

१६-१२-४०, वर्धा

शाम को सेवाग्राम-प्रार्थना मे । प्रार्थना के बाद बापूजी से सत्याग्रह वगैरा के बारे मे बातचीत ।

सेवाग्राम में मेरे लिए अलग मकान बनाने के बारे में विचार व विनोद ।

मोटर से भडारावाले जकातदार वकील आये । उन्हे बापू से मिलाया । प्रार्थना मे शामिल हुए । बापू ने जो मसविदा बना दिया था, उसे वे सही करके मुझे दे गए और भडारे से तार भेजने को कह गए ।

१९-१२-४०, वर्धा

घूमते समय दमयन्तीबाई व दादा धर्माधिकारी ने गत वर्ष नवम्बर मे श्री किशोरलालभाई को जो पत्र लिखा था, वह मुझे पढाया । पू० बापू ने उसका जो जवाब दिया, वह भी पढा । थोडी और बातें । बाद मे पजाब के सुदर्शनदास व जगन्नाथ ने पजाब की हालत सुनाई ।

सेवाग्राम में परचुरेशास्त्री को देखा । बापू से पजाबवालो के बारे में उनका कहना सुनाया । महिला सत्याग्रही भेजने तथा मेरे व्याख्यान, स्टेटमेंट आदि के बारे में बाते ।

गाधी-चौक मे जाहिर व्याख्यान ठीक हुआ । सरदार गुरुमुखसिंह मुसाफिर अहिंसा पर ठीक बोले । सरदार सपूर्णसिंह से बातचीत ।

२०-१२-४०, वर्धा

सेवाग्राम में शाम की प्रार्थना । बाद में पू० बापूजी से पहले

सीतारामजी सेक्सरिया के प्रोग्राम की चर्चा। स्लोगन पर विचार-विनिमय। नीचे लिखे अनुसार खुलासा—

It is wrong to help the British war effort with men or money The only worthy effort is to resist all war with nonviolent resistence,

"इस अंग्रेजी लडाई में आदमी या पैसे से मदद देना हराम है। लडाइयो का सही विरोध अहिसा से ही हो सकता है।"

कविता मे—

ब्रिटिश युद्ध-प्रयत्न में जन-धन देना भूल है।
सकल युद्ध-अवरोध का यत्न अहिंसा मूल है।

२१-१२-४०, वर्धा-जेल

सुबह ४ वजे उठा। प्रार्थना मे शामिल हुआ। बापू से बातचीत। रात को जो विचार चलते थे, उस बारे में तथा आज की सभा के स्टेटमेंट वगैरा के बारे मे चर्चा। इतने मे खबर आई कि पुलिस गिरफ्तार करने मोटर लेकर आई है। बापू ने महादेवभाई को भेजा। गिरफ्तारी का सैक्शन पूछा। डिफेंस ऑफ इंडिया ऐक्ट मे देखा। बराबर पता नही लगा। वहा पुलिस-अधिकारियो की बात से मालूम हुआ कि मुझे नजरबद करेंगे। पू० बापू, बा व प्रह्लाद हरिजन ने अपने हाथ के सूत का हार पहनाया। खूब प्रेम-पूर्वक आशीर्वाद। प्राय: सब लोग मोटर तक आये। पू० बा ने वंदेमातरम् गीत गाया। कलेवा कराया। आश्रम की बहने वर्धा से चलकर आईं, वे सब मिली। वहा से अपनी मोटर मे वर्धा। बगले पर मुह-हाथ धोया। बाद मे मजिस्ट्रेट श्री कुंते के घर ले गए। उन्होंने धारा १२१ समझाई। जेल मे पैदल गया।

कोर्ट का काम १२ बजे चला। मेरा स्टेटमेंट वगैरा रेकार्ड हो गया। २। बजे जज ने ९ महीने कैद, पाच सौ जुरमाना। जुरमाना वसूल न हुआ तो सजा ज्यादा नही। 'ए' क्लास की सिफारिश। मैंने धन्यवाद देते हुए कहा कि सजा कम दी गई।

२७-१२-४०, नागपुर-जेल

श्री रविशंकरजी शुक्ल मिलने आये। कहने लगे कि वह तथा श्री

द्वारकाप्रसाद मिश्र कल सुबह सिवनी-जेल मे ट्रासफर होनेवाले हैं। देर तक बातचीत। इनका लडका भगवती व कुमारी दुर्गा भी पहुच गए। बापू को तार भेज दिया। मैंने विवाह करा देने की सलाह दी।

३०-१२-४०, नागपुर-जेल

आज से विनोबा का भाषण शुरू हुआ। विनोबा ने बापू की ट्रस्टीशिप की कल्पना की सुन्दर व्याख्या की। कबीर का दोहा समझाया—

पानी बाढ़ौ नांव में, घर में बाढ़ौ दाम।
दोनो हाथ उलीचिये, यही सयानो काम॥

डायरी के अंश

१९४१

१-१-४१, नागपुर-जेल

रात को नींद कम आई। स्वप्न मे विचार शुरू हुए। पू० बापू तथा किशोरलालभाई ने मेरी कमजोरियो की छानबीन की। श्री जानकीदेवी, मजुकेशा इत्यादि गवाह थे। विट्ठल नौकर भी। इस प्रकार की विचार-धारा के स्वप्न मे ही, मेरी समझ से, रात का बहुत-सा हिस्सा चला गया।

आज से नई डायरी शुरू की। मन मे ही विचार-विनिमय होता रहा।

४-१-४१, नागपुर-जेल

मुलाकात के लिए चि० शान्ता, मदालसा और श्रीमन्नारायण आये। प्यारेलाल की मुलाकात का बापू का सन्देश मिला।

जानकीदेवी सेवाग्राम मे है। बापू ने उसे उपवास पर रखा है।

६-१-४१, नागपुर-जेल

डॉ० दास के बारे मे सुपरिटेडेट से पूछा तो उन्होने कहा, उन्हे नही बुला सकते और न ही उनसे जाच करा सकते हैं। वह मुझसे मिलकर बात करना चाहे तो कर सकते है। बाद मे उन्होने थोडी विचित्र-सी बाते की—याने आप तो इनवेलिड (अशक्त) है। महात्माजी ने सत्याग्रह की इजाजत कैसे दी ? यह कोई 'रेस्ट क्यूअर' स्थान थोडे ही है ! अगर आपको बाहरी ट्रीटमेण्ट चाहिए या इलाज के लिए बार-बार मेयो अस्पताल भेजना पडा तो सरकार आपको रिहा कर देगी, इत्यादि। मैंने उन्हे कहा कि डॉ० दास जाचकर के खानपान-वगैरा बतलानेवाले थे। यदि आप मजूर करते तो उसका अमल होता रहता। महात्मा गाधी ने इजाजत कैसे दी, यह प्रश्न सरकार की ओर से आपको पूछने का कोई कारण नही। सरकार को पूछना होगा, तो पूछेगी। और मै तो जेल के गेट के बाहर—मेयो अस्पताल वगैरा जाना भी नही चाहता। यह मैंने पहले ही कह दिया था। इसपर

उन्होंने कहा कि आपके स्वास्थ्य की जिम्मेवारी सरकार की है। तब मैंने कहा कि ठीक है। मैं अपने खर्चे से खाने का जो सामान मगाता हू, वह बन्द कर देता हू। जब आपपर जिम्मेदारी है तो आप जैसा ठीक समझे करे। उन्होंने कहा कि ठीक है। बाद मे मैंने डा० दास को न भेजने के बारे मे इनकी इजाजत से पत्र लिखकर भेज दिया। प्यारेलाल से भी देर तक बातचीत होती रही।

१०-१-४२, नागपुर-जेल

रामनरेश त्रिपाठी की लिखी हुई अपनी जीवनी पढना शुरू की। देर तक आखो से पानी बहता रहा---खुद की कमजोरियो का खयाल आकर, विशेषतया मेरी जीवनी लिखने की बापू की स्वीकृति का जिक्र पढकर।

११-१-४१, नागपुर-जेल

चार बजे के बाद कमलनयन, सावित्री, रामकृष्ण व सुशील नेवटिया आदि को, मेरे स्थान पर ही, एक आफिसर मुलाकात के लिए लेकर आये। बाद मे जेलर श्री पाठक आ गए।

जानकीदेवी को आज उपवास का दसवा रोज है। बापू ने घाव देखा। पृथ्वीसिह मालिश देते है। उमा खूब सेवा करती है। सब बाते सुन व समझकर समाधान मिला।

'खोटा पैसा व खोटा बालक समय पर काम आते हैं,' जानकी का यह सन्देश मिला। सुख हुआ।

१३-१-४१, नागपुर-जेल

सुपरिटेडेट पहले राउड पर आ गए। स्वास्थ्य आदि के समाचार पूछ गए। बाद मे दुबारा फिर आये। उनकी माताजीकी मृत्यु हो गई। उनसे समवेदना प्रकट की।

बापू ने मेरे बारे मे महादेवभाई के जरिये यह पत्र लिखवाया कि कमलनयन के मिलने पर मुझसे कहा जाय कि मैं जो ज्यादा दूध, फल वगैरा ले रहा था, वह चालू रखू। यह पत्र सुपरिटेडेट ने मुझे पढाया। मेरे साथ देर तक चर्चा की। मुझे अपने खर्च से दूध-फल लेना चाहिए, आदि समझाने लगे। पहले उनसे जो बात हुई थी, वह मैंने दोहराई। ब्रिजलाल बियाणी, प्यारेलाल मौजूद थे। शाम को विनोबा से भी इस सम्बन्ध मे विचार-

विनिमय हुआ। उन्होने भी कहा कि दूध-फल लेना शुरू कर देना ठीक रहेगा।

१४-१-४१, नागपुर-जेल

विनोबा १॥। से २॥ तक आये। बातचीत। बापू को अपनी शारीरिक व मानसिक स्थिति का समाचार उनके मार्फत भेज दिया।

विनोबा कल जेल से छूटनेवाले है, इस कारण कई मित्रो ने चरखा-सघ के सूत-सदस्य होने का निश्चय किया।

१५-१-४१, नागपुर-जेल

विनोबा आज छूटनेवाले है, इसलिए जल्दी ही उनके पास गया। करीब ८॥। बजे उनके साथ थोडा घूमना व मामूली बातचीत हुई—ब्रह्मदत्त, ब्रिजलाल, जानकीदेवी आदि के बारे मे। वह अन्दर के फाटक के बाहर गये। विनोबा के वियोग से, जोकि थोडे समय के लिए ही मालूम देता है, बुरा मालूम दिया। विनोबा के प्रति दिन-दिन श्रद्धा बढती ही जाती है। परमात्मा अगर मुझे इस देह से उनकी श्रद्धा के योग्य बना सकेगा तो वह दिन मेरे लिए धन्य होगा। मुझे दुनिया मे बापू पिता का और विनोबा गुरु का प्रेम दे सकते है, अगर मै अपनेको योग्य बना सकू तो।

अकोलावाले श्री दादा गोले से देर तक बातचीत। मथुरादास गोपालदास के मामले मे इनपर पू० बापूजी की भेट का परिणाम समाधान-कारक हुआ।

१८-१-४१, नागपुर-जेल

मेरे खानपान के बारे मे डॉ० दास पू० बापू से सलाह कर लिख भेजेगे। मेरा ब्लडप्रेशर १०२ व १४८ है। और सब ठीक है।

२५-१-४१, नागपुर-जेल

विनोबा से मुलाकात हुई। बापू, जानकी आदि के समाचार मालूम हुए।

८-२-४१, नागपुर-जेल

राजकुमारी अमृतकौर, श्री आर्यनायकम् और चि० मदालसा मुलाकात के लिए आये थे। सामान सभलवाने दामोदर भी आ गया था। बापू का स्वास्थ्य ठीक है। बापू का ब्लडप्रेशर सुबह १५३ व ९६ था। दोपहर को कम हो जाता है। वजन १०८ है। बापू का 'हरिजन' का प्रकाशन

शुरू करने का विचार नही है। सरकार से समझौते की कोई आशा नही है। आज के 'टाइम्स ऑफ इडिया' मे इस सबध मे अग्रलेख है। बापू की कडी टीका है। मेरे नाम का भी गलत उपयोग किया है।

सेवाग्राम के पानी की जाच कराई थी। वह ठीक निकला। मीराबहन और अम्तुल वापस सेवाग्राम आगए है।

शाम की प्रार्थना के बाद विनोबा ने बापू का सन्देश सुनाया।

९-२-४१, नागपुर-जेल

जेल के राजनैतिक सत्याग्रही को विनोबा ने कल बापू के जो विचार सुनाये थे, उसपर आज विचार-विनिमय, टीका-टिप्पणी व मजाक होता रहा, वह सुना।

१५-२-४१, नागपुर-जेल

आचार्य कृपलानी, श्रीमन्नारायण व दामोदर मुलाकात के लिए आये। कृपलानीजी ने कहा कि जवाहरलाल को पूरा समाधान व सतोष है। राजाजी के विचारो मे विशेष फर्क नही है। समाधानवालो को सरकार की ओर के व्यवहार से सतोष नही है। जानकीदेवी अभी एक सतरे, अगूर व सब्जी के रस पर है। तीन-साढे तीन मील रोज घूम लेती है। बापू खूब आनन्द मे है। मदालसा सेवाग्राम रहती है।

बापूजी पर टाइम्स ऑफ इडिया ने जो टीका की थी, उसका खुलासा आज छपा है—

"Civil Disobedience will certainly be withdrawn if free speech is genuinely recognised and status-quo restored"

(अगर भाषण की स्वतत्रता सच्चे तौर पर मान ली गई और यथा-स्थिति कायम कर दी गई तो सत्याग्रह जरूर वापस कर लिया जायगा।)

२८-२-४१, नागपुर-जेल

पू० गाधीजी को नीचे लिखे अनुसार प्रयाग तार किया—

"Pray Hospital prove worthy Kamla's memory, Agreeable Narialwallas proposals regarding accounts Suggest another treasurer appointment preferably Allahabad"[1]

—Jamnalal

---

[1] कमला नेहरू-अस्पताल के उद्घाटन के अवसर पर।

(भगवान् से प्रार्थना है कि अस्पताल कमला की यादगार के योग्य वन। हिसाव के वारे मे नारियलवाला के सुझाव से सहमत हू।) मेरा सुझाव है कि एक दूसरे कोषाध्यक्ष की नियुक्ति की जाय। वह इलाहावाद का हो तो अच्छा। —जमनालाल

२-३-४१, नागपुर-जेल

वापूजी आज इलाहावाद से वर्धा पहुच गए। जवाहरलालजी लखनऊ-जेल ले जाये गए।

६-३-४१, नागपुर-जेल

"मेरी सलाह तो यह है कि हमे देहातो मे जाकर व्यक्तियो की सेवा करने की तरफ अपना खयाल रखना चाहिए, न कि सारे समाज की तरफ।"

"बापूजी के लेख मुझे कम ही याद आते है, लेकिन उनके हाथ का परोसा हुआ भोजन मुझे हमेशा याद आता है, और मै मानता हू कि उससे मेरे जीवन मे वहुत परिवर्तन हुआ है।"

—'विनोवा के विचार' मे से।

९-३-४१, नागपुर-जेल

निर्भयता के बारे मे वापू और विनोवा के विचार समझे।

बापू वताते है कि निर्भय सेवक का कर्त्तव्य यह है कि हमे सुकरात की तरह जीना और मरना सीखना चाहिए।

विनोवा निर्भयता के प्रकार मे वताते है कि (१) विज्ञ निर्भयता वह निर्भयता है, जो खतरो से परिचय प्राप्त करके उनका इलाज जान लेने पर निर्माण होती है। (२) ईश्वर-निष्ठ निर्भयता मनुष्य को पूर्ण निर्भय बनाती है। (३) विवेकी निर्भयता—मनुष्य को ऊटपटाग और अनावश्यक साहस नही करन देती।

१३-३-४१, नागपुर-जेल

विनोवा का लेख 'आत्मशक्ति का भान' पढा। उसमे लिखा निम्न विचार पसद आया, "गाधीजी का जन्मदिन है। आइये, हम ईश्वर से प्रार्थना करे कि हमारे देश मे सत्पुरुषो का ऐसा ही अखड प्रवाह चलता रहे।"

२९-३-४१, नागपुर-जेल

शान्ताबाई, रामकृष्ण, चिरजीलाल और दामोदर मुलाकात करने को आये। रामकृष्ण ने कहा कि बापूजी ने उसे सत्याग्रह की इजाजत दे दी है। राम के विचार व निर्णय की शक्ति आदि देखकर सुख व समाधान मिला। पढाई के बारे मे उसे पढाई कॉमर्स कालेज, वर्धा मे ही करने की मैंने राय दी, जो उसने भी पसन्द की।

३१-३-४१, नागपुर-जेल

ब्रिजलाल बियाणी ने बापू से मेरा परिचय किस प्रकार हुआ व मुझपर किन-किन बातो का प्रभाव पडा, इस बारे मे आज से नोट लेना शुरू किया।

४-४-४१, नागपुर-जेल

मैंने विनोबा से कहा कि अगर आप मेरी पूरी जवाबदारी लेने को तैयार हो तो आपकी देखरेख मे मै काम करने को तैयार हू। मेरी कमजोरिया, योग्यता, अयोग्यता देखकर मुझे काम सौपा जाय। उन्होने कहा कि मुझे भी तो बापू ने खूटे से बाध रखा है। मै तो स्वय ही उडना चाहता हू, बन्धन से मुक्त होना चाहता हू।

५-४-४१, नागपुर-जेल

राधाकिसन मुलाकात के लिए आया। लक्ष्मीनारायण मदिर के प्लान पर उससे विचार-विनिमय किया। मैंने कहा कि बापू, श्री मेहता, गुलाटी व तुम्हे, जैसा ठीक लगे, वैसा करो।

१५-४-४१, नागपुर-जेल

आज मेरा मन किस प्रकार के सबध मानना चाहता है, यह विचार चला—पिता—बापूजी (गाधीजी), गुरु—विनोबा, माता—मा व बा (कस्तूरबा), भाई—जाजूजी, किशोरलालभाई, बहन—गुलाब, गोमती-बहन, लडके—राधाकिसन, श्रीमन्नारायण, राम, लडकिया—चि० शान्ता (रानीवाला), मदालसा।

२२-४-४१, नागपुर-जेल

विनोबा के आश्रम तक जाकर आया, तो आज आते समय थकावट काफी मालूम दी। पहले इतनी नही मालूम दी थी। विनोबा से 'टाइम्स

ऑफ इडिया' के लेख व बापू के स्टेटमेट पर विचार-विनिमय हुआ।

२३-४-४१, नागपुर-जेल

चि० सावित्री सेवाग्राम मे इस गर्मी मे कुछ दिन रह गई, जानकर सुख मिला। वह कल बबई जानेवाली है। बबई का वातावरण कौमी दगो के कारण थोडा ठीक नही दीखता। कुछ दिन ठहर जायगी, तो ठीक रहे। परन्तु सन्देश भेजने का मौका नही रहा।

२६-४-४०, नागपुर-जेल

लक्ष्मीनारायण गाडोदिया दिल्लीवाले, राधाकिसन और दामोदर मुलाकात के लिए आये।

बापू के तीन दिन के उपवास के बारे मे व अहमदाबाद तथा बम्बई के दगो के बारे मे बापू की मनोव्यथा आदि जानकर चिन्ता होना स्वाभाविक था। ईश्वर सहायक है।

२७-४-४१, नागपुर-जेल

कल बापू ने ऐमरी के जबाब मे जो वक्तव्य दिया, वह विनोबा के साथ सुना। उसपर थोडी चर्चा हुई। हम सबोको वक्तव्य बहुत पसन्द आया। बापू के हृदय की जलन व दुःख उसमे प्रकट होता था। बहुत ही स्पष्ट था।

३-५-४१, नागपुर-जेल

पू० राजेन्द्रबाबू, गुलाबबाई, दिलीप और हरगोविन्द मुलाकात को आये। प्रो० त्रिवेदी का आखिर शुक्रवार को प्रात २ बजे शरीर छूट ही गया। बापूजी व जानकी ने रात को ही उनकी स्त्री व पुत्र मन्नूभाई से मिलकर उन्हे सान्त्वना दी। जानकीदेवी दूसरी बार भी मिल आई। मेरी इच्छा थी कि इनकी अग्नि-सस्कार क्रिया अपने खेत मे करते तो ठीक रहता। इनका एक छोटा-सा स्मारक वर्धा मे बनाने की इच्छा है।

९-५-४१, नागपुर-जेल

कमिश्नर श्री राव जेल के राउड पर आये। स्वास्थ्य वगैरा की पूछताछ की। बाद मे मैने, नागपुर के डिप्टी कलक्टर ने व्यापारी-मडल को जो अनुचित जवाब दिया, उस बारे मे बताया और कहा कि गुडो का जोर बढता जा रहा है। व्यापारियो को तग किया जा रहा है। व्यवस्था ठीक नही हो रही है। हिन्दू-मुस्लिम दगे की भी सभावना हो सकती है। आप हिन्दुस्तानी है और

बडे अधिकारी हैं। ठीक व्यवस्था रहनी चाहिए। अगर दगा हो गया तो महात्माजी का यहा आकर दगे के बीच जाना सभव है, इत्यादि बाते समझाई। उन्होने कहा कि डिप्टी कलेक्टर ने खुलासा किया है कि उसने ऐसा नही कहा है। वह इस बारे मे पूरा खयाल रखेगे, वगैरा।

१४-५-४१, नागपुर-जेल

आज प्राय सारी रात नींद नही आई। पहले हवा का जोर रहा, बाद मे विचार चालू हो गए। वर्धा-जेल मे मुझे भेज दे तो मुझे थोडी तकलीफ रहेगी, पर डॉ० दास, बापूजी, जानकी आदि की तकलीफ व चिता कम हो जायगी। पहले तो ग्रेवाल ने कहा था कि वर्धा जाना चाहोगे तो जा सकोगे। परन्तु अब कहते है कि देखेगे। वर्धा-जेल जाना अगर सभव न हो तो फिर मुझे कुछ समय के लिए मेयो अस्पताल (नागपुर) ही जाना स्वीकार कर लेना चाहिए।

बापूजी और विनोबा भी मुझपर इतना प्रेम क्यो करते है? बापूजी को मेरी इस बीमारी के कारण दो-तीन रोज बहुत चिता व परेशानी रही ऐसा डॉ० दास कहते थे। वह तो यहा मुझे देखने के लिए आने को भी तैयार थे। परन्तु मेरे मना करने पर व डॉ० दास के यह कहने पर कि जरूरत नही है, रुके। रात को बडी देर तक मेरे मन मे यही विचार चलता रहा कि मै पापी हू, विश्वासघाती हू। क्या मैने अपना असली रूप बापू व विनोबा को बता दिया है? एक मन तो कहता था कि कई बार तो बता दिया है; पर दूसरा कहता था कि नही, साफ तौर पर, बिलकुल नग्न रूप मे सामने नही

प्रयोग हो ही चुका था। परमात्मा से प्रार्थना करता रहता हू। देखे, क्या परिणाम लाता हे। इस जन्म मे सद्बुद्धि प्राप्त हो जायगी व स्वच्छ तथा पवित्र सेवामय जीवन बिताते हुए यह शरीर छूट सकेगा तो चित्त को समाधान हो सकेगा, अन्यथा जैसे कर्म किये हैं वैसा फल भोगना भाग है ही। ईश्वर की माया अपरपार है। विनोवा से तो यहा जल्दी ही वात कर लूगा। देखे, कोई राजमार्ग निकलता है क्या ! मुझसे वडी उमर का कोई शुद्ध अन्त -करणवाला भाई या वहन, इस दुनिया मे मिल सकता हो और जो मुझे अपने आश्रय मे लेकर वालक की तरह प्रेम-भाव से, मेरे व्यथित हृदय मे कुछ जीवन पैदा कर सके, तो मुझे शाति मिल सकती हे। ईश्वर की इच्छा होगी, तो यह भी सभव हो जायगा।

रात मे प्राय इसी प्रकार के विचार कई घटो तक चलते रहे। बीच-बीच मे आखो से पानी भी वहता रहा। वालकपन का व तरुण अवस्था का मेरा सकोची, शरमीला व डरपोक मन का स्वभाव पूरी तोर से आजतक कायम रहता तो कितना अच्छा होता ! वुरी सगत का अच्छा परिणाम व अच्छी सगत का बुरा परिणाम। यह कैसी ईश्वरी माया है ! मेरा तो सदा चितन यही रहता है—

मातृवत्परदारेषु परद्रव्येषु लोष्टवत् ।

तथा

न त्वह कामये राज्य न स्वर्ग नाऽपुनर्भवम् ।

१७-५-४१, नागपुर-जेल

डॉक्टर दास वर्धा से आये। उन्होने मेरे स्वास्थ्य की जाच की। वजन १४०, नाडी ७२, टेपरेचर ९७ ८, पेशाव मे दर्द कम। नीद ठीक आई। आज से मगलवार तक ४४ ओस रस—सतरे, मोसम्बी, अनन्नास, सेव आदि का, चार रतल दूध फाडकर व एक आम, यह खुराक लेने को कहा। रोज एनीमा व दो वार टव-वाथ लेना है। यह भी कहा कि वापू की इच्छा है कि मै वर्धा-जेल मे आ जाउ तो ठीक रहेगा। महादेवभाई, गुलजारीलाल नदा व दामोदर मुलाकात को आये। महादेवभाई ने वम्वई व गुजरात की स्थिति कही। वापू की इच्छा वहा जाने की हे, परन्तु सरदार वगैरा इस समय वापू का जाना ठीक नही समझते। वम्वई-गवर्नर से लिखा-पढी इत्यादि चल रही

है। गुलजारीलाल नंदा ने बताया कि चरखा-संघ के एक आदमी ने रुपयों की गड़बड़ी की है। श्री शंकरलाल बैंकर के स्वास्थ्य के बारे में भी बताया।

२१-५-४१, नागपुर-जेल

डॉ० दास व जानकीदेवी मिलने आये। कल व परसों पानी कम पिया गया, उसका डॉ० दास को बहुत बुरा मालूम दिया। आज में रस बढ़ाया गया है। दूध १२ औंस व आम तीन। डॉ० दास का सेवाग्राम से फोन भी आया था। बापू ने यहीं (नागपुर) रहकर मेरा इलाज चालू रखने को कहा है। डॉ० महोदय ने आज की रिपोर्ट दी।

२२-५-४१, नागपुर-जेल

सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० गुप्ता आये। स्वास्थ्य के बारे में कहने लगे कि कमजोरी बहुत हो गई है। बम्बई के श्री भरूचा या डॉ० जीवराज को दिखाना चाहिए। डॉक्टर दास का इलाज, थोड़ा वजन घटे, वहांतक तो ठीक था, पर अब तो वजन ज्यादा कम हो रहा है। मैंने महादेवभाई का नोट उन्हें दिया।

३१-५-४१, नागपुर-जेल

बापूजी ने धन्नालाल व शिवराजसिंह—इन दो सत्याग्रहियों के बारे में पूछताछ करवाई है।

३-६-४१, वर्धा

आज जेल से छूटे। सेवाग्राम जाकर बापू को प्रणाम किया। विनोद। स्वास्थ्य की थोड़ी हकीकत कही। नये अतिथि-घर में ठहरा।

४-६-४१, सेवाग्राम

९-६-४१, सेवाग्राम

आज से चर्खा शुरु किया। वापू का स्वास्थ्य आज खराव हो गया। ज्वर आ गया और अतिसार भी हुआ। प्रयोगो का प्रताप वताया जाता है।

१०-६-४१, सेवाग्राम

वापू का स्वास्थ्य ठीक नही। शाम को उनसे थोडा विनोद।

११-६-४१, सेवाग्राम

डॉ० सुशीला से उसके कल नागपुर जाते समय के व्यवहार के सवध मे कहा-सुनी हुई। वाद मे उसे समझाया। उसका पत्र आया। रात को उसका समाधान किया व उसकी गलती समझाई।

वापू का स्वास्थ्य आज भी ठीक नही हुआ।

१२-६-४१, सेवाग्राम

केशव (जापानी), जो आश्रम मे रहते है, उसे एक पागल ने वहुत वुरी तरह पीटा। केशव ने गजव की शान्ति व अहिसा का परिचय दिया।

१४-६-४१, सेवाग्राम

मेरा स्वास्थ्य साधारण ही है। मानसिक स्थिति पर विचार-विनिमय। घूमते समय जानकीदेवी व शान्तावाई से मन स्थिति कही। जेल मे ता० १४ मई को डायरी मे जो नोट किया था, वह पढकर समझा दिया।

जेल से आने के वाद वापूजी से आज पहली वार खानगी मे वातचीत। किशोरलालभाई, राजकुमारी अमृतकौर, गोमतीवहन, डॉ० सुशीला वहा थे। मैने अपनी मानसिक स्थिति कही। ता० १४ मई को नागपुर-जेल मे डायरी मे जो नोट किया था, वह पढकर सुनाया। अन्य विचार-विनिमय। वापू को डायरी सुनाने के वाद मन थोडा हल्का हुआ।

१५-६-४१, सेवाग्राम

कमला व सरला वियाणी अकोला से आई। वापूजी से उनको मिलाया और परिचय करा दिया।

हीरालालजी शास्त्री, कपूरचन्दजी पाटणी, हरलालसिंहजी, लादूराम जी, रतनवहन वगैरा से जयपुर की स्थिति के वारे मे देर तक विचार-विनिमय। वापूजी से भी मिलना हुआ। उनको स्थिति समझाई व उनकी राय समझी।

शाम को मीराबहन से शान्ति प्राप्त करने के उपाय पर चर्चा ।

१६-६-४१, सेवाग्राम

देर तक जयपुर के सम्बन्ध में विचार-विनिमय । बापू को बातचीत का साराश लिखकर भेजा ।

१७-६-४१, सेवाग्राम

सुबह घूमते समय शान्ताबाई से महिलाश्रम के बारे मे चर्चा । डॉ० दास से स्वास्थ्य-सम्बन्ध मे विचार-विनिमय । हिमालय या काश्मीर जाने के सबध मे विचार । पू० बापूजी आये । उनसे भी विचार-विनिमय । उनकी राय हुई कि जुलाई बाद जाना ठीक रहेगा ।

१८-६-४१, सेवाग्राम

बापू ने चन्द्रभाल जौहरी के बारे मे पुछवाया । मैंने अपनी राय बताई । मीराबहन अपनी स्थिति थोडी ही देर कहने पाई कि इतने मे डॉ० दास मोटर लेकर आगए ।

१९-६-४१, सेवाग्राम

बापू से स्वास्थ्य, प्रोग्राम, मन स्थिति आदि के सबध मे थोडी देर बातचीत । उनकी इच्छा रही कि अभी तो मुझे यही रहना चाहिए ।

मैंने बापू से कहा कि सभव हो तो जब भी आपको अनुकूल हो मुझे रोज १५-२० मिनिट अपना एकात का समय दे ।

२०-६-४१, सेवाग्राम

बापूजी के साथ २॥ बजे चरखा-सघ की बैठक मे पहुचा । पाच बजे तक वहा रहा । ठीक चर्चा व विचार-विनिमय ।

२१-६-४१, सेवाग्राम

चरखा-सघ की बैठक मे पू० बापू के साथ गया ।

२२-६-४१, सेवाग्राम

पू० बापू के साथ चरखा-सघ की बैठक में गया । आज की बैठक बहुत ही गभीर हुई । पू० जाजूजी अपना दु ख कहते-कहते रो पडे । पू० बापूजी को भी कल देशपाडे के कथन व व्यवहार से चोट पहुची । मुझे भी चोट लगी । देर तक चर्चा व विचार-विनिमय ।

२५-६-४१, सेवाग्राम

पू० वापूजी से घूमते समय मन स्थिति पर काफी विचार-विनिमय हुआ। कल फिर वातचीत होगी। चि० राधा (गाधी) के वारे मे मैंने अपने विचार वापू को वताये।

२६-६-४१, सेवाग्राम

पू० वापूजी से आज घूमते समय व वाद मे १० से ११ तक एकान्त मे अपनी मन स्थिति पर साफ-साफ वाते। मैं अपनी स्थिति ज्यादा स्पष्ट तोर से समझा सका। अव मुझे विश्वास हो गया कि वापू मेरी स्थिति पूरी तौर से समझ गए है। परमात्मा ने चाहा तो शाति का कोई-न-कोई मार्ग निकल आयगा।

पू० वापूजी की आज्ञा लेकर वम्वई रवाना हुआ।

५-७-४१, नासिक रोड

पू० वापूजी का तार मिला। राजकुमारी वहन का शिमला आने का निमत्रण आया है। मुझे वर्धा वुलाया है। मैंने सोम या वुधवार तक पहुचने का लिखा।

६-७-४१, वर्धा

वापू से मिला। वातचीत हुई। ता० १५ को शिमला जाने का निश्चय हुआ।

९-७-४१, वर्धा

सुवह ४ वजे घूमने निकला। सरदार पृथ्वीसिह व शान्तावाई साथ मे थे। पैदल सेवाग्राम गया। वापू रास्ते मे मिले। उनसे थोडा विनोद।

पू० वापू से ३ से ४ वजे तक वातचीत। वापू ने वताया कि राजकुमारीजी को शिमला मेरी मानसिक स्थिति पूरी तौर से वता दी है। राजकुमारी का आया हुआ पत्र भी पढा। जलियावाला वाग के वारे मे वापू डॉ० गोपीचन्द को लिखेगे। पृथ्वीसिह के वारे मे अपने विचार वापू से कहे। मुझे यह योजना आवश्यक मालूम देती है।

डॉ० सुशीला की भाटुगा मे व्यवस्था करने के लिए प्रहलाद को समझाना। महेश का इलाज, उसे जेल मे जाने की इजाजत नही देना।

वासन्ती के बारे मे बापू ने कहा, 'धीरेन्द्र नही है इसलिए खुलासा नही हो सकता' इत्यादि ।

१०-७-४१, वर्धा

सुबह ४। बजे उठा और पैदल सेवाग्राम गया । राधाकिसन, शान्तावाई व जानकीदेवी से वातचीत । पू० बापू से स्टेटमेट के बारे मे चर्चा । मेरे जेल जाने के बारे मे विचार-विनिमय । जेल जाने की निकट-भविष्य मे इजाजत नही मिली । मानसिक व शारीरिक शक्ति आने पर ही विचार होगा । स्टेटमेट निकालने की जरूरत नही ।

११-७-४१, वर्धा

शाम को थोडी वर्षा खुली । मोटर मे सेवाग्राम गया । खानसाहव साथ मे थे । डॉ० दास, महेश, जानकीदेवी व मदू से बाते । वापसी मे महादेव-भाई साथ आये । देहरादून-जेल मे जवाहरलालजी से जो बाते हुई, वे महादेवभाई ने सविस्तर कही । सुनकर सुख व समाधान मिला । भूलाभाई तथा मौलाना के विचार व स्थिति समझी । कोई आश्चर्य नही हुआ । सरदार, मुशी वगैरा के बारे मे बाते हुई ।

१२-७-४१, वर्धा

महादेवभाई दिल्ली गये । सेवाग्राम मे बापू से मिला । जानकीदेवी व मदालसा से बातचीत ।

१३-७-४१, वर्धा

सेवाग्राम पैदल गया । वहा बापू के साथ घूमना । स्वास्थ्य के बारे मे तथा शिमला के बारे मे सूचना । विनोवा व काकासाहव से अखाडे, लाठी, तलवार सिखाने आदि के सवध मे ठीक चर्चा । वम्बई हिन्दी-प्रचार के बारे मे काकासाहव व नानावटी की भूल पर बापू ने उलहना दिया ।

१४-७-४१, वर्धा

विनोवा ने शाम को ६ बजे नालवाडी मे सत्याग्रह किया । पौन घटा भाषण हुआ । भाषण अच्छा था । सेवाग्राम मे प्रार्थना । बापू ने मन स्थिति पूछी । मैंने वताया कि कोई विशेष सुधार नही हुआ ।

रामकृष्ण व दुर्गाबहन से बातचीत ।

विनोवा गिरफ्तार कर लिये गए ।

१६-७-४१, आगरा-दिल

आगरा से मथुरा तक रामकृष्ण डालमिया से बातचीत । कल ज
बाते की थी, उसीपर विचार-विनिमय । गो-सेवा-सघ के बारे में पू० बापूज
की इच्छा व आज्ञा के अनुसार काम करना तय हुआ ।

१७-७-४१, शिमला वेस्ट (मेनर विला

शिमला पहुचा । राजकुमारी बहन व डॉ० शमशेरजग व उनकी स्त्र
मिले । स्नान, भोजन, बातचीत । बापू को तार व पत्र भेजा ।

१८-७-४१, शिमल

बापू का हृदय-स्पर्शी पत्र मिला । उसका जवाब भेजा । प्रभावती
पत्र का भी जवाब भेजा ।

२४-७-४१, शिमल

राजकुमारी बहन से देर तक बातचीत—सेवाग्राम के सबध मे खासक
बहनो के सबध मे । चरखा काता । साढे नौ बजे सोने चला गया । पर नीद नह
आई । जयपुर के सबध मे और वहा के बारे मे बहुत देर तक विचार चल
रहे । कई योजनाओ व सुधारो पर विचार चलता रहा । बाद मे मानसि
स्थिति पर विचार शुरू हो गए । अगर जानकी मे उदारता, विश्वास
नि स्वार्थ प्रेम बढ सके तो बहुत-कुछ शान्ति मिल सकती है, अन्यथ
पू० बापू जानकी से बाते करे । राजकुमारी बहन की सगत तो हमेश
मिलना सभव नही, तथा वह व्यवहार्य भी नही है । इसलिए अगर चि
शान्ता, मदालसा, रेहाना, गुलाब इनमे से कोई मेरे साथ रहे, तो मुझ
शाति मिल सकती है । क्योकि इनके हृदय मे मेरे प्रति उदारता व प्रे
विशेष रूप से दिखाई देता है । वैसे तो प्रभा व सुशीला मे भी है, परन्
वह सभव नही । बापू से बात करना होगा ।

एक बजे अन्दाज जाकर नीद आई ।

२६-७-४१, शिमल

दिल्ली से रघुनन्दन सरन के भेजे हुए श्री कृष्ण नायर आये । आगरा
जेल मे जो नजरबद भूख-हडताल कर रहे है, उनके बारे मे राजकुमार
बहन लिखा-पढी कर रही है । आज उन्हे भी सतोषजनक जवाब मिला
भूख-हडताल बन्द हो गई ।

आसफअली ने जेल से १६ पेज का लवा पत्र भेजा। सरकार ने उसका फोटो ले लिया। पत्र शायद मौलाना को भेजा हो। डॉ० चौइथराम बापू के बहुत विरुद्ध है, और भी लोग प्राय मुशी-जैसे विचार रखते हैं। पजाब मे बहुत थोडे लोग है, जो बापू की अहिसा की व्याख्या को मानते है। देवदास गाधी को जयपुर के बारे मे पत्र भेजा।

५-८-४१, शिमला

साढे चार बजे उठा। प्रार्थना की। अभयदेव ने माता आनन्दमयी का जो परिचय थोडे मे लिखा, वह पूरा पढा। इनसे मिलकर कुछ समय इनके पास रहने की इच्छा हुई। बापू ने भी इनसे मिलने के लिए लिखा था।

७-८-४१, शिमला

गुरुदेव टैगोर की मृत्यु की खबर १ बजे करीव लगी। आज १२-१० पर वह चले गए। राजकुमारी बहन को वहुत ही बुरा लगा। दु ख तो मुझे भी हुआ, परन्तु गुरुदेव की दृष्टि से तो ठीक ही हुआ है, ऐसा भी लगा। रात को रेडियो पर उनके समाचार सुने। हुगली के किनारे उनका दाह-सस्कार हुआ। बगाल के गवर्नर, महात्माजी आदि के संदेश सुने। कलकत्ता मे हाइकोर्ट वगैरा बन्द हुए। सरकारी झडा आधा झुकाया गया था। जबरदस्त शमशान-यात्रा निकली।

९-८-४१, शिमला

सुबह उठने के बाद और विचार चलते रहे। जयपुर के बारे में, सर फ्रासिस वायली दौरे से आगए हो तो मिलना चाहिए या नही ? सर गिरजाशकर वाजपेयी से तो खुलकर बाते हो ही गई थी। उनकी राय राजकुमारी वहन, जवाहरलाल व वापू को तो मालूम थी ही। आखिर जव मैं फैसला नही कर सका तो परमात्मा का स्मरण कर चिट्ठी[1] डाली। चिट्ठी उनसे मिलने के प्रयत्न के पक्ष मे आई। राजकुमारी वहन से कहा। श्री शिवराव के जरिये प्रयत्न शुरु किया।

---

[1]जब कभी जमनालालजी के सामने किसी प्रश्न के संबंध में समान महत्त्व का होने के कारण निर्णय पर पहुंचने में उलझन होती, तो वे चिट्ठी डालकर निर्णय कर लिया करते थे।

११-८-४१, शिमला

सुवह घूमते समय सरदार उमरावसिंह शेरगिल को वापू की गीता तथा विनोवा का परिचय ।

शाम को तारादेवी की ओर घूमने निकला । मुशीजी नही आ सके । मिस वरिल साथ मे थी । सुबह बापू के परिचय का हाल व वाद मे अहिसा के सवध मे वाते । विनोवा का ठीक परिचय कराया । मेरे विचारो पर चर्चा होती रही । वहुत ही दयालु हृदय की लडकी है ।

१६-८-४१, देहरादून

स्नान-आदि से निवृत्त होकर माता आनन्दमयी (कमला नेहरू की गुरु) से राजपुर मे मिलना हुआ । इनसे मिलने के लिए वापू ने भी लिखा था । १०। से १२। तक दो घटे करीव वहा ठहरा व वातचीत की । इनके प्रति आकर्षण हुआ । अपनी मन स्थिति कही—सभीके सामने । वाद मे एकान्त मे भी । उन्होने प्रेमपूर्वक कुछ समझाया । मेरे सिर पर हाथ फेरा । शायद गोद मे सुलाने का भाव हो । गोद की इजाजत दी । जाने के पहले फिर मिलने की इच्छा । स्थान रमणीय व सुन्दर मालूम दिया ।

जवाहरलाल व रणजीत पडित से जेल मे मिला । वहा कृष्णा व राजा हठीसिग भी मिलने आये थे । देर तक बातचीत व विनोद । उनके विचार जान । इन्दु, बापू, व सुभाष के बारे मे बाते । फल खाये । जेलर श्री काजमी सज्जन पुरुष है ।

१९-८-४१, राजपुर-देहरादून

बापू को तार व पत्र लिखा ।

२०-८-४१, राजपुर

मा आनदमयी से एकान्त मे मन स्थिति पर विचार-विनिमय । मा पर ठीक श्रद्धा वढती जा रही है । परमात्मा की वडी दया है । वापू सरीखे 'पिता' व माता आनन्दमयी का 'मा' के प्रेम का सौभाग्य मुझे इसी जन्म मे प्राप्त हो रहा है । अब भी मै नालायक रहा तो मेरा ही दोष या पाप समझना चाहिए । सभव है कि अव मेरा जीवन शुद्ध हो जाय ।

२१-८-४१, राजपुर-देहरादून

बापू का तार मिला । 'Glad stay at will' (खुशी है । जव

तक इच्छा हो, (मा के पास) ठहरो) । मा से एकान्त मे बातचीत। १४ मई की जो डायरी नागपुर-जल मे लिखी थी और बापू को वर्धा मे सुनाई थी, वह उन्हे पढकर सुनाई व समझाई । वैसे उसका सार तो पहले कहा ही था ।

२३-८-४१, राजपुर

बापू का तार आया । महेश को वही रखना ठीक रहेगा । शान्ताबाई को, वह पसन्द करे तो, भेजने का लिखा है ।

२६-८-४१, राजपुर

मा का प्रेम, प्रसाद, अमृत-पान मिला । इससे खूब सुख व समाधान मिला । आशा हो गई कि भावी जीवन समाधानकारक व शातिपूर्वक बीतेगा ।

२८-८-४१, राजपुर

श्री गौरीशकर झवर के साथ उनके घर भोजन । उनकी पुत्री कुमारी लीलावती झवर, एम० ए०, बी० टी० से पारमार्थिक चर्चा । उनके आध्यात्मिक गुरु श्री सियाशरणदासजी, मा आनन्दमयीजी व महात्मा गाधीजी के बारे मे चर्चा । उन्होने कहा कि गाधीजी के बारे मे आकाशवाणी सुनी गई थी कि वह पूर्वजन्म मे सीताजी थे । देवताओ की प्रार्थना से यहा जन्म लिया है, इत्यादि ।

३१-८-४१, कनखल-हरिद्वार

पू० बापू का तार आया । मा (आनन्दमयी) के साथ आने को लिखा । मा की इच्छा विन्ध्याचल वगैरा होकर बाद मे आने की है ।

२१-९-४१, वर्धा-सेवाग्राम

रात को नीद नही आई, पहले खासी आती रही । कोई २ बजे से पहले से बापू से फैसला करने के बारे मे विचार चलते रहे । स्वास्थ्य, मानसिक स्थिति, सत्याग्रह, जयपुर-सबधी कर्तव्य, हरिजन-सघ, खादी, गो-सेवा-सघ पर खासकर देर तक विचार चलता रहा । जयपुर-सुधार पर भी ।

सेवाग्राम जाकर बापू को प्रणाम किया । भोजन के समय व ३।। बजे बातचीत हुई । सुभाषबाबू व जवाहरलाल के बारे की खानगी बात भी हो गई । मेरे प्रोग्राम के बारे मे मैने चार प्रस्ताव रखे—

१ सत्याग्रह करके जेल जाना । बापू ने कहा—बिलकुल नही ।

२ जयपुर का बाकी रहा कार्य करना। बापू ने उसके लिए भी 'नहीं' कहा।

३ पवनार या अन्य स्थान मे चरखा, भजन व वाचन में समय बिताना। बापू ने कहा कि 'यह भी ठीक नही।'

४ गो-सेवा का कार्य अगर आप इस समय उपयुक्त व जरूरी समझते हो तो करना। बापू ने कहा—'यह कार्य मुझे पसन्द है, अवश्य किया जाय।'

२२-९-४१, वर्धा

श्रीमन् से बाते। वह आज श्रीनगर (काश्मीर) शिक्षण-परिषद् मे भाग लेने गया।

चि० वासन्ती को देखकर पू० काकासाहब की कल बापू से जो बाते हुईं, वे कही। उनको हरिजनो के सम्बन्ध मे पहले के अनुसार सवर्णो मे काम करने की ज्यादा आवश्यकता मालूम दी। वह बापू को लिखेगे।

चि० राधाकिसन से देर तक बातचीत। वह गो-सेवा का कार्य महत्त्व का, जरूरी व करने योग्य समझता है।

२३-९-४१, वर्धा

सेवाग्राम गया। साथ मे रेहाना व गोपीकृष्ण थे। बापू से थोडी देर बातचीत। हिन्दी साहित्य सम्मेलन की चर्चा।

२८-९-४१, वर्धा

गो-सेवा-सघ, लक्ष्मीनारायण मदिर-ट्रस्ट वगैरा के बारे मे नोट्स लिखे।

पू० बापू से मिला। गो-सेवा-सघ के प्रोग्राम के सबध मे विचार-विनिमय।

३०-९-४१, वर्धा

गो-सेवा-सघ के कार्य का बापू के हाथ से मुहूर्त हुआ। पू० बापूजी ने गो-सेवा-सघ के कार्य का उद्घाटन किया। मेरी जिम्मेदारी पर सुन्दर विचारणीय भाषण व आशीर्वाद। नालवाडी के ऊपरवाले यानी उत्तर भाग का नाम 'गोपुरी' रखा गया।

१-१०-४१, वर्धा

पू० बापूजी, राजेन्द्रबाबू, राधाकृष्ण, काकासाहब, स्वामी आनन्द, परमेश्वरी वगैरा की हाजिरी मे गो-सेवा-सघ का विधान निश्चित हो गया।

गाधी-जयन्ती के निमित्त गाधी-चौक मे ५।। से ६। तक सामुदायिक कताई मे चरखा काता। पू० राजेन्द्रबाबू भी साथ मे थे।

२-१०-४१, वर्धा

सेवाग्राम गया। पू० बापू का जन्म-दिन था। उनको प्रणाम किया, बातचीत व चर्चा। बापू ने महिला-आश्रम की बहनो को उपदेश दिया—विनोद भी किया। रिषभदास राका के मन मे जो हलचल चल रही थी, उसकी सारी स्थिति समझकर बापू ने उसे मेरे पास ही गो-सेवा का कार्य करने की आज्ञा दी।

३-१०-४१, वर्धा

चि० मदू के पास बैठा। उसके पास पद्मावाई, कृष्णाबाई, सत्यप्रभा व काशी थी। प्रार्थना की। मदू को सुबह ५-४८ पर लडका हुआ। वजन ६।। रतल। बालक व मदू प्रसन्न थे। बापू को फोन किया।

पू० बापू से मिलना हुआ। पू० बा व डॉ० दास आये। बापू के हाथ के शहद व पानी की घूटी पू० बा ने दी।

४-१०-४१, वर्धा

सेवाग्राम गया। बापू से फिरोज गाधी को मिलाया। कल इतवार को सुबह इनसे खानगी मे बात करेगे।

फिरोज गाधी से साफ-साफ बातचीत, खुलासा व शका-समाधान होता रहा।

५-१०-४१, वर्धा

सेवाग्राम गया। बापू से फिरोज गाधी की बातचीत कराई।

खादी-कार्य के लिए जाजूजी के साथ जगह देखी। कालेज के लिए भी जमीन देखी।

फिरोज गाधी से बापू की बात हुई। मैंने उसे कहा कि जवाहरलाल व बापू के आशीर्वाद प्राप्त करने का पूर्ण आग्रह रखना ही चाहिए। समय लगेगा, तो लगाऊगा।

१३-१०-४१, बंबई

सुव्रतावहन से गो-सेवा-सघ व खादी-कार्य के बारे मे सविस्तर लबी चर्चा। विचार-विनिमय होता रहा। बापूजी के समागम मे ज्यादा

रहने के लिए उन्हे समझाया। स्वीकार तो कर लिया है, रहे जब की बात।

१९-१०-४१, वर्धा

चार बजे उठा। निवृत्त हुआ। ब्रिजलालजी बियाणी ने विनोबा की जो जीवनी लिखी है, वह श्री धोत्रे को देखने को दी। बापू से भी बातचीत की।

सेवाग्राम गया—जानकी, दामोदर साथ मे। घूमते समय बापू ने तीन बातो पर विचार करने का कहा—

१ रामकृष्ण डालमिया व बीकानेर-भाषण तथा अन्य शिकायते। थोडी चर्चा के बाद मैंने कहा कि कई कारणो से मैं खुद ही इन बातो पर विचार कर रहा हू।

२ मेहमानो का भार ज्यादा पडता होगा, इसकी व्यवस्था के बारे मे देर तक चर्चा। सेवाग्राम तथा वर्धा के बारे मे भी।

३ महेश मिश्र के लिए पत्ती की सब्जी व अगूर की व्यवस्था।

४ मथुरादास त्रिकमजी की बीमारी का हाल कहा।

५ गो-सेवा-सघ के बारे मे भी थोडी चर्चा हुई।

६ मेरे घुटने के दर्द व ऐक्स-रे की चर्चा। मलबार-मसाज (मालिश) के बारे मे कहा कि कराके देखो।

२३-१०-४१, वर्धा

३ बजे बापू ने सेवाग्राम बुलाया। राजेद्रबाबू का फोन आया था। गोपुरी होते हुए जानकी के साथ बैल-टागे मे गया। बापू सिंघवाले अल्लाबख्श से बाते करते रहे।

बापू, सरदार, राजाजी, राजेन्द्रबाबू, कृपलानी, महादेवभाई व मैं देर तक वर्तमान राजनैतिक स्थिति पर विचार-विनिमय करते रहे। महादेव-भाई ने जवाहरलालजी व मौलाना के विचार कहे। राजाजी के विचार पूना मे जो थे, उससे ज्यादा दृढ हुए।

सरदार से थोडी देर बातचीत हुई।

२४-१०-४१, वर्धा

गगाधरराव देशपाडे के साथ सेवाग्राम गया। पू० बापूजी को आज

मैंने अपने विचार कह सुनाये । राजाजी, सरदार, कृपलानी, महादेवभाई मौजूद थे ।

२५-१०-४१, वर्धा

सेवाग्राम जाते समय बैल-टागे मे विनोबा के कुछ पन्ने पढे ।

बापू के पास राजाजी, राजेन्द्रबाबू, कृपलानी, गोविन्दवल्लभ पत, गंगाधरराव देशपाडे, सरदार, महादेवभाई, किशोरलालभाई व मैं । राजनीतिक विचार-विनिमय होता रहा ।

२६-१०-४१, वर्धा

सेवाग्राम गया । चि० ओम्, प्रमीला देशपाडे, मोहन, बालकृष्ण की स्त्री साथ मे थे । बापूजी ने पहले तो श्रीनगर खादी-विवाद की जाजूजी से बाते की । बाद मे हम लोगो को याने राजाजी, सरदार, राजेन्द्रबाबू, कृपलानी को अपनी भविष्य की दृष्टि समझाई ।

२८-१०-४१, वर्धा

सेवाग्राम गया । बापू ने लम्बा स्टेटमेट बनाया । वह पढा । उसपर थोडी चर्चा हुई । उसमे सुधार हुआ ।

३०-१०-४१, वर्धा

सेवाग्राम गया । गो-सेवा के विधान मे जो सुझाव आये थे, उनके अनुसार जो थोडा परिवर्तन किया था, वह बापू को पढकर सुनाया । राजेन्द्र-बाबू, जाजूजी, राधाकिसन, ऋषभदास, रामनारायणजी, किशोरलाल-भाई वगैरा हाजिर थे । बापू ने अपनी स्वीकृति दे दी । नियम लेने के बारे मे प्रतिज्ञा मे जो फरक किया, वह भी स्वीकार किया । कल जन्म-दिन होने के निमित्त बापू व बा को आज ही प्रणाम कर लिया ।

३१-१०-४१, पवनार

चरखा काता । आज के 'नागपुर टाइम्स' मे बापू का स्टेटमेट आया । वह फिर से सुना ।

९-११-४१, वर्धा

वसन्त व सरला को बापू के आशीर्वाद का महत्त्व समझाया । कमला भी उपस्थित थी ।

१३-११-४१, गोपुरी-वर्धा

इडियन स्टेट्स पीपुल्स कान्फ्रेस की स्टेंडिग कमेटी व इमरजेंसी कमेटी की मीटिंग हुई। मैंने सूचना की कि इमरजेंसी कमेटी की अब जरूरत नही रह जाती, क्योकि इस सबध मे श्री व्यासजी आदि का व्यवहार ठीक नही रहा। अन्य कारणो से भी उसे एक बार वन्द करना ही जरूरी समझा।

श्री अमृतलाल सेठ के व्यवहार की चर्चा हुई। भावी नीति के बारे मे भी विचार-विनिमय। अपने त्यागपत्र के बारे मे भी मैंने ठीक तौर से खुलासा किया।

पू० बापूजी सेवाग्राम से ४ से ५ बजे तक इस बैठक म आये। उन्होंने अपने विचार कहे। उन्हे तो इमरजेंसी कमेटी की जरूरत मालूम होती है।

१५-११-४१, सेवाग्राम-गोपुरी

स्टेट्स पीपुल्स कान्फ्रेंस के सम्बन्ध मे बापू से बाते। वल्लभभाई भी मोजूद थे। बापू ने व वल्लभभाई ने, कार्यालय वर्धा लाना व हरिभाऊजी उपाध्याय को एक मत्री बनाने का प्रस्ताव ठीक समझा। बलवतराय के बारे मे पट्टाभि से व बलवतराय से बात करके निश्चय करेंगे। मेरे त्यागपत्र के बारे मे आखिरी फैसला तो मुझपर ही छोडा गया। मै रहू तो बापू को भी पसन्द होगा।

गो-सेवा-सघ के बारे मे बापू पत्र लिखकर देगे।

श्री रत्नम्मा पर इतना कर्ज होते हुए भी सिफारिश की, यह पू० बापू ने अपनी व काकासाहब की भूल मानी।

१६-११-४१, गोपुरी

रामनारायणजी ने जयनारायण व्यास व अमृतलाल सेठ के बारे मे बाते की। अगर ये दोनो बापू के नजदीक सच्चाई से आ जाय, तो अच्छी बात है।

१९-११-४१, गोपुरी

सेवाग्राम गया। रेलवे-फाटक से हिन्द साइकल पर गया। बापू से बाते। 'विशालभारत' वाले श्रीरामजी शर्मा को भी गो-सेवा-सघ का सदस्य बनने मे कठिनाई आती है। उनसे बातचीत। वह सदस्य बन गए। बापू ने दशहरे

के दिन जो भाषण दिया वह नही मिला तो वे फिर से लिख देंगे। टैकनिकल आदमी, पन्नालाल झवेरी व दिवाकरजी के बारे मे भी बाते हुई।

२४-११-४१, गोपुरी-सेवाग्राम

सेवाग्राम गया। दयावती, वीरा साथ मे। बापू के पास बैठा।

२९-११-४१, गोपुरी-सेवाग्राम

सेवाग्राम गया। प्रार्थना आज ठीक मालूम हुई। सरदार से देर तक बातचीत। सरदार सोमवार को व बापू ९ को बारडोली जानेवाले है।

१-१२-४१, गोपुरी-सेवाग्राम

सेवाग्राम गया। बहुत दूर तक पैदल, बाद मे साइकल पर। आज गो-शिक्षण-विद्यालय का मुहूर्त व कार्य शुरू हुआ। मेरी इच्छा न होते हुए भी पू० बापूजी की आज्ञा के कारण, गो-पूजा मैंने की व परचुरे-शास्त्री ने करवाई।

२-१२-४१, गोपुरी

नागपुर से कुमारी राजू मिलने व काम के बारे मे बाते करने आई। उसे पू० बापूजी का आशीर्वाद प्राप्त करने को कहा।

३-१२-४१, गोपुरी-सेवाग्राम

सुबह झोपडी में व बाद मे शाम को सेवाग्राम मे बापूजी के साथ गो-सेवा-संघ का कार्य होता रहा।

राजकुमारी बहन से सेवाग्राम मे घूमते समय ठीक बाते हुई। बम्बई से बापू के नाम पर्सनल काल भारतन् ने किया। जवाहरलालजी, मौलाना व सत्याग्रही कल छूटेंगे।

५-१२-४१, गोपुरी

पू० विनोबा व गोपालराव के साथ बैल-टांगे में सेवाग्राम गया। विनोबा ने गो-सेवा-संघ के व संचालक-मंडल के सदस्य होना स्वीकार कर लिया। जाते-आते रास्ते मे ठीक बाते हुई। पू० बापूजी से भी विनोबा व गोपालराव से प्रोग्राम के बारे में ठीक बातें हुई।

स्टेटमेट वनाया । व्याख्यान का खुलासा । अम्वुजम्मा के रुपये की योजना । प्यारेलाल ने जेल की घटना कही ।

९-१२-४१, गोपुरी

स्नान वगैरा करके सेवाग्राम गया । रेलवे-फाटक से साइकल पर । वापू से वाते । डेरी एक्सपर्ट सरदार सर दातारसिह का पत्र पढाया । उसका जवाव लिखाया । महिला-आश्रम व अम्वुजम्मा वहन द्वारा प्राप्त सहायता की योजना वापू को दी । वही पर वापू के साथ भोजन । किशोरलालभाई, राजकुमारीवहन से वाचतीच । कु० कमला व करुणा से थोडी वाते । वैली मे श्री वापूजी वगले आये । वह वारडोली गये ।

२२-१२-४१, गोपुरी

विनोवा के दक्षिण (मद्रास) मे अधिक रोज ठहरने के वारे मे तथा वहा के लोगो को वापू की दृष्टि समझाने के वारे मे वाते हुई । उन्होने इसके लिए (वहा) ज्यादा ठहरने की आवश्यकता नही वताई ।

२४-१२-४१, गोपुरी

श्री राजकुमारी बहन का पत्र वर्धा मे ए० आई० सी० सी० के वारे मे मिला । ऐक्सप्रेस तार किया कि यहा होने मे कठिनाई है । वापू का पत्र मिला । वाद मे शाम को किशोरलालभाई सेवाग्राम से इसीलिए आये । उन्होने बारडोली टेलीफोन से महादेवभाई से बाते की । यहा व सेवाग्राम मे करने मे कठिनाई बतलाई । वह कल तार से सूचना करेगे । वापू के सुन्दर पत्र का जवाब भी भेजा ।

२७-१२-४१, गोपुरी

पू० वापूजी का पत्र ता० २४-१२ का लिखा हुआ मिला । इससे मुझे दु ख ही पहुचा । मैने उसका जवाव तो लिखा, परन्तु सन्तोष नही हुआ । इसलिए भेजा नही । किशोरलालभाई से मिलकर भेजने का निश्चय किया । सेवाग्राम जाने के लिए बैली-टागे की व्यवस्था नही हो सकी ।

२८-१२-४१, गोपुरी

सेवाग्राम गया । राष्ट्रीय ध्वज-वन्दन मे शामिल ।

किशोरलालभाई को बापू का पत्र दिखाया । उन्होने व महादेवभाई ने टेलीफोन पर वापू के दु ख के जो समाचार कहे थे वे कहे । उन्होने बापू को

पत्र लिखा, उसीमे मैंने थोडा-सा लिख दिया। मैंने जो दो पत्र लिख रखे थे, वे फाड डाले। काशीवहन गाधी ने जो भ्रम फैलाया था, उसके वारे मे किशोरलालभाई ने कहा कि वह क्षमा मागती है, इत्यादि। उनका समाधान हो गया।

३०-१२-४१, गोपुरी

मीरावहन सेवाग्राम से आई। गोपुरी देखी। गो-सेवा-सघ का विधान व उद्देश्य उनको समझाया। उनके साथ मे भोजन, वातचीत। उन्होने व्रत लेने मे थोडी कठिनाई वताई। उन्होने अपनी योजना वताई। वापू से स्वतत्रता लेकर हरिद्वार, सहारनपुर, गगा, हिमालय के नजदीक स्त्रियो का छोटा-सा आश्रम वनाकर वहा कार्य करने का निश्चय-सा किया, आदि वाते वताई। मैंने कई सूचनाए उन्हे दी।

डायरी के अंश

१९४२

१-१-४२, गोपुरी

बापू काग्रेस से अलग हुए। वह सब पढा, थोडा बुरा तो मालूम दिया, परन्तु विचार करने पर ठीक ही हुआ, ऐसा लगा।

७-१-४२, गोपुरी

विनोबा से डेरी-ऐक्सपर्ट श्री कोठावाला के पत्र पर विचार-विनिमय।

राजेन्द्रबाबू के स्टेटमेट, वर्किंग कमेटी का प्रस्ताव, बापू के स्टेटमेट तथा मैंने जो स्टेटमेट दिया, उसपर विचार-विनिमय। वही नालवाडी मे प्रार्थना।

९-१-४२, गोपुरी

बजाजवाडी मे मेहमानो की व्यवस्था पर विचार-विनिमय। बापू कल सुबह ५ बजे आयेंगे।

१०-१-४२, गोपुरी

गाय-बैलो की प्रदर्शनी देखी। पू० बापूजी की गाडी लेट आई।

बजाजवाडी से रेलवे-फाटक तक जाते हुए बीच-बीच मे बापू से बातचीत होती रही। बापू ने कैम्प देखा। मदू से मिलकर व महिला-आश्रम होते हुए चौकी से मोटर मे बैठे।

गो-सेवा-सघ कान्फ्रेस १ से ४ फरवरी तक करने के बारे मे बापू से चर्चा। मालवीयजी का पत्र, वे गो-सेवा-सघ के सदस्य बने। डॉ० भगवानदास भी शर्त के साथ सदस्य बने। कोठावाला का पत्र, हिगिनबाथम आवेंगे। रचनात्मक काम के १३ मुद्दो मे गो-सेवा का उल्लेख भी नही है। स्टेट्स पीपुल्स कान्फ्रेस व श्री राजकुमारीजी को जनरल सेक्रेटरी बनाने के बारे मे, 'जन्मभूमि' गुजराती दैनिक के बारे मे भी चर्चा। बापू चक्षु-यज्ञ का उद्घाटन ता० २७ जनवरी को करेंगे।

१३-१-४२, गोपुरी

वर्किंग कमेटी सुबह ९ से ११ व दोपहर २। से ६। तक हुई। दोपहर की मीटिंग मे बापूजी भी आये। ठीक चर्चा व विचार-विनिमय हुआ। मेरे त्याग-पत्र के बारे मे बापूजी ने कहा—"मौलाना तथा अन्य सदस्यो की इच्छा त्यागपत्र स्वीकार करने की नही है। अत मुझे इस समय आग्रह नही करना चाहिए। मै अपने मन पर बोझ नही रखू।" इत्यादि।

१४-१-४२, गोपुरी

वर्किंग कमेटी ९ से ११ व शाम को २। से ६। तक हुई। शाम की मीटिंग मे बापूजी आये। रचनात्मक कार्य की अच्छी चर्चा हुई। मुझे भी बोलना पडा। लडाई की परिस्थिति पर विचार।

१५-१-४२, गोपुरी

ए० आई० सी० सी० २। से ७ तक हुई। बीच मे पोन घटा चाय-पानी। मोलाना का भाषण थोडा लबा व पुनरावृत्ति के साथ हुआ, परन्तु वह बहुत स्पष्ट, खुलासेवार, नम्रता से भरा हुआ व बापू के प्रति श्रद्धा से भरा हुआ था। भाषण के बीच मे मेरी आखो मे तो पानी आ गया। बापू ने भी परिस्थिति स्पष्ट कर दी। उन्होने खास तौर से कहा कि "मै बनिया हू व बनिया ही मरना चाहता हू। मै अपनेको व्यावहारिक समझता हू। हवा मे उडनेवाला नही हू। मै तो ऐरोप्लेन मे भी नही बैठा हू। दूर से ही देखे है।" जवाहरलालजी का भी भाषण ठीक हुआ। उन्होने कहा, "बापू सो फीसदी व्यावहारिक है, यह मेरा अनुभव है। हा, यह ठीक है कि मै हवा मे उडनेवाला हू। यह मुझे मालूम है।" इत्यादि। सब ठीक रहा।

१७-१-४२, गोपुरी

बजाजवाडी मे वर्किंग कमेटी की मीटिंग ९ से ११ तक हुई। स्वयसेवको के बारे मे व सुभाषचन्द्र बोस की योजना के बारे मे बातचीत। दादा धर्माधिकारी ने राष्ट्रीय युवक-सघ के काम के कारण, राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ से सम्बन्ध रखनेवाले किसी व्यक्ति के धमकी-वगैरा के जो पत्र आये, वे दिखाये। उस बारे मे थोडी चर्चा वर्किंग कमेटी में व बापूजी से हुई। इन्दू के साथ सेवाग्राम गया। पू० बापूजी से नारायणदासजी बाजोरिया

को मिलाया। उनका जेवर व पाच हजार का चेक जाजूजी को दिलाया।

पू० बापूजी ने ३ बजे से ५ बजेतक कार्यकर्ताओ को रचनात्मक कार्य का खुलासा समझाया।

१८-१-४२, गोपुरी

जवाहरलालजी, पट्टाभि, बलवतराय सेवागाम से आये। उन्होने कहा, बापू ने आखिर फैसला कर दिया कि बलवतराय यहा रहेगे। मैंने सरदार से जो बात हुई, वह कही कि उनकी इच्छा तो इन्हे भावनगर (काठियावाड) रखने की है। इतने पर भी बलवतराय अपनी जिम्मेदारी पर जो निश्चय करना हो, वह करे। वर्धा (सेवाग्राम) मे आफिस रहे।

१९-१-४२, गोपुरी

बापूजी आज बनारस गये। राम भी साथ गया।

२२-१-४२, गोपुरी

राधाकृष्ण व महाबीरप्रसाद पोद्दार के साथ विनोबा से मिला। विनोबा से महाबीरप्रसादजी का परिचय करवाया। शिवाजी, गो-सेवा-सघ, विनोबा की आत्मकथा, बापू की इजाजत पर चर्चा। श्री लक्ष्मी-नारायण का निजी मदिर हटाने का प्रश्न श्री मेहता इजीनियर ने फिर उठाया। राधाकिसन की इच्छा भी हुई। पर विनोबा का कहना हुआ कि नही हटाना चाहिए।

२५-१-४२, गोपुरी

रेलवे-फाटक से साइकल पर सेवाग्राम गया। महाबीरप्रसाद पोद्दार भी साथ हो लिये। महादेवभाई ने बनारस की सफल यात्रा, नागपुर चोखा-मेला छात्रालय मे ठाकरे वगैरा ने जो पत्थर फेके और उससे कइयो को चोट लगी, दो जने अस्पताल भेजे गए, आदि की जानकारी दी।

बापू ने कहा कि पू० मालवीयजी का स्वास्थ्य बहुत ही कमजोर हो रहा है, अत उन्हे आने का कष्ट करने की उन्होने ही मनाही कर दी है। उन्हे पत्र लिखा। नेत्र-यज्ञ मे बापूजी ४ बजे पहुचेगे। स्टेट्स कान्फ्रेस का दफ्तर सेवाग्राम लाया जाय व बलवतराय मेहता भावनगर ही रहे।

बजट का विचार बाद मे कर लेना होगा। कोठावाला को गो-सेवा-सघ के सबध मे बापू के नाम से तार भेजना। महावीरप्रसादजी पोद्दार के बारे में बातचीत।

२७-१-४२, गोपुरी

बजाजवाडी मे मोगावाले डाक्टर रा० ब० मथुरादास ने आखो की बीमारी की जिस प्रकार छटनी की व आपरेशन किया, वह देखकर ताज्जुब हुआ। पू० बापूजी भी चार बजे आकर देख गए।

२८-१-४२, गोपुरी

डा० मथुरादास को लेकर सेवाग्राम गया। बापूजी से अच्छी तरह परिचय व बातचीत।

३०-१-४२, गोपुरी

बापूजी ने प्रार्थना के बाद चरखा-सघ के विद्यार्थियो को उपदेश दिया। उसके बाद बापूजी से थोडी बाते।

३१-१-४२, गोपुरी

विनोबा व राधाकिसन के साथ गो-सेवा-सघ की बाते करते हुए बैली मे सेवाग्राम जाना-आना। बापू से गो-सेवा-कान्फ्रेस के सम्बन्ध मे बाते की। घनश्यामदास बिडला को सेवाग्राम के आसपास की खेती व कुओ की योजना पर उन्होने अपने जो विचार कहे, वे मुझे बताये।

१-२-४२, गोपुरी

ठीक २ बजे परिषद् शुरू हुई। वन्देमातरम् बापू ने बैठकर गवाया। गो-सेवा-कान्फ्रेस मे बापू का भाषण भावपूर्ण, दु ख से भरा हुआ व विस्तार के साथ हुआ। सदस्य बनने पर जोर। विनोबा का भाषण विद्वत्तापूर्वक, गो-सेवा-सघ के नामकरण का खुलासा करनेवाला व महत्त्वपूर्ण था। सदस्यो की शकाओ का निरसन तथा अन्य खुलासे।

२-२-५२, गोपुरी

सुबह ही गो-सेवा-सघ के बारे मे पू० बापूजी को पत्र लिखकर गोपी के साथ सेवाग्राम भेजा, जो जवाब मिला, वह समझ मे नही आया।

३-२-४२, गोपुरी

बजाजवाडी मे २ से ५। तक सचालको की व गो-विशारदो की बैठक

हुई। पू० बापूजी ने गाय व भैंस का खुलासा किया। ठीक चर्चा, विचार व ठहराव हुए।

४-२-४२, गोपुरी

गो-सेवा-सघ के सचालक-मडल की बैठक ८ से १० तक हुई। शाम को सचालक-मडल व ऐक्सपर्ट लोगो की बैठक २ से ५ तक हुई। पू० बापूजी से ठीक चर्चा व खुलासा हुआ। कार्य व उत्साह ठीक रहा।

५-२-४२, गोपुरी

माटगुमरी वाले सर दातारसिह के साथ बैली मे सेवाग्राम जाते समय उन्होने मद्रास मे कमीशन के सामने जो बयान वगैरा हुए, वे बतलाये। बम्बई मे ७ मार्च से इसकी मीटिंग का काम शुरू होगा। बापू से भी भोजन करते समय व बाद मे कमीशन के बारे मे बाते हुई। वापस आते समय उनके कौटुम्बिक हाल व विचार आदि जाने। ठीक परिचय व दोस्ती हो गई।

सेवागाम मे घनश्यामदास बिडला, नारायणदास बाजोरिया वगैरा से बाते। गो-सेवा-सघ की योजना अमल मे लाने के बारे मे देर तक विचार-विनिमय हुआ।

६-२-४२, गोपुरी

डा० महोदय ने, बापू से जो बाते हुईं, वे बताईं।

७-२-४२, गोपुरी

जानकी व शान्ता के साथ घोडेवाले टागे मे सेवाग्राम गया। बापू से नीचे-अनुसार बाते हुई—

(१) बच्छराज कपनी मे जो सार्वजनिक रकम जमा है, वह वहा से उठा ली जाने के बारे मे श्री केशवदेवजी का पत्र। बापू ने पूछा कि फिर उसे कहा जमा रखा जाय ? मैंने कहा कि चरखा-सघ मे।

(२) श्री प्रताप सेठ का पत्र। उन्होने कहा कि बीस लाख रुपये मिलने चाहिए। इसपर विनोद भी हुआ। तय हुआ कि मै उन्हे लिखू।

(३) डॉ० महोदय के बारे मे बापू की राय यह रही कि उसे यहा स्वतत्र धधा नही करना चाहिए। मैंने कहा कि मन्नू (त्रिवेदी) से बात कर मै फैसला करूगा।

(४) अम्बुजम्मा के रुपयो के बारे मे कहा कि रकम महिला-आश्रम को दी जाय।

(५) जरबाई-फड का उपयोग हिन्दी पढनेवाली बहनो को छात्र-वृत्ति देने के रूप में किया जाय।

(६) जानकी व शान्ता ने बापू के साथ अलग बाते की। बापू के साथ घूमना।

९-२-४२, गोपुरी

सार्वजनिक फंड के व दूसरे रुपये चरखा-सघ मे जमा रखने के बारे में जाजूजी से देर तक बातचीत। उन्होने अपनी कठिनाई बताई। डॉ० महोदय के बारे मे बातचीत बापू से हुई थी, वह तथा मेरे विचार उन्हें कहे। महोदय भी आ गए थे।

बैली से सेवाग्राम गया। रास्ते मे वासन्ती व विजया से बाते। भाई घनश्यामदास बिडला ने मिलने बुलाया था। उन्होने कहा कि टेकडी पर उनके लिए व नारायणदासजी के लिए बगले बने।

सेवाग्राम मे वनमाला ज्यादा बीमार है।

११-२-४२

११ फरवरी, १९४२ को जमनालालजी का वर्धा में देहावसान हो गया।

●

जानकीदेवी बजाज को
जमनालाल बजाज द्वारा लिखे पत्रो मे से
गांधीजी-संबंधी उल्लेख

●

कलकत्ता, ६-१-१९१६

सप्रेम आशीर्वाद । यहा मारवाडी जाति मे विद्या-प्रचार के लिए प्रयत्न हो रहा है ।

श्री गाधीजी महाराज व उनकी धर्मपत्नी व पुत्र यहा आये थे । अपनी तरफ से सव प्रवन्ध किया गया था । १० रोज तक इनकी सेवा करने का ठीक मोका मिल गया था ।

• •　　　　　　　　• •

दिल्ली जाते समय, (रेल मे)
११-२-२१

कल सुवह १० वजे महात्माजी के साथ काशी से रवाना होकर कल ही शाम को अयोध्या (फैजावाद) आये । काशी मे ४ रोज तक प्रात काल गगा-स्नान का खूव आनद रहा, तथा पूज्य गाधीजी, मालवीयजी एव अन्य विद्वानो और महात्माओ के दर्शन-वार्तालाप का लाभ मिला। अयोध्या (फैजावाद) मे पूज्य महात्माजी का व्याख्यान वहुत ही उत्तम हुआ । वहा पर एक राजनैतिक काम करनेवाले नेता, श्री केदारनाथजी को, सरकार ने हाल ही मे गिरफ्तार कर लिया था । उनकी धर्मपत्नी का व्याख्यान भी हुआ । वह वहुत ही वहादुरी तथा शाति से काम करनेवाली मालूम हुई । तलाश करने से मालूम हुआ कि उसकी अपने पति पर वहुत ही भक्ति तथा प्रेम व श्रद्धा थी । तथापि वह हताश न होकर पति का कार्य कर रही है। वह जेल मे अपने पति से मिलने गई थी तथा उसने अपने पति से पूछा कि क्या वह उन्हे छुडाने का प्रयत्न करे ? उसपर उस देवी के पति ने कहा कि 'अगर मुझे फासी का हुक्म भी हो तो तुम छुडाने के लिए प्रयत्न मत करना ! देश-सेवा के लिए आनद से मरना ही मनुष्यत्व है। तुम आनद व शाति से चरखे का तथा सूत कातने का प्रचार करो।' यह वात उस देवी ने अपने मुह से सभा मे वताई । अगर यह देवी इतना धीरज व शाति नही रखती, तो शायद इनके पति को माननेवाली साधारण जनता उन्हे छुडाने के लिए कोशिश करती या धूमधाम करती व ऐसा होने

पर महात्माजी के सिद्धान्त के मुताविक स्वराज्य के कार्य मे पूरी वाधा पैदा होती।

वावा रामचद्र नाम के एक प्रसिद्ध नेता इस प्रात (यू० पी०) में है, खासकर किसानो मे। उन्हे भी सरकार ने काशी मे महात्मा गाधीजी का व्याख्यान होते समय ही गिरफ्तार कर लिया। सभा मे वहुत भारी भीड थी, पर वहा पूर्ण शाति रही। गिरफ्तारी के समय मै भी वहा मौजूद था। लोगो को शात व प्रसन्न रखने का उद्योग किया गया तथा एकत्र लोगो ने खूब ही शाति तथा आनद का प्रदर्शन किया। महात्माजी (पूज्य बापूजी) की वजह से जमाना (समय) एकदम बदल गया है। मुझे इस दौरे मे वहुत ही आनद तथा लाभ हो रहा है। परमात्मा ने चाहा तो अवश्य जीवन की उन्नति होवेगी। तुम्हारी कई वार याद आया करती है। आशा है कि अव तुम किसी तरह से भी पीछे नही रहोगी। धैर्य के साथ तथा शाति व सत्य के साथ कार्य करती रहोगी। मेरी समझ से कम-से-कम नौ मास तक कोई भी दागीना (गहना) नही पहनने का तुम व्रत ले लो। नथ छोडकर पाव की कडी भी निकाल देनी चाहिए, व स्वदेशी कपडे ही उपयोग मे लाने चाहिए। कपडो के बारे मे तो तुमने निश्चय-सा कर ही लिया है।

पूज्य बापूजी का साथ छोडते हुए जी दु ख पाता है। उनका भी हृदय से बहुत ही ज्यादा प्रेम है। आगे इनकी आज्ञा-मुताबिक आना होवेगा।

.. .. ..

ववई, ६-३-१९२१

सविनय प्रेम! अवके पूज्य बापूजी (महात्माजी) के साथ जो यात्रा हुई, उससे बहुत फायदा हुआ। वहुत करके शनिवार को वर्धा पहुचना होवेगा।

.. .. .

ववई, २९-६-२१

पत्र लिखने का वहुत दिनो से विचार था, परन्तु 'तिलक स्वराज्य-

मालूम होते हैं। मुझे बहुत करके पूज्य बापूजी (महात्माजी) के साथ मद्रास, लखनऊ, कलकत्ते की तरफ जाना पडेगा।

... ...

पटना के नजदीक (रेल मे),
१५-८-२१

मैं अभी दो-ढाई घटे बाद ही पूज्य बापूजी (महात्माजी) के पास पहुच जाऊगा। कल वहापर (पटने मे) कमेटी का कार्य होगा। बाद मे मुझे तो ऐसा दीखता है कि पूज्य बापूजी के साथ कलकत्ता आसाम, मद्रास आदि स्थानो मे जाना होगा। वह तो मुझे पहले ही ले जाना चाहते थे, परतु बबई के मित्रो ने नही जाने दिया। बापूजी के साथ रहने से मुझे तो बहुत फायदा पहुचने की आशा है। मेरी इच्छा तो ऐसी होती है कि तुम और मैं दोनो इनके साथ भ्रमण मे रहा करे, जिससे इनकी सेवा करने का मौका भी मिले तथा कई बातो का ज्ञान हो। ईश्वर करेगा तो यह भी इच्छा पूर्ण हो सकेगी। देश मे भी एक बार जाने का बहुत मन होता है। पूज्य बापूजी छुट्टी देगे तो वहा भी तुम्हे साथ मे ले जाने का विचार है।

.. .. ..

गोहाटी, २०-८-२१

यहा के मारवाडी व्यापारियो ने भविष्य मे विदेशी सूती कपडा नही मगाने की प्रतिज्ञा कर ली। यह कार्य तो बापू के ही प्रताप से हुआ, परन्तु बिना विशेष उद्योग किये ही थोडा यश इसमे मुझे भी मिल गया। यहा के कार्यकर्ता बहुत प्रसन्न हो गए। गोहाटी मे विदेशी कपडो की होली भी अच्छी हुई। भारी-भारी कीमती कपडे भी जलाये गए। यहा के लोग थोडे भोले हैं, और बापूजी पर इनकी बहुत श्रद्धा व प्रेम है, तथा त्याग भी है। गोहाटी मे पहाड के ऊपर कामाख्यादेवी का प्राचीन मदिर है, वहा भी मैं गया था। इधर प्राकृतिक दृश्य देखने-योग्य और बहुत ही सुन्दर है। चित्त प्रफुल्लित हो जाता है। एक तो बापू का समागम, दूसरे नाना प्रकार के दृश्य तथा मनुष्यो से भेट का लाभ। हमारे साथ पू० मौलाना मुहम्मदअली साहब की धर्मपत्नी भी हैं। वह बुर्का ओढती हैं, पर बापूजी तथा हम

लोगो से बुर्का ओढे-ओढे ही बोलती है। गोहाटी में स्त्रियो की तीन सभाए हुई थी। इनमे एक मारवाडी स्त्रियो की भी थी। उसमे करीब १५० स्त्रिया होगी। उसमे शोरगुल तो था, पर स्वदेशी-प्रचार का असर ठीक हुआ। उस सभा मे मुझे बापूजी के भाषण का अर्थ मारवाड़ी भाषा में बताना पडा था।

• • • • • •

तेजपुर (आसाम), २२-८-२१

गोहाटी (आसाम) ता० १८ को पहुचे। उस दिन श्रावणी पूर्णिमा थी। रास्ते मे (रेलवे) स्टेशन पर ही स्नान करके पूज्य बापूजी (महात्माजी) के हाथ से ही नई जनेऊ पहनी व उसी रोज शाम को उनसे राखी बधवाई। कलकत्ते से हाथ का कता हुआ और कसुवे मे रँगा हुआ सूत का तार साथ ले आये थे। उन्होने बहुत प्रेम तथा प्रसन्नता से राखी बाधी। मैने राखी बाधने की दक्षिणा के लिए उनसे पूछा तो उन्होने उनकी विरासत सभालने को कहा; तो मैने कहा कि आप अपने आशीर्वाद के द्वारा मेरा आत्मिक बल बढा दे। यह बात तुम्हारे ध्यान मे रहे, इसलिए लिखी है। रक्षा-बधन का दिन खाली नही गया। मेरी समझ से तो बापूजी ने इस भाव से अभीतक और कोई राखी नही बाधी होगी। जिस तरह हम लोगो की जिम्मेदारी बढती जाती है, उसी तरह परमात्मा हमारी ताकत भी बढायेगा, ऐसा मुझे भरोसा है।

• • • •

सिलहट (आसाम), २९-८-१९२१

तेजपुर (आसाम) से लिखा हुआ पत्र तुम्हे समय पर मिल गया होगा। आसाम के भ्रमण मे कई नई बाते देखने मे आई। इधर भी पूज्य बापूजी पर बहुत श्रद्धा व भक्ति है। आसाम मे मारवाडी, खासकर अग्रवालो के, घर बहुत है। गाव-गाव मे और जगलो व बगीचो मे भी इनकी दूकाने है। डिब्रूगढ़ मे मारवाडियो की तरफ से अच्छा स्वागत हुआ। मैं वहापर एक रोज पहले पहुच गया था। मारवाडी स्त्रियो की सभा भी हुई। महात्माजी ने विदेशी वस्त्र त्यागने के बारे मे तो कहा ही, उसके साथ ही अपने समाज मे गहने-दागीने पहनने की प्रथा

भी वहुत बुरी ह, इस बारे मे भी कहा। इससे सुन्दरता नष्ट होती है। जहा-तक हो सके जेवर न पहने जाय। अगर पहने ही जाय तो बहुत थोडे। और कपडा भी साफ-स्वच्छ, सफेद रग का काम मे लाया जाय कि जिससे मारवाडी वहने भी आसाम की बहनो के मुताबिक सीताजी के समान स्वच्छ दिखने लग जाय। यह बात, इस तरह का भाव समझाकर, उन्होने कही और मुझसे कहा कि जिस तरह से हो, दागीने और रग-बिरगे अधिक कपडे पहनने की चाल कम करने का प्रयत्न करना चाहिए। स्टेशनो पर हजारो लोग जमा हो जाते है और 'जय-जय' पुकारा करते है। महात्माजी के दर्शन कराने के लिए खूब प्रार्थना करते है। मै बापूजी के डिब्बे मे ही रहता हूँ। बहुत बार मुझे ही यह कठोर कार्य करना पडता है और लोगो को दर्शनो से वचित रखना पडता है। आज बापूजी के मौन का दिन (सोमवार) है। यहा सिलहट मे नदी के किनारे एक बीकानेरी मारवाडी ओसवाल सज्जन के घर मे बापूजी शाति से लिख रहे है। वहा से ही यह पत्र मै तुम्हे लिख रहा हू।

वापूजी इतना भारी कार्य करके भी खूब आनद मे रहते है। कभी-कभी तो खूब हँसा करते है और मुझे तो कहते है, "कि मुझे अगर फासी का हुक्म होगा तो भी मै तो सब कार्य करते-करते और हँसते हुए ही फासी चढ जाऊगा," ऐसा मेरा मन कहता है। ये सब बाते तुम्हे इसलिए लिखी है कि तुम बहुत ज्यादा फिकर किया करती हो। सो अब भविष्य के लिए जितने आनद का लाभ लिया जाय, उतना लेने का प्रयत्न करते रहना चाहिए। ज्यादा फिकर करने और उदास रहने की आवश्यकता नही। हमे तो अपने चरित्र शुद्ध बनाते हुए और आनद से हॅसते-हॅसते सब शारीरिक कष्ट सहते हुए मृत्यु प्राप्त करनी है।

एक बात लिखनी रह गई। गोहाटी मे बापू जिनके घर उतरे थे, वह श्रीयुत फूकनवावू विलायत से बैरिस्टरी पास किये हुए है तथा बडे ही शौकीन व्यक्ति है। उन्होने अपने यहा के तमाम विदेशी कपडे स्त्रियो के सुन्दर-सुन्दर भारी-से-भारी कपडे वापू की अपील पर आग मे जला दिये। करीब साढे तीन हजार के कपडे थे। और भी कई लोगो ने जलाये।

• • • • • •

कलकत्ता, १३-९-२१

तुम्हारे दो पत्र मिले। तुम्हारे पहले पत्र का जवाव जल्दी देने का विचार था, परन्तु महात्माजी के यहा रहने के कारण और वर्किंग कमेटी मे अधिक समय लगने के कारण पत्र नही लिख सका। तुमने लिखा कि मदिर मे प्राय सव स्वदेशी कपडा होगया ओर अपने देश जाने का विचार तो मेरे वर्धा आने पर किया जायगा। क्योकि अव तो प्राण ही वापू के अर्पण है। सपने मे भी वापू ही दिखते है, सो यह सव पढकर वहुत ही समाधान और प्रसन्नता हुई। परमात्मा हमारी इस तरह की सद्‌बुद्धि वनाये रखे ! परमात्मा अवश्य ही सफलता और शक्ति प्रदान करेगा।

अवकाश मिलने पर फिर पत्र लिखूगा। अभी तो वापूजी जा रहे है। उनके साथ जाना है।

.. .. ..

कलकत्ता, १७-९-२१

तुमने लिखा कि पहले पत्र के जवाब मे देरी हुई, इससे तुम्हे चिंता हो गई थी। सो इस तरह चिंता होना ठीक नही है। कठिन परीक्षा का समय तो अब आनेवाला है। हम लोगो का तो वहुत जल्दी जेल मे जाना सभव हो सकता है। अगर इस तरह की छोटी-छोटी बातो से चिंता हुआ करोगी तो पीछे असली ध्येय प्राप्त करने में देर लगेगी और बाधा होवेगी। मन को सदैव खूब शात और आनद से रखने की पूरी चेष्टा रखनी चाहिए। जब हम लोगो का परमात्मा पर पूरा विश्वास है तथा बापू का आशीर्वाद है, पीछे हमे चिंता क्या होती है, यह बिल्कुल भूल जाना चाहिए।

कलकत्ते मे जो कार्य होता है, उसका हाल समाचारपत्रो मे पढ लिया करती होगी। मुझे यहा से अजमेर, कराची, अमृतसर, भागलपुर आदि से आने के लिए तार व पत्र आ रहे है। यहा का कार्य समाप्त होने पर दो-चार रोज मे ही बापू की जहा जाने की आज्ञा होवेगी, वहा जाने का विचार है अथवा वर्धा आकर वहा से कहा जाना है, यह निश्चय किया जायगा।

.. .. ..

लाहौर, ३०-९-२१

दशहरे के वाद आजतक तुमको पत्र नही लिख सका। इसका कारण यह है कि इस दौरे मे अवकाश कम मिला। आज कराची से अभी रात को ९॥ के करीब यहा लाहौर (पजाब) मे पूज्य लाला लाजपतरायजी के घर पर पहुचे है और दीपावली की रात इस पवित्र घर मे विताई जायगी। यहा कल रहकर ता० १ को अमृतसर और ता० ३ को दिल्ली जाने का विचार है। वहा से वहुत करके बबई होकर वर्धा आना होगा। अगर पू० बापूजी दूसरी आज्ञा देगे तो उसका पालन करना होगा।

.. .. ..

कानपुर जाते हुए (रेल मे),
१२-१०-२१

सप्रेम वदेमातरम्। अजमेर जाने का विल्कुल निश्चय हो चुका था, परंतु कानपुर से कई तार आये, उसपर से महात्माजी ने पहले कानपुर जाने की आज्ञा दी, जिससे यहा आना पडा। कानपुर दो रोज ठहरकर अजमेर जाने का विचार हैं।

.. .. ..

वर्धा, २९-१-२२

बापूजी का बारडोली जाते समय का सदेश हमेशा विचार करने योग्य है।

.. .. ..

साबरमती-आश्रम, २०-३-२२

सप्रेम वदेमातरम्। पूज्य श्री वापू के मुकदमे का हाल सव समाचार-पत्रो मे पढा ही होगा। मुझे इस समय यहा आने से वहुत लाभ हुआ। वापू से खूब बाते हुईं। बापू ने हमेशा के लिए सग्रह के योग्य एक वहुत ही सुन्दर पत्र लिखकर दिया हैं। किसी समय अशाति मालूम हो तो उस पत्र से वहुत लाभ पहुचेगा। कोर्ट का दृश्य विचित्र था। ऐसा मालूम होता था, जज तथा उसके साथी दोषी हैं तथा वापू उनको दोष से मुक्त होने का प्रेम से उपदेश कर रहे हैं। जज आदि अग्रेज होते हुए भी, उनपर खूब असर

हुआ। ता० १८ मार्च का दिन हमेशा याद रखने योग्य है। यह दिन भी हमारे भविष्य के इतिहास मे बिजली की तरह चमकता रहेगा। अच्छा होता, तुम भी आजाती। खैर, कोई बात नही। बापू ने मुझे खूब जोर से पीठ मे धप्पा लगाकर आशीर्वाद दे दिया। अब मुझे पूरा विश्वास है कि हम लोग अपनी उन्नति अवश्य कर सकेगे। जिम्मेदारी खूब बढ गई है। अब जेल जाने की बाहर के कार्य की दृष्टि से बिलकुल जरूरत नही मालूम होती। हा, शाति तथा विश्राति के लिए जाने की इच्छा होना सभव है। परतु उसे रोकना होगा। कार्य करते हुए ही वैसा मौका आ गया तो आनद की बात है, तथापि जान-बूझकर नहीं जाना है। बबई मे तथा यहा मेरे गिरफ्तार होने की चर्चा बहुत जोर से थी, परतु उस चर्चा मे कम-से-कम हाल मे कोई दम नही है। अगर मुझे गिरफ्तार होना ही पडता तो उस हालत मे हिन्दी 'नवजीवन' मे प्रकाशक की हैसियत से मेरी जगह तुम्हारा नाम दिया जाय, ऐसा मेरा विचार हुआ था। और इस बारे मे मैंने महात्माजी से पूछा भी था। उन्होने भी कहा था, ऐसे मौके पर तुम्हारा नाम रख सकते हो। खैर, फिलहाल तो यह मौका है नही, जब आयेगा तब देखा जावेगा।

• • •

बबई, ९-४-२२

जो कार्य-भार पूज्य बापू ने तथा वर्किंग कमेटी ने दिया है, वह बराबर व्यवस्था से होने से शाति मिलेगी। तुम शाति से अपना कर्तव्य करती रहना। बापू को सजा हुई, उस दिन से मेरे मन मे ऐसी इच्छा थी कि जहातक हो सके थोडी देर चरखा अवश्य काता जाना चाहिए। परतु कई कारणो से यह इच्छा पूरी नही हो सकी, इससे भी मन मे थोडी अशाति रहती है। यहा घूमने का कार्य ज्यादा रहता है। कम-से-कम तुम ही रोज एक घटा चर्खा कातने का प्रयत्न किया करो।

बापू के जेल मे जाने के बाद कार्य की जवाबदारी ज्यादा मालूम होती है। परतु बापूजी जाते समय जो उपहार, अपने हाथ का लिखा हुआ उपदेश दे गए, उससे शाति मिलती है और जवाबदारी पर प्रकाश पडता है।

• • •

बबई, ९-१०-२२

पूज्य बापूजी बच्चो की व तुम्हारी याद करते थ। तुम्हारे ऊपर उनका बहुत प्रेम-श्रद्धा है, ऐसा उनकी बातचीत पर से मालूम होता था। उनका स्वास्थ्य ठीक है।

.. .. ..

ओगल, १०-१-२४

दक्षिण प्रात मे अदाजन एक मास घूमना पडेगा। यहा खादी का कार्य खूब हो सकता है। कई गावो को देखने का मौका मिला। यहा सूत कातनेवाली स्त्रिया तथा बुननेवाले जुलाहो की सख्या खूब है। इन्हे ठीक प्रकार रूई देकर सूत तथा कपडा लेने व वेचने की बराबर व्यवस्था हो जाय तो आन्ध्र देश लाखो रुपये की खादी वना सकता है। पूज्य बापूजी का खादी पर जोर देने का महत्व यहा घूमने से अधिक ध्यान मे आया। अब तो चरखा रोज काते बिना शाति नही मालूम होती।

. .. ..

वीरुदुपट्टी, १८-१-२४

अभी यहा पूज्य राजगोपालाचारीजी के साथ आया हू। इधर के लोगो मे पूज्य बापू के लिए खूब भक्ति है। खादी का प्रचार भी गावो मे ठीक है और दिन-दिन खूब बढने की आशा है।

पूज्य बापूजी का आपरेशन तो ठीक हो गया। एक वडी घाटी मे से वचाव हुआ। अव तो ऐसा मालूम होता है कि शायद सरकार इन्हे छोड दे। देश की हालत व विलायत की हालत दिन-दिन खराव होती जाती है। सरकार भविष्य का विचार करेगी तो उसे महसूस होगा कि छोडने मे ही उसे एक प्रकार से लाभ ह। परतु अगर बापू हम लोगो के याने अपने देश की जनता के जोर से छूटे तो विशेष शाति की बात है। खैर, जो होगा ठीक ही होवेगा।

.. .. ..

दिल्ली, २१-९-२४

मेरे यहा पहुचने की सूचना तार तथा पत्र के द्वारा भेज चुका हू। पूज्य बापूजी से मिला। बाते हुई। बापू ने व्रत (तप) आरभ किया है। बापू का

आत्मिक बल तथा परमात्मा पर जो श्रद्धा है, उसे देखते विश्वास होता है उपवास पार पड जावेगे । बा भी आज आगई है, मेरे पास ही ठहरी है । बापू की तपश्चर्या देख मन मे बहुत-सी कल्पना आया करती है । परतु अपनी खुद की कमजोरी देखकर लज्जा होती है । बापू के इस मौके से हम लोगो के जीवन के रहन-सहन व आचरण मे फर्क हो तो भविष्य का जीवन सुखकर बीतना सभव है । मेरी राय तो है कि तुम अहमदाबाद-आश्रम में जाने का विचार रखना । वहा रहने से जरूर अध्यात्मिक लाभ होना सभव है ।

चरखा घर-भर मे बराबर चालू रहे । बापू के लिए हृदय से प्रार्थना होती रहे, इसका ख्याल रखना ।

.. .. ..

पटना, २३-९-२५

पत्र तुम्हारे दो मिले, पढकर सतोष हुआ । तुमने अपने विचार या जो शका थी, वह पूज्य बापूजी को कह दी, यह जानकर अधिक सुख हुआ। मेरी हाल मे पूज्य बापूजी से घरेलू मामले के बारे मे बात नही हो पाई है । कारण कि वह बहुत कामो मे लगे हुए हैं । जब होगी तब तुम्हे मालूम हो जायगा ।

.. ..

मलकापुर (बिहार), २०-९-२५

तुम्हारे पत्र मिले थे । बदले मे पत्र लिखा था, सो मिला होगा । पूज्य बापूजी तुम्हारे बारे मे बात करते थे । तुम्हारी बातचीत का उनपर बहुत ही अच्छा असर हुआ, ऐसा दिखाई देता है । तुमसे वे बहुत आशा रखते हैं ।

चि० कमला का विवाह बबई मे करने के बारे मे पूज्य बापू की इच्छा मालूम हुई । इस बारे मे और विचार करना पडेगा ।

.. .. ..

बबई, १०-१-२६

चि० कमला के विवाह के बारे मे चि० मणिबहन का पत्र मिला ।

वर्धा मे विवाह करने मे सुख मिलता, अगर दोनो ओर से सिद्धान्त के माफिक विवाह होने का पूरा सुभीता होता। वह नही है। सामनेवालो को वर्धा मे इस प्रकार विवाह करने मे बहुत बाधाए होनी सभव है। एक बार तो आश्रम का ही निश्चय रखना उचित है। कुछ रोज बाद मेरा साबरमती जाने का विचार है। तब पू० बापूजी से और खुलासा बात करली जावेगी। पू० बापूजी ने पू० काकासाहब आदि को पहले से ही कमला का विवाह आश्रम मे करने का विचार लिख दिया है। यह मुझे पूना मे मालूम हुआ।

• • • • •

बबई, ३०-१-२६

पूज्य बापूजी को ज्वर १०४ डिगरी तक हो गया था और उनका वजन तो हाल मे ९७॥ रतल रह गया है। इसलिए वहा जाना पडा कि दूसरी जगह बदली जावे या अन्य इतजाम किया जावे। इसका विचार करने पर डाक्टरो की राय हुई कि अभी दूसरी जगह ले जाने की जरूरत नही। गर्मी मे ले जाया जावे। आश्रम मे ही आराम से रह सके, थोडी विश्राति लेते रहे तो जल्दी वजन बढ जायेगा। उनके एक हाथ मे जो दर्द रहता है, वह भी इससे कम हो जायगा। पूज्य बापू ने दवाई और विश्राति लेना स्वीकार कर लिया है। परमात्मा ने किया तो जल्दी ठीक हो जावेगे। बाकी आश्रम मे सब ठीक है।

पूज्य बापू की बीमारी के कारण तथा मित्रो के आग्रह की वजह से फिर से इस प्रश्न पर विचार करना जरूरी हो गया था कि विवाह आश्रम मे किया जाय या बबई मे। वर्धा मे श्री केशवदेवजी ने तो कह दिया था कि अब विवाह आश्रम मे ही करना उचित होगा। तो भी पूज्य बापूजी के फिर विचार जानना जरूरी था। उन्होने कहा है कि सब तरह का विचार करते हुए मुझे तो आश्रम मे ही विवाह करना ठीक मालूम होता है। तथापि चि० रामेश्वरप्रसाद की इच्छा क्या है, यह देख लो। वह भी यही आ गया है। और उसने तो कहा है कि मुझे तो आश्रम मे ही विवाह करना सब तरह से पसद है। उसने आश्रम मे विवाह करने के जो कारण बतलाये, उससे पूज्य बापूजी को व मुझे बहुत ही सतोष हुआ। अब विवाह आश्रम मे ही हो, यह निश्चय हो गया है।

चि० मणिवहन को कह देना कि वापू की ओर से पत्र न आने से चिंता न करे।

•• •• ••

सावरमती १-११-२६

प्राणेश,

कल वापूजी की जयती है। लोग कहते हैं कि गये वर्ष जयती के वाद वीमारी वढी थी। कदाचित् इस वक्त भी वुखार जोर करे। पाच-छः जनो को आ गया है। आशा है, ज्यादा जोर तो न होगा। मीरावहन को यहा आने दे तो ठीक।

जानकी

•• • •

वर्धा, ६-११-२६

आशा है, तुम पूज्य वापूजी के उपदेश तथा सत्सग से अधिक उदार तथा ध्येयपूर्वक जीवन विताने का निश्चय करके यहा आओगी। अव सच वात तो यह है कि तुमसे मुझे मेरे ओर अपने घर के सुधार व परिवर्तन में पूरी सहायता मिलनी चाहिए। अव थोडे वर्ष मानसिक सुधारो की वागडोर तुम अपने हाथ मे ले सको तो मुझे कितना सुख और सतोष मिले, इसका तुम खुद ही विचार कर सकती हो। तुम चाहो तो पूज्य वापूजी व विनोवाजी की सहायता से अपने जीवन को और घर को ठीक कर सकती हो। मेरी कमजोरी भी दूर करा सकती हो। पर यह वात तभी हो सकती है कि जब तुममे आत्म-विश्वास पैदा हो और तुम आदर्श स्थान का भार अपने उपर लो। मेरा स्वास्थ्य ठीक है।

•• • •

श्री शातिनाथजी साधु, जो वगाली हैं और आवू मे अपने यहा भोजन के लिए आते थे, आजकल यहापर हैं। घर पर ही थे। कल से वगीचे मे रहने लगे हैं। दो-तीन मास रहनेवाले हैं। [श्री सोनीरामजी, रामेश्वर व पू० वापूजी के पत्र उन्हे दे देना।

• • ••

३०-११-२६

पूज्य बापूजी ता० २० को यहा आयेगे और ता० २१ को चले जायगे। बाद मे मुझे दो रोज के लिए पूना जाना पडेगा।

पूज्य बापूजी की इच्छा कमला का विवाह बबई मे करने की है। शायद केशवदेवजी नेवटिया भी बबई पसद करे। तो फिर तुम्हारी तथा पूज्य काकाजी वगैरा की क्या इच्छा है, यह लिखना। सो बात करने मे सुभीता रहे।

.. .. ..

१-१-२७

कमला को लिखना कि पूज्य बापूजी का स्वास्थ्य ठीक है। मेरा स्वास्थ्य बहुत अच्छा है।

.. .. ..

साबरमती, १७-८-२७

प्राणेश,

अब एक जगह रहोगे तब बापूजी को कहकर पट्टे का प्रयोग कराना है।

जानकी

.. .. ..

(इस पत्र का ता० २-५-२८ को जवाब दिया)

प्राणेश,

मगनलालभाई का दु ख तो सबको हुआ है। सतोषबहन व राधाबहन का आदर्श देखकर तो आश्चर्य होता है। बद्रीनारायण काकाजी के बारे में तो बापूजी कह देगे सो करोगे ही, पर आपके बारे मे डाक्टरो की इजाजत ले लेनी चाहिए। मुख्य, आप जो जवान-जवान हो उनके बारे में पूछ लेना चाहिए। कारण, बुड्ढे कभी-कभी सहन भी कर जाते है। वैसे तो मै जानती हू कि कदाचित् आपको अभी कही भी विश्राति लेना मुश्किल है। इस कारण यात्रा से कदाचित् फायदा ही पहुचेगा। जितना समझते हैं, उतना ज्यादा विचार करते है। वैसे विचार करना अच्छा तो है ही।

अब कमलनयन को ले जाने का मन था, परतु उसको मालूम है और वह मन नही चलाता हो तो फिर जाने देना ही ठीक है। मैंने तो उसको लिखा

ही नही। पर उसको मालूम होगा। मालूम होके इच्छा न करे तो वह जाने। मुख्य आपको शाति व आराम मिले और मिलता दीखे तो फिर कोई विचार करने की जरूरत नही है। वापूजी से तो मैंने कहा था कि अगर यहा अथवा कही भी आपको उनकी जरूरत दीखे तो कह दे। यह जरूरी नही कि यात्रा पर जाना ही चाहिए। वापू जी कहते थे कि जरूरी नही है, वरना तो मैं कहता ही। सो अव जाना हो तो काम की फिक्र छोड दे। यहा वालको को तो रसोडे मे मजे से छोड देगे। वापू को गगा वुला लेगे। नही तो कही जाने की जरूरत नही है। आप डाक्टर को दिखाकर लिखना।

जानकी

•• • ••

कोचीन स्टेट (मलावार), १०-२-२९

हिन्दी-प्रचार का कार्य ठीक चल रहा है। अगर तुम इस सफर मे मेरे साथ आती तो तुम्हे दूसरी दुनिया देखने का अनुभव होगा। खैर, फिर सही। बरमा मै नही जऊगा, पूज्य वापू का इन्कार आ गया है।

•• • ••

साबरमती, ५-४-२९

पू० मगनलालभाई (गाधी) की लडकी चि० रुक्मिणी का सवध कल यहा पर चि० वनारसीलाल बजाज से हो गया। यह विवाह इस वर्ष नही तो अगले वर्ष होवेगा। कल यह सवध करके पूज्य वापूजी आध्र के लिए बबई रवाना हो गए। वर्धा मे गरमी ज्यादा पडने लग गई होगी।

छगनलालभाई गाधी से तथा पू० वा से रुपयो-पैसो के मामले में जो गफलत हुई, वह दुनियादारी की दृष्टि से कोई वहुत भारी कसूर नही समझा जाता। पर वैसी गलती या कसूर पर पूज्य बापूजी अपने हृदय मे कितना दुःख अनुभव करते है, वह इस बार के 'नवजीवन' मे उन्होने लिखा है। तुम उसे भली प्रकार पढने का प्रयत्न करना। यहा आश्रम मे रहनेवालो की कमज़ोरियो से पूज्य बापूजी को वहुत दुःख व कष्ट हुआ करता है। अपने पास इसका कोई उपाय नही दिखाई देता।

श्रीनगर (काश्मीर), ५-७-२९

मेरा वर्धा ता० २० तक पहुचना होवेगा। यहा का खद्दर-भडार ता० ४ को खुलनेवाला था, वह राज्य की सुविधा के कारण ता० ११ को खुलने का निश्चय हुआ है। यहा थोडा घूम-फिरकर देखने का विचार भी कर लिया है। पू० बापूजी तो बहुत जोर देकर लिख रहे है कि मैं यहा ज्यादा दिन रहू। परतु बिना काम के मन नही लगेगा और तुम सब लोग व बालको के बिना देखने मे विशेष आनद तथा शाति नही मिलती।

.. .. ..

साबरमती-आश्रम, ता० १५-२-३०

पू० बापूजी आजकल खूब उत्साह व जोर मे है व लडाई की पूरी तैयारी कर रखी है। यहा का वातावरण पूरे जोश तथा उत्साह से भरा-पूरा हो रहा है। छोटे-छोटे बच्चो ने भी जेल जाने की इच्छा कर रखी है। तुम इस समय यहा रहती तो तुम्हे ठीक फायदा मिलता, व पूज्य बापूजी तुम्हारा नाम भी जेल की फेहरिस्त मे, अगर तुम्हारा उत्साह और इच्छा होती तो, लिखा देते।

. .. ..

नासिक रोड सैंट्रल जेल, २१-६-३०

तुम्हे समय मिलता हो तो जेल के रहन-सहन के सबध मे व नियमो के बारे मे पू० बापूजी की 'यरवडाना अनुभव', काकासाहब व राजाजी की लिखी हुई किताबे व जिन्हे जेल का ठीक अनुभव हो, उनसे पूरी हालत जान लेने का प्रयत्न करना। ईश्वर की अपने पर पूर्ण दया व पूज्य बापूजी का आशीर्वाद है, जिस कारण ही अपनेको इस प्रकार की बुद्धि होकर सेवा करने का, माने अपनी कमजोरी कम करने का, मौका मिला। तुम्हारी बहादुरी और हिम्मत देखकर मन मे खुशी होती है।

.. .. ..

नासिक रोड जेल, ७-७-३०

कमल से कहना कि वह जरा अधिक सभ्यता व नम्रता का व्यवहार करने का खयाल रखे। अब वह सत्याग्रह-दल मे पू० बापूजी की टुकडी का स्वयसेवक है। उसपर ज्यादा जिम्मेवारी है। मुह मे से एक-एक बात सत्य

व तोलकर निकलनी चाहिए, जिससे आगे चलकर वह ज़िम्मेदारी के साथ काम कर सके ।

• •

नासिक रोड सैंट्रल जेल, २२-९-३०

रेंटिया बारस गत शुक्रवार को हम लोगो ने भी खूब चरखा कातकर पू० बापूजी के गुणगान करके व ईश्वर से प्रार्थना करके बिताई। तीनो वर्गो मे खूब चरखे चले। बी मे तो तीन चरखे ६१ घटे तक रात-दिन चलते रहे। सी वर्ग-वालो ने भी खूब चलाये। हम लोगो ने तो २४ घटे तक चरखा चलाया। उस रोज मैंने १०॥ घटे सूत काता। खूब प्रेम व उत्साह होने से ठीक काता गया। (जीवन मे पहली बार इतना काता) २५६० तार, यानी ३४१३ बार काते। सूत उतारने आदि का समय अलग लगा। सुबह ३ बजे उठकर प्रार्थना वगैरा करके रात मे १२ बजे निवृत्त हो गया था। बीच-बीच मे दूसरे काम भी किये। पू० बापूजी पर छोटा सा लेख भी लिखना पडा।

• •

नासिक रोड सैंट्रल जेल, ८-१०-३०

तुम्हारा बिना मिती-तारीख का पत्र मिला। पू० बापूजी का पत्र तुम्हारे नाम का पढकर सुख मिला। पत्र मेरे पास है। तुम जब आओगी तब तुम्हे दे दिया जायगा। ये सब पत्र सभालकर रखना। अब यरवदा जाने की इच्छा कम हो गई है। यहा मन भी लग गया है। आब-हवा भी अनुकूल पड गई है। मित्र लोग भी है। अधिकारियो से भी प्रेम व मित्रता का सबध हो गया है। दूसरे मेरी इच्छा यह है कि पूज्य बापूजी के पास अब या तो प्यारेलाल चला जावे या देवदासभाई चले जावे। मेरी यह इच्छा तुम श्री नारायणदास भाई (गाधी) की मारफत पू० बापूजी को लिखवा देना या अपनी चिट्ठी मे इतना उतारकर बापूजी को भेज देना।

तुमने पू० बापूजी को मेरे बारे मे पत्र नही भेजा, यह बहुत ठीक किया।

•• ••

नासिक रोड सैंट्रल जेल,
१४-१०-३०

आज पू० बापूजी का पत्र वापस भेजा है, सभालकर रखना।

(यह पत्र १०-१२-३० को मिला)

श्रीयुत,

आपने 'वकील-बालिस्टरो से बात कर लेती हो' लिखा, सो नई बात नही है। निर्भयता व लज्जा मे तो 'पास' थी ही। बापूजी के सहवास से काम लेना व उनके विचारो को जान लेने से काम चल रहा है और काम को काम सिखा लेता है।

यहा का काम ठडा पडा है। नेताओ मे भी फूट है। बापूजी के सेक्रेटरी कृष्णदासजी कोशिश कर रहे है। इनकी फूट अगर मिट जाय तो कुछ काम हो।

जानकी का प्रणाम

.. .. .

कलकत्ता, २३-१२-३०

काम की कीमत होने से शका वगैरा कम हो गई। निश्चय करना भी आ गया। किसी जगह महात्माजी की बात तो किसी जगह आपकी बाते काम करवा लेती है। परतु घर का काम तो मुझे करना ही नही चाहिए।

चिट्ठी पूरी सही अधूरी

जानकीदेवी

.. ..

(दिसबर-अत या शुरू-जनवरी, ३१)

मेरी बहुत दिनो से इच्छा थी कि तुम्हारी व बालको की इज्जत व कदर मेरे कारण न होकर तुम लोगो की पवित्र सेवा के काम के कारण होवे तो उसमे तुम्हारा व बालको का भी श्रेय था व हमारा श्रेय व गौरव था। यह कार्य अब जल्दी ही परमात्मा की दया से व पूज्य बापू के आशीर्वाद से देखने को मिल रहा है।

.. .. ..

नासिक रोड सैंट्रल जेल,

८-१-३१

परमात्मा के व पूज्य बापूजी के आशीर्वाद से हम लोगो का अपने जीवन के आदर्श प्राप्त करने मे सफलीभूत होना बहुत सभव दिखाई देता है। अगर

हम अपनी कमज़ोरियो को वरावर पहचानते रहे व उन्हे निकालने का जी-तोड प्रयत्न करते रहेगे तो जीवन पूरी तौर से नही, तो कुछ अश मे तो अवश्य सार्थक वना सकेगे ।

• • • •

ववई, २७-१-३१

आखिर कल एक वार जेल छोडना ही पडा । आज सुवह यहा आ गया । पू० वापूजी के साथ आज रात को प्रयाग जा रहा हू । वहा से अगर हो सका तो एक रोज कलकत्ते आने का प्रयत्न करूगा, या तुम्हे वहा वुलाने की जरूरत समझूगा तो तुम्हे वुला लूगा । चि० कमल मेरे साथ है । चि० कमला मेरे साथ पूज्य वापूजी से मिलती है ।

• • • • •

प्रयाग, १४-२-३१

पू० वापूजी रफल (चादर) देखकर बहुत खुश हुए । उन्होने कहा, मैं इसे दो वर्ष और चला सकूगा । तुम्हारी भेजी हुई पूनी उन्होने आज कातकर देखी । उन्होने कहा है, रूई तो अच्छी है, परतु पूनी ठीक नही वनी । लवी ज्यादा है व पोली भी है। आगे से वहुत अच्छी पूनी बना सको तो बापूजी को भेजने का प्रवध करेगे ।

• •

(८-८-३१ से ४-१०-३१ के बीच)

पूज्य बापूजी को बहुत सभव है लदन जाना पडे । श्री वालजीभाई को पू० वापूजी अलमोडा भेज रहे है । कमल भी वही चला जायगा । अलमोडा की आबहवा तो बहुत ही उत्तम है । पू० बापूजी ने पूना रखने की भी आज्ञा दे दी थी, परतु मुझे वहा का वातावरण, व्यवस्था व पढाई पूरी जची नही ।

• • • • • •

भायखला-जेल, ११-३-३२

मुझे तो हमेशा जेल मे भी नये मित्रो का परिचय करने का ईश्वर की दया से व पूज्य बापू के आशीर्वाद से मौका मिल ही जाता है । इससे मुझे वडा सतोष मिलता है ।

• • • •

यरवदा-मदिर १२-१-३३,

तुम लोगो की प्रसन्नता के समाचार तो पूज्य बापू से सुन लिया करता करता हू ।

रोटी भूसे की (ब्राउन बडे) एक रतल वजन की जो यहा जेल में ताजा बनती है, लेता हू । पू० बापू की सलाह-मुजब उसका टोस्ट बनाकर दोनो वक्त लेता हू ।

मेरी दिनचर्या सुदर चलती है । पू० बापूजी से मिलने की तो बबई-सरकार की परवानगी आ गई है । अभीतक मै उनसे सात बार मिल चुका हू । पत्र-व्यवहार भी यहा-का-यही होता रहता है । अस्पृश्यता-निवारण के कागजात व पत्र-व्यवहार की फाइल मेरे पास आती रहती है । मै अब इस कार्य से पूर्णतया वाकिफ रहता हू । मुझे जो उचित मालूम होता है, बापू को लिखकर या मिलने पर कहा करता हू । प्राय रोज मै पाच-छ घटे हरिजनो के काम का विचार, अध्ययन, पढने-लिखने आदि मे लगा रहता हू । इससे मन को खूब सुख व सतोष रहता है ।

तुम्हे आनेवाली १६ तारीख को, याने माघ-बदी पचमी, सोमवार को बराबर ४० वर्ष पूरे होकर ४१वा वर्ष चालू होता है । उस रोज मै भी परमात्मा से प्रार्थना करूगा कि तुम्हे सद्बुद्धि प्रदान करे व तुम्हारा स्वास्थ्य उत्तम रखते हुए तुम्हारे शरीर व मन मे सेवा-कार्य, खासकर बापूजी द्वारा तुम्हे पहले लिखे मुताबिक हरिजन-कार्य करने की सब प्रकार से योग्यता प्रदान करे ।

चि० मदालसा के पत्र का हाल पू० बापूजी ने मुझे कहा था ।

.. .. ..

वर्धा, ३०-८-३३

पू० बापूजी ने तुमको वही रहने को कहा है, सो एक तरह ठीक ही है । अगर तुम उनके कहने से वहा बनी रही और खुदा-न-खास्ता प्लेग की शिकार हो गई तो मुझे तो सतोष इतना रहेगा कि ऐसी हालत मे पू० बापूजी का आशीर्वाद मिल जाय और उसके साथ स्वर्ग भी मिल जाय । इससे अब मुझे तुम्हारी तरफ की चिंता कम है ।

क्या तुम बापूजी को यहा ला सकती हो या भिजवा सकती हो ?

पटना, २९-६-३४

पूना की दुर्घटना से पू० बापूजी तो बचे ही, साथ में चि० ओम् वगैरह भी बच गई। जिसको ईश्वर बचानेवाला है, उसे कौन मार सकता है! इस प्रकार की घटनाओं से ईश्वर की शक्ति (अस्तित्व) में विश्वास बढ़ता है।

.. .. .

बबई, १६-११-३४

पू० बापूजी अगर मेरी चिंता करना छोड दे, तो मुझे कम तकलीफ हो। वह वल्लभभाई को समाचार लिखते हैं। उनका टेलीफोन आता है तो फिर मुझे वहा जाना पडता है। सरदारसाहब को मेरे पास बुलाने की अभी ताकत नही आई है। वह प्रेम तो खूब करते है, परतु जो ज्यादा प्रेम करता है उसे हुकुम करने का भी अधिकार होता है।

.. .. ..

बबई, २९-१-३५

मुझे पू० बापू ने ठीक प्रमाणपत्र (सर्टिफिकेट)[१] भेजा है, तुम भी इस प्रकार के कामो मे मदद करो तो कितना ठीक होवे!

.. .. ..

वर्धा, २८-१०-३५

आज भैयादूज के शुभ अवसर पर चि० राधाकृष्ण का सबध पू० जाजूजी की लडकी चि० अनसूया से होना निश्चित हुआ है। शाम को ६ बजे पू० बापूजी, बा इत्यादि सब लोगो के सामने सगाई की विधि हो जायगी। पू० मा को इस सबध से सतोप है।

.. .. .

वर्धा, ९-१२-३५

इन दिनो पू० बापू का स्वास्थ्य कुछ नरम रहा है। बबई से डॉ० जीवराज मेहता भी कल आगए। ब्लड-प्रेशर बढ गया था। अब तबीयत साधारण सुधर रही है। आराम की जरूरत है। इस समय श्री राजकुमारी अमृतकुवर नर्सिंग (सेवा) कर रही है। परन्तु वह ता० १७ तक रह सकेगी। आगे के नर्सिंग का सवाल उपस्थित हुआ, तब तीन नाम सामने

---

[१] देखिये बापू के पत्र, पृष्ठ १२३।

आये है। मेरा, राधाकृष्ण का व तुम्हारा। अभी कुछ निश्चित नही हो पाया है। अच्छा हो, यदि तुम भी इस वीच यहा आ सको।

.. .. ..

लखनऊ, ४-४-३६

यहा वापूजी के साथ काग्रेस से करीव ३॥-४ माइल दूरी पर रहना होता है। अवकी वार की प्रदर्शनी अच्छी व देखने-योग्य है।

.. .. ..

वर्धा, २७-८-३६

आज पू० वापूजी सेगाव से आये है। सभा अपने यहा वीच के कमरे मे हुई है।

.. . ..

वर्धा, १७-९-३६

पू० वापूजी का स्वास्थ्य अच्छा है। चिंता की कोई वात नही है। तुमको दूध पचने लगा है, यह जानकर खुशी हुई। कल मै सेगाव गया था। पू० वापू ने तुम्हारे वारे मे पूछा था, मैने उनको दूध के वारे में नही कहा। फिर जव आज या कल जाऊगा तो कहूगा। तुम्हारी कमजोरी तो निकल जावेगी।

.. . ..

वर्धा, १८-९-३६

पूज्य वापू-सवधी भविष्यवाणी, जैसी आशा थी, पूरी तरह से झूठ साबित हुई। कल ता० १७ को शाम को सिविल सर्जन को ले जाकर भली प्रकार से तलाश कर लिया था। ब्लडप्रेशर, हार्ट वहुत ठीक था। वापू खूब विनोद करते थे। आज सुवह स्नान करके मै तो चि० अनसूया के साथ दही-वाजरे की रोटी व फल खाकर गया था। वहा से २ वजे वाद रवाना होकर आया हू। वहा से ११ वजे वाद डॉ० महोदय को वर्धा से तुम्हे तार देने भेजा था। वह तार तुम्हे मिल ही गया है। वापू को मैने अकेले को करीव १॥। वजे यह वात कही। उन्होने मुझसे खूव विनोद किया। औरो ने ज्यादा चर्चा नही की। अव कल सव विनोद करेगे। सरदार भी कल आ जावगे।

घनश्यामदासजी आज आ जायगे। दो-तीन दिन थोडा-बहुत विनोद रहेगा। अब आगे से भविष्यवाणियो पर ज्यादा विश्वास नही रखना।

.. .. ..

बनारस, २३-१०-३६

कल पू० बापूजी भी यहा आयेगे। शायद लक्ष्मणप्रसादजी तथा सावित्री भी आ जावे। उन्होने इच्छा प्रकट की है।

. . .

बनारस, २६-१०-३६

विनय के बारे मे बापू ने सब स्थिति कही। दवा, इजेक्शन, कमला की बहादुरी, दान वगैरा के हाल मालूम हुए।

.. .. ..

वर्धा, ६-११-३६

यहा आ जाना अच्छा हुआ। कल बापू से मिल लिया। यहा विद्यालय का उत्सव है, सभाए है।

.. .. ..

जुहू, १३-१०-३७

पू० बापूजी आ गए। वह तो टाइफाइड के सबसे बडे अनुभवी डाक्टर है।

.. .. ..

जुहू, १५-१०-३७

तुम्हारे नाम की पू० बापूजी की चिट्ठी आई है, वह भेज रहा हू।

.. ..

बिलासपुर, २५-१०-३७

बापूजी और पार्टी कलकत्ते जा रहे है।

. .. ..

वर्धा, १७-११-३७

शाम को सेगाव जाऊगा। बापूजी के आने के बाद अगर हो सका तो कुछ रोज़ सेगाव रहने का विचार है।

.. .. ..

वर्धा, २०-११-३७

वापू का स्वास्थ्य वहुत कमज़ोर हो गया है। वहुत सभाल रखने की ज़रूरत है।

.. .. ..

वर्धा, २२-११-३७

पूज्य वापूजीका स्वास्थ्य वहुत नरम है। ईश्वर की जैसी मरजी होवेगी वह काम आवेगी। ईश्वर सद्वुद्धि व आत्मविश्वास प्रदान करता रहे। म तुम्हे क्या लिखू!

.. .. ..

वर्धा, १८-४-३८

मेरा आना ता० २४ या २५ तक ववई होता दिखता है। वापूजी से भी वाते करनी है।

.. .. ..

जुहू, १९-४-३८

पूज्यश्री,

वापूजी का समय लेने का भी समय आ गया है। मै रहू, न रहू, समान है। खासी तो कम होना दिखता ही था। प्रणाम!

जानकी

.. .. ..

नई दिल्ली, ३१-१-३९

मैने पू० वापूजी से भी जाते ही कह दिया था और उनकी भी यही राय रही कि अभी आराम लेकर वाद मे काम करना ही ठीक रहेगा। वापूजी ता० २ को वहा आनेवाले ही है।

.. .. ..

मोरासागर

पू० वापूजी का स्वास्थ्य ठीक रहता होगा। तुम्हारी क्या हालत है?

वापू के पत्र भी पढने योग्य है (सर्वोदय के) और अको मे भी काका-साहव वगैरा के मननीय लेख रहते है।

.. .. ..

मोरासागर, ९-३-३९

सात रोज के बाद कल शाम को मुझे पाच तार व पत्र व अखबार वगैरा मिले। इन सात दिनो तक मुझे, दुनिया का कहो या यहा से दो कोस दूर तक का भी, कुछ पता नही था। पू० बापूजी के उपवास करने की व छोडने की व राजकोट के फैसले की खबर कल साथ ही मिली।

• • •

वर्धा, ११-१०-३९

अब १५-१६ तक बबई जाने का इरादा है। वहा जाकर तय करना है कि इलाज के लिए २-३ माह के लिए कहा पर रहना है—बबई या पूना। तुम अपने कार्यक्रम से मुझे वाकिफ करती रहना। पू० बापू से भी इलाज के बारे मे बाते हुई थी। श्री दीनशा के पास दो-तीन रोज़ जाकर रहना है व सारी बाते तय करनी है।

• •

वर्धा, १५-१०-३९

पू० बापू से दिल्ली म खुलकर बात करने का मोका मिल गया था। वह मेरी स्थिति पूरी तौर से जान गए है।

वर्धा मे तुम्हारे लिए जितना आदर-प्रेम व श्रद्धा है, वह और कहा मिलनेवाली है! बापू, विनोबा आदि सभी तो यही है। तुम्हे सीधे विचार करने चाहिए उल्टे नही।

• • • • •

१०-३-४०

पूज्यश्री,

कल मेरा मन ठीक न होने से पत्र राधाकृष्ण के नाम का दे ही दिया, पर पीछे शाताबाई ने कहा कि बापूजी वही है और भी सब समाचार जानकर मन शात है। दूध आनन्द से चलता है।

काग्रेस जाने की बापूजी से ठीक सलाह मिल ही जावेगी। दर्द हलका नही पडे तब तो वहा आराम कैसे मिलेगा? और आपका जैसा उत्साह!

पगली का प्रणाम

• • • • •

वर्धा, ११-३-४०

तुम्हारे दोनो पत्र मिले। जयपुर मे परिश्रम तो हुआ, परतु रास्ता वैठ जावेगा, ऐसा मालूम देता है। पू० वापूजी के यहा होने के कारण पहले यहा आना पडा।

.. .. ..

वर्धा, ६-११-४०

मुझे यहा स्टेशन पर ही मालूम हुआ कि तुम एक रोज पहले पू० वापूजी के कहने से आपरेशन कराने के लिए ववई चली गई। तुम्हारे साथ कोई जवावदार घर का आदमी नही गया, जानकर मुझे वुरा तो मालूम दिया।

पू० वापूजी वहुत करके उपवास अव नही करेंगे। आज निश्चय हो जायगा। जवाहरलाल तो ठिकाने, अर्थात् जेल, पहुच ही गए है।

.. .. ..

सेवाग्राम, २४-६-४१

मौका मिलने पर पू० वापू से मै ही अपने क्रोध आदि आने का व मेरा व्यवहार तुम्हे प्राय असतोप देनेवाला होता है, इत्यादि के वारे मे कहने की इच्छा है। तुम्हे तो कहने का पूर्ण हक व अधिकार है ही। कोई रास्ता निकल सके तो सतोप ही होगा। ज्यादा क्या लिखू!

अपने पुत्र-पुत्रियों को

जमनालाल बजाज द्वारा लिखे पत्रो मे से

गांधीजी-संबंधी उल्लेख

●

बबई, २५-१०-२६

चि० कमल,

पू० बापूजी (महात्माजी) यहा दक्षिण अफ्रीका के डेपुटेशन से मिलने गये। इतवार को आये थे। उनको पहुचाने हम लोग स्टेशन गये थे। वापस आते समय दो मोटरो का आपस मे बहुत जोर से टक्कर खाने का डर हो गया था, परतु ड्राइवर ने मोटर को एकदम घुमाया, जिससे मोटर उलट गई। इसमें हम सात जने थे—श्री केशवदेवजी (कमल के ककिया ससुर) श्रीगोपाल, चि० गगाबिसन, लालजी, गिरधारी, मैं और ड्राइवर। परमात्मा की दया से और पू० बापूजी के आशीर्वाद से प्राय सब बच गए। श्री केशवदेवजी के थोडी चोट आई और मेरे। अब मेरी छाती मे थोडा दर्द है। चार-पाच रोज मे ठीक हो जाने की आशा है।

.. .. ..

बबई, ८-८-३१

चि० कमल,

खूब विचार करने के बाद मुझे तो यही लगा कि तुम्हारी अग्रेजी की सतोषकारक पढाई अलमोडा मे श्री वालजीभाई के साथ रहकर ठीक होवेगी और तुम्हे भी शाति व सुख मिलेगा। पू० बापूजी ने श्री वालजीभाई को लिखाया है। कब जाने का विचार रहा ? तुम्हे वहा जाने के लिए गरम कपडे वगैरा यहा अथवा वहा बनाने पडे, वह बना लेना।

.. .. ..

बबई, १८-१२-३१

चि० कमल,

किराये के बारे में तुम अभी कुछ चर्चा न करना। पू० बापूजी के आने पर उनसे बातचीत करके सब ठीक हो जावेगा।

श्री लालजीभाई से कहना कि लडाई के आसार फिर नज़र आने लगे हैं। देखें, पू० बापूजी के आने पर क्या होता है, और उनके आने के पहले क्या हो जाता है !

बबई, ५-१-३२

चि० कमल,

पू० बापूजी, सरदार वल्लभभाई, श्री राजेन्द्रबाबू तो पकडे ही गये है। वर्किंग कमेटी नाजायज करार दी जा चुकी है। मै किसी भी समय पकडा जा सकता हू। वैसे आज डाक से वर्धा जाने का विचार कर रहा हू। वहातक जाने दिया जाय या नही, यह बात दूसरी है।

.. .. ..

धुलिया-जेल, १९-४-३२

चि० कमल,

आशा है, मेरा भायखला-जेल से लिखा हुआ पत्र तुम्हे मिला होवेगा। मेरा मन व स्वास्थ्य उत्तम है। यहा पूज्य विनोबा के साथ दोनो समय प्रार्थना आदि मे सतोष से समय बीतता है। तुम अपना जीवन पवित्रता व नीति के साथ बिताने का खयाल रखना। जेल मे जहातक हो सके भूख-हडताल (हगर स्ट्राइक) नही करना चाहिए, इसका खयाल रखना। अपना स्वाभिमान तो रखना ही चाहिए।

.. ..

२१-९-३२

चि० मदालसा,

पू० बापू के पत्र की नकल तुम्हारी माता के नाम की तुमने भेजी, वह पढकर सुख मिला। तुम्हारी माता को कह देना, उस मुताबिक पूरी तैयारी करने मे लग जावे व वह बापू की परीक्षा मे इस जन्म मे (देह से) पास हो जावे तो उससे खूब सुख व लाभ मिलेगा। पू० बापू ने २१-९ को मुझे जो पत्र भेजा है। उसकी नकल इस प्रकार है

तुम किसी प्रकार भी परेशान मत होना। तुम्हें तो नाचना ही चाहिए कि तुमने जिसे बल माना है, वह तुम्हारे प्रिय काम के लिए पूर्णाहुति दे, यह तुम्हारे लिए उत्सव ही होना चाहिए।

जानकी मैया के साथ मेरा विनोद चल रहा है। सरदार और महादेव तुम्हें याद करते है।

बापू की इस भीष्म-प्रतिज्ञा ने तो हम सबो की अस्पृश्यता-निवारण

की जवाबदारी बहुत ज्यादा बढा दी है। परमात्मा से ही रोज मै तो प्रार्थना करता हू । तुम सब भी किया करो, जिससे हम सब लोग अपना कर्तव्य व जवाबदारी पूर्णतया समझते रहे व उसे पूर्ण करने के लिए जी-जान से उद्योग करते रहे ।

.. .. ..

अलमोडा, ६-५-३३

चि० कमल,

तुम उपवास के समय पू० बापूजी को जाकर कष्ट मत देना ।

पूना, ३०-५-३३

चि० कमल,

तुम्हारी ता० २८-५-३३ की चिट्ठी व श्री वकीलजी की चिट्ठी कल मिली । प्रार्थना के बाद दोपहर को १२-२५ पर पू० बापूजी ने नारगी के रस से उपवास तोड दिया । वे कमजोर व थके हुए होने पर भी प्रसन्न थे । डाक्टरो ने उन्हे कम-से-कम दो सप्ताह तक पूर्ण विश्राति लेने को कहा है ।

.. .. ..

खडवा-अजमेर के रास्ते, ७-१२-३३

चि० कमला,

चि० उमा तो बापू के साथ खूब अनुभव ले रही है, उसे थोडी सर्दी हो गई है, परतु जल्दी निकल जावेगी । उसे कोई परवा तो है ही नही । बापूजी को बीच-बीच मे बहुत हँसाया करती है ।

.. .. ..

गोदिया, २३-१-३४

चि० कमल,

तुमने अपने विचार साफ-साफ लिख दिये, यह जानकर बहुत खुशी हुई । मै ता० २६-१ को वर्धा पहुचूगा । वहा से उनकी एक नकल पू० बापूजी के पास भेज दूगा और इस विषय मे उन्हे पत्र भी लिखूगा । तुम भी सक्षेप मे अपना इरादा उन्हे लिख भेजना ।

विहार मे बहुत हानि हुई । वहा जाकर कुछ सेवा करने की इच्छा तो जरूर होती है, परन्तु हाथ मे लिया हुआ काम छोडकर जाने मे सकोच

हो रहा है। पू० बापूजी को तार दिया है। वर्धा जाकर विचार करूगा। बम्बई से जो-कुछ सहायता वहा भिजवाई जा सके, वह पू० राजेन्द्रबाबू के पास भिजवाने का खयाल तुम भी रखना, समय मिले तब।

• • • • • •

बंबई, १४-११-३४

चि० मदालसा,

तुमने पू० बापूजी की आज्ञानुसार प्रयोग शुरू किया सो ठीक है, यदि पुराने प्रयोग से वज़न बढता था तो उसे ही चालू रखना ठीक था। अब भी यदि इस प्रयोग से वजन आदि न बढे तो पू० बापूजी को बराबर सब बाते कहती रहना व जैसा वे कहे, उसी प्रकार चलना।

• • • • •

बंबई, २४-१२-३४

प्रिय कमल,

तुम्हारा ता० २१-१२-३४ का लिखा पत्र मिला। सब दृष्टि से विचार करते हुए तुम्हारा कोलबो जाना ही मुझे ठीक मालूम देता है। वहा जाने से तुम्हारी अग्रेजी भी काफी सुधर जायगी। तुम जो निश्चय करो, मुझे लिखते रहना। पू० बापू और विनोबा का आशीर्वाद जरूर प्राप्त कर लेना।

• • •

बम्बई, ९-१-३५

चि० कमल,

आज बापूजी का पत्र आया है कि सीलोन मे मलेरिया बद हो जाने के बाद तुम्हे भेजेगे, सो ठीक है। तुमने अपनी तैयारी तो करना शुरू कर ही दी होवेगी।

चि० ओम् के कान का क्या हाल है? अगर अभी तक बिलकुल ठीक नही हुआ हो तो उसे यहा भेज देना ठीक होगा। बापूजी ने भी लिखा है कि मैंने वर्धा तार भेजा है, ओम् को बबई भेजने के बारे मे। मुझे पूरी हालत लिखना।

• • • •

बबई, १६-१-३५

चि० मदालसा,

तुम पाच-छ मील घूम लेती हो तथा कार्यक्रम ठीक चल रहा है लिखा, सो जाना, सतोष हुआ। आहार के बारे मे बापू का पत्र आने पर मुझे लिखना।

तुम्हारी माता अगर रोज दिन मे दो बार ही बापू के माफक या मेरे माफक कई बार मन मे आनद लेने की आदत अपनेमे लाने का प्रयत्न करे तथा ईश्वर पर अधिक श्रद्धा बढावे तो उसका मन और स्वास्थ्य तो ठीक होवेगा ही, आत्मा भी सुखी और शात रहेगी।

.. .. ..

कानपुर, ६-९-३५

प्रिय कमल,

तुम्हारे गत पत्र मे तुमने सीलोन के बारे मे लिखा है। तुम्हे मालूम होगा कि उस समय मै कान के आपरेशन के कारण अखबार आदि बहुत कम पढता था और सीलोन के हालात से पूर्णतया वाकिफ नही था। मेरा खयाल है कि पू० महात्माजी ने इस बारे मे पत्र-व्यवहार किया है। उनका शायद यह मानना है कि सीलोन का ऑर्गनाइजेशन भी बराबर नही था और वहा एफीशेंट काम नही हो पाता था। मै समझता हू, तुम इस विषय मे पू० बापूजी से पत्र-व्यवहार करो। वहा से कई लोगो ने बापू को यह भी लिखा था कि बाहरी मदद की ज़रूरत नही। ऐसी मेरी समझ है, निश्चित मालूम नही।

.. .. ..

बिंसर, अलमोडा, २४-९-३५

चि० कमल,

आज बापूजी का जन्म-दिन है। दादा धर्माधिकारी का अभी सुन्दर प्रवचन शुरू होनेवाला है।

.. .. ..

वर्धा, १-२-३६

चि० कमल,

मुझे भी यह मास प्राय. चिता मे ही बिताना पड़ा। पहले पू० बापूजी

के स्वास्थ्य की चिंता थी। बाद मे तीन-चार विवाहो की व्यवस्था वगैरा की रही।

तुम्हारे सबध के बारे मे तुम मेरी राय तो जानते ही हो कि विवाह करके ही तुम्हे यहा से यूरोप जाना चाहिए। मेरी इस राय मे प्राय सब ही गुरुजनो की राय भी शामिल है, जैसे पू० बापू, काकासाहब, जाजूजी, विनोबा आदि।

• • •

सावरमती-आश्रम, १२-२-३६

चि० कमल,

विवाह-सबध के बारे मे मै तुमसे विशेष आग्रह नही करता, और एक प्रकार से तुमको स्वतत्रता देने के लिए भी मै तैयार हो जाता, परतु मेरे सामने जिन होनहार लडकियो का ऑफर है, उसको देखते हुए व अन्य गुरुजनो की सलाह पर खयाल करते हुए मै तुम्हारे हित की दृष्टि से ही इस बात को सामने रख रहा हू। सतीश भी तो सबध करके ही यहा से गया है। बाकी मेरा तो प्रश्न अभी रहने दो। यदि पू० बापू एव विनोवा को तुम सतोष दिला सकोगे तो मेरा अधिक कुछ कहना नही रहेगा।

सारी बातो का विचार करते हुए मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि छुट्टियो मे तुम इधर आ सको तो ठीक होगा। काग्रेस मे हाजिर रह सकोगे। अबकी बार प्रदर्शनी का भी एक नया रूप रहेगा। वातावरण भी नया रहेगा। तुम उस तरफ घूमना चाहते हो तो इधर भी घूम सकते हो। पू० बापू एव विनोबा से बाते हो सकेगी। भविष्य का प्रोग्राम निश्चित करने मे सहायता मिल सकेगी। मौसम गर्मी का होने की वजह से धूप की कुछ तकलीफ तो रहेगी, परतु इससे तुम नही डरोगे।

• •

कैप सावली, २-३-३६

चि० कमलनयन,

मै यहा गाधी-सेवा-सघ की वार्षिक परिषद् के लिए आया था। पू० बापूजी व सरदारसाहब भी यही है। पू० बापू व सरदार ७ तारीख को दिल्ली जा रहे है। मेरा विचार इस महीने के मध्य से रवाना होकर

बम्बई-ब्यावर होते हुए दिल्ली पहुचने का है। आगे का कार्यक्रम वही तय होगा। बहुत-कुछ जवाहरलालजी व पूज्य बापूजी के कार्यक्रम के आधार पर ही होगा। मुझे कलकत्ता जाना तो पडेगा ही।

तुम्हारा पत्र व कटिंग पू० बापू, महादेवभाई, सरदार वगैरा ने पढ लिया है।

.. .. ..

वर्धा, ९-७-३६

चि० कमल,

बबई मे तुमको पू० बापू की ओर से भेजे हुए इट्रोडक्टरी लेटर्स (परिचय-पत्र) मिल गए होगे।

.. .. ..

वर्धा, २४-७-३६

चि० कमल,

आज सुबह मै, श्री जानकी देवी, राजकुमारी अमृतकौर, महादेवभाई, श्रीमन्, मोहन आदि सेगाव मे थे। आज पू० बापू द्वारा मुद्दा झेला गया तथा सगाई पक्की होने की घोषणा की गई है। इस सबध का एक तार श्री लक्ष्मणप्रसादजी एव एक तुमको किया है।

आज नागपचमी का शुभ दिन है, आज तुम्हारा व सावित्री का सबध बापू ने ज़ाहिर कर दिया है।

.. .. ..

वर्धा, ७-९-३६

चि० कमल,

पू० वापू को बीच मे मलेरिया ज्वर ने हैरान किया था। तीन दिन तक १०५ डिगरी ज्वर रहा था। अब बुखार नही है। वापू वर्धा-अस्पताल मे है। डॉ० साहनी उनकी देखभाल करते है। सतत सेवा मे वा व मीरावहन है।

. .. ..

वर्धा, २४-९-३६

प्रिय कमल,

श्री वकील की भविष्यवाणी वापू के सवध की १९ अक्तूबर, १०

वजे दिन को हार्टफेल की गलत ठहरी। इसका तो समाधान है, परतु उसकी भविष्यवाणी से तुम्हारी मा वहुत चिंतित रही। मुझे भी थोडी चिंता-व्यथा रखनी पडी। विना कारण तार-खर्च भी हुआ। मुझे तो विश्वास नही था। भविष्य में तुम भी खयाल रखना।

.. .. ..

वर्धा, १७-११-३६

चि० मदालसा,

दिसवर के आखिरी सप्ताह मे यहा फेलोशिप (व्रादरहुड) के लोग आयगे—करीव पचास से ज्यादा अग्रेज। सभी पुरुष रहेगे। पाच दिन यहा रहेगे। प्राय' सव व्यवस्था अपनेको ही करनी होगी। तुम्हे या तुम्हारी मा को याद होगा, जव हम लोग सावरमती रहते थे, तव ये लोग वहा आये थे। वहा तो वापूजी ने वटवारा कर दिया था। भोजन के लिए अपने घर भी आया करते थे। इनका सम्मेलन देखने-योग्य होगा।

.. .. .

जानकी-कुटीर, जुहू, ३-६-३७

प्रिय कमल,

वापूजी को विवाह का आग्रह करने का उत्साह नही होता है। वह तो कलकत्ते जाना वैसे ही पसद नही करते है।

.. .. ..

वर्धा, २-१२-३७

प्रिय कमल,

पू० वापूजी का स्वास्थ्य इन दिनो ज्यादा नरम रहता है। ब्लड-प्रेशर सुवह २००-११४ हो जाता है। दोपहर को कभी-कभी १५०-९० भी हो जाता है। इतना हर-हमेश रहे तो वहुत ठीक हो। डाक्टर लोगो को भी थोडी चिंता है। इन्हे पूरा आराम मिले, इसका खयाल तो रखा जाता है। मै प्राय सोता तो सेगाव मे ही हू। मुलाकात वगैरा वद है। यहा आराम नही हुआ तो फिर इन्हे समुद्र-तट पर ले जाना पडेगा। वे तो जाना नही चाहते है। तुम चिंता नही करना। ईश्वर को इनसे सेवा लेनी होगी तो कोई जोखम होनेवाली नही है।

जुहू, १४-१२-३७

चि० कमल,

पू० बापूजी का स्वास्थ्य इन दिनो मे काफी कमजोर हो गया था। प्रेशर बहुत बढा हुआ रहने लगा था। डाक्टरो ने उन्हे समुद्र की हवा मे रहने की सलाह दी और सात दिन हुए, पू० बापूजी और हम सब लोग यहा जुहू मे आये हुए है। जाते ही तो पू० बापूजी अपने झोपडे ही मे ठहरे थे, पर बाद मे नर्सिग के सुभीते के विचार से डॉक्टर ने उन्हे बिडला-कॉटेज मे रक्खा है। डॉ० जीवराज मेहता, डॉ० गिल्डर व दिनशा मेहता उनकी सभाल लेते है। पू० बापूजी को यहा की हवा से काफी लाभ पहुच रहा है। दिसबर आखिर तक तो अभी यहा रहने का विचार है। वह तो सेगाव जाने को कहते रहते है, पर अभी तो यही रहना उनके लिए लाभकर है। यहा का मौसम भी इस वक्त बहुत अच्छा है। मेरा विचार भी, पू० बापूजी यहां है तबतक, यही रहने का है।

.. .. ..

वर्धा, २४-१-३८

प्रिय कमल,

मुझे इन महीनो मे कार्य ज्यादा रहा—बापू के स्वास्थ्य के कारण व प्रातिक काग्रेस के चुनाव के कारण भी। अब हरिपुरा तक तो यो चलता रहेगा। बापूजी का स्वास्थ्य पहले से ठीक है। लार्ड लोथियन यहा तीन रोज रह गए। सेगाव मे अपनी झोपडी मे रहे थे।

.. .. ..

वर्धा, ८-३-३८

चि० मदालसा,

तुम्हारे पत्र मिले। मै आज ही राची जा रहा था। परतु श्री सुभाष बाबू आज नागपुर से फिर वापस यहा बापूजी से मिलने आये और मुझे टेलीफोन से रहने को कहा। इसलिए मै अब कल रवाना होकर ता० १० को राची पहुच जाऊगा।

पू० बापूजी की इच्छा बालकोबा को जुहू भेजने की हो रही है। क्या

उनके लिए अलग दो आदमी रहे, ऐसी झोपडी बनाना ठीक रहेगा या पक्की इमारत ?

मोरासागर, २२-२-३९

प्रिय कमल,

मेहमानो की मै अब क्यो चिंता करू ! तुब समर्थ हो, मेहमानो व बापूजी को बराबर सभालोगे ही ।

• •• ••

नासिक, २९-६-४१

चि० मदालसा,

पू० बापूजी से कह देना, यहा मुझे ठीक लाभ मिलना सभव है । उत्साह ठीक मालूम होता है । मै बबई से दूसरे ही दिन चला आया, यह भी बापू से कह देना । आशा है, अब जल्दी ही तुम्हारे यहा बरसात आ जावेगी ।

नासिक रोड, १-७-४१

चि० मदू,

मुझे कई अनुभवी लोग कह रहे है कि नासिक मे थोडी ठड मे भी घुटनो मे दर्द का डर है, तो शिमला मे तो बरसात भी ज्यादा होती है व ठड भी । सो तुम बापूजी से बात कह देना । वैसे शाति तो यहा भी है । उनका शिमला भेजने का ही, विचार हो, तब तो मै यहा से अगले मगलवार को निकलकर बुधवार को वर्धा पहुच जाऊगा । जल्दी मे सोमवार को भी पहुच सकूगा । अगर उनकी इच्छा हो कि मै नासिक ज्यादा दिम रह सकता हू, तो मुझे जल्दी सूचना मिल जाने से मै यहा एक-दो महीने के लिए कोई छोटा-सा बगला किराये का ले लूगा व रसोइया की व्यवस्था कर लूगा । अभी तो मै श्रीगोपालजी नेवटिया का मेहमान हो रहा हू ।

जमनालाल का आशीर्वाद

•

शिमला वेस्ट, १९-७-४१

चि० मदू,

तुम्हारा १७-७ का पत्र अभी मिला । वर्णन पढकर खुशी हुई ।

वजन सचमुच मे तीन पौड बढा होगा । पू० बापू को विश्वास होगया होगा ।

यहा एक तोफाबाई है । इसको घर के सब इतनी ज्यादा प्रेम व सेवा करते है कि देखकर आश्चर्य होता है । तुम्हारी मा व बाप इतना प्रेम व सेवा पू० बापू या विनोबा या अन्य गुरुजनो की या बालको की कर सके तो कितना अच्छा हो ! यह तोफाबाई कौन है, पू० बापू से पूछ लेना । वह जानते है । उनकी गोद मे भी बैठने का इसे सौभाग्य मिला है ।

.. .. ..

शिमला वेस्ट, २४-७-४१

चि० मदू,

पू० बापूजी से कह देना कि उनका ता० २१-७ का पत्र मिल गया है । पू० बहन राजकुमारी व उनके परिवार के प्रेम-व्यवहार से ठीक लाभ उठाने का प्रयत्न कर रहा हू । मैने अपनेको राजकुमारी बहन के सुपुर्द कर रखा है । जो वह देती है, वही खाता हू; भूख ज्यादा लगती है तो प्रेम के साथ मीठी लडाई लड लेता हू । उनके भाई कर्नल भी मेरे लिए बहन से लडते रहते है कि मुझे भूखा क्यो मारती है । ठीक लडने मे आनद आता है । बहन खान-पान का बापू की लिखावट के मुताबिक पूरा खयाल रखती है । मै भी खयाल तो रखता ही हू पर थोडा; क्योकि दो जने चिता क्यो करे ! जब एक समझदार नर्स अपने कर्तव्य का ठीक पालन करती हो, तव फिर मरीज (बीमार) को चिता रखने की क्या जरूरत ! उसे तो फिर नर्स व डाक्टर से विनोद की लडाई लडने मे ही आनद आना चाहिए । याने खाने-पीने की कसर को भुलाना चाहिए । यहा फल व साग तो ताजे व अच्छे आते ही है, इनके बाग मे से भी निकलते रहते है । बापू को पत्र इसलिए नही लिखता कि उन्हे जवाब लिखना पडे । बहन तो रोज लिखती ही है । बापूजी उन्हे लिखते रहते है । फिर बापू का काम दुहरा क्यो बढाऊ ! तुम कह ही देती होगी ।

मुझे तो गवारपाठे का पाक बापू खिलाते है । मुझे पेट भरकर रोटी भी नही देते । क्या यह इसाफ है (मिठाई-खटाई की तो बात ही कहा !)

.. .. ..

शिमला वेस्ट, २७/२९-७-४१

चि० मदू,

तुम्हारा ता० २५-७ का पत्र वहन के पत्र मे आज मिला। वापू का पत्र भी मिला। उन्हे मैंने जवाव वहन के पत्र मे ही लिख भेजा है। तुम वापू से मागकर पढ लेना, जिससे मेरी इच्छा मालूम हो जावेगी।

तुम्हे चेज से मन को शाति मिलती है, तो जरूर वापूजी से पूछकर बीच-बीच मे चेज कर लिया करो।

तुम्हारी माजी राजी रहती है, तुम्हारा उसका ठीक जम रहा है, जानकर मुझे सुख मिल रहा है। परमात्मा ने किया तो थोडी उदारता और वढ जावेगी, जैसी कि आशा है, तो सवोको सतोप हो जावेगा। उसमे गुण तो वहुत ज्यादा है, परतु हम लोगो को चाहिए उतने समझ मे नही आये है। तुम कोई रास्ता व्यावहारिक ढूढ निकालो, जिससे उसे खूब आनद, सुख व सतोष मिल सके। मेरे मन मे ये विचार तो प्राय आते रहते है व चिता भी वनी रहती है। परतु कोई राज-मार्ग अभी तक निकाल नही पाया। इसका मुख्य कारण तो मेरे विचार करने की पद्धति व उसके विचार करने की पद्धति मे वहुत ज्यादा फरक है। अव यह फरक तो शायद पू० वापू ही निकाल सकेगे।

उससे ज्यादा उदारता की आशा रखना शायद मेरे लिए उचित भी न हो। हा, एक बात अगर वह कर सके, याने पू० वापू पर हृदय से पूरी श्रद्धा वढा सके तो, मुझे आशा है, उसे खूब लाभ पहुचेगा। बीच-बीच मे उसे वापू से बात करने का मौका मिलता रहेगा तो ठीक रहेगा। तुम भी इस वात का खयाल रखना। मैंने भी वापू को सूचित तो कर दिया है। बापू पर बोझ न पडते हुए उनके अनुभवो से हम लोगो को लाभ अवश्य उठाना चाहिए। बापू से ज्यादा (शुद्ध) प्रेम और कहा से मिलनेवाला है!

.. ..

शिमला वेस्ट, ३-९-४१

चि० मदू,

कुटिया कुछ वडी व ढग की गुलाटीजी बना सके तो कह देखना। आखिर तो बापू की इच्छा होगी, वैसी ही बनेगी।

डॉ० दास को बापूजी ने इजाजत नही दी सो उन्होने सोचकर ही ऐसा किया होगा। डॉ० दास के खाने-पीने, आराम का खयाल रखना, उनके क्रोध का ज्यादा विचार नही करना। सरल-हृदय सज्जन पुरुष है, मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारी मा को बापूजी चिढाते है, कहते है कि 'बछडे के पीछे गाय की तरह ही सदा साथ रहना देखो' सो ठीक, परतु बछडा बडा होने पर वह भी अपनी मा को भूल जाता है और मा भी, ऐसा कहते है। सो तुम्हारा दोनो का यो न होने पावे, इसकी सभाल रखना।

पू० बापूजी से कहना, पत्र उनका ता० ३०-७ का मिल गया है। अभी तो मै यहापर हू ही। आगे बहन की सलाह से कार्यक्रम बनाने की इच्छा होगी तब बना लूगा। यहा पर भी कैद मे हू ही। यह कैद अमीरी याने स्टेट-गैस्ट की तरह की है।

बापू से कहना, अगर देहरादून जाना हुआ और मा आनदमयी से सुगमता से मिलना हो सका, तो खयाल रखूगा।

.. .. ..

शिमला वेस्ट, ५-९-४१

चि० मदू,

तिलक-जयती पर बापू का खादी-विद्यालय का उद्घाटन-भाषण स्पष्ट (हृदय की आवाज़) मन से बोले, सो थोडा तो पत्रो मे पढा है। बाकी 'खादी-जगत्' या 'सर्वोदय' मे देखने को मिल जावेगा।

पू० राजकुमारी बहन का देहरादून से आये-बाद स्वास्थ्य थोडा नरम रहता है। पू० बापू से विनोद करना कि मुझे बीमार समझकर उनकी देख-रेख मे भेजा है, परन्तु बीमार तो सचमुच मे वह है। मुझे उन्हे हँसाना पडता है। उनके दिल-बहलाव के लिए भी पत्ते, शतरज व नाना तरह के खेल रात को प्राय रोज खेलना पडता है। वह शायद समझती है मेरे मन-बहलाव के लिए। यह भी ठीक हो सकता है। हा, यह बात ज़रूर है कि उनको हराने मे हम बाकी के सबोको ठीक आनद आता है। क्योकि वह बहुत होशियार, तेज़ बुद्धि की व खेलने मे ऐक्सपर्ट समझी जाती है।

.. .. ..

शिमला वेस्ट, १४-९-४१

चि० मदू,

वर्धा आने के वाद सीकर जाने का वापूजी की आज्ञा से निश्चय होवेगा ।

चि० प्रभावती के पत्र का जवाव मैने वापू के पते से भेजा था, वह उसे मिल गया होवेगा ।

डेढ सौ रुपये पू० वापूजी को देने के लिए राजकुमारी वहन की भतीजी कु० वेअरिल ने दिये है । सो मेरे हस्ते खाते नाम लिखवाकर दूकान से मगा लेना व वापूजी को दे देना और उनके पास से इन्हे पहुच भिजवा देना, याद रखकर ।

• • •

देहरादून, १९-९-४१

चि० मदू,

परसो ही मै यहा श्री आनदमयी माताजी (वगाली) (कमला नेहरू की गुरु) यहा से पाच मील रायपुर नाम के देहात मे रहती है, उनसे मिल आया । पू० वापू ने इनसे मिलने के लिए लिखा था । करीव दो घटे उनके पास रहा, ठीक वातचीत हुई । मुझे उनके पास वैठकर वातचीत करने से सतोष मिला । करीव आधा घटा एकान्त मे भी वाते हुई । मैने उनसे कहा "मातृवत् परदारेषु, परद्रव्येषु लोष्टवत् । आत्मवत् सर्वभूतेषु य पश्यति स पश्यति ।"—इस प्रकार की मेरी भावना इस जन्म मे जिस प्रकार हो सके, वह मार्ग वतावे । उन्होने प्रेमपूर्वक कुछ वाते वताई है । मै आज फिर उनके पास जा रहा हू । वही दिन व रात रहने का विचार है । वहा स्थान आदि देख आऊगा । वाद मे पूज्य वापूजी की इजाजत लेकर कुछ समय वहा रहने की इच्छा हो रही है । सात्त्विक वातावरण दिखाई देता है ।

पू० वापू को यह पत्र पढा देना ।

• • •

देहरादून, २१-८-४१

चि० मदू,

मेरा पत्र तो वापू के नाम का पढ ही लिया होगा । मुझे यह स्थान व

यहा का वातावरण व पू० मा आनदमयी का स्वच्छ प्रेम आदि के कारण यही ज्यादा समय तक रहने की इच्छा व उत्साह मालूम होता है। आज पू० बापू का तार भी मेरे तार के जवाब मे मिल गया, मेरी इच्छा हो वहा-तक ठहरने के बारे मे। तार पढकर सुख मिला। मुझे बाप तो बापू मिल ही गए थे, मा आनदमयी मिल गई। अब भी मुझे शाति नही मिली तो मेरा ही कोई भारी पाप आडे आना सभव होगा। मुझे आशा है, जरूर शाति मिल जावेगी। मा आनदमयी से मिलने की सूचना तो पू० बापू ने ही की थी।

बापू को पढा देना, मा को कह देना।

• • • • • •

डाक-बगला, अलमोडा, १०-९-४१

चि० मदू,

मै, उमा और राजनारायण नैनीताल से ता० ७ को सुबह निकलकर दो रात कौसानी के सरकारी स्टेट-बगले मे रहे। यह स्थान चनौदा गाधी-आश्रम से तीन मील आगे है। बहुत अच्छा स्थान मालूम हुआ। पू० बापूजी भी यहा ९-१० रोज़ रहे थे। उन्हे भी यह स्थान पसद आया बताते है।

पू० बापूजी से मिलने पर खान-पान के बधन थोडे ढीले करने की इच्छा है। अन्यथा मुसाफिरी मे थोडा कष्ट होता है। खर्च भी ज्यादा आता है। मौका लगे तो मेरे पत्र का साराश पू० बापू से कह देना।

बापू जेल मे नही भेजेंगे तो नेपाल जा-आने का विचार कर रहा हू। पैदल भ्रमण का उत्साह व इच्छा बढती जा रही है। रेल-मोटर की मुसाफरी का उत्साह कम होता जा रहा है। कैलास-मानसरोवर भी जाने का मन होता है। देखे, क्या होनेवाला है।

अपने मित्रों तथा सहयोगियों को

जमनालाल बजाज द्वारा लिखे पत्रों में से

गांधीजी-संबंधी उल्लेख

बीकानेर, ५-१०-२५

श्री हरिभाऊजी,

पूज्य बापूजी के पत्र की नकल भेजी, सो भी पढी । पू० बापूजी से बातचीत हुई । उन्होने आपको सीधा पत्र लिखा ही होगा । 'नवजीवन' का दूसरी तरह से पूरा बदोबस्त हो जाने से आप राजस्थान जा सकते हैं, ऐसी उनकी राय है । मुझे भी आपका विचार रुचिकर मालूम हुआ है । अतएव 'नवजीवन' किसी योग्य सज्जन को सौंपकर आप राजस्थान मे जा सकते है । मेरी राय मे वह सज्जन हिन्दी के विद्वान् होने चाहिए तथा उनकी शैली सरल होनी चाहिए । वह पूज्य बापूजी के जीवन तथा सिद्धान्तो को पूरी तौर से समझ गए हो या समझने का सतत प्रयत्न करते हो । आप जैसे पू० बापूजी के कार्य के लिए तैयार हो गए हैं, वैसे वह भी थोडे दिनो मे तैयार हो सके, ऐसे हो ।

श्री हरिभाऊ उपाध्याय,
साबरमती ।

.. .. ..

बबई, १०-१-२६

प्रिय हरिभाऊजी,

पू० बापूजी की इच्छा है कि चरखा-सघ के आफिस का काम सब हिन्दी मे चले । इसके लिए शकरलालभाई को किसी आदमी की ज़रूरत है । अगर आप उस आफिस मे रहना पसद करे तो उनको दूसरा आदमी देखने की ज़रूरत न होगी ।

चरखा-सघ के कार्यालय में अगर आप एक वर्ष तक कार्य करे, तो मुझे विश्वास होता है कि बहुत-सी बातो का अनुभव हो जायगा । पू० बापूजी भी एक वर्ष तक आश्रम मे रहनेवाले हैं, इसलिए खादी के सबध मे उनके विचार, अनुभव तथा अन्य बातो का अनुभव हो जायगा । हम लोग समय-समय पर वहा आते रहेगे । अगर आप ठीक समझे तो मुझे व शकरलाल-भाई को लिखे ।

सावरमती, १५-५-२९

प्रिय हरिभाऊजी,

मेरा यह मानना है कि जनता के पैसे पर अपनी ताकत से वाहर जाकर प्रयोग नही करना चाहिए। इस वारे मे पू० वापूजी की कार्य-प्रणाली का हम सर्वथा अनुकरण नही कर सकते है। क्योकि पू० वापूजी का देश मे जो स्थान है, और जिस योग्यता के साथ वापूजी जो कार्य अपने हाथ से करते है, उसमे जितनी चिता रख सकते है और उनके ध्यान मे कार्य विगडने न पावे, और एक पाई का भी दुरुपयोग न हो, उसका दर्द ओर खयाल वह रखते है। ये तीनो वाते हम लोगो मे नही है, यह हमे भूलना नही चाहिए।

श्री हरिभाऊ उपाध्याय जमनालाल वजाज का वदेमातरम्
अजमेर।

•

सावरमती, १८-६-२८

प्रिय हरिभाऊजी,

आजकल वारडोली की लडाई खूब जोर से चल रही है। सरकार भी जोर से सामना कर रही है और भविष्य मे और जोर से करेगी, ऐसा सभव है। मै वहा सात-आठ रोज घूम आया। वहा का किसान-वर्ग और वहा की जनता की तैयारी तो वडी अच्छी मालूम होती है। मुझे तो लगता है कि पू० वापूजी का सदेश सारे भारतवर्ष मे और तमाम दुनिया-भर मे वारडोली के जरिये फैलना सभव है। वारडोली-युद्ध लवा चला तो हम सवको तैयार रहना होगा। आप खूब वारीकी से वारडोली का अध्ययन करते होगे।

•

वर्धा, ७-१२-२८

प्रिय भाई श्री जवाहरलालजी,

लाहौर और लखनऊ मे पुलिस ने जो अत्याचार किये है, उनकी खबर पढकर और सुनकर दुख होता है। एक तरफ लाहौर मे पुलिस का कार्य और दूसरी तरफ लोगो की उदासीनता देखकर दुख हुए विना नही रह

सकता। लखनऊ मे आपके ऊपर पुलिस की मार पडी, लेकिन चोट ज्यादा न आई, यह आपके पूज्य महात्माजी को लिखे पत्र से जानकर कुछ सतोष हुआ। लेकिन पुलिस और सरकार इस तरह अपनी मनमानी कर सके, यह देश के लिए कम लज्जा की बात नही है।

प जवाहरलाल नेहरू,
इलाहाबाद ।

• • • •

बवई, २४-४-२९

प्रिय हरिभाऊजी ,

रानीपरज की प्रजा मे खूब जागृति हुई है। खादी-प्रचार व दारू-विरोध का खास कार्य हुआ है। जिस समय वहा की स्त्रिया (देविया) सैकडो की सख्या मे शुद्ध सफेद खादी पहने हुए राजनीतिक जागृति व वारडोली-सगठन, चरखे का महत्त्व तथा अन्य सामाजिक सुधार के गीत व भजन अपनी भाषा मे व गुजराती भाषा मे गाती है उस समय किसी भी सहृदय भारतवासी के मन मे उनकी इस प्रकार की जागृति देख आनद का सचार हुए विना नही रहता। ईश्वर ने चाहा तो इस पिछडी हुई जाति मे, जिसमे पूज्य बापूजी दरिद्रनारायण के दर्शन करते है, अवश्य पूज्य बापू की तपश्चर्या के कारण स्थायी तौर पर नवजीवन स्थापित हो जायगा।

• • • •

बबई, १५-८-२९

प्रिय डॉक्टरसाहब

धन्यवाद। मै चरखा-सघ की बैठक के लिए इस महीने के आखिरी सप्ताह मे साबरमती जा रहा हू। तब इस विषय मे मै महात्माजी से बात-चीत कर लूगा। उनकी जैसी सलाह होगी और सुझाव होगा, उसके अनुसार डॉ० जाकिर हुसेन को पत्र भी दे दूगा। मुझे आशा है, आपने भी बापूजी को इस बारे मे लिखा ही होगा।

गत ११ तारीख को पू० बापूजी यहा थे, तब डॉ० जीवराज मेहता ने उनके शरीर की जाच की थी। उनकी रिपोर्ट की एक प्रति इस पत्र के साथ आपके देखने के लिए भेज रहा हू।

श्री महादेवभाई का पत्र आज साबरमती से आया है। वह लिखते है कि गत मगलवार से बापूजी को पेचिश की शिकायत है। बगैर पकाया हुआ खाना शायद इसका कारण है। मै आशा करता हू कि आप इस बारे मे ज़रूर उन्हे उचित सलाह देगे।

डॉ० एम० ए० अन्सारी,
दिल्ली।

वर्धा, २७-१-३०

प्रिय राजाजी,

इस समय बापूजी बहुत-कुछ दक्षिण अफ्रीका के ढग पर सविनय अवज्ञा-आदोलन शुरू करने की बात गभीरता के साथ सोच रहे है। २४ ता० को वल्लभभाई बबई आये थे। उनकी सलाह है कि हम लोग काग्रेस कार्य-कारिणी की मीटिग से दो-तीन दिन पहले ही से मिले।

श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य,
सलेम (मदुरा)।

वर्धा, ३०-१-३०

प्रिय नवाबसाहब,

महात्माजी के साथ जब मै भोपाल आया था, तब आपसे मिलने और भोपाल-राज्य मे खादी का काम शुरू करने की बाबत आपसे बात करने का मौका मुझे मिला था। आप मेरी राय से सहमत हुए थे। अगर आप मेहरबानी करके इस काम की शुरुआत के लिए किसी सरकारी अफसर को हिदायत दे दे, तो मै आपका आभारी होऊगा। इस बाबत अगर आप जरूरत समझे तो मै फरवरी या मार्च मे फिर भोपाल आ सकता हू। आपको यह जानकर खुशी होगी कि कई दूसरे राज्य खादी के उत्पादन के लिए जरूरी कदम उठा रहे है।

पत्र का उत्तर सुविधानुसार दीजियेगा।

श्रीमान् नवाबसाहब,
भोपाल।

१९३०

घनश्यामदासजी बिडला,
नई दिल्ली ।

बापूजी के पास से अभी लौटा । आपके और मालवीयजी के इस्तीफे से बडी प्रसन्नता हुई । यदि आप और मालवीयजी विदेशी वस्त्रो के बहिष्कार की ओर अपना पूरा ध्यान दे तो बापू बहुत खुशी होगे । नमक के एकाधिकार को दूर करने के लिए भी स्वतत्र रूप से काम करे ।
(अग्रेजी तार का अनुवाद)

.. .. ..

शिमला, १५-५-३१

प्रिय श्री हरिभाऊजी,

आपका १०-५-३१ का पत्र पूज्य श्री बापूजी ने मुझे दिया है। बिजोलिया के बारे मे उन्होने आपको लिखा ही है कि वह वर्तमान हालत मे इस मामले के बीच मे नही पड सकते । परिस्थिति ऐसी ही है कि उनके लिए इस सबध मे इस समय कुछ करना ठीक नही होगा। मै बबई मे बीकानेर के महाराजा से मिला था और उनके एक आदमी के साथ उदयपुर उनका पत्र भेजा है । देखा जाय, उस पत्र का क्या असर होता है ।

.. .. ..

वर्धा, २२-५-३१

पूज्य गाधीजी के सिद्धान्तानुसार यह कार्य (अस्पृश्यता-निवारण) अहिसा-वृत्ति से ही किया जा सकता है। इसलिए न्याय की दृष्टि रखनेवाले लोगो को घबराने का कोई विशेष कारण नही होना चाहिए ।

आपके लिख हुए प्रश्नो की चर्चा मै पूज्य महात्माजी से नही कर सका । कारण इस बार उन्हे समय नही था। दूसरे, ऐसे प्रश्न कई बार हुए है और उनका जवाब उन्होने लिखकर तथा ज़बानी दिया हुआ है। गत ता० ६-८-३१ के 'नवजीवन' मे अहमदाबाद मे अस्पृश्यो के लिए एक मदिर खोलने के अवसर पर भी उन्होने अपने जो विचार प्रकट किये थे, वे प्रकाशित हुए है ।

श्री अच्युतस्वामीजी ।

वर्धा, २४-९-३३

प्रिय भाई घनश्यामदासजी,

पू० बापूजी ने आज मुझसे साबरमती-आश्रम की ज़मीन व इमारतो के बारे मे बातचीत की थी। सरकार ने उस ज़मीन व इमारतो का कब्ज़ा नही किया तो फिर क्या किया जाय, इसपर अहमदाबाद मे कई मित्रो ने कई प्रकार की योजनाए उनके सामने रखी। आश्रम की ज़मीन व इमारतो को जब सरकार के हवाले करने का निश्चय किया था तब तो यह विचार था कि जब कभी सरकार से समझौता हो जायगा तब, या स्वराज्य मिलने पर, इस ज़मीन तथा इमारतो का आश्रम के काम के लिए उपयोग किया जाय। परतु अब बापू का यह विचार हुआ है कि इस जमीन व सब इमारतो का स्थायी तौर से हरिजन लोगो की सब प्रकार की उन्नति के काम मे उपयोग किया जाय। अब सवाल यह पैदा हो रहा है कि यह सब ज़मीन, इमारते अहमदाबाद के मित्रो के, जो इस काम मे रस लेते है, अधीन की जावे या हरिजन-बोर्ड के? मैंने तो यही राय दी कि वह स्टेट हरिजन-बोर्ड (जनरल) के सुपुर्द करना ज्यादा ठीक रहेगा। इस चर्चा के बाद यह विचार हुआ कि श्री अमृतलालजी ठक्कर यहा तारीख २९ को आनेवाले है ही। अगर उस समय कुछ रोज़ के लिए आप भी यहा आ जावे तो इसका पूर्णतया सतोपकारक खुलासा हो सकेगा। सो अगर आप यहा इस मास के आखिर या अक्तूबर के प्रथम या दूसरे सप्ताह मे आ सके तो समक्ष मे सतोषकारक निश्चय हो जायगा। इससे पूज्य बापू व हम सबोको पूरा सतोष रहेगा। कानूनी लिखा-पढी भी होना ज़रूरी है। पू० बापू इसका जल्दी ही फैसला कर लेना चाहते है। उनकी आज्ञा से ही यह पत्र मैं आपको लिख रहा हू। आपको यहा आये भी बहुत दिन हो गए है।

इन्दौर, १२-८-३५

श्रीमत महाराजासाहब,

मै कल सुबह सीकर के लिए रवाना हो रहा हूं। मेरे मित्र श्री मणिलाल कोठारी १५ ता० तक यहा ठहरेगे। हमारे यहा के निवास के बीच आपके आतिथ्य और कृपा के लिए मैं और श्री कोठारी दोनो आपके आभारी है।

महात्माजी को हिन्दी-प्रचार के लिए भेंट दी जानेवाली थैली के लिए आपने जो उदारतापूर्वक दान दिया, उसके लिए हम दोनो की ओर से आपको अनेकानेक धन्यवाद। महात्माजी के प्रति आपकी श्रद्धा और हिन्दी-प्रचार के प्रति आपकी असीम सहानुभूति का हमपर बहुत असर पडा है।

श्रीमत यशवतराव होल्कर,
इदौर।
(अग्रेजी से अनूदित)

.. .. ..

बबई, ७-११-३७

प्रिय चिरजीलाल,

श्री मीराबहन का पत्र आया है। बापूजी का स्वास्थ्य इधर खराब है। वह १०-११ तक वर्धा आवेगें। उनके लिए मीराबहन मकान मे थोडी दुरुस्ती कराना चाहती है, वह उनसे मिलकर जरूर करवा देना। मीराबहन का पत्र उनके पास जरूर भिजवा देना।

चिरजीलाल बडजाते,
वर्धा।

.. .. ..

कैंप देहली, १-१०-३८

प्रिय सर अकबर,

काग्रेस-कार्यसमिति मे आपके कई सच्चे साथी है। गाधीजी कितनी ही बार आपका उल्लेख एक दार्शनिक के रूप मे करते है। वापस हिन्दुस्तान आते समय स्टीमर मे उनकी प्रार्थना-सभाओ मे आपके शामिल होने की बात उन्हे हमेशा याद रहती है।

श्रीमती सरोजिनीदेवी तो आपके परिवार की सदस्या ही हो गई। सरदार को आपके निमत्रण का पूरा खयाल है।

सर अकबर हैदरी,
हैदराबाद (दक्षिण)।
(अग्रेजी से अनूदित)

.. .. ..

जयपुर स्टेट कैदी, ४-७-३९

प्रिय श्री किशोरलालभाई,

जैसे-जैसे मै अपनी कमजोरियो का निरीक्षण करता हू, वैसे-वैसे ही मेरा मन साफ तौर से मुझे कहता है (पहले से कहता आया भी है) कि मै गाधी-सेवा-सघ जैसी उच्च व पवित्र सस्था के योग्य नही हू । ज्यादा नही लिख सकता, एक वार तो आप मुझे मुक्त कर ही डाले। पूज्य वापूजी मेरा समर्थन करेगे। वह मेरी स्थिति से वाकिफ भी है।

मुझे अपनी कमजोरियो का थोडा ज्ञान रहने के कारण मैंने वापू को 'गुरु' नही वनाया, न माना, 'वाप' अवश्य माना है। वह भी इसलिए कि शायद इन्हे वाप मानने से मेरी कमजोरिया हट जायें। वीच में ठीक इन दिनो (याने इन दो वर्षों मे) तो मुझे काफी हैरान, वेचैन, निरुत्साही होना पडा। वापू के लडको मे हरिलाल भी तो है। वह वेचारा प्रसिद्ध हो गया, मेरे सरीखे छिपे हुए रहे। आपने लिखा—गाधी-सेवा-सघ को छोडना याने वापू को छोडना है, यह मानने को मेरा मन तैयार नही है। वापू के दूसरे चार लडके भी तो गाधी-सेवा-सघ मे नही है। फिर मैंने ही क्या इतना पुण्य किया, जिससे रह सकू ? उनकी गति सो मेरी गति। उनमे कई तो उच्च स्थिति मे है। पहले मैंने अहकारवश मान लिया था कि वापू को व उनके सिद्धान्तो को मै थोडा समझ सका हू, परतु ठीक विचार करने से यह साफ दिखाई दे रहा है कि न समझ पाया था, न समझने की ताकत है। मैंने सत्य-अहिसा की व्याख्या मेरे विचार के मुताबिक समझ ली थी, परतु वह मेरी गलती अव साफ दिखाई दे रही है। मेरी लिखने की तो और भी इच्छा होती है, परतु जेल के अदर से ज्यादा क्या लिखू !

श्री किशोरलाल मशरूवाला,
वर्धा।

.. .. ..

प्रिय भाई घनश्यामदासजी,

यदि पूरी कोशिश करके आप यहा एक ऊचे दर्जे के हिन्दुस्तानी दीवान को भिजवा सके तो वहुत-सी कठिनाइयो का हल हो सकता है। मै मेरी ओर से तो पूरी कोशिश करता हू। पू० वापूजी को भी लिखा है। सर कुवर

महाराजसिंह यदि यहा आ जावेगे तो वहुत अच्छा हो। अभीतक दीवान की जगह रिक्त है। आपके खयाल मे यह वात रहे, इसलिए लिख रहा हू।

श्री घनश्यामदास विडला,
दिल्ली।

.. . ..

ववई, मई १९४०

प्रिय श्री कैलासनाथजी,

वर्धा से, पू० वापूजी की प्रार्थना करने पर, आपके जयपुर आने के वारे मे उन्होने आपको तार दिया था। आपका जवाव आ गया था। आपने वहा आना मजूर किया, इससे वापू को व हम सवको खुशी हुई। यो तो मैं ही आपको आने को लिख सकता था और मुझे उम्मीद थी कि आप आना स्वीकार कर लेते, परतु वापू के जरिये वुलाने मे अव आप वापू के प्रतिनिधि होकर जयपुर आवेगे। वापू ने जो पत्र जयपुर की प्रदर्शनी के वारे मे दिया है, उसकी नकल आपकी जानकारी के लिए इसके साथ भेज रहा हू। आप इसका उपयोग अपने भाषण आदि में कर सकते है।

डॉ० कैलासनाथ काटजू,
इलाहावाद।

.. .. ..

प्रिय मौलानासाहव, वर्धा १८-१२-४०

भडारा (म० प्र०) के विधान-सभा-सदस्य श्री वी० एम० जकातदार कल यहा आये थे। पू० वापू से मिले थे। मिश्रजी के मामले में उनके खिलाफ अनुशासन की कार्रवाई की गई थी, जैसाकि उनके पत्र से स्पष्ट है। वह वापू से सत्याग्रह करने की इजाज़त लेने के लिए आये थे। सत्याग्रही की दूसरी सव प्रकार पात्रताए उनमें है। वापू ने उनसे कह दिया है कि जवतक उनका निष्कासन रद्द नही हो जाता, श्री जकातदार को सत्याग्रह करने की इजाज़त देना उनके लिए सम्भव नही होगा। वापू की सलाह से श्री जकातदार ने आपके नाम एक पत्र लिखा है, जिसमें उनके (जकातदार) द्वारा हुए अनुशासन-भग पर श्री जकातदार ने

खेद प्रकट किया है और आपसे निष्कासन-आज्ञा उठा लेने के लिए प्रार्थना की है। इस पत्र की एक नकल मै साथ मे भेज रहा हू।

मौलाना अबुलकलाम आजाद,
कलकत्ता।

१-११-४१

प्रिय परमेश्वरी,

पू० बापूजी को भी कल तुम्हारा पत्र पढाया था। उनकी साफ तौर से इच्छा व एक प्रकार से आज्ञा है कि तुम्हे पूरी शक्ति व तन-मन से मेरे साथ गो-सेवा के काम मे लग जाना चाहिए। उनकी यह भी समझ है कि मेरे साथ तुम्हारा ठीक जम सकेगा, क्योकि मेरा प्रेम तो तुम्हारे प्रति है ही। बापूजी भली प्रकार जानते ही है। वह यह भी समझते है कि तुम्हारे स्वभाव मे जो थोडी-बहुत जिद्द या अव्यावहारिकता दिखाई देती है, वह भी मेरे साथ काम करने से निकल जावेगी। इतनी सब बाते कल खुलकर उनसे नही हुई है, परन्तु समय-समय पर तुम्हारे बारे मे जो बाते होती रही, उसका साराश है। वह (बापूजी) तुम्हे इस काम के लिए उपयोगी तो समझते ही है। अब तुम अपने बारे मे जल्दी निश्चय कर सको तो शुरू से ही कार्य जमाने मे सुभीता रहेगा।

श्री परमेश्वरीप्रसाद गुप्त,
दिल्ली

वर्धा, १९४१

प्रिय भाई रामेश्वरजी,

गोसेवक भी यदि गाय के दूध-घी का इस्तेमाल आग्रहपूर्वक न करता हो, तो फिर दूसरे के ऊपर उसका क्या प्रभाव पड सकता है।

यद्यपि पूज्य बापूजी की इसमे सैद्धान्तिक दृष्टि है और वह तो इस बात पर बहुत ज़ोर देते है, लेकिन मै तो व्यावहारिक दृष्टि से ही इस बात को आवश्यक मानता हू।

श्री रामेश्वर पोद्दार,
धूलिया।

वर्धा, १०-१२-४१

भाई जुगलकिशोरजी,

आपने खादी के काम के लिए कागडा की ओर रु० १०,०००) के चर्खे वितरण करने को तथा २५-३० हजार वहा ऊनी और सूती खादी का काम करने के लिए ओर रु० २०-२५ हजार पिलानी मे खादी-काम के लिए देने को लिखा है। उस विषय मे पजाव के काम के वारे मे डॉ० गोपीचन्दजी का पत्र ओर पिलानी के काम के वारे मे श्री जाजूजी का पत्र इसके साथ भेजता हू। डॉ० गोपीचन्दजी ने भी अपना पत्र श्री जाजूजी की सलाह से लिखा है। वह पजाव के लिए चरखा-सघ के प्रतिनिधि (एजेंट) है। मैंने इस विषय मे पूज्य वापूजी की सलाह ली। उनका कहना था कि काम तो आपकी इच्छा हो वही किया जावे, परन्तु किस रीति से किया जावे, यह वात चरखा-सघ पर छोडनी चाहिए। सघ को अधिक जानकारी है। वह पैसे का ठीक उपयोग अधिक-से-अधिक कर सकेगा। मेरी भी ऐसी ही राय है।

श्री जुगलकिशोर विडला,
नई दिल्ली

बजाज-परिवार के व्यक्तियों द्वारा

गांधीजी-संबंधी संस्मरण

मार्गदर्शक की खोज और प्राप्ति

जमनालाल बजाज

जीवन सेवामय, उन्नत, प्रगतिशील, उपयोगी और सादगी-युक्त हो, यह भावना, जबसे मैंने होश सभाला तबसे, अस्पष्ट रूप से मेरे सामने थी। इसीकी पूर्ति के हेतु सामाजिक, व्यापारिक, सरकारी और राजकीय क्षेत्रो मे कुछ हस्तक्षेप करना मैंने प्रारम्भ किया। सफलता मेरे साथ थी। पर मुझे सदा यह विचार भी बना रहता था कि जीवन की सपूर्ण सफलता के लिए किसी योग्य मार्गदर्शक का होना जरूरी है। मैंने अपने विविध कार्यों म लगे रहने पर भी इस खोज को चालू रखा। इसी मार्ग-दर्शक की खोज मे मुझे गाधीजी मिले और सदैव के लिए मिल गए।

• ••

मार्गदर्शक की खोज मे मैंने भारत के अनेक व्यक्तियो से सपर्क स्थापित किया। महामना मालवीयजी, कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर, सर जे० सी० बोस, लोकमान्य तिलक आदि अनेक नेताओ तथा व्यक्तियो से मैंने कम-अधिक परिचय प्राप्त किया। उनके सपर्क मे रहा। उनके जीवन का निरीक्षण किया। मेरी इस खोज मे एक बात ने मेरे दिल पर सबसे बडा असर कर रखा था। वह थी समर्थ रामदासजी की उक्ति · "बोले तैसा चाले, त्याची वदावी पाउले।" अनेक नेताओ से मेरा परिचय होने पर मुझे उनके जीवन मे मेरे इस सिद्धान्त की प्राप्ति जिस परिमाण मे होनी चाहिए, नही हुई। भिन्न-भिन्न व्यक्तियो के भिन्न-भिन्न गुणो का मुझपर असर पडा। सबके प्रति मेरी श्रद्धा और आदर भी बना रहा, पर अपने जीवन के मार्गदर्शक के स्थान पर किसीको आसीन नही कर सका।

•• •• ••

जिस समय मार्गदर्शक की मेरी खोज चल रही थी, गाधीजी दक्षिण अफ्रीका में सेवा-कार्य कर रहे थे। उनके विषय मे समाचार-पत्रो में जो आता, उसे मैं गौर से पढता था, और यह स्वाभाविक इच्छा होती थी कि

यदि यह व्यक्ति भारत में आवे तो उससे सपर्क पैदा करने का अवश्य प्रयत्न किया जाय। सन् १९०७ से १९१५ तक इस खोज मे रहा। और जब गाधीजी ने हिन्दुस्तान मे आकर अहमदाबाद के कोचरब मोहल्ले में किराये का बगला लेकर अपना छोटा-सा आश्रम आरभ किया, तब उनसे परिचय प्राप्त करने के हेतु मैं तीन बार वहा गया। उनके जीवन को मैं बारीकी से देखता। उस समय वह अगरखा, काठियावाडी पगडी और धोती पहनते थे। नगे पैर रहते थे। स्वय पीसने का काम करते थे। स्वय पाकशाला में भी समय देते थे स्वय परोसते थे। उनका उस समय का आहार केला, मूगफली, जैतून का तेल और नीबू था। उनकी शारीरिक अवस्था को देखते हुए उनके आहार की मात्रा मुझे अधिक मालूम होती थी। आश्रम मे प्रात -साय प्रार्थना होती थी। सायकाल की प्रार्थना मे मै सम्मिलित होता था। गाधीजी स्वय प्रार्थना के समय रामायण, गीता आदि का प्रवचन करते थे। मैंने उनकी अतिथि-सेवा और बीमारो की शुश्रूषा को भी देखा और यह भी देखा कि आश्रम की और साथियो की छोटी-से-छोटी बातो पर उनका कितना ध्यान रहता है। आश्रम के सेवा-कार्य मे रत और निमग्न बा को भी मैंने देखा। गाधीजी ने भी मेरे बारे मे पूछताछ करना आरभ किया। धीरे-धीरे सपर्क तथा आकर्षण बढता गया। ज्यो-ज्यो मै उनके जीवन को समालोचक की सूक्ष्म दृष्टि से देखने लगा, त्यो-त्यो मुझे अनुभव होने लगा कि उनकी उक्तियो और कृतियो मे समानता है और मेरा "बोले तैसा चाले" यह आदर्श वहा विद्यमान है। इस प्रकार सबध तथा आकर्षण बढता गया।

• • •

महात्माजी के कार्य मे मै अपने-आपको विलीन हुआ पाने लगा। वह मेरे जीवन के मार्गदर्शक ही नही, पिता-तुल्य हो गए। मै उनका पाचवा पुत्र बन गया।

•• • ••

आज २४ वर्ष से अधिक समय व्यतीत हो गया, जबसे मैं महात्माजी के सपर्क मे हू। इन वर्षो मे मैंने उनके जीवन के समस्त क्षेत्रो का अवलोकन किया। मै उनके सहवास में घूमा, उनके आश्रम-जीवन मे भी रहा, उनके उपवासो मे उनके निकट रहा, बीमारियो के समय उनकी शुश्रूषा मे भाग

लेता रहा । उनकी अनेक गहन मत्रणाओ का मै साक्षी हू, और उनके सार्वजनिक कार्य का भार मैने शक्ति-भर उठाया । सारी अवस्थाओ मे उनके अनेक गुणो का मुझपर असर होता ही गया। मेरी श्रद्धा बढती गई। मै अपने-आपको उनमे अधिकाधिक विलीन करता ही गया, और आज तो वह मेरे आदर्श है और उनकी आज्ञा मेरा जीवनादर्श है। उनका प्रेम मेरा जीवन है।

महात्माजी मे अनेक अलौकिक गुण है । इस प्रकार के शब्दो से मै अपने हृदय के सच्चे भाव प्रकट कर रहा हू । पर विरोध की आशका न करते हुए इतना तो अवश्य कह सकता हू कि उनमे मनुष्योचित गुणो का बहुत बडा समुच्चय है । मानवीय गुणो के तो वह हिमालय है । उनकी नियमितता, सार्वजनिक हिसाब रखने की सूक्ष्मता, बीमारो की शुश्रूषा, अतिथियो का सत्कार, विरोधियो के साथ सद्व्यवहार, विनोद-प्रियता, आकर्षण, स्वच्छता, बारीक निगाह और दृढ निश्चय आदि गुण मुझे उत्तरोत्तर प्रकट होते हुए दिखाई दिये है । महात्माजी मे मैने विरोधी गुण भी देखे है। उनकी अविचल दृढता और कठोरता, अगाध प्रेम और मृदुता की बुनियाद पर खडी है। उनकी पाई-पाई की कजूसी महान् उदारता के जल से सिचित है और उनकी सादगी सौदर्य से पोषित है ।

महात्माजी के प्रति अगर मेरा खाली आदर-भाव ही रहता, तो उनके विषय में मै कुछ विशेष लिख सकता। पर महात्माजी ने मुझे इस तरह से अपनाया है कि उनके प्रति मेरे मन मे पिता और गुरु के समान ही भाव पैदा होता है ।

बचपन से ही सार्वजनिक जीवन का प्रेम होने के कारण बहुत-से प्रतिष्ठित सरकारी कर्मचारी तथा देश के प्रख्यात नेताओ से मेरा परिचय हुआ । पूज्य लोकमान्य तिलक महाराज और भारतभूषण मालवीयजी जैसे महान् पुरुषो का परिचय मेरे लिए लाभदायक हुआ । लेकिन महात्माजी ने तो मेरी मनोभूमिका ही बदल दी । मेरे मन मे कई बार त्याग के विचार पैदा हुआ करते थे । उन्हे कार्य रूप मे लाने का रास्ता बता दिया । उनका निर्मल चारित्र्य, शीतल तेजस्विता, गरीबो की कलक, मनुष्य-मात्र से सत्य व्यवहार, अनुपम प्रेम और धर्म-श्रद्धा देखकर ही मेरा मन उनकी ओर खिचता गया । मेरे जीवन की त्रुटिया मुझे दिखाई देने लगी और यह

महत्त्वाकाक्षा बढने लगी कि इस जीवन मे किस तरह महात्माजी के सहवास के योग्य बन सकू ।

• •   • •

मेरी राय मे आज भारत मे गरीबो के साथ यदि कोई एक-जीव हुआ है तो वह महात्माजी है । महात्माजी मानो कारुण्य की मूर्ति है । गरीबो के कष्ट दूर करने मे अमीरो के साथ भी अन्याय न होने पावे, और भिन्न-भिन्न वर्गो के बीच द्वेषभाव तनिक भी पैदा न हो, इसकी वह हमेशा चिन्ता रखते है । इसीलिए भारतवर्ष के सब धर्म, पथ और वर्ग के लोग उनको आत्मीयता की दृष्टि से देखते है । चातुर्वर्ण्य का तो मानो उनमे सम्मेलन ही हुआ है । भारतवर्ष पर उनका जो असीम प्रेम है, उसके लायक यदि हम भारतवासी बने तो भारत का उद्धार अवश्य हो जाय ।

मेरी समझ मे तो महात्माजी का सहवास जिसने किया हो, या उनके तत्त्वो को समझने की कोशिश की हो, वह कभी निरुत्साही नही हो सकता । वह हमेशा उत्साहपूर्वक अपना कर्त्तव्य पालन करता रहेगा, क्योकि देश की स्थिति के सुधरने मे—स्वराज्य मिलने मे—भले ही थोडा विलम्ब हो, परन्तु जो व्यक्ति महात्माजी के बताये मार्ग से कार्य करता रहेगा, मुझे विश्वास है कि वह अपनी निजी उन्नति तो जरूर कर लेगा, अर्थात् अपने लिए तो स्वराज्य वह अवश्य पा सकता है ।

•   •

मुझे अपनी कमजोरियो का थोडा ज्ञान रहने के कारण मैने बापू को 'गुरु' नही बनाया, न माना, 'बाप' अवश्य माना है । वह भी इसलिए कि शायद उन्हे बाप मानने से मेरी कमजोरिया हट जावे ।

मुझे दुनिया मे बापू पिता का व विनोबा गुरु का प्रेम दे सकते है, अगर मै अपनेको योग्य बना सकू तो ।

•   • •

महात्माजी की अनुपम दया से आज मै कम-से-कम अपनी कमजोरियो को थोडा-बहुत तो पहचानने लग गया हू ।

जिस दिन मै महात्माजी के पुत्र-वात्सल्य के योग्य हो सकूगा, वही समय मेरे जीवन के लिए धन्य होगा ।

'सबकुछ कृष्णार्पण'

जानकीदेवी बजाज

जमनालालजी पर लगी थी गाधी-भक्ति और मुझपर लगी थी पति-भक्ति , इस तरह अनायास ही गाधी-भक्ति मुझपर आ गई। यो तो गाधीजी के सस्मरण बहुत है, जो कमोवेश मेरी पुस्तक 'मेरी जीवन-यात्रा' मे आगए है, किंतु कुछ विशेष घटनाए ऐसी है, जिन्होने मेरे जीवन पर भी विशेष असर डाला। ऐसे ही कुछ सस्मरण यहा लिखती हू।

गहनो और घूघट का त्याग मै अपने जीवन की सबसे वडी कमाई मानती हू। बापूजी हरिजन-कार्य के सिलसिले मे नागपुर जिले का दौरा कर रहे थे। जमनालालजी भी साथ थे। इस दौरे के बीच वापूजी ने एक भापण मे कहा, "सोना कलि का रूप है। इससे दूसरो मे ईर्ष्या पैदा होती है, चोरी का लालच उत्पन्न होता है, खो जाने का डर रहता है, शरीर पर मैल जम जाता है," आदि-आदि। जमनालालजी के दिल मे यह बात बैठ गई। लेकिन वह जो कुछ कहते थे, उसकी शुरुआत घर से ही करते थे। इसलिए सबसे पहले मुझपर उनकी निगाह जाना स्वाभाविक था। उन्होने फौरन मुझे एक पत्र लिखा कि वापू का आदेश है, गहने त्याग दो। यह बात वह रूबरू कहते तो शायद मै उनसे बहस भी कर बैठती। किन्तु उनकी चिट्ठी तो मेरे लिए वेद-वाक्य-जैसी थी। गहनो का मोह था, लेकिन उन्होने लिखा, वैसा करना भी तो कर्तव्य था। फिर भी खयाल होता था, लोग क्या कहेगे। अजीव-सी स्थिति थी। चिट्ठी मेरे सामने थी और मै एक-एक गहना उतारकर रखती जा रही थी।

मारवाडी समाज मे स्त्रियो के पैर की चादी की कडी खोली नही जाती थी। गरीब-से-गरीब के पैर मे कडी तो रहती ही थी। वह तो मरने के वाद श्मशान मे जाकर ही खोली जाती थी। अत कडी खोलने मे वहुत हिचक हो रही थी। लेकिन फिर विचार आया कि जब कोई गहना पहनना ही नही तो फिर कडी का ही क्या मोह! जी कडा करके उस झूठे मोह को भी त्याग

दिया । मेरी सास रोने लगी । ससुरजी बोले, "गाधीजी केव्हे विया जमन करै, और जमन केव्हे विया बीनणी करै—ईमे बीनणी को काई कसूर !"

बस, उस दिन से जो गहना छूटा तो आजतक गहने के प्रति अरुचि बनी हुई है ।

• • •

नागपुर-काग्रेस के समय जब गाधीजी वर्धा आये, मैने मोटी साडिया मगाई । मै समझती थी कि मोटे कपडे को ही खादी कहते होगे । लेकिन महादेवभाई ने देखा तो कहा, "आपने मिल की साडी क्यो पहनी है ?" मै अचभे मे पड गई । मैने कहा, "यह मिल की कहा है ? यह तो मोटी है ।" महादेवभाई ने हँसकर बताया कि खादी की साडी तो हाथ-कती और हाथ-बुनी होती है । काग्रेस से लौटने पर मैने एक आदमी से कुछ सूत कामठी भिजवाया और खादी बुनवाकर मगवाई ।

रात को इस साडी को पहनकर सोती तो नीद न आती । बेचैनी-सी रहती । ऐसा लगता कि टाट पर सो रही हू । पर साथ ही सोचती, सीताजी-जैसी राजकुमारी तो वल्कल-वस्त्र पहनकर १४ वर्ष जगल मे रही थी । यह तो खादी है, कोई चमडी थोडे ही घिसती है इससे । धीरे-धीरे मिल के कपडे दूर होते गए और खादी इस तरह दिल मे समा गई कि बहुत उत्साह से अन्य बहनो को भी खादी पहनने के लिए उकसाने लगी । इससे हमारे यहा बहनो का आना-जाना होने लगा, वे आपस मे चर्चा करती, "सेठानीजी तो विधवा-जैसे कपडे पहनने की बात करती है। वहा कौन जाय ! गहने मत पहनो, काग्रेस को पैसा दो और विधवा-जैसे कपडे पहनो—यह कौन करे, बाबा !" लेकिन मुझपर तो खादी का भूत सवार हो गया था । जब विदेशी कपडो की होली की बात सामने आई तो जमनालालजी ने मुझसे कहा, "गाधीजी का कहना है कि विलायती कपडा राक्षस के रूप मे अपने देश मे घुस पडा है । इस पाप को हिन्दुस्तान मे से निकालना है । अपने घर मे भी एक टुकडा न रहे ।" बस, फिर तो जहा-जहा विलायती कपडा दीख पडा, निकाल दिया—मदिर की पोशाके, घर के कपडे, गणगौर के कपडे, फर्नीचर पर लगे कपडे, यहातक कि जमनालालजी के विवाह की पगडी, कसूबी बागा आदि, जो शकुन के कपडे थे, वे भी निकाल दिये गए। वर का छत्र

जलाना मुझे नही जचा, सो मैंने उसे मगनवाडी के कुए में डलवा दिया। यह सब गाधीजी के ही प्रभाव से सभव हुआ।

.. ..

चरखा कातने की लगन स्वय बापूजी के कहने से लगी। बम्बई मे नरोत्तम मोरारजी के यहा पहले-पहल बापू के दर्शन हुए। वह चरखा कात रहे थे। एक आदमी को चरखा कातते हुए मैंने पहली बार ही देखा। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। मैंने उनसे पूछा, "चरखा कातना क्या अच्छा है ?" बापू ने दृढता व सरलता से सिर्फ इतना कहा, "सूत कातना बहुत अच्छा है।" लेकिन यह बात उन्होंने कुछ ऐसे ढग से कही कि वह मेरे मन मे जम गई। वर्धा आकर सासूजी (जमनालालजी की जन्म-माता) से कहा कि मुझे कातना सिखा दो, गाधीजी ने कहा है। मैंने एक चरखा मगवाया। सात दिन मे मै सूत कातना सीख गई। फिर तो धीरे-धीरे साठ चरखे इकट्ठे कर लिये और कताई का वर्ग ही शुरू कर दिया। आज तो मुझे कताई मे प्रार्थना से भी अधिक आनद आता है। गाधीजी के एक वाक्य ने जो धुन लगा दी थी, वह अबतक बराबर चल रही है।

.. ..

राजस्थानी समाज मे घूघट प्रतिष्ठा, सभ्यता और कुलीनता का चिह्न माना जाता था। घूघट का सस्कार एक-दो दिन या एक-दो पीढियो का थोडे ही था। वह एकाएक छूटे कैसे! दूसरे, मै सुदर न थी, इसलिए भी चाहती थी कि मुह ढका रहे तो ठीक।

लेकिन जब खादी पहनना शुरू किया तो घूघट मे बडी कठिनाई होती थी। बातचीत मे बापू से पूछा, "और सब अडचनें तो निभ जायगी, पर घूघट काढने पर दीखेगा कैसे ?"

बापू बोले, "खोजो की औरतो की तरह आखो की जगह जाली लगवा लो।" बापू की यह बात विनोदभरी थी। बडी हँसी आई। लेकिन कभी-कभी उनके इस विनोद का खयाल करती हू तो सोचती हू कि बापूजी ने उस समय केवल मेरी बात का जवाब दिया, घूघट हटा देने को नही कहा। बापूजी, घूघट के पक्ष मे नही थे, लेकिन वह जानते थे कि मानसिक रूप से उस समय मै परदा छोडने के लिए तैयार नही थी। लेकिन आगे चलकर जब मेरा

घूघट छूट गया तो मुझे दूसरी बहनो का घूघट खुलवाने की धुन लग गई। सन् १९३३ मे कलकत्ता में मारवाडी महिला सम्मेलन हुआ। मुझे उसकी अध्यक्षा बनाया गया। उस अवसर पर बापूजी ने वर्धा से २५-१०-३३ को बडा सुदर पत्र मुझे लिखा। वह पत्र इस प्रकार था

"आप बहनो से परदा तुडवाने कलकत्ता जा रही है, इसलिए धन्यवाद! परदा वहम नहीं है, उसमें मुझे पाप की बू आती है। परदा किससे रखें? क्या पुरुष-मात्र विषयासक्त रहते है ? क्या स्त्री अपनी पवित्रता बग़ैर परदा नहीं रख सकती है ? पवित्रता मानसिक बात है, सभी पुरुषो में सहज होनी चाहिए। यदि इस बुद्धि-प्रधान युग में स्त्री धर्म की रक्षा करना चाहती है तो उसे दरिद्र-नारायण की सेवा करनी होगी, शिक्षिण लेना होगा। दरिद्रनारायण की सेवा करने का अर्थ है—खादी-प्रचार, कातना इत्यादि। हरिजन-सेवा का अर्थ है अस्पृश्यता-रूपी कलक को धोना। ये दो भगवान् के बडे कार्य है और विद्या पाने का कार्य परदा रखने के साथ कभी नहीं चल सकता है।

"परदा रखकर सीता रामजी के साथ जगलो में भटकी होगी ? सीता-से बडी पवित्र स्त्री जगत् में कभी हुई है ? बहनो से कहो—परदा तोडो, धर्म रखो!"

यह पत्र पढने के बाद तो दिल और जोश से भर गया और मै लोगो में जाकर व्याख्यान भी देने लगी। जमनालालजी की माताजी कहती, "पडदो कर्‌यो तो इश्यो कर्‌यो के कोई नख भी देख नही सके। और छोड्यो तो इश्यो छोड्यो के मोट्यारा की सभा मे व्याख्यान छाटे लागी।"

•

११ फरवरी, १९४२ को अचानक जमनालालजी की मृत्यु हो गई। सेवाग्राम मे बापूजी को फोन किया गया। वह फौरन आये। आते ही उन्होन जमनालालजी के सिर पर हाथ रखा। बापूजी को देखते ही मै बोली, "बापूजी, आप इनके पास होते तो यह नही जाते। बस, अब तो आप इन्हे जीवित कर दीजिये। क्या आप इन्हे जिला नही सकते ?"

और उस समय बापूजी के व्यक्तित्व का जो मैने दर्शन किया, उसका चित्र अबतक मेरे मानस पर अकित है। वह गभीर स्वर मे बोले—"जानकी,

तुम्हे अब रोना नही है। तुम्हे तो हँसना है और बच्चो को भी हँसाना है। जमनालाल तो जिन्दा ही है। जिसका यश अमर हो, उसकी मृत्यु कैसी! उसकी मृत्यु तो तभी हो सकती है जब तुम उसके रास्ते न चलो। उसने परमार्थ की जिन्दगी बिताई। जो काम उसने अपने कधो पर लिया था, उसे अब तुम सभालो। मै तुम्हे झूठा धीरज देने नही आया, जमनालाल का शरीर मर गया, पर असल जमनालाल तो ज़िदा ही है, और आगे के लिए उसे जिन्दा रखना हमारा काम है।"

बचपन मे सती होने की मेरी इच्छा थी। वह जग उठी। मै बोली, "बापूजी, मै सती होना चाहती हू। अनुमति दीजिये।" बापू बोले, "शरीर को जलाने से क्या फायदा। वह तो तुच्छ है, मिट्टी है। अपने सब दुर्गुणो को जला देना ही सच्चा सतीत्व है। अपने सब दुर्गुणो को चिता मे होम दो। फिर बाकी बचेगा, वह शुद्ध कचन रहेगा। उसको कैसे जलाया जाय। उसे तो कृष्णार्पण ही किया जा सकता है।"

मुझमे न जाने कहा से बल आ गया, दृढता आ गई। मेरे मुह से उसी समय निकला, "बस, आज से मै और मेरा सब-कुछ कृष्णार्पण।"

पूज्य बापू के पुण्य-स्मरण

राधाकृष्ण बजाज

सन् १९२४ की बात है जब पूज्य बापूजी ने हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए दिल्ली मे उपवास किये थे। पूज्य काकाजी उनसे मिलने दिल्ली जाते समय सयोग से मुझे भी साथ ले गए। उस समय बापूजी मुहम्मद अली के घर पर ठहरे हुए थे। बाद मे सिविल लाइस के एक बगले मे उन्हे ले जाया गया। मै भी नित्य आने-जाने लगा। इसी बीच एक घटना घटी। बगाल के श्रीकृष्णदासभाई बीमार हो गए। वह बापूजी की सेवा मे थे। उन्हे टायफायड हो गया। टायफायड के बीमार की विशेष सेवा का प्रबध हो, इसलिए बापूजी ने अपने पुत्र देवदासभाई गाधी को उनकी सेवा मे लगा दिया। इस तरह बापू की सेवा मे से दो व्यक्ति कम हो गए। सौभाग्य से उस कमी की पूर्ति का लाभ मुझे मिला और मै उपवास के अन्त तक बापूजी की निजी सेवा मे लग सका। मै नित्य देखता था कि बापूजी स्वय बैठ नही सकते थे। फिर भी चरखा काते बिना एक भी दिन नही रहते थे। चरखा देने और कातने तक पकडे रहने का काम मेरा था। मै नित्य देखता था कि चरखा कातने के लिए कहा से इतनी शक्ति आ जाती है! बापूजी के निकट परिचय का यह मेरा पहला ही अवसर था। बगाल के कृष्णदासभाई की सेवा मे अपने पुत्र को लगा देना और इस तरह अपने सेवक की सेवा का पुत्र से भी अधिक खयाल रखना, यह जो मैने दृश्य वहा देखा, उसे आजतक नही भूल सका। मेरे जीवन पर उसका एक असर रह गया।

उसके बाद मैने कितने ही प्रसग देखे है, जिनमे साथियो की सेवा मे उन्होने सर्वस्व लगाया। कुष्ठरोग से पीडित परचुरेशास्त्री की मालिश बापूजी स्वय अपने हाथो से करते थे। यह दृश्य भी मैने देखा है। जिस रोगी को स्पर्श करना भी गदा माना जाय, उसकी बापू स्वय इस तरह मालिश करे, यह एक दैवी घटना थी।

दिल्ली के बाद बापूजी कलकत्ता आये। वहा सी० आर० दास के घर

ठहरे। मेरे दिल में वहा भोजन करने में सकोच था, वैसे वापूजी की पार्टी के लिए सारा भोजन शाकाहारी ही वनानेवाले थे, लेकिन फिर भी मेरे सनातनी मन को विचित्र-सा लग रहा था। एक मित्र के यहा अन्यत्र भोजन के लिए जाने की इच्छा प्रकट की, पर वापूजी ने इजाजत नही दी। कहा कि श्रीमती . . . को वुरा लगेगा। छोटी-छोटी वातो मे दूसरे के भले-वुरे का वहुत ही अधिक खयाल रखते हुए उन्हे देखा है और उतना ही सख्त अपने सेवको के प्रति।

मुझे स्मरण है कि उनके साथ रहनेवालो में पूज्य वा, प्यारेलालजी, अम्नुल वेन, कुमुमवेन और दो-तीन वहने थी। वे सव सेवा मे लगी रहती थी। सफाई का वापूजी को इतना ध्यान था कि रस पी लेने के वाद भी अन्त में कही ज़रा-सा कुछ रह गया, तो याद रखकर उसका उलहना देते थे। आये हुए मेहमानो की सेवा वरावर हुई या नही, इसका भरोसा सेवको पर नही छोडते थे, वल्कि एक-एक वारीक चीज उनसे पूछते थे, ताकि कही भी कोई चूक न रहे। वा की तो कसोटी ही होती। मैंने सुन रखा था कि सतो का व्रत असिधारा होता है, लेकिन आखो देखा वा का चलना। मेरे मन मे उठता है कि वापू वडे थे या उन्हे सहनेवाली पूज्य वा!

जीवन का सबसे बड़ा पाठ

कमलनयन बजाज

लगभग पच्चीस साल पहले की बात है। बापू गुजरात का दौरा कर रहे थे। एक-एक दिन मे कई पडाव होते थे, लेकिन काग्रेस कार्य-समिति के लिए या काग्रेस के कुछ नेताओ से विचार-विनिमय के लिए बोरसद मे वह दो या तीन दिन रुके। पिताजी ने पाच-सात दिन के लिए मुझे उनकी निजी सेवा करने के लिए छोड दिया था। मेरी उम्र उस समय पद्रह या सोलह वर्ष की रही होगी। बापू कितने व्यवस्थित थे और छोटे-से-छोटे काम को भी कितनी जिम्मेदारी से करने-कराने मे तत्पर रहते थे, इसका मुझे अच्छा अनुभव हुआ। मै देखता था कि वह हर चीज का पूरा-पूरा उपयोग कर लेते थे। जब उनके पहनने की धोती घिस जाती थी तो उसकी चादर बना लेते थे। चादर के फटने पर छोटे-छोटे गमछे, और उनके घिसने पर नीबू, पानी, दूध या रस छानने के लिए छोटे-छोटे टुकडे बना लेते थे। जब वे टुकडे वहा भी जवाब दे देते थे तो उनसे सिगडी-चूल्हा सुलगाने का काम लेते थे या उन टुकडो को गला-सडाकर उसकी लुगदी बनाई जाती थी ओर उसके कागज़ बनते थे। कागज़ का भी वह जिस सावधानी से उपयोग करते थे, उस सावधानी से उपयोग करनेवाला दूसरा मैने नही देखा।

बोरसद मे कुछ तो व्यस्तता और कुछ मेरी असावधानी के कारण बापू के उन छानने के कपडो मे से एक टुकडा खो गया। बात देखने मे छोटी थी, लेकिन मै जानता था कि बापू को उससे दु ख होगा। उसकी भी मुझे इतनी चिन्ता नही थी, क्योकि मै स्वभाव का ढीठ और मन का पक्का था। यह भी लगता था कि बापू गुस्सा होगे तो हो लेगे। आखिर जानबूझकर तो मैने गलती की नही थी। यो मन की तसल्ली होने पर भी एक बात का मुझे बडा डर और चिन्ता थी। वह यह कि इतनी व्यस्तता और महत्त्वपूर्ण जिम्मे-दारियो के सामने होते हुए भी कहा-सुनी करने मे बापू के पद्रह-बीस मिनट ज़रूर लग जायगे और उनका उतना भी अमूल्य समय मै बरबाद नही करना

चाहता था। पर करता क्या ! वह दिन तो मैंने चतुराई से निकाल दिया। अगले दिन बापू का मौन था। नेहरूजी आदि कांग्रेस के बडे नेता या शायद कांग्रेस कार्य-समिति के सदस्य ही बापू से मिलनेवाले थे। मैं चाहता था कि अपनी गलती की चर्चा बापू से उस समय करू जबकि वह व्यस्त न हो, या बोरसद से चलते समय रास्ते मे करू, जिससे उनके समय का अपव्यय न हो। यही सोचकर मौनवार के दिन ओर नेताओ के साथ विचार-विनिमय करते समय मै नया कपडा ढंककर उनके खाने-पीने की चीजो को ले गया। आशा थी कि शायद उनकी निगाह से बच जाऊ, लेकिन वैसा होना आसान न था। बापू ने मेरी चतुराई, या कहिये बदमाशी, ताड ली और चर्चा मे सलग्न होते हुए भी मुस्कराहट के साथ यह जतलाते हुए कि तुम्हारी चालाकी मैं समझ गया, उन्होंने चुपचाप अगुली के इशारे से डाट पिला दी। मै वहा से चला आया। बाद मे बर्तन वगैरा लाने को और किसीको भेज दिया। पर बापू सहज छोडनेवाले न थे। शाम को प्रार्थना के बाद, मौन पूरा होने पर, उन्होंने मुझे बुलाया और मुझसे हकीकत पूछी। मैंने कह दिया कि कपडा मेरी गफलत से खो गया था, इसलिए मुझे दूसरा लेना पडा। उन्हे दु ख हुआ। उस समय किसीको समय दिया होने के कारण उन्होंने मुझसे कहा कि सवेरे प्रार्थना के बाद मेरे साथ घूमने चलना।

अगले दिन सुबह मै उनके साथ घूमने लगा। और लोग भी उनके साथ थे, पर वह पीछे थे। बापू ने अपने दिल का दर्द मेरे सामने रक्खा। उन्होंने कहा, "ऐसी गफलत हमसे कैसे हो सकती है ? दरिद्रनारायण की सेवा का हमारा व्रत है। अगर उसका खयाल रक्खे तो ऐसी गफलत कभी न हो। अपने काम मे हमारा ध्यान रहे तभी हमारा चित्त एकाग्र हो सकता है, ज्ञान मिल सकता है और कार्य की सिद्धि हो सकती है, अन्यथा हमारी सेवा और कार्य का कुछ अर्थ ही नही रह जाता।"

मैंने टालने के लिए बीच मे कहा, "दरिद्रनारायण की सेवा का व्रत तो आपका है। मैं तो आपकी चाकरी मे हू।"

बापू और गभीर होकर बोले, "जब मैं दरिद्रनारायण की सेवा मे लग गया तो उस समय मेरी सेवा करने का अर्थ भी दरिद्रनारायण की सेवा करना ही है। फिर तू तो जमनालालजी-जैसे कुशल व्यापारी का बेटा है !

ऐसी गफलत तो तुझसे हो ही कैसे सकती है! इसके आलावा तू तो कातता भी है। उसमे कितना परिश्रम होता है, यह तुझे मालूम है। वह कपडा खो गया, यह तो एक जरा-सी वात है, पर अगर तू विचारेगा तो तेरी समझ मे आ जायगा कि उसमे कितने लोगो का परिश्रम सम्मिलित था। खेती मे कपास पैदा करनेवाले किसान से लगाकर चुनने, लोढने, धुनने, कातने, वुनने और धोनेवाले तक कितने लोगो के परिश्रम से वह कपडा तैयार हुआ था। उस परिश्रम का आदर करना तो दूर रहा, अपनी लापरवाही से तूने उसका अनादर कर दिया। यह वात कैसे सहन हो सकती है! इस लापरवाही मे हमारे स्वाभिमान और इस प्रकार का परिश्रम करनेवाले के स्वाभिमान को धक्का लगा है। इसका अगर तू विचार करेगा तो तुझे पश्चात्ताप हुए बिना न रहेगा।"

इस प्रकार बीस-पच्चीस मिनट तक वह मुझे समझाते रहे। उनके हृदय मे कितनी वेदना थी, साथ ही मेरे लिए कितना प्यार था, यह उनके एक-एक शब्द से प्रकट हो रहा था। मेरे मन पर उसका बडा असर पडा। जब मै खयाल करता हू तो ऐसा लगता है, मानो बापू उस घटना के बारे मे मुझे आज भी समझा रहे हो।

२

ऐसा ही एक प्रसग मुझे और याद आ रहा है। सेवाग्राम मे बापू घूमने जा रहे थे। अन्य आश्रमवासियो के साथ-साथ माताजी और मै भी उनके साथ हो लिये। घूमते समय चर्चा के लिए उन्होने और किसीको समय दे रखा था। उनसे बातचीत करते हुए जैसे ही वह आ रहे थे कि उन्हे रास्ते मे पूनी का एक छोटा-सा टुकडा पडा दिखाई दिया। इशारे से उन्होने उसे उठा लेने को कहा। मेरी इच्छा हुई कि मै उसे उटा लू, लेकिन मेरे उसे उठाने के लिए आगे वढने से पहले ही दो लडकिया उसे लेने को झपटी और उनमे से एक ने उसे उठा लिया। मेरे मन मे आया कि वह टुकडा मै उनसे माग लू, क्योकि शायद बापू बाद मे उसके बारे मे पूछे। लेकिन छोटी-सी वस्तु होने की वजह से मैने उसे नही मागा। घूमकर लौटने पर जब बापू च खा कातने के लिए वैठे तव उन्होने उस पूनी के टुकडे को याद किया। जिस लडकी ने उसे उठाया था, उसकी खोज हुई। वह आई। बापू ने जब उससे टुकडा मागा

तो उसने कहा कि वह तो उसे कचरे की टोकरी मे फेंक आई। इसपर बापू बहुत नाराज हुए, बोले, "मैंने उसे उठाने के लिए इसलिए कहा था कि तू उसे कचरे की टोकरी मे डाल आवे?" लडकी ने जवाब दिया कि मैं तो उसे कचरा समझकर ही उठाकर लाई थी और समझती थी कि वह कचरा गलत जगह पर पडा रहने से ही आपने उसे उठाने के लिए कहा था। इसलिए उसे सभालकर मैं कचरे के स्थान पर डाल आई। बापू ने पूछा, "यदि वहा पैसा पडा होता तो क्या तू उठाकर उसे भी कचरे मे डाल आती?" उसने उत्तर दिया, "नही।" बापू बोले, "वह भी पैसा ही था। असली धन क्या है, तुम्हे आश्रम मे रहकर यह पहचानना आना चाहिए। जिसने उस पूनी के टुकडे को पूरा काते विना छोडा, उसने तो धन को फेका ही। मैंने तुमसे उठाने को कहा, तब भी तुम उस धन को नही पहचान सकी? अब जाओ, उसको लेकर आओ।" लज्जित स्वर से लडकी बोली, "बापू, मेरी गलती हुई कि मैं आपकी बात को पूरी नही समझ सकी। अब मैं उस टुकडे को स्वय ही कात लूगी, आप उसके लिए न ठहरे।" लेकिन बापू माननेवाले नही थे। वह तो उस टुकडे को स्वय कातने को व्यग्र थे। अत उन्होने आग्रहपूर्वक उसे लाने को कहा और ऊपर से उलहना दिया कि वह कैसे विश्वास करे कि आगे और कोई गफलत न होगी। उन्होने कहा कि परिश्रम से धन बनता है और धन बनने पर उसका सदुपयोग करना हमारा कर्त्तव्य है। लडकी बेचारी शरमा गई और जाकर कचरे मे से पूनी के उस टुकडे को ढूढ लाई। उसपर कुछ मिट्टी और घास के टुकडे लिपटे हुए थे। फूलकर वह कुछ फैल-सी भी गई थी। उसके बावजूद बापू ने उसको पूरी तौर से कातने के काम में लिया। उससे जो धागा कता, वह रग मे काला और दूसरे सारे सूत मे फर्क डालने वाला था। इसकी परवा न करते हुए बापू बोले कि बुनने के बाद जब कपडा धुलेगा, तब यह मिट्टी भी उसमे से दूर हो जायगी।

: ३ :

कलकत्ता की बात है। कांग्रेस कार्य-समिति के सदस्य के रूप में जेल से छूटने के बाद बापू सोदपुर-आश्रम मे ठहरे हुए थे। जवाहरलालजी उनसे मिलने आनेवाले थे। उन्हे आजाद हिन्द-फौज के विषय मे बापू से महत्त्वपूर्ण चर्चा करनी थी। उनके आने का समय हो चुका था। जान-पहचानवालों

में से एक परिवार के लोग बापू से मिलने आये हुए थे। उनमे से एक लडके के साथ, जो उसी समय मैट्रिक या कालेज की कोई परीक्षा अच्छे नम्बरो से पास करके आया था, बातचीत और सवाल-जवाब करते हुए बापू को मालूम हुआ कि वे लोग शाम तक आश्रम मे ठहरेगे। इसपर बापू ने अपनी डाक मे से ऐसे पत्र, जिनके बारे मे सूचना-मात्र देनी थी, उस लडके को दे दिये और सूचना भिजवाने को उससे कह दिया। नेहरूजी इस बीच आचुके थे। लडका वह डाक लेकर बाहर चला गया। नेहरूजी के साथ बातचीत समाप्त होने के बाद वह लडका आया और उसने दो-एक लिखे हुए पत्र बापू को दिये। बापू ने पूछा कि क्या इतना ही लिखा है ? बाकी का क्या हुआ ? उसने जवाब दिया कि और सब पत्र कलकत्ता के ही थे। उनको उसने टेलीफोन से सूचना दे दी है। केवल बाहर की चिट्ठियो के ही उत्तर दिये है। बापू ने कहा, "मैंने तो तुमसे टेलीफोन करने को नही कहा था।" उसने जवाब दिया कि जब सूचना ही देनी थी, तो मैंने सोचा कि टेलीफोन से उन्हे खबर भी जल्दी हो जायगी ओर काम भी जल्दी हो जायगा। बापू ने उसे मीठे ढग से उलहना देते हुए कहा कि टेलीफोन करने मे जिस व्यक्ति को उत्तर भेजना था, वह मिले या न मिले, यह जोखिम रहती है। दूसरे, अगर किसी और ने सदेशा लिया तो उसके पहुचने मे गफलत हो सकती है। शाम तक तुम यहा ठहरने ही वाले थे। तुम्हारे पास समय की तो कमी थी नही। इसके अलावा यदि पोस्टकार्ड लिखते तो तीन पैसे मे ही काम हो जाता। टेलीफोन मे तो ज्यादा पैसे लगे होगे। ये चिट्ठिया भी जो तुम लिखकर लाये हो, वे पोस्ट-कार्ड पर ही होनी चाहिए थी। लेकिन उसमे तो मेरी गलती है कि मै तुमसे पोस्टकार्ड पर लिखने को कहना चूक गया था। पर मज़मून इतना छोटा था और बात इतनी साधारण थी कि यदि तुम स्वय यह सोचते तो पोस्टकार्ड पर लिख सकते थे। आगे उसे एक-एक पाई का हिसाब किस तरह रखना चाहिए और फिजूलखर्ची बिल्कुल न हो, इसका ध्यान किस सीमा तक रखना चाहिए, इसके बारे मे अच्छी तरह से समझाने लगे।

४

एक बार एक ग्रामीण कार्यकर्ता अपने इलाके मे हरिजन-कार्य के सबध मे बापू की राय लेने आये। जहातक मुझे याद आता है, वह भाई आध्र के

थे । उन्हे कोई वीमारी थी । बापू ने उनकी बीमारी के सवध मे उनसे काफी पूछ-ताछ की । बापू ने पूछा कि आप बहुत अधिक नमक तो नही खाते ? उन्होने उत्तर दिया कि बहुत ही कम नमक खाता हू । बापू ने उनसे कहा कि नमक तुम्हे माफिक नही आता, और अच्छा हो यदि तुम नमक विल्कुल ही छोड दो ।

वातचीत खतम होने पर वापू ने उन भाई से आश्रम मे ही खाना खाने को कहा ओर उन्हे खाने का समय वता दिया । खाने के समय वापू ने उन भाई को अपने पास वैठने को कहा । परोसी हुई थाली उनके सामने रखी गई—स्वय बापू ने कुछ चीजे उन्हे परोसी । मत्र वोलने के पहले बापू ने उन भाई से कहा कि थाली मे से नमक निकाल दो । कार्यकर्ता ने समय खोये विना वापू से कहा कि क्या फर्क पडता है, विश्वास रखिये, मै नमक नही खाऊगा । वापू ने कहा कि इसीलिए तो कह रहा हू कि इसे निकाल दो, ताकि यह वेकार न जाय । एक आश्रमवासी भाई तश्तरी ले आये और नमक उसमे निकाल दिया गया ।

भोजन के वाद वापू ने मुझसे कहा कि मै अपनी वैलगाडी मे उन भाई को शहर छोड आऊ । रास्ते मे वह भाई बहुत शर्मिन्दगी महसूस करते हुए वोले, "कैसी अजीव वात है, एक ग्रामीण होकर भी मै यह नही महसूस कर सका कि यदि नमक थाली मे से नही निकालूगा तो वह बेकार जायगा। जिन्दगी मे इससे वडा पाठ सीखने को मुझे नही मिला ।"

"मेरे लिए एक-एक पल भारी हो रहा है"

श्रीमन्नारायण

मुझे ऑल इडिया रेडियो की हिन्दुस्तानी सलाहकार समिति की बैठक के सिलसिले मे ९ जनवरी, १९४८ को नई दिल्ली रहना पडा। शाम को बिडला-हाउस गया और वहा प्रार्थना-सभा मे सम्मिलित हुआ। उस दिन बडी सख्या मे आये हुए बहावलपुर के हिन्दू और सिख शरणार्थी प्रार्थना-सभा मे थे। जैसे ही गाधीजी प्रार्थना-मडप की ओर बढे, ये शरणार्थी बडे जोर से चिल्लाये "बहावलपुर के हिन्दुओ को बचाओ! बहावलपुर मे मुसलमानो की क्रूरताओ को बद करो!" सारा वातावरण तनावपूर्ण था। वहा कुछ शरणार्थी बौराये हुए-से थे और कुछ शायद दिमागी सतुलन खो बैठे थे। वे अपने कुटुम्बी जनो और सासारिक वस्तुओ को खो चुके थे और सान्त्वना व सहायता के लिए गाधीजी की प्रार्थना-सभा मे आये थे।

प्रार्थना के बाद मै बापूजी के कमरे मे गया और उनके चरण स्पर्श किये। मुझे वर्धा की सस्थाओ से सम्बन्धित कई समस्याओ के बारे मे बात-चीत करनी थी। परन्तु गाधीजी बडे चितित व थके-से जान पडे। इसलिए मै कमरे मे थोडी देर चुपचाप बैठ गया और फिर उनकी अनुमति लेकर बाहर चला गया। "मै कल फिर यहा इसी समय आ जाऊगा, बापूजी!" मैने कहा। "हा, हम कल शाम को कुछ विषयो पर चर्चा करेगे।" बापूजी ने धीरे-धीरे से उत्तर दिया।

१० जनवरी की प्रार्थना सभा मे उपस्थिति बहुत कम थी। कुछ शरणार्थियो ने शुरू मे हुल्लड मचाया और गाधीजी को उन्हे फटकार-कर शान्त करके बैठाना पडा। उन्होने कहा, "अपने क्रोध को शात करिये और धैर्य रखिये, केवल क्रोध से कुछ होगा नही।"

गाधीजी ने कण्ट्रोल हटाने की समस्या पर प्रकाश डालते हुए कहा, "कुछ लोग मुझसे कहते है कि नियत्रण हटाने से जनता को कोई लाभ नही और जो खबरे मेरे पास आती है, वे गलत है। मै कोई फरिश्ता नही हू।

आपको कोई बात इसलिए नही माननी चाहिए, क्योकि मैं उसे कहता हू। आपको अपनी बुद्धि व विवेक से काम लेना चाहिए। यदि मेरे-जैसे हजारो महात्मा भी आपको कोई बात कहे, जो आपको उचित न लगती हो तो उसे तत्काल अस्वीकार कर देना चाहिए। इस तरह व्यवहार करने से ही आप अपनी स्वतन्त्रता को बनाये रख सकते है और उसके योग्य भी बनेगे।"

प्रार्थना के बाद मै बापूजी के साथ उनके कमरे मे गया। उन्होने कुछ आवश्यक कागजात देखे और फिर मुझसे कहा कि मै उनके साथ कमरे मे घूमू, क्योकि बाहर काफी सर्दी पड रही थी। मैंने उनके स्वास्थ्य के बारे मे पूछताछ की। वह सचमुच काफी कमजोर हो गए थे। काम के अधिक बोझ से और देश-विभाजन के कारण उत्पन्न हुई असीमित चिन्ताओ से उनके चेहरे पर विशेष रूप से कालापन उभर आया था। बाद मे हमने वर्धा की सस्थाओ से सम्बन्धित कई समस्याओ पर विचार-विमर्श किया। महिलाश्रम के बारे मे गाधीजी ने कहा, "रचनात्मक कार्य के लिए शासन से अनुदान स्वीकार करने के मै विरुद्ध हू, और न हमे वर्ष-प्रतिवर्ष जनता से रकम मागनी चाहिए। आश्रम को बुनियादी शिक्षा के सिद्धान्तो को अपनाना चाहिए और अपने आपको आत्म-निर्भर बनाने की पूरी कोशिश करनी चाहिए।" हिन्दुस्तानी-प्रचार के भविष्य के बारे मे भाव-विभोर होकर बापू ने कहा, "जहातक मेरा सम्बन्ध है, हिन्दुस्तानी समस्या के प्रति मेरी नीति मे भारत-विभाजन के कारण कोई परिवर्तन नही आया है। मेरे मन मे भावी भारत का चित्र अब भी वही है, जो पहले था। मै नागरी व उर्दू दोनो लिपियो मे हिन्दुस्तानी सीखने का पक्षपाती हू। भारत का चाहे राजनैतिक और भौगोलिक दृष्टि से विभाजन हो गया हो, परन्तु सास्कृतिक रूप से कोई विभाजन हो गया है, इसे मै स्वीकार करने को तैयार नही हू।"

हम सब जानते है कि गाधीजी ने काग्रेस कार्यसमिति मे कहा था कि विभाजन को स्वीकार न किया जाय। इससे देश और विदेश मे बिगडी हुई हालत बदतर हो जाने का अदेशा था। जब काग्रेस ने उनकी राय नही मानी और अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी के जून-अधिवेशन मे देश-विभाजन स्वीकार कर लिया गया, तब गाधीजी दिन-रात परेशान रहने लगे। मुझे उनके साथ भगी-कॉलोनी मे कुछ दिन ठहरने का सुअवसर मिला

जबसे देश के टुकडे हुए थे तबसे उनमे जो परिवर्तन हुआ था, वह हम सबने देखा। परन्तु सबसे अधिक उल्लेखनीय बात यह हुई कि विभाजन से लगे गहरे धक्के के बाद उनकी विनोद की प्रवृत्ति लुप्त हो गई।

"क्या आपका पाकिस्तान जाने का इरादा है ?" मैंने पूछा। "हा, यदि मैं इस स्थिति मे होऊ तो मैं इसी समय पाकिस्तान जाना चाहूगा। मैं कराची कैसे जा सकता हू, जबकि दिल्ली मेरे सामने जल रही है। मैं पाकिस्तान के मुसलमानो को क्या कहूगा जबकि मैं दिल्ली मे हिन्दू और सिखो को शान्त नही कर सकता।" बापू का प्रत्येक शब्द दुःख व दर्द से भरा हुआ था। उनका गला रुध गया।

मैंने कहा, "बापूजी, मैं यह जानता हू कि आप भारत-विभाजन के सख्त विरोधी है, किन्तु फिर भी आपने अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी को यह राय दी कि वह काग्रेस कार्यसमिति के निर्णय को स्वीकार करे। आपकी इस बात को आपके कुछ निकटतम साथियो ने गलत समझा है। यदि आपने अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी को इसके विपरीत राय दी होती तो शायद आज भारत का इतिहास कुछ और ही होता। भारत-विभाजन के बाद क्या आपके विचारो मे परिवर्तन आगया है ?"

"जरा भी नही।" गाधीजी ने तुरत उत्तर दिया, "मैं अपने विचारो मे कैसे परिवर्तन ला सकता हू, जबकि मैं स्वय अपनी आखो के सामने प्रतिदिन भारत-विभाजन के बुरे परिणाम, जिनके बारे मे मैंने पहले सोचा था, साफ देख रहा हू। परन्तु मुझे खेद है कि काग्रेस के प्रति मेरे रुख को गलत समझा गया है। इस भ्राति को दूर करने के लिए मैं अपने विचार तुम्हारे सामने रखता हू।" और तब गाधीजी धीरे-धीरे किन्तु दृढ आवाज मे बोलने लगे

"मैंने हमेशा काग्रेस कार्यसमिति को राष्ट्रीय मन्त्रिमडल (केबीनेट) माना है। प्रत्येक स्वतन्त्र और उत्तरदायी देश के मन्त्रिमडल को आवश्यक अधिकार होते है और होने चाहिए, ताकि वह विदेशो के साथ सधि-वार्ता करे, अन्यथा यदि मन्त्रिमडल को हर आवश्यक समस्या पर ससद् का परामर्श लेना पडे तो सारा राजनैतिक काम चलना असम्भव होगा। वर्तमान परिस्थितियो के अतर्गत कार्यसमिति ने भारत-विभाजन स्वीकार कर लिया

है । इस सधि-वार्ता मे ब्रिटिश सरकार, मुस्लिम लीग और काग्रेस, तीनो ने भाग लिया । जब काग्रेस कार्यसमिति की ब्रिटिश सरकार और मुस्लिम लीग से वार्ता नाजुक दौर मे चल रही थी और स्थिति मे दिन-ब-दिन परिवर्तन हो रहा था, ऐसी अवस्था मे वह ससद् के समानान्तर अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी से परामर्श नही ले सकती थी । अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी-रूपी ससद् के सामने अपने मत्रिमडल या कार्यसमिति के इस निर्णय की पुष्टि करने के सिवाय और कोई विकल्प न था । यह कार्यसमिति के विरुद्ध अविश्वास-प्रस्ताव पास करके उसके सदस्यो को कह सकती थी कि त्यागपत्र दे दो, परन्तु एक जिम्मेदार देश की हैसियत से भारत केवल अपने मत्रिमडल के निर्णय की पुष्टि कर सकता था । यह एक स्पष्ट सवैधानिक व्यवस्था है । अगर भारत इस अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था का पालन न करता तो ससार उसका उपहास करता । इसलिए मैंने अनिच्छा व बडे दु ख से अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी को कार्य-समिति के भारत-विभाजन के निर्णय को पुष्ट करने के लिए राय दी थी । मै काग्रेस के टुकडे नही होने दे सकता था और भारत को ससार के सामने उपहासास्पद नही बना सकता था ।"

जब गाधीजी ने ये शब्द कहे तब वह बहुत गम्भीर थे । मेरे विचार मे तो इससे बढकर सच्चा लोकतन्त्रवादी होने का ज्वलत उदाहरण इतिहास नही दिखा सकता है, न दिखायेगा । गाधीजी विभाजन के विचार के कट्टर विरोधी थे । परन्तु काग्रेस-सस्था के, जिसके वह जन्मदाता थे, निर्णय के सामने, चाहे वह गलत था, वह नतमस्तक हो गए ।

"तुम नही जानते, श्रीमन्, मेरी आत्मा को कितना गहरा कष्ट पहुच रहा है ।" बापू ने मेरी तरफ देखते हुए कहा, "मेरे लिए एक-एक पल भारी हो रहा है ।"

गाधीजी थोडी देर चुप रहे, फिर धीमी आवाज़ मे बोले, "साम्प्रदायिक घृणा और हिसा से आज दिल्ली जल रही है । मालम पडता है कि हिन्दू और सिखो ने सतुलन खो दिया है । मेरी अपील का उनपर कोई असर नही पडता है । एक समय था जब मेरी आवाज का जनता पर जादू-सा असर था । मालूम पडता है, आज वह सारी शक्ति खो गई है ।"

और इसके बाद वह कुछ नही बोले। हम लगभग तीस मिनट तक कमरे मे घूमते रहे। मैंने यह कभी नही सोचा था कि मै उनका इतना कीमती समय लूगा। परन्तु उस दिन गाधीजी ने अपने अन्तर का दु ख इस प्रकार प्रकट किया, जोकि मेरे लिए बिलकुल नया था। ठीक ७ बजे प० नेहरू कमरे मे प्रविष्ट हुए। यह उनका प्रतिदिन का कार्यक्रम था। मैंने जल्दी-से बापू से जाने की अनुमति ली और साथ के कमरे मे चला गया।

जैसे ही मै उस अधेरी रात को बिडला-हाउस से गया, बापू के ये शब्द मेरे कानो मे गूजने लगे "तुम नही जानते, श्रीमन्, मेरी आत्मा को कितना कष्ट पहुच रहा है। मेरे लिए एक-एक पल भारी हो रहा है।"

मै लगभग १५ वर्षो से गाधीजी के घनिष्ठ सम्पर्क मे रहा था, परन्तु मैंने बापू को इस प्रकार की अन्तर्वेदना से व्यथित कभी नही देखा था। मै यह स्वप्न मे भी सोच नही सकता था कि अन्तर्वेदना के ये दिन, मेरी बापू से आखिरी मुलाकात के बीस दिन बाद ही, अचानक समाप्त हो जायगे।

निस्सदेह गाधीजी का जीवन महान् था और वह मरकर और भी महान् होगए। यह ससार अगले हजारो वर्षो तक उन्हे याद करता रहेगा।

'अद्भुतं रोमहर्षणम्'

उमा अग्रवाल

सन् १९३३ की बात है। अस्पृश्यता-निवारण और हरिजनो के लिए चदा इकट्ठा करने के लिए बापूजी ने लगभग सारे देश का दौरा किया था। वर्धा से ही यह दौरा शुरू हुआ। करीब दस महीने लगातार यह दोरा चला। इस दौरान बापूजी सैकडो मील रेलगाडी मे चले, मोटरो मे सफर किया, स्टीमर ओर नावो से नदिया पार की। उत्कल प्रदेश की तो तमाम यात्रा पैदल ही की। सौभाग्य से इस दौरे मे बापूजी ने मुझे भी अपने साथ रहने और घूमने का मौका दिया था। श्री ठक्कर बापा हमारी टोली के व्यवस्थापक थे। मीराबेन बापूजी की व्यक्तिगत परिचर्या की प्रधान थी। और श्री चद्रशकर शुक्ल प्रधान मत्री। इस तरह बापूजी के साथ दौरे मे दस-बारह तो हम स्थायी सदस्य थे। बाकी हर प्रान्त, हर शहर और हर गाव मे वहा के स्थानीय कार्यकर्ता और भक्तगण साथ हो लेते थे। प्रत्येक स्थायी सदस्य को एक-एक मुख्य जिम्मेदारी सौंप दी गई थी। टोली मे मै सबसे छोटी थी। मेरे लायक रोजाना के कुछ कार्य मुझे भी सोप दिये गए थे। इतने सब लोग थे, फिर भी मेरी हर तरह की हरकतो और दिनचर्या पर स्वय बापूजी की पूरी नजर रहती थी। मेरा दिन-भर का कार्यक्रम वह रात में बैठकर सुन लेते थे। उनकी नजर बहुत पैनी थी। कान भी बहुत तेज थे। उनकी आखो और कानो के मारे नाक मे दम था। हमेशा डर बना रहता था, कोई गल्ती न पकड ली जाय।

छोटी-छोटी बातो मे सफाई की ओर उनका ध्यान सबसे पहले जाता था। सफाई और सादगी दोनो का मेल चित्त को प्रसन्न करता है। रूमाल की तह भी वह देख लेते थे कि करीने से की गई या नही। यात्रा का सामान रोज खुलता था और रोज बधा जाता था। सामान सुन्दर और व्यवस्थित ढग मे बधना चाहिए, तरतीब से जचाकर रखे तो थोडी जगह मे ज्यादा चीजें रखी जा सकती है, इस सबका पाठ जरूरत पडने पर, बापूजी स्वय देते थे।

कही गलती से कुछ सामान छूट गया या कोई चीज रास्ते में टूट गई या कुछ अदद बढ गए, तो वह उनकी नज़र से चूकता नही था। उसी समय सबधित व्यक्ति को बुलाकर खुलासा पूछते और भविष्य में ऐसी गलती न हो, इसकी ताकीद कर देते थे। लापरवाही उनके लिए असह्य थी। छोटी-सी पेंसिल भी यदि कही रह गई और उसकी जगह नई पेंसिल उनके सामने रख दी गई तो सारी कैफियत देनी पडती थी कि उस पुरानी पेंसिल के टुकडे का क्या हुआ, कही भूल गए तो कैसे भूले, कही गिर पडी तो कैसे गिरी, किसीको दी थी तो वापस क्यो नही ली, आदि। हर क्षण घडी की सुई की तरह व्यस्त रहने पर भी इतनी जाच-पडताल का समय बापूजी को कैसे मिल जाता था, इसकी हैरानी अब भी होती है।

बापूजी बकरी का दूध और बकरी के दूध का ही मावा लेते थे। दूध औटाकर उसका मावा बनाना और सोते समय गाय का घी उनके तलवो पर मलना, ये दो काम मुख्य रूप से मेरे जिम्मे थे। कितने दूध मे कितना मावा बैठा, कितना वक्त लगा, आज ज्यादा देर क्यो लगी, दूध ज्यादा था या आच कम थी, दूध नीचे कैसे लग गया, उस ओर पूरा ध्यान नही था क्या—आदि सवालो का जवाब देने के लिए हमेशा तैयार रहना पडता था। शैतान भी मै पूरी थी। अपनी इस शैतानी से बापूजी को कभी-कभी तग भी कर देती थी। बापूजी को शैतान बच्चे पसन्द भी बहुत थे। इसलिए उन्होने मुझे शैतानी करने से कभी रोका नही। तलवो मे घी की मालिश करते-करते अक्सर मै उनके तलवो मे गुदगुदी कर देती थी। बापूजी अपने पैर खीच लेते। मेरे आश्वासन देने पर कि अब गुदगुदी नही करूगी, वह फिर से पैर फैला देते थे। बापूजी को भी गुदगुदी होती है, यह देखकर उस समय मुझे बडी खुशी होती थी।

बापूजी के बूढे हाथो मे ताकत भी बहुत थी। प्रणाम करने पर बापूजी हमेशा पीठ पर भारी धौल के सग आशीर्वाद देते थे। जितनी मजबूत पीठ होती, उतनी ही जोर की धौल पडती थी। एक बार जोर की धौल खाकर मेरी मोटी-ताजी पीठ भी बिलबिला गई। लेकिन अपनी कमजोरी जाहिर कैसे होने देती! मैने पूछा, "बापूजी, आपके हाथ मे चोट तो नही लगी ?"

हँसकर बापू ने मेरी पीठ पर एक और धौल जमा दी । लेकिन इस बार वह हलकी थी ।

अचरज की बात तो यह है कि मुझ-सी शैतान और अलमस्त लडकी से भी वह कितने ही काम करवा लेते थे । मै भी अपनी योग्यता और समझ के अनुसार सब काम खुशी-खुशी करती । पत्र पढकर सुनाना, किन्ही पत्रो का जवाब लिखना, अखबार की खबरे बताना, कभी-कभी सभाओ मे उनका भाषण लिखना, कभी जनता से झोली फैलाकर हरिजन-फड का चदा इकट्ठा करना, आदि-आदि ।

यात्रा मे मेरी पढाई का ध्यान भी उन्हे रहता था । बापूजी की इच्छानुसार साथ के लोगो मे से कोई अग्रेजी पढाता, कोई सस्कृत । भगवद्-गीता के श्लोक कठस्थ कर लेने पर बापूजी मोटर या ट्रेन मे कभी भी सुन लेते थे और यदि कोई गलती होती तो उसे सुधार देते थे । अपने पास ही सुलाते और प्रार्थना के लिए खुद ही रोज सुबह चार बजे उठाते । दुनिया-भर की व्यस्तता के बीच भी कितनी ममता और सहजता से यह सब करते थे वह !

बापूजी बच्चे से लेकर बडे तक सभीके हास्य-विनोद मे समान रूप से आनन्द लेते थे । मीराबेन तन-मन से बापूजी की सेवा मे ही व्यस्त रहती थी । इधर-उधर कही ध्यान नही रहता था उनका । महीनो से हम रात-दिन साथ थे, लेकिन एक दिन उनकी आखो ने भी कुछ देखा, यद्यपि वह चीज शुरू से ही मेरे साथ थी । आश्चर्य के मारे उनसे नही रहा गया और मुझे एक दिन पकडकर वह बापू जी के पास ले गई । दरअसल मेरी गरीब नाक पर एक छोटा-सा तिल उन्हे दिखाई दे गया था । बोली, "बापूजी, देखिये तो ! ओम् की नाक के सिरे पर तिल है ।" उस समय बापूजी का मौन था और वह 'हरिजन' के लिए एक लेख लिखने मे व्यस्त थे । दूर से नजर ऊपर की, तिल को ध्यान से देखकर मुस्करा दिये और फिर से लिखने मे लग गए । माथे पर ज़रा भी शिकन नही पडी कि इस तरह लिखते समय बीच मे उन्हे तग क्यो किया गया ।

बच्चो के सग वह उन्हीकी उमर के साथी बन जाते थे । पैदल घूमते वक्त लडके-लडकियो का बारी-बारी से सहारा लेकर चलते थे । हम

उनकी 'लकडी' थे। सब बडी उत्सुकता से अपनी बारी की बाट देखते थ, बल्कि ताक लगाये रहते थे कि कब पहला खिसके तो हम जा धमके। कभी किसी व्यक्ति से गभीर चर्चा या निजी बातचीत होती थी, तो हम बेचारी 'लडकियो' को दूर ही रह जाना पडता था। ईश्वर ही जानता है, हम ऐसी मुलाकातो को दिल मे कितना कोसते थे।

बापूजी से कदम-से-कदम मिलाना कोई आसान बात नही थी। कई बार बापू से हम बच्चो की शर्त लग जाती थी कि कौन आगे जाता है। बाकायदा एक-दो-तीन बोला जाता और बापूजी हमारे कन्धो का सहारा छोडकर दौड पडते।

एक बार वर्धा मे मेरे कान मे दर्द हुआ। पिताजी उस समय जेल मे थे। मा को चिता हुई कि कान नाजुक चीज है, कही हमेशा के लिए कोई खराबी न हो जाय। बापूजी उन दिनो दिल्ली किसी महत्त्वपूर्ण कार्य से गये हुए थे। उन्हे वहा इसका पता चला। फौरन मा के पास तार आया कि उमा को कान के विशेषज्ञ को दिखाने बबई ले जाओ। अजीब-सी बात मालूम देती है! इतने बडे आदमी के पास ये छोटी बाते कैसे पहुचती थी और क्यो! लेकिन इसे मुझ-जैसे भुक्तभोगी ही समझ सकते हैं। वर्धा से कोई भी व्यक्ति दिल्ली पहुचता, बापूजी उससे वर्धा के सारे समाचार पूछते, एक-एक का नाम लेकर उसकी कुशल-क्षेम पूछते। यदि कोई छोटी-सी भी बात, खासकर किसीकी तकलीफ की, बतानी रह जाती तो उस बेचारे की इस लापरवाही पर पूरी खबर ले ली जाती।

मै तो आज अब भी बापूजी का हँसकर धौल लगाना, उनकी वह मत्र-मुग्ध कर देनेवाली मुस्कान, उनका कान पकडकर चपत लगाना, गुदगुदी करने पर पैर खीच लेना—इन सबकी याद करती हू, तो बस 'अद्‌भुत रोमहर्षणम्' की ही अनुभूति होती है।

वापू की महानता

रामकृष्ण वजाज

यह हम लोगों का वडा सौभाग्य रहा कि पिताजी—स्वर्गीय पूज्य जमनालालजी वजाज—की वजह से हम पूज्य वापूजी के इतने निकट रह सके। पूज्य पिताजी ने अपने त्याग और तप की वजह से वापूजी के पाचवें पुत्र का स्थान प्राप्त किया था। उनके आग्रह के वश होकर वापूजी वर्धा रहने चले आये। इसी कारण हमको भी वापूजी के इतने पास रहने का और अपने जीवन को वनाने में उनके मार्गदर्शन का लाभ मिलता रहा। अव जव भी मैं पीछे फिरकर देखता हू, उन दिनो की याद करता हू, तो मुझे खुद, जैसा कि जगत्-प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइस्टीन ने कहा था, विश्वास नही होता कि वापू-सरीखे व्यक्ति सचमुच इस ससार मे पैदा हुए थे और हमारे वीच एक साधारण मानव के रूप में रहे थे। उनकी एक-एक वात सोचता हू तो चकित रह जाता हू। जव उनके पास हम रहते थे तो ऐसा कभी नही लगता था कि वह कोई वहुत वड़े व्यक्ति है, जिनसे हम डरें या दूर रहें। वच्चे जैसे अपने पिता या दादा के पास वेधडक चले जाते है, उस तरह से हम उनके पास चले जाते और उसी तरह प्रेम भी पाते। इतना काम रहते हुए भी कभी हमने उनको जल्दी करते नहीं देखा। उन्होंने अपने व्यवहार से यह महसूस नहीं होने दिया कि वह महत्त्व का काम कर रहे हैं और इसलिए वह हमें समय नही दे सकते। वह साधारण मनुष्य की भाति ही लगते। जव भी सोचता हू कि इसी साधारण मनुष्य ने इतने थोडे समय में इतना सव काम किया, तव हमें, जो उनके पास रहे है, इस पृथ्वी पर पैदा होकर इतना काम करने का विश्वास नही होता। आनेवाली पीढी के लिए तो यह और भी कठिन होगा।

सन् १९३५ की वात है। उन दिनों वापूजी वर्धा में मगनवाड़ी वगीचे में रहते थे। मेरी उस समय उम्र कोई वारह वर्ष की होगी। पिताजी ने कुछ दिनों के लिए मुझे मगनवाड़ी में रहने के लिए भेज दिया था, ताकि मुझे

उनके पास रहने का अवसर मिले और उनकी देखरेख और निगरानी में रहकर मेरा विकास हो। एक दिन मैं वापूजी की वैठक मे गया। उन्होने मुझे अपने पास वुलाकर कहा, "राम, मैंने, तुम्हारे लिए कई महीनो से दो विदेशी टिकटे रख छोडी है।" मालूम नही, उन्हे कैसे पता चल गया कि मुझे विदेशी टिकटे इकट्ठा करने का शौक है। दस महीने से उन्होने वे टिकटे मेरे लिए याद करके रखी हुई थी। कागजो के झुड मे से उन्होने एक लिफाफा निकालकर मुझे दिया। कितनी आश्चर्य और खुशी की वात थी वह मेरे लिए ! हर छोटे-वडे व्यक्ति का वह कितना खयाल रखते थे ! वच्चो को खुश करने मे स्वय उन्हे प्रसन्नता होती थी। उनके पास जो भी रहता, उसे इस प्रेम और सहृदयता का अपने स्वय के जीवन मे अनुभव होता था।

• •• ••

मगनवाडी में शहतूत, फालसे, वेर आदि के वहुत पेड थे। मैं तो वच्चा ही था, लेकिन मुझसे भी कोई-न-कोई काम तो कराना है, इसलिए वापूजी ने मुझसे कहा कि पेडो पर चढकर सारे फल तोडकर इकट्ठा करो और आश्रम के परिवार के वच्चो को इकट्ठा करके उनमे वाट दो। वापूजी इस बात का बराबर ध्यान रखते थे कि छोटी-छोटी चीजो मे वच्चो को मजा भी आवे और साथ-ही-साथ उनको शिक्षण भी मिलता रहे। इन छोटे-छोटे अनुभवो से बच्चो को भावी जीवन की दिशा और अपने विचार-निर्माण मे सहायता मिलती है।

१९४० मे व्यक्तिगत सत्याग्रह शुरू हुआ। तब मैं कुल सत्रह साल का था। जब काकाजी को गिरफ्तार कया गया तो मुझे भी उत्साह हुआ कि जेल जाना चाहिए। पूज्य बापूजी, पिताजी तथा अन्य लोगो की वजह से वातावरण मे इतना उत्साह और जोश था कि मन मे यह लगता रहता कि अवसर पाकर हमको भी जेल जाना चाहिए और देश के लिए कुछ करना चाहिए। यदि जल्दी ही कुछ नही कर सके और इस बीच देश को आजादी मिल गई तो फिर जीवन-भर पछताना पडेगा कि देश की आज़ादी की लडाई मे हम कुछ भी हिस्सा नही वटा सके।

जव पिताजी को गिरफ्तार करके पुलिस जेल ले जा रही थी, उनसे

मेरे पढ चुकन पर उन्होने उस वक्तव्य का अर्थ मुझे समझाया और कहा, "कोई बात न समझे हो तो मुझसे पूछ लो।" बाद मे यह भी कहा कि यदि उसमे से किसी बात से मै असहमत होऊ तो मै उनसे कह दू, वह उतना हिस्सा बदल देगे। मै तो यह सुनकर गद्गद हो गया। एक सत्रह बरस के बच्चे से बापूजी बराबरी का नाता रखकर पूछ रहे थे। मै उनसे भला क्या असहमत हो सकता था! लेकिन उनके इस तरह के व्यवहार से दिल उत्साह से भर गया और अधिक जिम्मेदारी महसूस होने लगी। जितने भी दिन जेल मे बिताने थे, उनको खुशी से बिताने का सबल मिल गया।

.. .. ..

मैने एक बार जेल से माताजी को चिट्ठी लिखी कि यदि पूज्य बापूजी मेरे नाम चिट्ठी लिखे तो मुझे वह मिल जाया करेगी, ऐसी इजाजत मैने जेल के अधिकारियो से ले ली है। यह जानकर बापूजी ने तुरन्त २३-३-४० को सेवाग्राम से मुझे चिट्ठी लिखी।

. .. ..

इस चिट्ठी के नीचे हमेशा की तरह 'बापू के आशीर्वाद' लिखा था, लेकिन साथ ही 'मो० क० गाधी' भी लिखा था। मतलब यह कि जेल के अधिकारी कही गफलत मे उनका पत्र मुझे न दे दे। उनका लिखा हुआ यह पत्र है, ऐसा जानकर वे देना चाहे तो दे, अन्यथा नही। हर छोटी-बडी बात मे एक सच्चे सत्याग्रही के नाते बर्ताव करने का बापूजी प्रति-क्षण कितना ध्यान रखते थे, उसकी यह एक छोटी-सी मिसाल है।

. .. .

जो चिट्ठिया उनके पास जाती थी, उनके पीछे का खाली भाग वह चिट्ठी का जवाब लिखने के काम मे लाते थे। किसी भी तरह की फिजूल-खर्ची उनको पसन्द न थी। इन पर्चियो को वह एक बहुत साधारण से तख्ते के फोल्डर मे रखते थे। यह फोल्डर कुछ गदा हो गया तो उन्होने एक सहयोगी से साफ करने के लिए कहा। उसने सफाई की तो सही, लेकिन बापूजी के मन-लायक नही हुई। किसी भी तरह की गदगी या अव्यवस्था उन्हे सहन नही होती थी। उन्होने उस भाई को बुलाकर एक शिक्षक की

खुद ही मेरे लिए तयार किया था । मै जव गिरफ्तार होकर जल जाऊ और अदालत मे मेरी पेशी हो, तव वहा वक्तव्य देने के लिए यह उन्होने वनाया था ।

जवकि विद्यार्थी-जगत् में अराजकता फैल रही है, मै यह वात कह देना जरूरी समझता हू । मेरी उम्र अठारह साल से कम है, लेकिन मुझे विद्यार्थी-जगत् और बाहरी ससार का इतना अनुभव जरूर है कि मै हर वात में अनुशासन की आवश्यकता महसूस कर सकू । इसलिए मैने जो कदम उठाया है, उसमें मैने अपने माता-पिता और दूसरे वुजुर्गों की आशिष प्राप्त की है । अपने माता-पिता की देखभाल में मैने जीवन की हर एक छोटी-मोटी तफसील में अहिंसा की व्यावहारिक शिक्षा पाई है । मैने हाल ही में मैट्रिक की परीक्षा दी है । मैने स्कूल जाना देर से शुरू किया। मेरे माता-पिता ने १९२० के असहयोग-आन्दोलन के दिनो में ही, जबकि मै पैदा भी नहीं हुआ था, हम लोगो की वाकायदा स्कूल की पढाई बन्द कर दी । मेरे माता-पिता ने हम सभीको स्वतत्रता के वायुमण्डल में पाला, इसीलिए जब मैने स्कूल जाकर मामूली शिक्षा लेनी चाही तो मुझे इजाजत दे दी गई । लेकिन जब मौजूदा आन्दोलन शुरू हुआ तो मेरा दिल चचल हो उठा । मै सोचने लगा कि स्वतत्रता-प्राप्ति के प्रयत्न में मुझे जो प्रत्यक्ष अनुभव होगा, वह मामूली स्कूल की पढाई से कही कीमती होगा, क्योकि हरेक स्कूल का लडका जानता है कि यह शिक्षा जनता की भलाई के लिए नहीं शुरू की गई है, वरन् हमारे राज्यकर्त्ताओ के फायदे के लिए की गई है । यह जानते भी अगर हम स्कूल की शिक्षा लेते है तो उसका यही कारण है कि आज कई वर्षों से वही अकेली प्रचलित रही है, और उसकी बदौलत हमारी यह दुर्दशा हुई है । मै इस आन्दोलन के राजनैतिक महत्त्व की अपेक्षा नैतिक महत्त्व से अधिक आकर्षित हुआ हू । मै जानता हू कि अगर हिन्दुस्तान ससार के सामने पूर्ण अहिंसा का उदाहरण पेश कर सके तो वह मानवीय प्रगति में अपूर्व सहायता पहुचायेगा । यह दिव्य आदर्श मेरे तरुण चित्त को मुग्ध करता है और ऐसे उच्च और उज्ज्वल आदर्श की प्राप्ति के लिए मै किसी भी क्लेश या कष्ट को अत्यधिक नहीं मानूगा ।

प्रार्थना-सभा मे मेरा नाम लेकर कह दिया, "यह तो मेरा 'हमाल' है।" और कोई मुझे हमाल या कुली कह देता तो मुझे कितना बुरा लगता, लेकिन बापू के इस वाक्य को सुनकर खुशी से छाती फूल गई।

इस दौरे के दरमियान हम लोग खादी-प्रतिष्ठान (सोदपुर) मे ठहरे हुए थे। बापूजी कात रहे थे और खासाहब[१] उनके पास ही बैठे थे। मेरे कुछ कलकत्ते के कुटुबी और दोस्त बापूजी के दर्शन करने चले आये। मै उन्हे बापू से मिलाने ले गया। उन सबने बापू को झुककर प्रणाम किया, मुझे बुलाकर समझाया कि जब उनके मित्र लोग बैठे हो तब केवल उन्हे ही प्रणाम करना उचित नही था, सबको प्रणाम करना चाहिए था। आगे से मुझे इसका खयाल रखना चाहिए, खासाहब या और भी बुजुर्ग बैठे हो तो उनके प्रति किसी तरह अनादर व्यक्त नही होना चाहिए। एक घर के बुजुर्ग के समान इन छोटी-बडी सब बातो पर बापू का ध्यान रहता था। उनके साथ के लोगो और बच्चो से किसी तरह की गलती न हो, इसका वह खयाल रखते थे।

हमे तो यही आश्चर्य होता था कि इतनी सब बातो की तरफ वह एक साथ कैसे ध्यान रख लेते थे।

. ...

दक्षिण के दौरे मे जो मुख्य घटनाए वहा घटी थी, उनमे मदुरा का जगत्-प्रसिद्ध मन्दिर उनके द्वारा हरिजनो के लिए खोला जाना भी एक थी। वह प्रसग बडा ही अद्भुत और उत्साहवर्धक था। बापू को भी उस मदिर को हरिजनो के लिए खोल देने से बडी प्रसन्नता हुई थी, क्योकि वह जगह सनातनी विचारो का गढ थी।

लेकिन इससे भी ज्यादा खुशी बापू को पलनी के मदिर मे जाकर हुई। पलनी का मदिर बहुत ऊची टेकडी पर बना हुआ है, करीब सात-आठ सौ सीढिया चढकर ऊपर जाना होता है। बापू को कुर्सी की डाडी पर बिठाकर ऊपर ले जाया गया। हम लोग उनके साथ-साथ पैदल जा रहे थे। उन्हे कुर्सी पर ले जाया जाना बिलकुल अच्छा नही लग रहा था, लेकिन

---

१ अब्दुलगफ्फार खां

भाति वहुत समय देकर विस्तार के साथ समझाया कि किस तरह से पहले अलग करके सावुन से धोया जाय और उसे तख्ते पर लगाकर वरावर वजन के नीचे दवा दिया जाय, जिससे कपडा गीला होने पर भी तख्ता मुडे नही, आदि ।

आगाखा-महल से छूटने के वाद १९४५ में वापूजी वगाल, असम और दक्षिण भारत के दौरे पर गये थे । मैने जेल से छूटने पर याद दिलाया कि अभी पाच वर्प पूरे होने मे कुछ महीने वाकी है, इसलिए आपको अधिकार है कि आप जो काम चाहे, मुझसे ले सकते है । उन्होने दौरे मे साथ चलने के लिए मुझसे कहा । मेरी खुशी का ठिकाना न रहा । इस दौरे मे वापू के दल मे काफी लोग थे । यात्रा लगातार चलती रही । कार्यक्रम हमेशा व्यस्त रहता, लेकिन वापूजी को सदा खयाल रहता कि उनकी या उनके साथियो की वजह से मेजवानो को कोई तकलीफ न हो । वापूजी तो इतना ध्यान रखते, लेकिन हम सव लोगो को इसकी इतनी परवा थोडे ही होती ! कोई-न-कोई बात हो ही जाती, जिसको लेकर वापू को हम सव लोगो को वडे धीरज से समझाना पडता । कभी-कभी तो हमे यह लगता कि कही वापूजी को हमे लेकर कोई कष्ट न हो । और कोई होता तो समझा-समझाकर हैरान हो जाता । लेकिन वापू तो यह भी वडी सहजता के साथ करते । हम लोगो को लगता कि उन सव छोटी-छोटी वातो मे वापू का इतना समय नही जाना चाहिए । जहा हम जाते, लोग उनके दर्शन करने के लिए एक-एक मिनट आतुर रहते । ऐसी स्थिति मे हमारा वापू का इतना समय लेना कहातक उचित था ! लेकिन वापू को इसकी परवा न थी । उनका दृष्टिकोण तो यही रहा होगा कि उन्हे नये-नये स्वय-सेवक तैयार करने है और इसलिए हमपर दिया गया उनका समय वर्वाद नही हो रहा था ।

इन दौरो मे, और सव कामो के साथ-साथ, हर स्टेशन पर प्रार्थना होती । कनुभाई के साथ हम भी प्रार्थना की व्यवस्था मे भाग लेते । मै रामधुन आदि भी गाने लगा । यात्रा मे जो भी काम होता, सामान उठाकर इधर-से-उधर ले जाने आदि का भी, वह सव जहातक हो सके, हम लोग खुद ही करते । वापूजी को भी यह अच्छा लगता । एक दिन उन्होने मेरी

देनेवाले और इस तरह से दो-दो, चार-चार पैसे देनेवालो मे कोई अन्तर नही था । एक तरफ तो वह उन गरीबो को खुशी देते, जो उनको अपनी गाढी कमाई का कुछ हिस्सा दे पाते, दूसरी तरफ उन गरीब हरिजन भाइयो को खुशी देते, जिनके लिए उन पैसो का उपयोग किया जाता । जो पैसे मिलते, उन्हे इकट्ठा कर उसका पूरा हिसाब रखना मेरे और कनुभाई के जिम्मे था । उसमे से कुछ रकम अन्य कार्य के लिए दी जाती, उसका जमा-खर्च भी उसी समय करना जरूरी होता । वह सब काम हम बडे उत्साह से करते और उसमे हमे बहुत आनन्द आता था ।

... ...

आखिरी बार मै उनसे भगी-कॉलोनी, दिल्ली मे उनके देहावसान के कुछ ही महीने पहले मिला था । उस समय मै विद्यार्थियो को सगठित करने मे लगा था और उनका मार्ग-दर्शन चाहता था । हम लोग उस समय 'नेशनल यूनियन ऑफ स्टूडेण्ट्स' बनाना चाहते थे और इस बारे मे हमारी जो योजना थी, वह हमने उनको बताई । उनको योजना पसन्द आई और उन्होने कहा कि इसमे हमे किसीसे बहुत मदद की अपेक्षा नही रखनी चाहिए, क्योकि लोगो को विद्यार्थियो का राजनैतिक दृष्टि से उपयोग करने मे अधिक दिलचस्पी है । फिर भी हमे अपने काम को बराबर करते रहना चाहिए । उन्होने आगे कहा, "एक चीज हमेशा ध्यान मे रहे कि तुमको किसीकी मदद मिले या न मिले, इसकी परवा नही करना, उसके लिए अपना दर्जा नीचा मत करो या अपना सिद्धान्त मत छोडो ।"

इतना ऊचा चढना उनके लिए सभव नही था, इसलिए उन्होने कुर्सी पर ले जाया जाना मजूर कर लिया ।

रास्ते मे उन्होने खुद ही बताया कि वे पलनी क्यो आना चाहते थे । मदुरा मे तो लोग उनको आग्रह करके ले गए, लेकिन पलनी वह खुद की ही इच्छा से जा रहे थे । मदुरा के मदिर का नाम प्रतीक-रूप मे धनवानो से जुडा हुआ है, पलनी का मदिर गरीबो का प्रतीक माना जाता है । इसलिए उन्होने कहा कि जब वह मदुरा मे गये तो पलनी-मदिर मे भी जाना ही चाहिए । पलनी के मदिर की एक और विशेषता है । वह यह कि पुराने जमाने से ही मदिर के इर्द-गिर्द जो गाना-बजाना, भजन-पूजन होता है, वह हमेशा मुसलमान लोग ही करते आये है । वहा के पुजारियो को या अन्य लोगो को इसमे किसी तरह की आपत्ति नही थी । बापूजी के लिए यह एक विशेष आकर्षण की बात थी ।

इस तमाम यात्रा मे जहा कही बापू जाते, हर जगह स्टेशनो पर, सडको पर, मीटिगो मे, हजारो-लाखो की तादाद मे लोग जमा होते । एक जगह तो कोई बीस-पच्चीस हजार लोग एक नदी मे तीन-चार फुट गहरे पानी मे कई घटो तक रहे । बापू की गाडी वहा से गुजरनेवाली थी । सिर्फ उनकी झलक मिल जाय, इसी भावना से ये लोग खडे थे । इसी वजह से वहा दो-चार मिनट के लिए गाडी को विशेष रूप से रोका गया । बापू रेल के दरवाजे पर खडे हो गए । उनको एक नजर देखने-मात्र से लोगो को बडा सुख-समाधान मिला ।

गरीबो तथा हरिजनो के प्रति बापू की कितनी भावना थी, इसका भी काफी अनुभव इस यात्रा के दौरान मे मुझे हुआ । किसी भी जगह बापू हरिजनो के लिए पैसा इकट्ठा करने से नही चूकते थे । गरीब-से-गरीब लोग भी उन्हे अपने हाथो से पैसे-दो पैसे भी दे सके, इसकी कोशिश मे रहते थे । इसकी वजह से बडी भीड हो जाती । बापू को तकलीफ भी बहुत होती, लेकिन वह हर आदमी से, जो भी वह देना चाहे, बडी खुशी से लेने के लिए हमेशा तत्पर रहते । गरीब एक पैसा भी दे, तब भी उसके पीछे की भावना वह समझते और उसकी कद्र करते । गरीबो के द्वारा गरीबो की मदद हो, इसे वह अच्छा समझते । इसलिए उनके सामने बड़ी रकम

आज बापू को गुजरे चौदह वर्ष हो गए, लेकिन उस मुलाकात की अमिट छाप मेरे हृदय पर अभी भी है। एक सामान्य भेट भी जीवन मे विशेषता ग्रहण कर लेती है, जबकि वह एक केवल एक हो। एक मे अनेक की भावना से उस एक मौन मुलाकात को ही मैंने अनेक मुलाकातो का सार मान लिया है। मानवीय गुणो से परिपूर्ण उस विशेष मानव का स्मरण करते हुए अपनी यह छोटी-सी सस्मरण-रूपी श्रद्धाजलि अर्पित करती हू।

●

स्मृति-पटल का एक बिन्दु

विमला बजाज

जब मै सस्मरण लिखने बैठी तो ध्रुवतारे की भाति मानस-पटल पर अकित चौदह वर्ष पहले की बापू से भेट की स्मृति उभर आई। विवाह के उपरान्त हम उनके आशीर्वाद लेने गये थे। उस रोज उनका मौन था। हम उन्हे प्रणाम कर एक ओर बैठ गए। चरखे की सगीत-ध्वनि शातिमय वातावरण मे समाई हुई थी। एक व्यक्ति उन्हे डाक पढकर सुना रहा था। बीच-बीच मे कोई कुछ आकर कह जाता था, किन्तु सूत का तार-तम्य टूटता न था। कापते हाथो मे मन की दृढता छिपी थी।

इस कर्मयोगी की जीवन-साधना की तस्वीर आखो के सामने से गुजर गई। दुबली-पतली देह मे कितना आत्मबल होगा, जिसके सामने एक शक्तिशाली सरकार परास्त हो गई! मुग्ध मन से मै सब सोचती रही। ध्यानमग्न बापू चरखा चलाते जा रहे थे और मै उनके ध्यान मे मग्न थी। सहसा उन्होने मुझसे जाने को कहा और मै अपनी विचार-शृखला तोडते हुए उठ खडी हुई। उन्हे प्रणाम कर हम वहा से चल दिये। बापू से बातचीत न हो सकी, लेकिन इस मुलाकात की अमिट छाप दिल पर पड चुकी थी। मौन मे भाषा से अधिक शक्ति छिपी है, यह मुझे अनुभव हो रहा था। बापू मुझसे कितना कुछ कह चुके थे, यह मै ही जानती थी। मुझे विश्वास था कि आगे भी कई बार उनसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त होगा, लेकिन नियति को कुछ और ही मजूर था। यह मै कैसे सोच सकती थी कि यह मेरी पहली और आखिरी मुलाकात है! लेकिन शीघ्र ही वह अप्रत्याशित घटना घटी, जिसकी स्वप्न मे भी आशा न थी। सारा भारत-वर्ष सहम उठा, दुनिया शोक से ओतप्रोत हो गई। इनके लिए बापू पिता से भी बढकर थे, ये फूट-फूटकर रो पडे। मै भी आसू न रोक सकी। मन मे दु ख-क्षोभ की लहरे उठने लगी। काश, मै बापू से कुछ और मिल सकती! किन्तु मिलने का समय निकल चुका था। मै मन मसोसकर रह गई।

८. वापू-स्मरण—सपादक : रामकृष्ण वजाज (प्रेस में)

जमनालालजी की डायरी में से वापू-सम्वन्धी अश और वजाज-परिवार के सदस्यो द्वारा लिखे वापूजी के सस्मरण (इसे एक प्रकार से 'वापू के पत्र' का दूसरा भाग समझना चाहिए ।)

जमनालालजी-सम्बन्धी अन्य पुस्तकें

१. पाचवें पुत्र को वापू के आशीर्वाद—सपादक : काका कालेलकर

जमनालालजी व गाधीजी का पत्र-व्यवहार । जमनालालजी की डायरी तथा पत्रो से गाधीजी-सम्वन्धी अश तथा जमनालालजी-सम्वन्धी महात्माजी के सपर्क की अन्य सामग्री ।

(प्रस्तावना · जवाहरलाल नेहरू)

जमनालाल वजाज सेवा-ट्रस्ट प्रकाशन । (अप्राप्य)

२. पाचमा पुत्रने वापूना आशीर्वाद (गुजराती-सस्करण) ३ ००

सपादक काका कालेलकर, प्रस्तावना जवाहरलाल नेहरू

(नवजीवन ट्रस्ट, अहमदावाद द्वारा प्रकाशित)

'वापू के पत्र' का अग्रेजी-सस्करण जमनालाल वजाज सेवा ट्रस्ट-प्रकाशन

३. To a Gandhian Capitalist

४. श्रेयार्थी जमनालालजी—ले० . हरिभाऊ उपाध्याय (प्रेस में)

श्री जमनालालजी वजाज की विस्तृत जीवनी

प्रस्तावना—डॉ० राजेन्द्रप्रसाद

(सस्ता साहित्य मण्डल-प्रकाशन)

५ श्रेयार्थी जमनालालजी—(सक्षिप्त सस्करण) (अप्राप्य)

(सस्ता साहित्य मण्डल-प्रकाशन)

६. जमनालालजी—ले० . घनश्यामदास विड़ला (प्रेस में)

(जमनालालजी का चरित्र-चित्रण सस्ता साहित्य मण्डल-प्रकाशन)

७. जमनालाल वजाज—ले० . स्व० रामनरेश त्रिपाठी (अप्राप्य)

(जमनालालजी की जीवनी हिन्दी-मन्दिर, इलाहावाद का प्रकाशन)

८. जीवन-जौहरी—ऋषभदास राका (अप्राप्य)

(जमनालाल के जीवन-प्रसग भारत जैन महामण्डल, वर्धा का प्रकाशन)

जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट से प्रकाशित और प्रचारित पुस्तकें

१. बापू के पत्र—सपादक काकासाहब कालेलकर १.२५
'पाचवे पुत्र को बापू के आशीर्वाद' का सक्षिप्त सस्करण (अजिल्द)
(प्रस्तावना—डॉ॰ राजेन्द्रप्रसाद)

२. स्मरणांजलि—स्व॰ श्री जमनालाल बजाज के सस्मरण १.५०
तथा उनके स्वर्गवास पर दी गई श्रद्धाजलिया। (अजिल्द)
सपादक-मण्डल काका कालेलकर, हरिभाऊ उपाध्याय,
शिवाजी भावे, श्रीमन्नारायण, मार्तण्ड उपाध्याय
(प्रस्तावना—बनारसीदास चतुर्वेदी)

३. पत्र-व्यवहार (पहला भाग)—सपादक रामकृष्ण बजाज ३.००
जमनालालजी का राजनैतिक नेताओ से पत्र-व्यवहार (सजिल्द)
(प्रस्तावना—च॰ राजगोपालाचार्य)

४. पत्र-व्यवहार (दूसरा भाग)—सपादक रामकृष्ण बजाज ३.००
जमनालालजी का देशी रियासतो के कार्यकर्ताओ से पत्र-व्यवहार, (सजिल्द)
(प्रस्तावना—पट्टाभि सीतारामैया)

५. पत्र-व्यवहार (तीसरा भाग)—सपादक : रामकृष्ण बजाज ३.००
जमनालालजी का रचनात्मक कार्यकर्ताओ से पत्र-व्यवहार (सजिल्द)
(प्रस्तावना—जयप्रकाशनारायण)

६. विनोबा के पत्र—सपादक . रामकृष्ण बजाज ४.००
बजाज-परिवार के नाम लिखे विनोबाजी के पत्र, (सजिल्द)
जमनालालजी की डायरी मे से विनोबा-सबधी अश और बजाज-
परिवार के सदस्यो द्वारा लिखे विनोबाजी के संस्मरण,
(प्रस्तावना—शिवाजी भावे)

७. पत्र-व्यवहार (चौथा भाग)—सपादक · रामकृष्ण बजाज ३.५०
जमनालालजी का अपनी पत्नी जानकीदेवी बजाज के साथ (सजिल्द)
(पृष्ठभूमि . जानकीदेवी बजाज)

JODO ९. **कृतार्थ जीवन**—लेखक दा० न० शिखरे २ ००
जमनालालजी का मराठी जीवन-चरित
(जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट, वर्धा का प्रकाशन)

१० **मेरी जीवन-यात्रा**—जानकीदेवी बजाज २ ००
जानकीदेवी बजाज की आत्म-कथा
(सस्ता साहित्य मण्डल-प्रकाशन) प्रस्तावना विनोबा

११. **माझी जीवन-यात्रा**—अनु० वा० भ० बोरकर ३ ००
जानकीदेवी बजाज की जीवन-यात्रा का मराठी-अनुवाद,
(पॉपुलर बुक डिपो, बबई का प्रकाशन)

जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट के आगामी प्रकाशन

१. **पत्र-व्यवहार** (पाचवा भाग)
(जमनालालजी का अपने परिवार के सदस्यो से)

२. **पत्र-व्यवहार** (छठा भाग)
(जमनालालजी का देशी रियासतो के अधिकारियो से)

३. **पत्र-व्यवहार** (सातवा भाग)
(जमनालालजी का सामाजिक कार्यकर्ताओ व व्यापारियो से)

४. **जमनालालजी के पत्र**
जमनालालजी का विभिन्न क्षेत्रो के व्यक्तियो के साथ का चुना हुआ पत्र-व्यवहार ।

५. **जमनालाल की डायरिया**
जमनालालजी की डायरिया राजनैतिक व ऐतिहासिक महत्त्व की है। तीन या चार भागो मे इन डायरियो को प्रकाशित करने की योजना है।